لا اله الا الله

तौहीद के मसाइल



मो० इक़बाल कीलानी

मकतबा अलफहीम
मऊनाथ भंजन-उ.प.

مکتبہ الفہیم
مئوناتھ بھنجن یوپی

तौहीद के मसाइल

मो० इक़बाल कीलानी

مکتبۃ الفہیم
مئوناتھ بھنجن یوپی

MAKTABA AL-FAHEEM
Raihan Market, 1st Floor, Dhobia Imli Road
Sadar Chowk, Maunath Bhanjan - (U.P.) 275101
Ph.: (O) 0547-2222013, Mob. 9236761926, 9889123129, 9336010224
Email :faheembooks@gmail.com
WWW.faheembooks.com

पुस्तक का नाम : **तौहीद के मसाइल**

लेखक : मो० इक़्बाल कीलानी

हिन्दी अनुवाद : फहद खुर्शीद

प्रकाशन वर्ष : अक्तूबर 2013

कम्पोज़िंग : अलफहीम कम्प्यूटर

पेज : 224

प्रकाशक : मकतबा अलफहीम मऊ

مکتبہ الفہیم
مئوناتھ بھنجن یوپی

MAKTABA AL-FAHEEM
Raihan Market, 1st Floor, Dhobia Imli Road
Sadar Chowk, Maunath Bhanjan - (U.P.) 275101
Ph.: (O) 0547-2222013, Mob. 9236761926, 9889123129, 9336010224
Email :faheembooks@gmail.com
WWW.faheembooks.com

विषय-सूची

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

تَعَالَوْا إِلٰى كَلِمَةٍ سَوَاءٍ بَيْنَنَا وَبَيْنَكُمْ

"ऐ दुनिया के लोगो! आओ एक ऐसे कलिमे की तरफ जो हमारे और तुम्हारे दरमियान समान है"

☆ ऐ इसराइल के बेटो! तुम्हारा ईमान है कि हज़रत उज़ैर अलैहिस्सलाम अल्लाह के बेटे थे और यह भी तसलीम करते हो कि उन्हें मौत आई। कभी तुमने गौर किया कि अल्लाह की ज़ात "हय्य और कय्यूम" है और उसके बेटों में भी यह गुण होने चाहिए थे, तो फिर हज़रत उज़ैर अलैहिस्सलाम को मौत क्यों आई ? जिसे मौत आए वह अल्लाह का बेटा कैसे हो सकता है ?

☆ ऐ ईसा इब्ने मरियम के ह० वारियो ! तुम्हारा ईमान है कि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम अल्लाह के बेटे हैं और यह भी तसलीम करते हो कि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम सूली दिए गए, कभी तुमने गौर किया कि अल्लाह तो ज़बरदस्त कुव्वत वाला है और हर एक पर गालिब है फिर उसका बेटा इतना कमज़ोर और बेबस क्यों था कि सूली पर चढ़ा दिया गया। जो सूली पर चढ़ा दिया गया, वह खुदा का बेटा कैसे हो सकता है ?

☆ ऐ हिन्दूमत के अनुयायियो ! तुम्हरा ईमान है कि दुनिया में ३३ करोड़ भगवान हैं, हर आदमी अपना-अपना भगवान अलग रखता है गोया हर आदमी का अपना भगवान है जो उसकी हाजतें और मुरादें पूरी करने पर कादिर है, जबकि बाकी ३२ करोड़ ९९ लाख ९९ हज़ार ९९९ भगवान इसकी ज़रूरतें पूरी करने से असमर्थ हैं। कभी तुमने गौर किया कि अगर ३२ करोड़ ९९ लाख ९९ हज़ार ९९९ भगवान आजिज़ और बेबस हैं, तो फिर उन्हीं में से एक भगवान हाजतें और मुरादें पूरी करने

पर कैसे समर्थ हो सकता है ?

☆ ऐ बुद्ध मत के मानने वालो ! तुम्हारा ईमान है कि गौतम बुद्ध आलमगीर सच्चाई की तलाश में सालों साल मैदानों, जंगलों और मरूस्थलों में फिरता रहा, कभी तुमने गौर किया कि जो व्यक्ति खुद एक आलमगीर सच्चाई की तलाश में लम्बे समय तक परेशान रहा। वह खुद अलमगीर सच्चाई कैसे बन सकता है।

☆ ऐ मासूम ईमानों के मानने वालो ! तुम्हार ईमान है कि कायनात का ज़र्रा ज़र्रा ईमाम के हुक्म व सत्ता के आगे झुका है और यह दावा भी रखते हो कि अहले बैत पर जो मुसीबत और आफत आई वह अबू बक्र रज़ि० और उमर रज़ि० की वजह से आई कभी तुमने गौर किया कि जिसके हुक्म के आगे कायनात का ज़र्रा ज़र्रा झुका हो उस पर आफत और मुसीबत कैसे आ सकती है ? और जिस पर आफत और मुसीबत आ जाए वह कायनात के ज़र्रे ज़र्रे का हाकिम और स्वामी कैसे बन सकता है ?

☆ ऐ बुज़र्गाने दीन और औलिया किराम के मानने वालो ! तुम्हारे ईमान है कि अला हजवेरी रह० खज़ाने अता करता है। ख्वाजा मईनुद्दीन चिश्ती रह० तुफानों से निजात बख्शते हैं। अब्दुल कादिर जिलानी रह० मसाइब और मुशकिलात दूर करते हैं। इमाम बरी रह० खोटी किस्मते खरी करते हैं और सुल्तान बाहू रह० औलाद से नवाज़ते हैं। कभी तुमने गौर किया जब अला हजवेरी रह० नहीं थे तो खजाने कौन अता करता था। जब मुईनुद्दीन चिश्ती नहीं थे तो तूफानो से निजात कौन बख्शता था। जब अब्दुलकादिर जीलानी रह० नहीं थे तो मसाइब और मुशकिलात कौन दूर करता था। जब इमाम बरी रह० नहीं थे तो खोटी किस्मतें कौर खरी करता था। जब सुल्तान बाहू रह० नहीं थे तो औलाद कौन देतां था।

☆ ऐ दुनिया के लोगो ! मेरी बात ज़रा गौर से सुनो !

अल्लाह तआला की भेजी हुई तालीमात में विभेद कभी नहीं हो

सकता। लेकिन तुम्हारे विश्वासों और विचारों में मौजूद विभेद इस बात का सुबूत है कि यह विश्वास वह विचार अल्लाह तआला की तरफ से नाज़िल करदा नहीं हैं।

☆ तो फिर ...! ऐ दुनिया के लोगो! आओ एक ऐसे कलिमे की तरफ

☆ ...... जिसकी तालीमात में फर्क नहीं।

☆ ...... जो मानव जाति की रूह को आसूदगी और जिस्म की आज़ादी बख्शता है।

☆ ...... जो मानव जाति को सम्मान, इज़्ज़त और महानता अता करता है।

☆ ...... जो मानव जाति को अम्न व सलामती अद्ल व इंसाफ, समानता व आज़ादी, भाईचारा व मुहब्बत जैसे उच्च मुल्यों की ज़मानत देता है।

☆ ...... जो मानव जाति को जहन्नम की आग से निजात दिलाता है।

वह एक कलिमा है

لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ

अल्लाह के सिवा कोई इलाह नहीं।

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

प्रकाशकीय

नहमदुहू व नुसल्लि अला रसूलिहिल करीम व बअद०

प्रस्तुत पुस्तक इस्लाम का आधार अकीदा "तौहीद" के शिर्षक पर अत्यन्त सतर्क आसान और सबकी समझ में आने वाले अन्दाज़ में लिखी गई है। आवश्यक है कि प्रत्येक मुस्लिम अकीद-ए-तौहीद के भाव (मफहूम) को समझे उसकी ज़रूरतों को पूरा करे और इसका ज्ञान हो कि कौन-कौन से कार्य शिर्क जैसे बड़े अत्याचार के घेरे में आते हैं।

इस पुस्तक के प्रसिद्ध लेखक जनाब मुहम्मद इकबाल कीलानी साहब हैं। शैख कीलानी साहब वर्षों से सऊदी अरब में उस्ताद हैं। हज़रत शिक्षित घराने के होनहार सदस्य हैं। आपने "तफहीमुस्सुन्नह" के नाम से दीन के आधार सूत्र पांचों अरकान एवं अन्य अहकाम व मसाइल पर अति लाभदायक और लोकप्रिय किताबें लिखी हैं। "तफहीमुस्सुन्नह" का यह सिलसिला हर वर्ग में लोकप्रियता प्राप्त कर चुका है। कीलानी साहब की किताबों की अनेक विशेषताएं हैं जिनमें उल्लेखनीय और विशेष ये हैं। हर किताब किताब व सुन्नत की रोशनी में और साहित्यिक विशेषताओं से अलंकृत हैं।

"तौहीद के मसाइल" तफहीमुस्सुन्नह के सिलसिले की पहली किताब है जिसको हिन्दी भाषा में प्रकाशित करने का सौभाग्य मकतबा अलफहीम को प्राप्त हो रहा है। हमारी कोशिश है कि पूरी सीरीज़ को हिन्दी में अनुवाद करके आपके सामने पेश करें। कुछ किताबें आ चुकी हैं बाकी जल्दी आने वाली हैं। अल्लाह तआला हमारी इस छोटी सी कोशिश को पूरा करे और इस मेहनत को स्वीकार करे, आमीन।

मकतबा अल फहीम

بسم الله الرحمن الرحيم

الحمد للّٰه رب العالمين والصلاة والسلام على رسوله الأمين والعاقبة للمتقين. اما بعد

कयामत के दिन इंसान की निजात का आधार दो बातों पर होगा। १. ईमान और २. सदकर्म। ईमान से मुराद है अल्लाह तआला की ज़ात पर ईमान, रिसालत और आखिरत पर ईमान, फरिश्तों औ किताबों पर ईमान, अच्छी और बुरी तकदीर पर ईमान। रसूले अकरम सल्ल० का इर्शाद मुबारक है। "ईमान की सत्तर से ज़्यादा शाखें हैं उनमें से सबसे श्रेष्ठ "ला इला-ह इल्लल्लाहु" कहना (ब-हवाला सहीह बुखारी) यानी ईमान की बुनियाद कलिमा तौहीद है।

सदकर्मों से मुराद वह आमाल हैं जो सुन्नत रसूल सल्ल० के मुताबिक हों। बिलाशुबह निजात आखिरत के लिए सदकर्म बहुत महत्तव रखते हैं, लेकिन अकीदा-ए-तौहीद और सदकर्म दोनों में से अकीदा-ए-तौहीद का महत्तव कहीं ज़्यादा है।

कयामत के दिन अकीदा-ए-तौहीद की मौजूदगी में आमाल की कोताहियों और गलतियों की माफी तो हो सकती है, लेकिन अकीदे में बिगाड़ (कारफिरान, मुश्रिकाना या तौहीद में शिर्क की मिलावट) की सूरत में ज़मीन व आसमान की व्यापकताओं के बराबर सदकर्म भी बेकार साबित होंगे। सूरह आले इमरान में अल्लाह पाक फरमाता है कि काफिर लोग अगर रूए ज़मीन के बराबर भी सोना सदका करें तो ईमान लाए बगैर उनका यह सदकर्म अल्लाह के यहां कबूल नहीं होगा और इर्शाद बारी तआला है:

﴿إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا وَمَاتُوا وَهُمْ كُفَّارٌ فَلَن يُقْبَلَ مِنْ أَحَدِهِم مِّلْءُ الْأَرْضِ ذَهَبًا وَلَوِ افْتَدَىٰ بِهِ أُولَـٰئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ وَمَا لَهُم مِّن نَّاصِرِينَ﴾ (٣:٩١)

तर्जुमाः "जिन लोगों ने कुफ्र इख्तियार किया और कुफ्र ही की हालत में मरे उनमें से कोई अगर (अपने आपको सज़ा से बचाने के लिए) रूए ज़मीन भर कर भी सोना फिदये में दे तो उसे कबूल न किया जाएगा। ऐसे लोगों के लिए दर्दनाक अज़ाब है और ऐसे लोगों के लिए कोई मददगार नहीं होगा।" (आले इमरान, आयत ९१) मतलब न सिर्फ यह कि उनके नेक कार्य ज़ाया होंगे बल्कि अकीदा-ए-कुफ्र की वजह से उन्हें दर्दनाक अज़ाब भी दिया जाएगा और कोई उनकी मदद या सिफारिश नहीं कर सकेगा। सूरह अनआम में अम्बियाए कराम की मुकद्दस जमाअत हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम, हज़रत इसहाक अलैहिस्सलाम, हज़रत याकूब अलैहिस्सलाम, हज़रत नूह अलैहिस्सलाम, हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम, हज़रत हारून अलैहिस्सलाम, हज़रत ज़करिया अलैहिस्सलाम, हज़रत यहया अलैहिस्सलाम, हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम, हज़रत यसअ अलैहिस्सलाम, हज़रत यूनुस अलैहिस्सलाम और हज़रत लूत अलैहिस्सलाम का ज़िक्र खैर करने के बाद अल्लाह तआला इर्शाद फरमाता है 'वलव अशरकू ल ह-बि-त अन्हुम मा कानू यअमलून०' तर्जुमाः "अगर कहीं उन लोगों ने शिर्क किया हो तो उनके सब नेक आमाल ज़ाए हो जाते।" (सूरह अनआम आयत ८८)

शिर्क की निन्दा में कुरआन मजीद की कुछ दीगर आयात मुलाहिज़ा हों:

﴿وَلَقَدْ أُوحِيَ إِلَيْكَ وَإِلَى الَّذِينَ مِنْ قَبْلِكَ لَئِنْ أَشْرَكْتَ لَيَحْبَطَنَّ عَمَلُكَ وَلَتَكُونَنَّ مِنَ الْخَاسِرِينَ﴾ (٦٥:٣٩)

तर्जुमाः "ऐ नबी तुम्हारी तरफ और तुम से पहले गुज़रे हुए तमाम अम्बिया की तरफ यह वह्य भेजी जा चुकी है कि अगर तुमने शिर्क किया तो तुम्हारा किया कराया अमल ज़ाया हो जाएगा और तुम खसारा पाने वालों में से हो जाओ गे।"(सूरह जुमर आयात ६५)

﴿فَلَا تَدْعُ مَعَ اللَّهِ إِلَٰهًا آخَرَ فَتَكُونَ مِنَ الْمُعَذَّبِينَ﴾ (٢١٣:٢٦)

तर्जुमाः "तो ऐ नबी ! अल्लाह के साथ किसी दूसरे उपास्य को न

पुकारो वरना तुम भी सज़ा पाने वालों में शामिल हो जाओगे।"

(सूरह शोअरा, आयत २१३)

उपरोक्त दोनों आयतों में अल्लाह तआला ने अपने महबूब पैगम्बर सय्यदुल मुर्सलीन हज़रत मुहम्मद सल्ल० को मुखातब करके बड़े फैसला कुन और दो टूक अन्दाज़ में यह बात इर्शाद फरमाई है कि शिर्क अगर तुमने भी किया तो न सिर्फ यह कि तुम्हारे सारे सद कर्म ज़ाया कर दिए जाएंगे बल्कि दुसरे मुश्रिकीन के साथ जहन्नम का अज़ाब भी दिया जाएगा।

सूरह माइदा में इर्शादे मुबारक है:

﴿إِنَّهُ مَن يُشْرِكْ بِاللهِ فَقَدْ حَرَّمَ اللهُ عَلَيْهِ الْجَنَّةَ وَمَأْوَاهُ النَّارِ﴾(٥:٧٢)

तर्जुमाः "जिसने अल्लाह के साथ शिर्क किया उस पर अल्लाह तआला ने जन्नत हराम कर दी है और उसका ठिकाना जहन्नम है।"

(सूरह माइदा आयत ७२)

सूरह निसा की एक आयत में इर्शादे बारी तआला है:

﴿إِنَّ اللهَ لَا يَغْفِرُ أَن يُشْرَكَ بِهِ وَيَغْفِرُ مَا دُونَ ذَلِكَ لِمَن يَشَاءُ﴾ (٤:١١٦)

तर्जुमाः "अल्लाह तआला के यहां शिर्क की बख़्शिश ही नहीं इसके सिवा और सब कुछ मआफ हो सकता है जिसे वह मआफ करना चाहे।" (सूरह निसा, आयत ११६)

इन दोनों आयतों से यह बात किल्कुल स्पष्ट है कि अल्लाह तआला के यहां शिर्क नाकाबिले माफी गुनाह है। शिर्क के अलावा कोई दूसरा गुनाह ऐसा नहीं जिसे अल्लाह तआला ने नाकाबिले माफी करार दिया हो या जिसके करने पर जन्नत हराम कर दी हो।

सूरह तौबा में अल्लाह तआला ने शिर्क की हालत में मरने वालों के लिए बख़्शिश की दुआ तक करने से मना फरमाया है। इर्शाद मुबारक है:

﴿مَا كَانَ لِلنَّبِيِّ وَالَّذِيْنَ آمَنُوا أَنْ يَسْتَغْفِرُوا لِلْمُشْرِكِيْنَ وَلَوْ كَانُوا أُوْلِي قُرْبَىٰ مِن بَعْدِ مَا تَبَيَّنَ لَهُمْ أَنَّهُمْ أَصْحَابُ الْجَحِيمِ﴾(٩:١١٣)

तर्जुमाः नबी और अहले ईमान के लिए जाइज़ नहीं कि वह मुश्रिकों के लिए मगफिरत की दुआ करें चाहे वह उनके रिशतेदार ही क्यों न हों। जबकि उन पर यह बात स्पष्ट हो चुकी है कि वह जहन्नमी हैं।"

(सूरह तौबा, आयत ११३)

अब शिर्क की निन्दा में कुछ अहादीसे मुबारक मुलाहिज़ा हो

१. रसूले अकरम सल्ल० ने हज़रत मुआज़ रज़ि० को दस नसीहतें फरमईं, जिनमें से सबसे पहली यह नसीहत थीः 'ला तुशिरक बिल्लाहि शैअवं व इल कुतुल-त अव हुर्रक-त' यानी अल्लाह तआला के साथ किसी को शरीक न करना चाहे कत्ल कर दिए जाओ या जला दिए जाओ। (मुसनद अहमद)

२. आप सल्ल० ने फरमायाः "सात हलाक करने वाली चीज़ों से बचो, १. अल्लाह तआला के साथ शरीक करना २. जादू ३. अकारण कत्ल करना ४. यतीम का माल खाना ५. सूद खाना ६. मैदाने जंग से भागना और ७. भोली भाली मोमिन औरतों पर तोहमत लगाना।" (सहीह मुस्लिम)

३. इर्शादे नबवी है किः "अल्लाह तआला उस वक्त तक बन्दे के गुनाह माफ करता रहता है जबतब अल्लाह और बन्दे के दरमिया हिजाब न हो।" सहाबा किराम रज़ि० ने अर्ज़ किया, "या रसूलल्लाह सल्ल०! हिजाब से क्या मुराद है?" आप सल्ल० ने फरमाया "हिजाब का मतलब है कि इंसान मरते दमतक शिर्क में फंसा रहे।" (मुसस्नद अहमद)

उपरोक्त आयात व अहादीस से यह अन्दाज़ा लगाना मुश्किल नहीं कि शिर्क ही वह गुना है जिसके नतीजे में इंसान की हलाकत और बर्बादी यकीनी है। कुछ मिसालें मुलाहिज़ा होंः

१. क्यामत के दिन हज़रत इब्राहीम अलैहि० अपने बाप आज़र की बख्शिश के लिए सिफारिश करेंगे, तो जवाब में अल्लाह पाक इर्शाद फरमाएगाः "इन्नी हर्रमतुल जन्न-त- अलल काफिरीन' मैंने जन्नत काफिरों के लिए हराम कर दी है। (सहीह बुखारी शरीफ) यह कह कर हज़रत इब्राहीम अलै० की सिफारिश रद्द कर दी जाएगी।

२. रसूले अकरम सल्ल० के चचा जनाब अबू तालिब के बारे में कौन नहीं जानता कि उन्होंने आपकी नबुवत मुबारक के बाद हर मुश्किल वक्त में बड़ी हिम्मत और दृढ़ता के साथ आपका साथ दिया। कुरैश मक्का के जुल्म व सितम और बेपनाह दबाव के सामने लोहे की दीवार बनकर खड़े हो गए। शौबे अबी तालिब के कैद के दिनों में आप सल्ल० का भर पूर साथ दिया। अबू जहल वगैरह ने रसूले अकरम सल्ल० के कत्ल का इरादा किया तो बनू हाशिम और बनू मुत्तलिब के नव जवानों को इकटठा करके हरम शरीफ ले गए और अबू जहल को खुली मरने मारने की धमकी दी। जनाब अबू तालिब ज़िन्दगी भर रसूले अकरम सल्ल० का इसी तरह साथ देते रहे। जिस साल जनाब अबू तालिब का इंतकाल हुआ रसूले अकरम सल्ल० ने उसे गम का साल (आमुल हिज़्न) करार दिया। रसूले अकरम सल्ल० के साथ खूनी ताल्लुक और दीनी मामिलात में आप सल्ल० की भर पूर हिमायत के बावजूद सिर्फ ईमान न लाने की वजह से जनाब अबू तालिब जहन्नम में चले जाएंगे। (ब-हवाला सहीह मुस्लिम)

३. एक व्यक्ति अब्दुल्लाह बिन जदआन के बारे में रसूलुल्लाह सल्ल० से पुछा गया कि "वह सिला रहमी करने वाला और लोगों को खाना खिलाने वाला व्यक्ति था, क्या उसकी यह नेकिया कयामत के दिन काम आएंगी ? आप सल्ल० ने इर्शाद फरमायाः "नहीं" क्योंकि उसने उम्र भर एक बार भी यह नहीं कहा :

﴿رَبِّ اغْفِرْلِیْ خَطِیْئَتِیْ یَوْمَ الدِّیْنِ﴾

तर्जुमाः "ऐ मेरे रब क्यामत के दिन मेरे गुनाह मआफ फरमाना"

(ब-हवाला सहीह मुस्लिम) यानी उसका न अल्लाह तआला पर ईमान था न क्यामत के दिन पर, लिहाज़ा उसकी सारी नेकियां और सदकर्म बर्बाद हो जाएंगे।

उपरोक्त तथ्यों से यह बात बिल्कुल स्पष्ट है कि अकीदाए तौहीद के बगैर नेक और सदकर्म अल्लाह तआला के यहां ज़र्रा बराबर अज्र व सवाब के मुस्तहिक नहीं समझे जाएंगे।

शिर्क के विपरीत अकीदा तौहीद क्यामत के दिन गुनाहों का कफ्फारा और अल्लाह की मगफिरत का कारण बनेगा। रसूले अकरम सल्ल० का इर्शादे मुबारक है : "जिसने ला इला-ह इल्लल्लाहु का इकरार किया और इसी पर मरा, वह जन्नत में दाखिल होगा।" सहाबा किराम रज़ि० ने अर्ज़ किया "चाहे ज़िना किया हो, चाहे चोरी की हो ?" रसूले अकरम सल्ल० ने फरमाया "हां" "चाहे ज़िना किया हो, चाहे चोरी की हो।" (सहीह मुस्लिम) एक हदीसे कुदसी में अल्लाह तआला इर्शाद फरमाता है : "ऐ इब्ने आदम! अगर तू रूए ज़मीन के बराबर गुनाह लेकर आए और मुझसे इस हाल में मिले कि किसी को मेरे साथ शरीक न किया हो तो मैं रूए ज़ीम के बराबर तुझे मगफेरत अता करूंगा।" (तिर्मिज़ी शरीफ) क्यामत के दिन एक आदमी अल्लाह तआला की बारगाह में हाज़िर होगा सिके ९९ दफ्तर गुनाहों से भरे होंगे। वह आदमी अपने गुनाहों की वजह से मायूस होगा। अल्लाह तआला इरशाद फरमाएगा, "आज किसी पर ज़ुल्म नहीं होगा" मीज़ान की जगह चले जाओ। रसूले अकरम सल्ल० ने फरमाया : "कि उसके गुनाह तराजू के एक पलड़े में डाल दिए जाएंगे और नेकी दूसरे पलड़े में, वह एक नेकी तमाम गुनाहों पर भारी हो जाएगी वह एक नेकी : अश्हदु अल्ला इला-ल इल्लल्लाहु व अन्न मुहम्मदन अब्दुहू व रसूलुहू होगी (ब-हवाला तिर्मिज़ी शरीफ) एक बूढ़ा व्यक्ति रसूले अकरम सल्ल० की खिदमत में हाज़िर हुआ और अर्ज़ किया "ऐ रसूलल्लाह ! सारी ज़िंदगी गुनाहों में गुज़री है कोई गुनाह ऐसा नहीं जो न किया हो, रूए ज़मीन के सारे लोगों में अगर मेरे गुनाह बांट

दिए जाएं तो सबको ले डूबें। क्या मेरी तौबा की कोई सूरत है?'' रसूले अकरम सल्ल० ने पूछा : "क्या इस्लाम लाए हो ?'' उसने अर्ज़ किया, 'अशहदु अल्ला इला-ल इल्लल्लाहु व अन्न मुहम्मदन अब्दुहू व रसूलुहू' आप सल्ल० ने इर्शाद फरमाया : जा, अल्लाह माफ करने वाला और गुनाहों को नेकियों में बदलने वाला है'' उसने अर्ज़ किया, "क्या मेरे सारे गुनाह और जुर्म माफ हो जाएंगे ?'' रसूले अकरम सल्ल० ने इर्शाद फरमायाः "हां तेरे सारे गुनाह और जुर्म माफ हो जाएंगे।''
(ब-हवाला इब्ने कसीर)

गौर फरमाइए! एक तरफ आप सल्ल० का सगा चचा जिसने उम्र भर दीन के मामले में आप सल्ल० साथ देने का हक अदा किया, लेकिन अकीदए तौहीद पर ईमान न लाने की वजह से जहन्नम का मुस्तहिक ठहरा। दूसरी तरफ एक अजनबी जिसका रसूले अकरम सल्ल० से कोई खूनी रिश्ता नहीं और वह खुद अपने बे पनाह गुनाहों का एतेराफ भी कर रहा है, केवल अकीदए तौहीद पर ईमान लाने की वजह से जन्नत का मुस्तहिक ठहरा। इस सारी गुफ्तगू से यह नतीजा निकलता है कि क्यामत के दिन निजात का तमामतर दारो मदार इंसान के अकीदों पर होगा। अगर अकीदा किताब व सुन्नत के मुताबि खालिस तौहीद पर आधारित हुआ तो सदकर्म काबिले अज्र व सवाब होंगे, और गुनाह काबिले बख्शिश और काबिले माफी होंगे, लेकिन अगन अकीदए तौहीद के बजाए शिर्क पर आधारित हो तो रूए ज़मीन के बराबर सद कर्म भी अस्वीकार्य और लानत वाले होंगे।

अकीदए तौहीद की वज़ाहत

तौहीद का मूल "वहद'' है और इसके मसादिर में से 'वहद' और 'वहदत' ज़्यादा मशहूर हैं। जिसका मतलब है अकेला और बे मिसाल होना। "वहीद'' या "वहद'' उस हस्ती को कहते हैं जो अपनी ज़ात में और अपने गुणों में अकेली और बे मिसाल हो। "वहद'' का वाव हमज़ा से मदल कर "अहद'' बना है। यही शब्द सूरह इख्लास में अल्लाह

तआला के लिए इस्तेमाल हुआ है। जिसका मतलब है कि अल्लाह तआला अपनी ज़ात ओर गुणों में अकेला और बेमिसाल है, कोई दूसरा उस जैसा नहीं जो उसकी ज़ात और गुणों में शरीक हो।

तौहीद की तीन किस्में हैं: १. तौहीद ज़ात २. तौहीदे इबादत ३. तौहीदे सिफात। नीचे हम तीनों किस्मों की अलग अलग वज़ाहत पेश कर रहे हैं।

१. तौहीदे ज़ात

तौहीद ज़रत यह है कि अल्लाह तआला को उसकी ज़ात में अकेला बे-मिसला और लाशरीक माना जाए। उसकी बीवी है न औलाद, मां है न बाप, वह किसी की ज़ात का अंश है न कोई दूसरा उसकी ज़रत का अंश।

यहूदी हज़रत उज़ैर अलैहिस्सलाम को अल्लाह तआला का बेटा माने थे, ईसाई हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम को अल्लाह का बेटा मानते थे। अल्लाह तआला ने दोनों गिरोहों के इस असत्य अकीदे का खंडन कुरआन मजीद में यूं किया :

﴿وَقَالَتِ الْيَهُودُ عُزَيْرٌ ابْنُ اللّهِ وَقَالَتْ النَّصَارَى الْمَسِيحُ ابْنُ اللّهِ ذَلِكَ قَوْلُهُم بِأَفْوَاهِهِمْ يُضَاهِؤُونَ قَوْلَ الَّذِينَ كَفَرُواْ مِن قَبْلُ قَاتَلَهُمُ اللّهُ أَنَّى يُؤْفَكُونَ﴾(٩ : ٣٠)

तर्जुमा: "यहूदी कहते हैं उज़ैर अल्लाह तआला का बेटा है और ईसाई कहते हैं मसीह अल्लाह तआला का बैटा है। यह बे-हकीकत बातें हैं जो वे अपनी ज़ाबानों से निकालते हैं। उन लोगों की देखा देखी जिन्होंने उनसे पहले कुफ्र किया । अल्लाह की मार उन पर, ये कहां से धोखा खा रहे हैं।" (सूरह तौबा आयत ३०)

मुशिरकीने मक्का फरिश्तों को अल्लाह की बेटियां कराद देते थे अल्लाह तआला ने कुरआन मजीद में उनके इस असत्य अकीदे की भी इन शब्दों में निन्दा फरमाई :

﴿وَجَعَلُوا لِلَّهِ شُرَكَاءَ الْجِنَّ وَخَلَقَهُمْ وَخَرَقُوا لَهُ بَنِينَ وَبَنَاتٍ بِغَيْرِ عِلْمٍ سُبْحَانَهُ وَتَعَالَى عَمَّا يَصِفُونَ﴾ (٦:١٠٠)

तर्जुमा : "लोगों ने जिन्नों को अल्लाह का शरीक मना रखा है, हालांकि अल्लाह तआला ने तो जिन्नों को पैदा किया है (इसी तरह कुछ) लोगों ने बेजाने बूझे अल्लाह के लिए बेटे ओर बेटियां बना रखी हैं हालांकि अल्लाह पाक उच्चतर है उन बातों से जो ये करते हैं" (सूरह अनआम, आयत १००) कुछ मुशिरकीन अल्लाह तआला की सृष्टि जैसे फरिश्तों, जिन्नों या इन्सानों में अल्लाह तआला की ज़ात को मिला हुआ समझते थे (इसे अकीदए हलूल कहा जाता है) कुछ मुश्रिक कायनात की हर चीज़ में अल्लाह तआला को शामिल कहते थे (इसे अकीदए वहदत, उलूजूद कहा जाता है) अल्लाह तआला ने इन तमाम बातिल अकाइद का खंडन निम्न आयत में फरमाया है:

﴿وَجَعَلُوا لَهُ مِنْ عِبَادِهِ جُزْءًا إِنَّ الْإِنسَانَ لَكَفُورٌ مُّبِينٌ﴾ (٤٣:١٥)

तर्जुमा: "लोगों ने उसके बन्दों से कुछ को उसका अंश बना डाला। हकीकत यह है कि इंसान खुला एहसान फरामोश है।"

(सूरह जुखरूफ आयत १५)

इस सारी आयात से यह बात साबित होती है कि अल्लाह तआला का कोई खनदान नहीं उसकी बीवी न औलाद, मां है न बाप, न ही अल्लाह तआला की ज़ात कायनात की किसी (जानदार या गैर जानदार) चीज़ में शामिल है। किसी चीज़ का अंश है न ही कयानात की कोई दूसरी (जानदार या गैर जानदार) चीज़ अल्लाह तआला की ज़ात में शामिल है। न ही कोई चीज़ अल्लाह तआला की ज़ात का अंश है, न ही अल्लाह तआला के नूर से कोई प्रणी पैदा हुआ है, न ही कोई प्राणी उसके नूर का अंश है। रसूले अकरम सल्ल० ने मुशिरकीने मक्का को जब एक लाशरीक हस्ती की दावत दी तो उन्होंने आप सल्ल० से पूछा कि जिस हस्ती की तरफ आप दावत देते हैं उसका हसब-नसब क्या है वह

किस चीज़ से बना है, वह क्या खता है, क्या पीता है उसने किससे विरासत पाई और उसका वारिस कोन होगा?'' इन सवालों के जवाब में अल्लाह तआला ने सूरह इख्लास नाज़िल फरमाई :

﴿قُلْ هُوَ اللّٰهُ أَحَدٌ • اللّٰهُ الصَّمَدُ • لَمْ يَلِدْ وَلَمْ يُولَدْ • وَلَمْ يَكُن لَّهُ كُفُوًا أَحَدٌ﴾ (١١٢:١.٤)

तर्जुमा : ''कहो वह अल्लाह है यकता, अल्लाह सबसे बेनियाज़ है सब उसके मोहताज हैं, न उसकी कोई औलाद है न वह किसी की औलाद और कोई उसका जैसा नहीं।'' (सूरह इख्लास)

तौहीद ज़ात के बारे में यह बात भी याद रखनी चाहिए कि अल्लाह तआला की ज़ात अर्श मुअल्ला पर जलवा फरमा है जैस कि कुरआन मजीद की आयात और अहादीस मुबारका से साबित है (देखें अध्याय तौहीद फिज़्ज़ात, मसला ३२) अलबत्ता इसका इल्म और कुदरत हर चीज़ को अपने घेरे में लिए हुए हैं। इस अकीदे के विपरीत किसी को अल्लाह तआला का बेटा या बेटी मानना या किसी प्राणी को अल्लाह तआला की ज़ात का स्सिा और अंश कहना या अल्लाह तआला की ज़ात को हर जगह और हर चीज़ में मौजूद समझना शिर्क फिज़्ज़ात कहलाता है।

२. तौहीदे इबादत

तौहीदे इबादत यह है कि हर किस्म की इबादत को सिर्फ अल्लाह के लिए खास किया जाए और किसी दूसरे को उसमें शरीक न किया जाए। कुरआन मजीद में इबादत का शब्द दो परस्पर विरोधी मायनों में इस्तेमाल हुआ है।

एक जा और परस्तिश के मआनों में जैसा कि निम्न आयत से ज़ाहिर है

﴿لَا تَسْجُدُوا لِلشَّمْسِ وَلَا لِلْقَمَرِ وَاسْجُدُوا لِلّٰهِ الَّذِي خَلَقَهُنَّ إِن كُنتُمْ إِيَّاهُ تَعْبُدُونَ﴾ (٣٧:٤١)

तर्जुमा : ''सूरज और चांद को सज्दा न करो बल्कि उसको सज्दा

करो जिसने इन्हें पैदा किया है। अगर तुम वाकई अल्लाह की इबादत करने वाले हो।" (सूरह हा०मीम० सज्दा, आयत ३७)

दूसरे इताअत और अज्ञापालन के मायनों में जैसा कि निम्न आयत से ज़ाहिर है :

﴿أَلَمْ أَعْهَدْ إِلَيْكُمْ يَا بَنِي آدَمَ أَن لَّا تَعْبُدُوا الشَّيْطَانَ إِنَّهُ لَكُمْ عَدُوٌّ مُّبِينٌ﴾ (٣٦:٦٠)

तर्जुमा : "ऐ आदम के बच्चो! क्या मैंने तुमको हिदायत न कि थी कि शैतान की इताअत (अनुसरण) न करना वह तुम्हारा खुला दुशमन है।" (सूरह यासीन, आयत ६०)

पहले मआना अर्थात पूजा और परस्तिश के एतेबार से तौहीदे इबादत यह होगी कि हर तरह की इबादत जैसे नमाज़ और नमाज़ की तरह दस्तबदस्ता कयाम, रूकूअ, सज्दा, नज़र व नियाज़, सदका, खैरात, कुरबानी, तवाफ, एतिकाफ, दुआ, पुकार, फरियाद, इस्तिआनत (मदद तलब करना), इस्तिआज़ह (पनाह तलब करना), रज़ा तलबी, तवक्कुल खैफ, और मुहब्बत-१ सब की सब सिर्फ अल्लाह तआला ही के लिए हों। इन तमाम मरासिम अबूदियत में से कोई एक भी अल्लाह के अलावा

१. अल्लाह तआला की मुहब्बत के अलावा बहुतसी दूसरी चीज़ों की मुहब्बत दिल में होना कुदरती बात है। मसलन मां बाप, बीवी बच्चों, अज़ीज़ व अकारिब, माल व दौलत, तेज व प्रताप, सब चीज़ों से इंसान मुहब्बत करता है, लेकिन जो चीज़ मतलूब है वह यह कि उन चीज़ों की मुहब्बत अल्लाह तआला की मुहब्बत पर गालिब न होने पाए कि अल्लाह तआला के अनुसरण और आज्ञापलन के रास्ते में रूकावट बन जाए। इसी तरह अल्लाह तआला के खौफ के अलावा दूसरे बहुत से खौफ दिल में होना कुदरती बात है। बीमारी, मौत, कारोबार, दुशमन वगैरह का खौफ, लेकिन यह सारे खौफ चूंकि ज़हिरी अस्बाब के तहत हैं इस लिए उसमें फंसा होना शिर्क नहीं, अलबत्ता अप्राकृतिक तरीके से अल्लाह तआला के बजाए किसी देवी-देवता, भूत परेत, जिन्नात या मृत बुज़ुर्गों का खौफ इंसान को मुशिरक बना देता है।

किसी दूसरे के लिए अदा की गई तो वह शिर्क फिलइबादत होगी।

दूसरे मआनों में अर्थात अनुसरण और आज्ञापलन के एतेबार से तौहीदे बादत यह होगी कि ज़िन्दगी के तमाम मामलात में अनुसरण और आज्ञापलन सिर्फ अल्लाह तआला के हुक्म और कानून का किया जाए। अल्लाह तआला के हुक्म को छोड़कर किसी दूसरे के हुक्म या कानून की पैरवी करना चाहे वह अपना नफ्स हो या बाप दादा, मज़हबी पैशवा हों या सियासी रहनुमा, शैतान हो या तागूत वैसा ही शिर्क फिलइबादत होगा जैसा अल्लाह तआला की परस्तिश और पूजा में किसी गैर अल्लाह को शरीक बनाने का शिर्क है। सूरह फुरकान में इर्शादे बारी तआला है :

﴿أَرَأَيْتَ مَنِ اتَّخَذَ إِلَٰهَهُ هَوَاهُ﴾ (٢٥:٤٣)

तर्जुमा : "कभी तुमने उस व्यक्ति के हाल पर गौर किया जिसने अपनी इच्छा को अपना उपास्य बना लिया।"

(सूरह फुरकान आयत ४३)

इस आयत में स्पस्ट रूप से नफ्स की पैरवी करने को अपना उपास्य बना लेना कहा गया है जो कि शिर्क है। - १

२. सूरह अनआम की एक आयत मुलाहिज़ा हो इर्शादे खुदावन्दी है:

﴿وَإِنَّ الشَّيَاطِينَ لَيُوحُونَ إِلَى أَوْلِيَائِهِمْ لِيُجَادِلُوكُمْ وَإِنْ أَطَعْتُمُوهُمْ إِنَّكُمْ لَمُشْرِكُونَ﴾ (٦:١٢١)

तर्जुमा : "बेशक शयातीन अपने साथियों के दिलों में शकूक व शुबहात इल्का करते हैं ताकि तुमसे झगड़ा करें लेकिन अगर तुमने उनका अनुसरण कबूल कर लिया तो तुम यकीनन मुशिरक हो।"

(सूरह अनआम आयत १२१)

इस आयत में शैतान के अनुसरण और पैरवी को स्पश्ट शब्दों में

१. याद रहे इंसानी तकाज़ों के तहत गुनाह होना शिर्क नहीं बल्कि फिस्क (अवज्ञा) है, जो कर्मों या तौबा से मआफ हो जाता है।

शिर्क कहा गया है। सूरह माइदा में अल्लाह तआला फरमाता है :

﴿وَمَن لَّمْ يَحْكُم بِمَا أَنزَلَ اللَّهُ فَأُولَـٰئِكَ هُمُ الْكَافِرُونَ﴾ (٥:٤٤)

तर्जुमा : "और जो लोग अल्लाह के नाज़िल करदा कानून के मुताबिक फैसला न करें वही काफिर हैं। (सूरह माइदा आयत ४४)

सूरह माइदा की आयत ४५ और ४७ में अल्लाह तआला के कानून के मुताबिक फैसला न करने वालों को ज़ालिम और अवज्ञाकारी भी कहा गया है। अर्थात अल्लाह तआला के हुक्म और कानून की पैरवी के मुकाबिले में किसी दूसरे के कानून की पैरवी करने वाला व्यक्ति मुशिरक और काफिर भी है, अवज्ञाकारी और ज़ालिम भी है।

इबादत के दोनों मायना सामने रखे जाएं तो तौहीदे इबादत यह होगी कि हर किस्म के मरासिम उबूदियत यानी नमाज़, रोज़ा, हज, ज़कात, सदकात, रूकूअ व सूजूद, नज़र व नयाज़ व तवाफ, एतिकाफ, दुआ व पुकार, इस्तिआनत व इस्तिगासा, इताअत व गुलामी, आज्ञापालन और पैरवी अल्लाह तआला ही के लिए है इन सारी चीज़ों में से किसी एक में भी अल्लाह तआला के साथ किसी दूसरे को शरीक करना शिर्क फिलइबादत होगा।

३. तौहीदे सिफात

तौहीदे सीफात यह है कि अल्लाह तआला को उन तमाम सिफात में जो कि कुरआन हदीस से साबित हैं, यकता, बे-मिसाल और लाशरीक माना जाए। अल्लाह तआला की सिफात इस कद्र बेहद व हिसाब हैं कि इंसान के लिए उनका शुमार करना तो क्या उनकी कल्पना करना भी नामुमकिन है। सूरह कहफ में इरशादे बारी तआला है :

﴿قُل لَّوْ كَانَ الْبَحْرُ مِدَادًا لِّكَلِمَاتِ رَبِّي لَنَفِدَ الْبَحْرُ قَبْلَ أَن تَنفَدَ كَلِمَاتُ رَبِّي وَلَوْ جِئْنَا بِمِثْلِهِ مَدَدًا﴾ (١٨:١٠٩)

तर्जुमा : "ऐ नबी, कहो अगर समुन्द्र मेरे रब के कलिमात लिखने के लिए रोशनाई बन जाए तो व खत्म हो जाएं, लेकिन मेरे रब के

कलिमात खत्म न होंगे बल्कि इतनी ही रोशनाई हम और ले आएं तो वह भी किफायत न करे।" (सूरह कहफ आयत १०६)

सूरह लुकमान में इरशाद मुबारक है :

﴿وَلَوْ أَنَّمَا فِي الْأَرْضِ مِن شَجَرَةٍ أَقْلَامٌ وَالْبَحْرُ يَمُدُّهُ مِن بَعْدِهِ سَبْعَةُ أَبْحُرٍ مَّا نَفِدَتْ كَلِمَاتُ اللَّهِ﴾ (٣١:٢٧)

तर्जुमा : "ज़मीन में जितने पेड़ हैं अगर वे सब कुलम बन जाएं और समुन्द्र रोशनाई बन जाए जिसे सात मज़ीद समुन्द्र रोशनाई उपलब्ध करें तब भी अल्लाह के कलिमात खतम नहीं होंगे।"

(सूरह लुकमान, आयत २७)

इन दोनों आयतों में कलिमात से मुराद अल्लाह तआला की सिफात हैं। इन आयात की रू से हरगिज़ यह तअज्जुब नहीं होना चाहिए कि क्या वाकई अल्लाह तआला की सिफात इतनी असीमित हो सकती हैं कि इन दुनिया के सारे पेड़ों की कलमें और समुन्द्रों की रोशनाई मिलकर भी उनको तहरीर में नहीं ला सकती।

हम यहां मिसाल के तौर पर सिर्फ एक सिफत का उल्लेख कर रहे हैं। उससे दूसरी सिफात पर कयास करके यह अंदाज़ा लगाया जा सकता है कि कुरआन मजीद के इरशादात कितनी हकीकत पर आधारित हैं। अल्लाह तआला की एक सिफत 'समीअ' है जिसका मतलब है हमेशा सुनने वाला, गौर फरमाइए अल्लाह तआला कुछ दिनों या कुछ महीनों या कुछ सालों से नहीं बल्कि हज़ारों साल से एक साथ लाखों नहीं अरबों इंसानों की दुआएं, फरियादें, सरगोशियां और गुफतगू सुन रहा है और अल्लाह तआला को अपने बन्दों की दुआ और पुकार सुनने और हर व्यक्ति के बारे में अलग अलग फैसले करने में कभी कोई पेरशानी या दुश्वारी पेश नहीं आई न ही कभी थकान हुई है। दौराने हज ज़रा मैदाने अरफात की कल्पना कीजिए जहां पद्रंह बीस लाख अफराद का साथ मुसलसल अपने खालिक के सामने फरियाद व-पुकार और मुनाजात से

वकिफ होता है। हर व्यक्ति के दिलों के राज़ों से आगाह होता है न उससे भूल चूक होती है, न जुल्म और ज़्यादती होती है, न कोई पेरशानी और मुश्किल पेश आती है और फिर यह कि उस वक्त भी अल्लाह तआला मैदाने अरफात के अलावा बाकी सारी दुनिया के अरबों इंसानों की गुफ्तगू, दुआ, पुकार फरियाद वगैहर सुन रहा होता है।

यह सारा मामला तो कायनात में बसने वाली सिर्फ एक प्राणी "इंसान" का है। ऐसा ही मामला जिन्नात का है, जो इंसानों की तरह अल्लाह तआला की इबादत और बन्दगी के पाबन्द हैं। न मालूम कितनी तादाद में जिननत एक साथ अल्लाह तआला के सामने फरियाद व विनती में व्यस्त रहते हैं जिन्हें अल्लाह करीम सुन रहा है और उनकी हाजतें और मुरादें पूरी फरमा रहा है। जिन्न व इंसान के अलावा अल्लाह तआला की एक और सृष्टि 'मलाइका' है जो मुसलसल अल्लाह तआला की तस्बीह व तमहीद ओर तकदीस में व्यस्त है। उसे भी अल्लाह तआला सुन रहा है।

जिन्न व इंसान और मलाइका के अलावा खुश्की में बसने वाली दीगर असंख्य सृष्टि जिनकी तादाद सिर्फ अल्लाह तआला ही जानता है-१ वे सब की सब अल्लाह तआला की हम्द व सना और तहमीद व तक्दीस में व्यस्त हैं । जिसे वह सुन रहा है। इसी तरह समुन्द्रों और दरियाओं में बसने वाली और अन्तरिक्ष में उड़ने वाले असंख्य प्राणी उसकी मम्द व सना कर रहे हैं और अल्लाह तबारक व तआला की ज़ात बाबरकात उन सब में से एक एक की दुआ ओर मुकार सुन रही है।

ज़िन्दा सृष्टि के अलावा कायनात की दीगर चीज़ें जसे, पहाड़, पेड़,,

---

१. (तर्जुमाः "तेरे रब के लश्करों (की तादाद) को खुद उसके अलावा कोई नहीं जानता।" - सूरह मुद्दस्सिर, आयत ३१)

२. तर्जुमाः "सातों आसमान और ज़मीन और जो कुछ उनके बीच में है वह सब उसकी तस्बीह कर रहे हैं। कोई चीज़ ऐसी नहीं जो उसकी मम्द के साथ तस्बीह न कर रही हो मगर तुम लोग उनकी तस्बीह (का तरीका और ज़बान) नहीं समझते।" (सूरह बनी इसराईल, आयत ४४)

सूरज, चांद, सितारे, ज़मीन व आसमान, यहां तक कि कायनात का ज़र्रा ज़र्रा अल्लाह तआला की तस्बीह व महमीद में व्यस्त है।-२ जिसे अल्लाह तआला सुन रहा है, कहा जाता है कि हमारी इस न?दुनया के अलावा कायनात में और भी बहुत सी दुनियाएं हैं जिनमें दूसरी बहुत से प्राणी बसते हैं। अगर य सही है तो अल्लाह तआला उनकी भी दुआ व पुकार सुन रहा है, गौर फरमाइए इस कद्र लातादाद जानदार और गैर जानदार प्राणियों की दुआएं, फरियादें, तस्बीह व तहमीद और तक्दीस अल्लाह तआला एक साथ सुन रहा है और यह समाअत अल्लाह तआला को न थकाती है न दीगर कामों से गाफिल करती है न निज़ामे कायनात ही में कोई खलल पैदा होता है। (सुब्हानल्लाहि व बिहम्दिही सुब्हानल्लाहिल अज़ीम)-१

हकीकत यह है कि अल्लाह तआला की एक सिफत "समीअ" ही ऐसी है जिसे पूरी तरह समझना तो दूर की बात, कल्पना में लाना भी कठिन है। इसी एक सिफत से अल्लाह तआला की दीगर असीमित सिफांत जैसे मालिकुल मुल्क, खालिक, राज़िक, मुसव्विर, अज़ीज़, मुतकब्बिर, बसीर, खबीर, अलीम, हकीम, रहीम, करीम, अज़ीम, कय्यूम, गफूर, रहमान, कबीर, कवी, मुहिब्ब, रकीब, हमीद, समद, कादिर, अव्वल, आखिर, तव्वाब, रऊफ, गनी जुल जलाली वल इकराम वगैरह पर कयास कर लीजिए और फिर सूरह कहफ ओर सूरह लुकमान की उपरोक्त आयात पर गौर कीजिए कि अल्लाह करीम ने किस कद्र हक बात इरशाद फरमाई है। अल्लाह तआला की इन तमाम सिफात या इनमें से किसी एक सिफत में किसी दूसरे को शरीक समझना शिर्क फिस्सिफात कहलाती है।

---

१. लम्हा भर के लिए गौर कीजिए की इंसानी सुन्ने की ताकत का यह हाल है कि एक साथ दो आदमियों की बात सुन्ने पर कोई इंसान समर्थ नहीं। जो इंसान अपनी जिंदगी में होश के रहते एक साथ दो आदमियों की बात सुनने पर समर्थ नहीं मरने के काबद वह एक साथ सैकड़ों या हज़ारों आदमियों की फरियादें सुन्ने पर कैसे समर्थ हो सकते।

अकीदए तौहीद मानव जाति के लिए सबसे बड़ी रहमत है

कुरआन मजीद में अल्लाह तआला ने कलिमा तय्यिबा की मिसाल एक ऐसे पाकीज़ा पेड़ से दी है, जिसकी जड़ें ज़मीन में गहरी हों, शाखें आसमान की बुलन्दियों तक पहुची हों और जो मुसलसल बेहतरीन फल-फूल दिए चला जा रहा हो। इरशादे बारी तआला है:

﴿أَلَمْ تَرَ كَيْفَ ضَرَبَ اللّٰهُ مَثَلاً كَلِمَةً طَيِّبَةً كَشَجَرَةٍ طَيِّبَةٍ أَصْلُهَا ثَابِتٌ وَفَرْعُهَا فِي السَّمَاءِ ۝ تُؤْتِي أُكُلَهَا كُلَّ حِينٍ بِإِذْنِ رَبِّهَا﴾ (١٤:٢٤.٢٥)

तर्जुमा : "क्या तुम देखते नहीं हो कि अल्लाह तआला ने कलिमा तय्यिबा की मिसाल किस चीज़ से दी है ? उसकी मिसाल ऐसी है जैसे एक ज़ात का पेड़ जिसकी जड़ ज़मीन में गहरी जमी हुई है और शाखें आसमान तक पहंची हुई हैं। हर पल वह अपने रब के हुक्म से अपने फल दे रहा है। (सूरह इब्राहीम, आयत २४-२५)

कलिमा तय्यिबा की इस मिसाल से निम्न तीन बातें स्पष्ट होती हैं।:

१. इस पेड़ की बुनियाद बड़ी मज़बूत है ज़माने और वक्त के शदीद तुफान, आंधियां और ज़लज़ले भी इस पेड़ को उखाड़ नहीं सकते।

२. कलिमा तय्यिबा का पेड़ नशो व नुमा के एतेबार से अपना कोई सानी नहीं रखता। कलिमा तय्यिा एक ऐसी आलमगीर सच्चाई है जिसे कायनात के ज़र्रे ज़र्रे की ताईद हासिल होती है। उसके रास्ते में कोई रूकावट पेश नहीं आती। लिहाज़ा वह अपने भौतिक विकास में आसमान तक पहुच जाता है। यही बात रसूले अकरम सल्ल० ने एक हदीस में इस तरह स्पष्ट की कि : "जब इंसान सच्चे दिल से ला इला-ह इल्लल्लाहु का इकरार करता है तो उसके लिए आसमान के दरवाज़े खोल दिए जाते हैं यहां तक वह अर्शे इलाही की तरफ बढ़ता रहता है, बशर्ते कि कबीरा गुनाहों से बचा रहे। (तिर्मिज़ी)

३. कलिमा तय्यिबा का पेड़ अपने फलों और नताइज के एतेबार से

इस कद्र बाबरकत और कसीरूल फवाइल है कि उस पर कीाी खिज़ा नहीं आती। उसके फैज़ का सिसिला कभी खत्म नहीं होता बल्कि जिस ज़मीन (दिल) में वह जड़ पकड़ता है उसे हर ज़ामने में बेहतरीन फलों से फैज़याब करता रहता है। बिलाशुबह कलिमाए तौहीद अपने अन्दर इंसान की इंफिरादी और इज्तिमाई ज़िन्दगी के लिए बे पनाह फलों और ुवाइद रखता है और यूं यह अकीदा मानव जाति के िलए अल्लाह तआला की सबसे बड़ी रहमत है। यहं हम अकीदाए तौहीद की कुछ बरकात का उल्लेख करना चाहते हैं।

१. इस्तकामत और साबितकदमी

तागूती कुव्वतों के मुकाबले में अहले ईमान की इस्तकामत, अज़ीमत और साबितकदमी के कुछ वाकिआत मुलाहिज़ा फरमाएं:

१. हज़रत बिलाल रज़ि० उमैया बिन खल्फ जहमी के गुलाम थे। जब दोपहर की गर्मी शबाब पर होती तो मक्का के पथरीले कंकरों पर लिटाकर सीने पर भारी पत्थर रखकर कहता खुदा की कसम, तू इसी तरह पड़ा रहे याहं तक कि मर जाए या मुहम्मद सल्ल० के साथ कुफ्र करे। हज़रत बिलाल रज़ि० इस हालत में भी यही फरमाते अहद, अहद (अल्लाह तआला एक है, अल्लाह तआला एक है)।

२. हज़रत खब्बाब बिन अरत रज़ि० कबीला खिज़ाआ की एक और उम्मे अम्मार के गुलाम थे। उन्हें कई बार दहकते अंगारों पर लिटाकर ऊपर से पत्थर रख दिया गया। कि उठ न सकें, लेकिन तस्लीम व रज़ा का यह पैकर उस जुनूनी जुल्म व सितम के बावजूद अपने दीन व ईमान पर कायम रहा।

३. एक ज़ईफुल उम्र खातून, हजत्ररत सुमैया बिन्ते खबत रज़ि० को लोहे की ज़िरह पहना कर चिलचिलाती धूम में ज़मीन पर लिटा दिया जाता और कहा जाता कि मुहम्मद सल्ल० के दीन से इंकार करो। हज़रत सुमैया रज़ियल्लाहु अन्हा ने इसी जुल्म व सितम के नतीजे में अपनी जान अल्लाह के सुपुर्द कर दी, लेकिन राहे हक से लम्हा भर के लिए हटना

गवारा नहीं किया।

४. हज़रत हबीब बिन ज़ैद रज़ि० दौराने सफर झूठे मुद्दईए नुबूवत मुसैलमा कज़्ज़ाब के हाथ लग गा। मुसैलमा कज़्ज़ाब सहाबीए रसूल सल्लत्र हज़रत हबीब रज़ि० का एक एक बन्द काटता जाता और कहता कि मुझे रसूल मानो। हज़रत हबीब रज़ि० इंकार करते जाते इसी तरह सारे बदन के टुक्ड़े टुक्ड़े हो गए लेकिन वह पैकर सब्र व सबात अपने ईमान पर पहाड़ की सी मज़बूती के साथ जमा रहा।

तारीखे इसलाम के यह कुछ वाकिआत महज़ मिसल के तौरपर पेश किए गए हैं। वरना हकीकत यह है कि तारीखे इस्लाम का कोई दौर ऐसे वाकिआत से खाली नहीं राह । तारीख के तालिब इलम के लिए यह सवाल बड़ी अहमियत का हामिल है कि अहले ईमान ने इन नाकाबिले बयान ओर नकाबिले तसव्वुर मज़ालिम के मुाकबले में जिस हैरानकुन इस्तकामत ओर सबात का मुज़ाहिरा किया उसका असल सबब क्या था। इस सवाल का जवाब खुद अल्लाह तआला ने कुरआन मजीद में दिया है। सूरह इब्राहीम में कलिमा तय्यिबा की तमसील के फौरन बाद इरशाद बारी तआला है:

﴿يُثَبِّتُ اللّٰهُ الَّذِيْنَ آمَنُوْا بِالْقَوْلِ الثَّابِتِ فِى الْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَفِى الْآخِرَةِ﴾

तर्जुमा : "ईमान लाने वालों को अल्लाह तआला एक कौले साबित (कलिमा तय्यिबा) की बुनियाद पर दुनिया ओर आखिरत दोनों जगह सिबात अता करता है।" (सूरह इब्राहीम, आयत २७)

अर्थात यह अकीदाए तौहीद ही का फैज़ान है कि बातिल अकाइद व इफ्कार का तुफान हो या रंज व अलम की यूरिश, जाबिर ओर काहिर हुक्मरानों की सख्तियां हों या तागूती कुव्वतों का जुल्म व सितम, कोई चीज़ भी अहले तौहीद के पाए सिबत में रूकावट पैदा नहीं कर सकती।

उल्लिखित आयते करीमा में दुनिया के साथ साथ आखिरत में भी अहले तौहीद को सिबात की खुशखबरी दी गई है। आखिरत से यहां

मुराद कब्र है जैसा कि बुखारी शरीफ की हदीस में रसूले अकरम सल्ल० का इरशादे मुबारक है : तब मोमिन को कब्र में बिठाया जाता है तो उसके पास (सवाल व जवाब के लिए) फरिश्ता भेजा जाता है, जब मोमिन ला इला-ह इल्लल्लाहु मुहम्मदुर्रसुलुल्लाहि की गवाही देता है। यही मतलब है अल्लाह के फरमान का युसब्बितुल्लाहुल्लज़ी-न आमनू......(बुखारी)

अर्थात कब्र में मुंकर नकीर के सवालों के जवाब में सिबात भी इसी अकीदा तौहीद की बरकत से हासिल होगा।

२. इज़्ज़ते नफ्स और खुदी का तहफ्फुज़

शिर्क इंसानों को बे-शुमार काल्पनिक और वहमी कुव्वतों के खौफ में फंसा देता है। देवी और देवताओ का खौफ, मुज़ाहिर कुदरत का खौफ, भूत प्रेत और जिन्नात का खौफ, ज़िन्दा और मुर्दा इंसानों के आसतानों का खौफ, जाबिर और काहिर हुक्मरानों का खौफ, इसी खौफ के नतीजे में इंसान ऐसी नैतिक और मज़हबी गहराईयों में गिरता चला जाता है कि आदमियत और इंसानियत मुंह छिपाने लगती है। जबकि अकीदा तौहीद इंसानों को ऐसी तमाम वहमी और काल्पनिक कुव्वतों के खौफ से बेनियाज़ करके रूह और जिस्म को आज़ादी अता करता है। इंसान को इज़्ज़ते नफ्स और ऐहतेरामे आदमियत का एहसास दिलाता है। हर आन उसे व लकद कर्रमना बनी-आ-द-म (यानी हमने बनी आदम को बुज़ुर्गी अता फरमाई है) और लकद खलकनल इंसा-न फी अहसनि तकवीमि (यानी हमने इंसान को बेहतरी बनावट पर पैदा किया है) का फरमाने इलाही याद दिलाता है कि। यही अकीदा तौहीद इंसान को खुदी के बुलन्द मकाम पर ला खड़ा करता है। हकीमुल उम्मत अल्लामा इकबाल ने इसी नुक्ते की तर्जुमानी निम्न शेर में बड़े खूबसूरत अन्दाज़ में की है।

खुदी का सर्रे नहां ला इला-ह इल्लल्लाहु
खुदी है तेग फशां ला इला-ह इल्लल्लाह

३. समानता और सामूहिक न्याय

अकीदा तौहदी ही यह धारणा पेश करता है कि सारी सृष्टि का खालिक, राज़िक और मालिक सिर्फ अल्लाह वहदहू ला शरीक ही है, उसी ने आदम को मिट्टी से बनाया और बाकी तमाम इंसान आदम अलैहिस्सलाम से पैदा किए। चाहे कोई मश्रिक में है या मग्रिब में, अमेरीका में है या अफ्रीका में, काला है या गोरा, सफेद है यासुर्ख, अरबी है या अजमी सब एक ही आदम की औलाद हैं। सबके हुकूक यकसां हैं। सबकी इज़्ज़त और ऐहतराम समान हैं। कोई किसी को अपना दास न समझे, कोई किसी को अपना गुलाम न बनाए, कोई किसी पर जुल्म और ज़्यादती न करे, कोई किसी को हकीर और कमतर न जाने, कोई किसी का हक न मारे, सारी सृष्टि एक ही दर्जे के इंसान हैं। लिहाज़ा सारे इंसान सिर्फ एक ही माबूद के आगे झुकें। सिर्फ एक ही ज़ात के हुक्म के और कानून के आगे सर तसलीम खम करें। सिर्फ एक ही हस्ती के गुलाम और बन्दे बनकर रहें। अकीदा तौहीद की इसी तालीम ने इस्लामी समाज में ज़ात पात, गुलामी और निराशा, जुल्म और इस्तेहसाल, हिकारत और नफरत जैसे नकारात्मक मूल्यों को समाप्त करके मुहब्बत व भाई चारा, खुलूस व हमदर्दी, अम्न व सलामती और समानता व सामूहिम न्याय जैसे आला मुल्यों को मुस्लिम समाज में जारी व सारी कर दिया।

४. आध्यात्मिक शान्ति

शिर्क, कायनात कायनात का सबसे बड़ा झूठ है। इंसान की ज़ात और असा पास में मौजूद हज़ारों नहीं करोड़ों ऐसी स्पष्ट निशानियां और दलाइल मौजूद हैं जो शिर्क की तर्दीद तरते हैं यही वजह है कि मुश्रिक के सैद्धान्तिक और व्यवहारिक जीवन में पूरब और पश्चिम का फर्क पाया जाता हैं उसकी रूह हमेशा पेरशान और दिल व दिमाग इंतिशार का शिकार रहते हैं ?। वह मुसलसल सन्देहों व भ्रमों, बे-यकींनी और टूट-फूट की कैफियत से दो चार रहता है। जबकि अकीदा तौहीद इस कायनात की सबसे बड़ी आलमगीर सच्चाई है। इंसान की अपनी ज़ात के अंदर सैकड़ों नहीं करोड़ों निशानियां तौहीद

की गवाही देने के लिए मोजूद हैं। कायनात का ज़र्रा ज़र्रा अकीदाए तौहीद की तस्दीक और ताईद करता है।

अकीदा तौहीद इंसान की फितरत और स्वभाव के ऐन मुताबिक है या यूं कहिए पैदाइशी तौर पर इंसान को तौहीद परस्त पैदा किया गया है। खुद करआन मजीद में अल्लाह तआला इर्शाद फरमाता है:

﴿فَأَقِمْ وَجْهَكَ لِلدِّينِ حَنِيفًا فِطْرَةَ اللَّهِ الَّتِي فَطَرَ النَّاسَ عَلَيْهَا﴾(٣٠:٣٠)

तर्जुमा: "तो यकसू होकर अपना रूख दीने इस्लाम की तरफ जमा दो और कायम हो जाओं उस फितरत तौहीद पर जिस पर अल्लाह ने इंसानो को पैदा किया।" (सूरह रूम, आयत ३०)

चुनांचे अकीदा तौहीद पर ईमान रखने वाला व्यक्ति अपने सैद्धान्तिक और व्यवहारिक जीवन में कभी विभेद और सन्देहों का शिकार नहीं होता। उसके दिल व दिमाग कभी बे-यकीनी ओर परेशानी की कैफियत से दो चार नहीं होते। उसकी ज़िंदगी के हालात और मामलात चाहे कैसे ही क्यों न हों वह अपने अंदर सुकून, करार, यकीन और तस्लीम व रज़ा की कैफियत ही घड़ी महसूस करता है।

सत्य यह है कि अकीदा तौहीद की बरकात व फल इस कद्र हैं कि उनका शुमार करना मुमकिन नहीं। मुख्तसर यह कहा जा सकता है कि दुनिया में खैर भलाई और नेकी के तमाम स्रोत इसी चश्माए तौहीद से फूटते हैं। इस तहर अकीदाए तौहीद मानव जामि पर अल्लाह तआला का सबसे बड़ा एहसान और मुल्यवान नेमत है। जिससे फैज़याब होने वाले लोग ही दुनिया और आखिरत में कामयाब व कामरान हैं और महरूम रहने वाला नाकाम और नामुराद।

अकीदाए शिर्क मानव जाति के लिए सबसे बड़ी लानत है

अकीदा तौहीद अल्लाह तअला की तरफ से दिया गया अकीदा है। जिसे अल्लाह तआला ने अपने अम्बिया और रसूल के ज़रिए

लोगों तक पहुंचाया है। इस अकीदे की तालीमात पहले दिन से एक ही हैं। इनमें कभी कोई परीवर्तन और तब्दीली नहीं की गई जबकि अकीदा शिर्क शैतान का गढ़ा हुआ अकीदा है, जिसे वह मुखतलिफ ज़मानों, मुखतलिफ इलाकों और मुख्तलिफ कौमों के लिए अलग-अगल फलसफों के साथ गढ़ कर अपने चेले चाटों के ज़रीए लोगों तक पहुंचाता रहता है। कहीं यह बुतपरस्ती की शक्ल में परीचित होता है, तो कहीं कब्रपरस्ती की शक्ल में। कहीं नफ्स परस्ती की शक्ल में सामने आता है, तो कहीं तागूत परस्ती की शक्ल में। कहीं पीर परस्ती की शक्ल में जाना जाता है, तो कहीं अइम्मा परस्ती की शक्ल में, कहीं कौम परस्ती की शक्ल में मौजूद है तो कहीं वतन और रंग और नस्ल परस्ती की शक्ल में। ये सारी चीज़ें दर अस्ल एक ही खबीस पेड़ की मुख्तलिफ शाखें और पत्ते हैं। जिनकी बुनियाद शैतानी विचारों व अकाएद पर है। शैतान अपने इन्हीं विचारों को फैलाने के लिए कभी हिन्दूइज़्म का रूप इख्तियार करता है, कभी बुद्ध इज़्म का, कभी यहूदियत का लिबादा ओढ़ता है कभी ईसाइयत का, कहीं सरमायादारी के पर्दे में गुमराही और ज़लालत फैलाता है, कहीं कम्यूनिज़्म के पर्दे में कहीं सोशलिज़्म का प्रचारक बनकर यह खिदमत सर अंजाम देता है, कभी इस्लामी सोशीलिज़्म का मुबल्लिग बनकर, कहीं जमहूरियत का अलमबरदार बनकर और कहीं इस्लामी जमहूरियत-१ का खादिम बनकर, कहीं तसव्वुफ-२ के नाम पर और कहीं पर तशीअ के नाम

1. अगर एक काफिराना निज़ाम साशिलीज्म के साथ इस्लाम का शब्द लगाने से वह निज़ाम कुफ्र ही रहता है तो फिर एक दूसरे काफिराना निज़ाम, जमहूरियत के साथ इस्लामी का शब्द लगाने से वह कैसे इस्लामी हो जाएगा। यह फल्सफा हमारी नाकिस अक्ल से बाला तर है हमारे नज़दीक इस्लाम जहमूरियत के गैर इस्लामी होने के दलाइल सौ प्रतिशत वही हैं जो इस्लाम सोशीलिज़्म के गैर इस्लाम होने के हैं। कल कलां अगर काई शातिर इस्लामी शरमाया दारी या इसलामी यहूदियत या इस्लामकी ईयाइयत वगैरह का फल्सफा इजाद कर डाले तो क्या उसे भी कोबूल कर लिया जाएगा? आखिर इस्लामी तारीख़ में पहले से इस्तेमाल की गई किताब व सुन्नत से साबित शुदा इस्तलाहात निज़ामे खिलाफ या निज़ामे शुराइयत, से बचने की वजह क्या है? क्या हमारे मुस्लिम दानिशवर और मुफक्किरीन इस नुक्ते पर संजीदगी से गौर करना पसन्द फरमाएंगे?

२. सूफीवाद के बारे में विस्तृत नोट आइंदा पृष्टों में मुलाहिज़ा फरमाएं।

पर। दर अस्ल यह सब मकर व फरेब वे जाल हैं जो शैतान ने अल्लाह के बन्दों को सिराते मुस्तकीम से गुमराह करने के लिए फैला रखे हैं।

कुरआन मजीद में अल्लाह तआला ने अकीदाए शिर्क की मिसाल एक ऐसे खबीस पेड़ के साथ दी है जिसकी जड़े हैं न जिसे इस्तहकाम हासिल है। इर्शाद बारी तआला है–

﴿وَمَثَلُ كَلِمَةٍ خَبِيْثَةٍ كَشَجَرَةٍ خَبِيْثَةِ نِ اجْتُثَّتْ مِن فَوْقِ الأَرْضِ مَا لَهَا مِن قَرَار﴾

(٢٦:١٤)

तर्जुमा : "कलिमा खबीस (शिर्क) की मिसाल एक ऐसे बद ज़ात पेड़ की सी है जो ज़मीन की ऊपरी सतह से ही उखाड़ फेंका जाता है और उसके लिए कोई इस्तहकाम नहीं है।"

(सूरह इब्राहीम, आयत, २६)

उपरोक्त आयते करीमा से निम्न तीन बातें स्पष्ट होती हैं:

१. चूंकि कायनात की कोई चीज़ अकीदा शिर्क की ताईद नहीं करती, इसलिए इस शजरा खबीस की कहीं भी जड़ें नहीं बनने पाती और न ही उसे कहीं नशो व नुमा के लिए साज़गार माहौल मिल पाता है।

२. अगर कभी तागूती कुव्वतों सर परस्ती में यह पेड़ उग भी आए तो इसकी जड़ें ज़मीन की सिर्फ ऊपरी सतह तक ही रहती हैं जिसे शजराए तैयबा का मामूली सा झोंका भी आसानी के साथ जड़ से उखाड़ फेंकता है। इसलिए इसे कहीं करार और इस्तहकाम नसीब नहीं हो पाता।

३. शिर्क चूंकि खुद एक खबीस और बदज़ात पेड़ के मानिन्द है, लिहाज़ा उसके बर्ग व बार और फल फूल भी इसी तरह खबीस और बदज़ात हैं जो हर क्षण समाज में अपने ज़हर और बदबू फैलाते

रहते हैं।

उपरोक्त निकात के पेशे नज़र यह समझना कुछ मुश्किल नहीं कि दुनिया में शर और फसाद फिल अर्ज़ की तमाम मुख्तलिफ सूरतें मसलन कत्ल व गारत गरी, खूंरेज़ी, दहशतगर्दी, नस्ल कुशी, तफाखुर, लूट खसोट, हक तलफी, धोखा दही, जुल्म व सितम मआशी इस्तेहसाल बद अमनी वगैरह सबका बुनियादी सबब यही शजरा खबीसा यानी अकीदाए शिर्क है।

अगर एक नज़र वतन अज़ीज़ पर डाली जाए तो हमें यह कहने में कोई संकोच नहीं कि हमारे सियासी, मज़हबी, अखलाकी, सामाजिक, सरकारी और गैर सरकारी तमाम मामलात में बिगाड़ की अस्ल वजह यही शजराए खबीसा, अकीदाए शिर्क है इसलिए हमारे नज़दीक मुल्क के अन्दर इस वक्त तक कोई भी इस्लही या इंकलाबी जद्दो जहद सफल नहीं हो सकती जबतक लोगों की अकसरियत के शिर्किया अकाइद की इस्लाह न हो जाए।

किसी मर्ज़ का इलाज करने से कब्ल चूंकि उसके अस्बाब व कारण का खोज लगाना बहुत ज़रूरी है ताकि इस्लाह अहवाल के लिए सही सिम्त का ठीक-ठीक तअय्युन किया जा सके। लिहाज़ा हमने आइन्दा पृष्ठों (परिशिष्ठ) में अपनी नाकिस राय के मुताबिक उन अहम अस्बाब व कारणों का उल्लेख भी कर दिया जो हमारे समाज में अकीदा शिर्क के फैलाओ का कारण बन रहे हैं।

इस्लामी इंकलाब और अकीदाए तौहीद

इंकलाब का शब्द अपने अन्दर ज़बरदस्त आकर्षण और कशिश रखता है। यही वजह है कि दुनिया में जहां कहीं इस्लामी इंकलाब का नारा लगता है इस्लाम के मानने वालों की बेताब नज़रें फौरन उस तरफ उठ जाती हैं। आज कल वतन अज़ीज़ पाकिस्तान में इस्लामी इंकलाब, मुहम्मदी इंकलाब निज़ामें मुस्तफा, निफाज़े शरीअत और

निज़ामें खिलाफत जैसे दावों और नारों के साथ मुख्तलिफ विचार व विश्वास रखने वाली बेशुमार जताअतें, फिरके और गिरोह काम कर रहे हैं, लिहाज़ा किताब व सुन्नत की रोशनी में यह देखना अत्यन्त ज़रूरी है कि इस्लामी इंकलाब है क्या और इसकी तरजीहात क्या है?

रसूले अकरम सल्ल० अपनी बेअसत मुबारक के बाद तेरह साल तक मक्का मुकर्रमा में रहे। इस सारे समय में आपकी तमाम तर दावत सिर्फ एक ही कलिमा पर मुश्तमिल थी 'कुलू ला इला-ह इल्लल्लाहु तुफलिहु' तर्जुमा-"लोगों इला-ह इल्लल्लाहु कहो कामयाब हो जाओगे" इसके अलावा न तो नमाज़ रोज़े के मसाइल थे न ज़कात और हज के अहकाम, न ही दीगर मामिलात ज़िन्दगी की तफसीलात नाज़िल हुई थी। बस यही एक अकीदा तौहीद की दावत थी जिसे आप घर-घर गली-गली और मुहल्ले-मुहल्ले पहुंचा रहे थे। एक रोज़ रसूले अकरम सल्ल० हतीम (बैतुल्लाह शरीफ का वह हिस्सा जिस पर छत नहीं) में पढ़ रहे थे। उकबा बिन अबी मुईत ने आकर आप सल्ल० की गर्दन में कपड़ा डाल दिया और निहायत सख्ती के साथ गला घोंटना शुरू किया। हज़रत अबू बकर रज़ि० दौड़े दौड़े आय और उकबा को धक्का देकर हटाया और फरमाया 'अतकलुतू-न रजुलन अयं यकू-ल रब्बियल्लाहू' तर्जुमाः "क्या तुम लोग मुहम्मद सल्ल० को इसलिए कत्ल करना चाहते हो कि वह कहते हैं मेरा रब अल्लाह है।" हज़रत अबू बकर सिद्दीक रज़ि० के शब्दों से यह बात बिल्कुल स्पष्ट है कि आप सल्ल० की दावत के नतीजे में पैदा होने वाले टकरावो का अस्ल सबब अकीदाए तौहीद ही था।

एक मौके पर कुरैश मक्का ने रसूलुल्लाह सल्ल० के साथ इफहाम व तफहीम की मंशा से यह पेश कश की कि एक साल हम आपके माबूद की पूजा कर लिया करेंगे एक साल आप हमारे माबूदों की पूजा कर लिया करें। इस पेश कश के जवाब में अल्लाह तआलाने पूरी सूरह काफिरून नाज़िल फरमाई।

﴿قُلْ يَا أَيُّهَا الْكَافِرُونَ • لَا أَعْبُدُ مَا تَعْبُدُونَ • وَلَا أَنتُمْ عَابِدُونَ مَا أَعْبُدُ • وَلَا أَنَا عَابِدٌ مَّا عَبَدتُّمْ • وَلَا أَنتُمْ عَابِدُونَ مَا أَعْبُدُ • لَكُمْ دِينُكُمْ وَلِيَ دِينِ﴾

तर्जुमा: "ऐ नबी सल्ल० कहो, ऐ काफिरो! मैं उनकी इबादत नहीं करता जिनकी तुम इबादत करते हो और न तुम उसकी इबादत करने वाले हो जिसकी इबादत मैं करता हूं। और न मैं उनकी इबादत करने वाला हूं जिनकी इबादत तुमने की है, और न तुम उसकी इाबदत करने वाले हो जिसकी इबादत मैं करता हूं। तुम्हारे लिए तुम्हारा दीन और मेरे लिए मेरा दीन।"

(सूरह काफिरून आयत १-६)

कुफ्फारे मक्का की पेशकश और उसका जवाब दोनों इस बात की खुली दलील हैं कि फरीकैन में नुक्ताए इख्तिलाफ सिर्फ अकीदा तौहीद था जिस पर इफहाम व तफहीम के दो टूक इंकार कर दिया गया।

एक दूसरे मौके पर कुरैश मक्का का एक प्रतिनिधी मंडल जनाब अबू तालिब के पास आया और कहा कि आप अपने भतीजे (यानी हज़र मुहम्मद सल्ल०) से कहें कि वह हमें हमारे दीन पर छोड़ दें, हम उसको उसके दीन पर छोड़ देते हैं। रसूले अकरम सल्ल० ने यह बात सुनकर इर्शाद फरमाया : "अगर मैं तुम्हारे सामने एक ऐसी बात पेश करूं जिसके आप लोग कायल हो जाएं तो अरब के बादशाह बन जाओ और अजम तुम्हारे अधीन आ जाए तो फिर आप हज़रात की क्या राय होगी?" अबू जहल ने कहा, "अच्छा बताओ क्या बात है? तुम्हारे बाब की कसम ऐसी एक बात तो क्या दस बातें भी कहो तो हम मानने के लिए तैयार हैं।" आप सल्ल० ने फरमाया: "आप लोग ला इला-ह इल्लल्लाहु कहें और अल्लाह तआला के सिवा जो कुछ पूजते हैं उसे छोड़ दें" इस पर मुशिरकीन ने कहा "ऐ मुहम्मद सल्ल० तुम यह चाहते हो कि सारे माबूदों की जगह बस एक ही माबूद बना

डालें। वाकई तुम्हारे मामला बड़ा अजीब है।"

गौर फरमाईए रसूले अकरम सल्ल० की सरदाराने कुरैश से गुफतगू में जो बात विवाद का कारण थी वह थी सिर्फ कए माबूद का इकरार और बाकी तमाम माबूदों का इंकार इसके लिए सरदाराने कुरैश तैयार न हुए और आपसी विरोध और टकराओ का सिलसिला बदस्तूर जारी रहा।

मक्की ज़िन्दगी में बिला शुब्ह नमाज़, रोज़ा, हज, ज़कात हलाल व हराम, हुदूद, घरेलू मसाइल और दीगर एहकाम नाज़िल नहीं हुए थे। लेकिन यह हकीकत अपनी जगह मुसल्लम है कि मदनी ज़िन्दगी में इन अहकामात के नाज़िल होने के बाद भी फरीकैन में महाज़ आराई का अस्ल सबब मसाइल और अहकाम नहीं बल्कि अकीदाए तौहीद ही था।

तारीख इस्लाम की अव्वलीन खूनी घटना, गज़वा बद्र, में जब घमसान की जंग हो रही थी तो रसूले अकरम सल्ल० ने अल्लाह तआला के सामंने हाथ फैलाकर जो दुआ मांगी उसके शब्द काबिले गौर हैं: "ऐ अल्लाह! अगर आज यह गिरोह हलाक हो गया तो फिर कभी तेरी इबादत न होगी" इन शब्दों का भाव बड़ा स्पष्ट है कि कुरैश मक्का से मुसलमानों का यह सशस्त्र टकराओ सिर्फ इसलिए हो रहा था कि इबादत और बन्दगी सिर्फ एक अल्लाह तआला की होनी चाहिए।

मुश्रिकीन और मुसलमानों के दरमियान दूसरे बड़े सशस्त्र, गज़वा उहुद, के समापन पर अबू सुफियान जबले उहुद पर नमूदार हुआ और बुलन्द आवाज़ से कहा "क्या तुम में मुहम्मद सल्ल० हैं?" मुसलमानों की तरफ से कोई जवाब न आया तो फिर पूछा, "क्या तुम्हारे दरमिया अबू कहाफा के बेटे (हज़रत अबू बकर सिद्दीक) हैं? फिर खामूशी रही तो कहने लगा "क्या तुम में उमर रज़ि० हैं?" रसूले अकरम सल्ल० ने मसलिहतन सहाबा किराम रिज़ा० को जवाब देने से

मना फरमा दिया था चुनांचे अबू सुफियान ने कहा "चलो इन तीनों से निजात मिली" और नारा लगाया अअलू हुबुल यानी (हमारे माबूद) हुबुल का नाम बुलन्द हो। नबी अकरम सल्ल० के हुक्म पर सहाबा किराम ने जवाब दिया अल्लाह हु अअला व अजल (अल्लाह तआला ही बुलन्द और बुजुर्ग है) अबू सुफियान ने फिर कहा- लना उज़्ज़ा वला उज़्ज़ा लकुम (हमारे पास उज़्ज़ा (बुत का नाम) है) और तुम्हारे पास उज़्ज़ा नहीं। नबी सल्ल० के हुक्म पर सहाबा किराम रिज़वानुल्लाही अलैहिम अजमईन ने फिर जवाब दिया अल्लाहु मौलाना वला मौला लकुम (यानी अल्लाह तआला हमारा सरपरस्त हैं और तुम्हारा कोई सरपरस्त नहीं) ।

मारका उहुद के अन्त पर फरीकैन के दरमियान यह संवाद इस बात की स्पष्ट शहादत है कि दावत इस्लामी के आरम्भ में उपहास और झुठलाने के ज़रीए मुखालिफत का अस्ल सबब भी अकीदाए तौहीद था। इस मुखालिफत में आगे चलकर जुल्म व सितम के व्यापक तूफान की शक्ल इख्तियार की जब भी इसका सबब अकीदाए तौहीद था और अगर फरीकैन के दरमिया खूनी मारकों का मैदान गर्म हुआ तो उसका अस्ल सबब भी अकीदाए तौहीद था।

मुखालिफत, महाज़ आराई और खूनी मारकों का तवील सफर तै करने के बाद तारीख ने एक नया मोड़ मुड़ा, रमज़ान सन् ८ हिजरी में रसूले अकरम सल्ल० फातेह की हैसियत से मक्का मुअज़्ज़मा में दाखिल हुए। गोया २१ साल की मुसलसल कशमकश और जद्दोजहद के बाद आप सल्ल० को उस इंकलाब का संगेबुनियाद रखने का मौका हाथ आया जिसके लिए आप सल्ल० मबऊस किये गये थे। गौर तलब बात यह है कि हुकूमत और इकतदार मिलने के बाद वह कौन से इकदाम थे जिन पर आप सल्ल० ने किसी भी मसलिहत और हिम्मत की परवाह किए बगैर बिला ताखीर अमल फरमाया? वह इकदामात दर्जे ज़ैल थे।

१. मस्जिदुल हराम में दाखिल होते ही बैतुल्लाह शरीफ के इर्द गिर्द और छतों पर मौजूद ३६० बुतों को अपने दस्ते मुबारक से गिराया।

२. बैतुल्लाह शरीफ के अन्दर हज़रत इब्राहीम अलैहि० और हज़रत इस्माईल अलैहि० की तसावीर बनी हुई थीं उन्हें मिटाने का हुक्म दिया गया। एक लकड़ी की कबूतरी अन्दर रखी थी उसे खुद अपने दस्ते मुबारक से टुकड़े टुकड़े किया।

हज़रत बिलाल रज़ि० को हुक्म दिया कि बैतुल्लाह शरीफ की छत पर चढ़कर अल्लाह तआला की तकबीर और तौहीद की दावत (अज़ान) बुलन्द करो। याद रहे कि बैतुल्लाह शरीफ का छत के बगैर वाला हिस्सा, हतीम, की दीवार एक मीटर से ज़्यादा बुलन्द है मस्जिदुल हराम के अन्दर मौजूद मजमा आम को सुनवाने के लिए हतीम की की दीवार पर खड़े होकर अज़ान देना काफी था, लेकिन बैतुल्लाह शरीफ तकरीबन १६ मीटर बुलन्द व बाला विशाल इमारत, (जिस पर चढ़ने के लिए खुसूसी इन्तिज़ाम किया गया होगा) की छत से सदाए तौहीद बुलन्द करने का हुक्म दर अस्ल स्पष्ट और दो टूक फैसला था उस मुकदमे का जो फरीकैन के दरमियान विगत बीस इक्कीस साल से विवाद का कारण चला आ रहा था और अब यह बात तय कर दी गई थी कि कायतनात पर हाकिमियत और फरमारवाई का हक सिर्फ अल्लाह तआला ही का है। किबरियाई और अज़मत सिर्फ उसी के लिए है, इताअत और बन्दगी सिर्फ उसी की होगी, पूजा और परस्तीश के लायक सिर्फ उसी की ज़ात है, कारसाज़ और मुश्किल कुशा सिर्फ वही है, कोई देवी देवता, फरिश्ता या जिन् नबी या वली, उसकी सिफात इख्तियारात और हुकूक में ज़र्रा बराबर भागी दारी नहीं रखता।

४. फतह मक्का के बाद बेश्तर अरब कबाइल हथियार डाल चुके थे। जज़ीरतुल अरब की कयादत आप सल्ल० के हाथ में आ

चुकी थी। चुनांचे जहां आप सल्ल० ने बहैसियत सरबराह मुमलिकत इबादात, निकाह व तलाक, हलाल व हराम, किसास व हुदूद वगैरह के कवानीन नाफिज़ फरमाए। वहां पूरे जज़ीरतुल अरब में जहां कई मराकिज़ शिर्क कायम थे उन्हें मिसमार करने के लिए सहाबाए किराम रिज़वा० की जमाअतें रवाना फरमाईं। मसलन

१. कुरैश मक्का और बनू कनाना के बुत उज़्ज़ा के बुत कदा को मिस्मार करने के लिए हज़रत खालिद बिन वलीद रज़ि० को तीस सहाबा के साथ नखला (जगह का नाम) की तरफ रवाना फरमाया।

२. कबीला बनू हुज़ैल के बुत सुवाअ का माबद मिस्मार करने के लिए हज़रत अम्र बिन आस रज़ि० को रवाना फरमाया।

३. कबीला औस, खज़रज और गस्सान के बुत मनात का बुत कदा ध्वस्त करने के लिए हज़रत साअद बिन ज़ैद अशहली रज़ि० को बीस सहाबा के साथ कदीद (जगह का नाम) की तरफ रवाना फरमाया।

४. कबीला तय के बुत कलस का बुत कदा ध्वस्त करने के लिए हज़रत अली रज़ि० को १५० सवारों का दस्ता देकर यमन रवाना फरमाया।

५. ताइफ से बनू सकीफ कबूले इस्लाम के लिए हाज़िर हुए तो उनका बुत लात मिस्मार करने के लिए प्रतिनिधिमण्डल के साथ ही हज़रत खालिद बिन वलीद रज़ि० की क्यादत में एक दस्ता रवाना फरमाया।

६. हज़रत अली रज़ि० का पूरे जज़ीरतुल अरब में यह मिशन देकर भेजा कि जहां कहीं कोई तस्वीर नज़र आए उसे मिटादो और जहां कहीं ऊंची कब्र नज़र आए उसे बराबर कर दो।

उपरोक्त इकदामात इस बात की स्पष्ट निशान्देही करते हैं कि मक्की दौर हो या मदनी आप सल्ल० की तमामतर जद्दो जहद का

मरकज़ और केन्द्र अकीदाए तौहीद की इशाअत और शिर्क का इस्तहसाल था।

एक नज़र इस्लामी इबादत पर डाली जाए तो पता यह चलता है कि तमाम इबादत की रूह दर अस्ल अकीदाए तौहीद ही है। रोज़ाना पांच मरतबा हर नमाज़ से कब्ल अज़ान बुलन्द करने का हुक्म है जो तकबीर और तौहीद की तकरार के खूबसूरत कलिमात का इन्तिहाई प्रभावी मज़मूआ है। वुजू के बाद कलिता तौहीद पढ़ने पर जन्नत की बशारत दी गई है। इबतिदाई नमाज़ और दौराने नमाज़ में बार-बार कलिमा तकबीर पुकारा जाता है। सूरह फातिहा हो हर रकअत के लिए लाज़िम करार दिया गया है जो कि तौहीद की मुकम्मल दावत पर मुश्तमिल सूरह है रूकूअ और सूजूद में अल्लाह तआला की अज़मत और बुलन्दी का बार-बार दोहराया और इकरार किया जाता है और अकीदा तौहीद की गवाही दी जाती है गोया शुरू से लेकर आखिर तक सारी नमाज़ अकीदाए तौहीद की तालीम और तज़कीर पर मुश्तमिल है। मर्कज़ तौहीद "बैतुल्लाह शरीफ" के साथ विशेष इबादत हज या उमरा पर एक नज़र डालिए, अहराम बांधने के साथ ही अकीदा तौहीद के इकरार और शिर्क की नफी पर मुशतमिल तल्यिा "लब्बैक अल्लाहुम्म लब्बैक, लब्बैक ला शरी-क ल-क लब्बैक, इन्नल हम-द वन नैम-त ल-क वल मुल्क ला शरी-क ल-क' (तर्जुमा, मैं हाज़िर हूं ऐे अल्लाह मैं हाज़िर हूं तेरा कोई शरीक नहीं मैं तेरी बारगाह में हाज़ि हूं। बेशक तारीफ तेरे ही लायक है सारी नेमतें तेरी दी हुई हैं और मुल्क तेरा ही है और तेरा कोई शरीक नहीं) पुकारने का हुक्म है। मिना, मुज़दल्फा और अरफात हर जगह अल्लाह तआला की तौहीद तकबीर, तहलील, तकदीस और तहमीद पर मुश्तमिल कलिमात मुसलसल पढ़ते रहने को ही हज मबरूर कहा गया है गोया यह सारी की सारी इबादत मुसलमानों को अकीदाए तौहीद में मुख्ता करने की ज़बरदस्त तरबियत है।

रसूले अकरम सल्ल० अपने उसवाए हसना के ज़रिए उम्मत को कदम-कदम पर जिस तरह अकीदाए तौहीद के तहफ्फुज़ की तालीम दी, उसे भी पेशे नज़र रखना ज़रूरी है, कुछ मिसालें मुलाहिज़ा हों।

एक आदमी ने दौराने गुफतगू अर्ज़ किया, "जो अल्लाह तआला चाहे और जो आप चाहें" रसूलुल्लाह सल्ल० ने फरमाया, "क्या तूने मुझे अल्लाह तआला का शरीक बना लिया है।" (मुस्नद अहमद) एक आदमी ने आप से बारिश की दुआ करवानी चाही और साथ अर्ज़ किया, "हम अल्लाह तआला को आपके यहां और आपको अल्लाह तआला के यहां सिफारिश बनाते हैं।" आप सल्ल० के चेहरे का रंग बदलने लगा और फरमाया, "अफसोस तुझे मालूम नहीं अल्लाह तआला की शान कितनी बुलन्द है उसे किसी के सामने सिफारिशी नहीं बनाया जा सकता।" (अबू दाऊद) कुछ सहाबा किसी मुनाफिक के शर से बचने के लिए रसूलुल्लाह सल्ल० से फरियाद करने हाज़िर हुए। आपने इरशाद फरमाया "देखो मुझसे फरियाद नहीं की जा सकती बल्कि सिफ अललाह तआला की ज़ात से ही फरियाद की जा सकती है।" (तबरानी) १० हि० में रसूले अकरम सल्ल० के साहबज़ादे हज़रत इब्राहीम रज़ि० का इंतकाल हुआ तो उसी रोज़ सूरज ग्रहण लग गया, कुछ लोगों ने उसे हज़रत इब्राहीम की वफात की तरफ मंसूब किया। आप सल्ल० को मालूम हुआ तो इरशाद फरमाया : "लागो! सूरज और चांद अल्लाह तआला की निशानियों में से दो निशानियों हैं उन्हें किसी की मौत और ज़िंदगी की वजह से ग्रहण नहीं लगता, लिहाज़ा जब ग्रहण लगे तो अल्लाह तआला से दुआ करो और नमाज़ पढ़ो यहां तक कि ग्रहण खत्म हो जाए।" (सही मुस्लिम) यह बात इरशाद फरमाकर आप सल्ल० ने इस मुशिरकाना अकीदे की जड़ काट दी कि नज़्मे कायनात पर क़ोई नबी, वली या बुज़ुर्ग असर अंदाज़ हो सकता है या उमूरे कायना त चलाने में अल्लाह तआला के सिवा किसी दूसरे का भी अमल व दखल हो सकता है।

एक मौके पर रसूले अकरम सल्ल० ने सहाबा किराम

रिज़वानुल्लाहि अलैहिम अजमईन को य नसीहत फरमाईः "मेरी तारीफ में इस तरह मुबालिगा न करो जिस तरह ईसाइयों ने हज़रत ईसा अलैहि० के बारे में किया । बेशक मैं एक बन्दा हूं लिहाज़ा मुझे अल्लाह तआला का बन्दा और उसका रसूल ही कहो।" (बुखारी और मुस्लिम) एक हदीस में इरशाद मुबारक है, "अफज़ल तरीन ज़िक्र ला इला-ह इल्लल्लाहु है (तिर्मिज़ी) अफज़लतरीन ज़िक्र में मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्ल० के शब्द शामिल न करके आप सल्ल० ने गोया उम्मत को यह तालीम दी कि अल्लाह ताला की वहदानियत, किबरियाई और अज़्मत में कोई दूसरा तो क्या नबी भी शरीक नहीं हो सकता।

आखिर में एक नज़र रसूले अकरम सल्ल० की हयाते तय्यिबा के बीमारी के दिनों पर भी डाल लीजिए। बीमारी की हालत में आप सल्ल० ने मुसलमानों को जो नसीहत की उसकी एहमियत मुहताज वज़ाहत नहीं। वफाते अकदस से पांच दनि पहले बुखार से कुछ इफाका महसूस हुआ तो मस्जिद तशरीफ लाए। सर मुबारक पर पट्टी बंधी हुई थी। मिम्बर पर जलवा अफरोज़ होकर खुत्बा इरशाद फरमाया अल्लाह तआला की हम्द व सना के बाद इरशाद फरमाया : "यहूद व नसारा पर अल्लाह तआला की लानत हो कि उन्होंने अपाने अंबिया की कब्रों को मस्जिद बना लिया।" (सही बुखारी) बीमारी के दिनों में ही अपनी उम्मत को जो दूसरी वसीयत इरशाद फरमाई वह यह थी कि "तु लोग मेरी कब्र को बुत न बनाना कि उसकी पूजा की जाए।" (मोता इमाम मालिक)... वफाते अकदस के आखिरी रोज़ आलमे नज़अ में आप सल्ल० के सामने प्याले में पानी रखा था आप सल्ल० दोनों हाथ पानी में डालकर चेहरे पर मलते और फरमाते 'ला इला-ह इल्लल्लाहु इन्न लिल मौति स-क-राति' तर्जुमाः अल्लाह तआला के सिवा कोई इलाह नहीं और मौत के लिए सख्तियां हैं (सही बुखारी) यही शब्द दोहराते दोहराते हयाते तय्यबा के आखिरी कलिमात 'अल्लाहुम्मगफिरली वरहमनी व अलहिकनी बिर्रफीकी'

तर्जुमाः "ऐ अल्लाह मुझे बख्श दे मुझ पर रहम फरमा और मुझे रफीके आला के साथ मिलादे।" तीन मर्तबा अदा फरमाए और रफीके आला के पास पहुंच गए-१ गोया आपकी जिंदगी के आखरी शब्द भी कलिमाए तौहीद पर मुश्तमिल थे।

सीरते तैय्यबा के यह तमाम सिलसिलेवार अहम वाकियात इस्लामी इंकलाब की गरज़ व गायत का ठीक-ठीक तअय्युन कर देते हैं और वह यह कि आप सल्ल० का बरपा किया हुए इंकलाब बुनियादी तौर पर अकीदे का इंकलाब था जिसके नतीजे में इंसानी ज़िन्दगी के बाकी तमाम गोशों मईशत, मुआशिरत, मज़हब, सियासत, अखलाक व किरदार में अज़ खुद इंकलाब आता चला गया। पस सही इस्लामी इंक़लाब सिर्फ वही होगा जिसकी बुनियाद खालिस अकीदाए तौहीद पर होगी। जिस इंकलाब की बुनियाद अकीदा तौहीद पर नहीं होगी वह इस्लामी, मुआशी, संअती, जमहूरी या सियासी हर तरह का इंकलाब हो सकता है इस्लामी इंकलाब हरगिज़ नहीं हो सकता।

पाठक गण! शिर्क से मुतअल्लिक कुछ दीगर अहम मज़ामीन भी दीबाचे में शामिल थे लेकिन तवालत की वजह से अलग परिशिष्ठ की शक्ल में शामिल इशाअत किए जा रहे हैं। इन मज़ामीन के मौजूआत दर्जे ज़ैल हैं:

१. शिर्क के बारे में कुछ अहम मुबाहिस।

२. मुश्रिकीन के दलाइल और उनका विश्लेषण

३. असबाबे शिर्क

परिशिष्ठ में कुछ मकामात पर औलिया किराम से मंसूब कुद करामात तहरीर की गई हैं उनके बारे में हम यह वज़ाहत करना ज़रूरी समझते हैं कि उल्लिखित करामात चूंकि औलिया किराम की

१. सीरते नबवी सल्ल० के उपरोक्त तमाम वाकियात की तफसील और हवालाजात के लिए मुलाहिज़ा हो अर्रहिकुल मख्तूम अज़ मौलाना सफीउर्रहमान मुबारक पूरी

सीरत पर लिखी गई कुतुब में मौजूद हैं, लिहाज़ा हमने उनका हस्बे मौका हवाला दे दिया है ताहम उनकी सेहत या अदम सेहत तमामतर ज़िम्मेदारी उन कुतुब के मुसन्नेफीन पर हैं जिन्हों ने यह करामात अपनी कुतुब में लिखी हैं। उल्लिखित करामात चूंकि खिलाफे सुन्नत हैं इसलिए हमारा अच्छा गुमान यही है कि यह करामात औलिया किराम से गलत तौर पर मंसूब की गई हैं। वल्लाहु आलम बिस्सवाब।

मौजू की अहमियत के पेशे नज़र किताब में तौहीद से मुतअल्लिक तीन अध्याय (तौहीद ज़ात, तौहीद इबादत और तौहीद सिफात) में इस बात का एहतमाम किया गया है कि हर मसले के तहत हदीस से कब्ल कुरआन मजीद की आयत दे दी गई है। उम्मीद है इंशाअल्लाह इस तरह मसाइल को समझने और ज़ेहन नशीन करने में पाठक गण ज़्यादा आसानी महसूस करेंगे।

इस बार हमने यह एहतमाम भी किया है कि सहीहैन (बुखारी शरीफ और मुस्लिम शरीफ) की अहादीस के अलावा बाकी अहादीस के दर्जे (सही या हिस्न) का ज़िक्र भी किया जाए। उम्मीद है कि इससे किताब की इफादियत में मज़ीद इज़ाफा होगा। इंशाअल्लाह कुछ अहादीस के आगे सही या हिस्न का दर्जा नहीं लिखा गया, यह वे अहादीस हैं जो सेहत के ऐतबार से काबिले कबूल हैं, लेकिन हिस्न के दर्जे को नहीं पहूंची।

सेहत हदीस के मामले में शैख मुहम्मद नासिरूद्दीन अलबानी की तहकीक से इस्तेफादा किया गया है ताकि अगर कहीं कोताही हो गई होतो उसकी निशान्देही पर हम ममनून एहसान होंगे।

किताब की नज़र सानी मोहतरम वालिद हाफिज़ मुहम्मद इदरीस कीलानी रह० और मोहतरम हाफिज़ सलाहुद्दीन यूसुफ साहब ने फरमाई। अल्लाह तआला दोनों हज़रात की सई जमीला को शरफे कोबूलियत अता फरमाकर दुनिया और आखिरत में अज्रे अज़ीम से नवाज़े। आमीन!

कुतुबुत्तौहीद की तकमील पर हम अपने रब के हुजूर सज्दा शुक्र बजा लाते हैं कि उसके फ़ज़्ल व करम के बगैर कोई नेक काम सर अंजाम नहीं पाता, उसकी तौफीक और इनाइयत के बगैर कोई नेक ख्वाहिश पूरी नहीं होती। उसके सहारे और मदद के बगैर कोई नेक इरादा पूर्ती तक नहीं पहुंचता। पस ऐ नेक इरादों और ख्वाहिशों को पूरा करने वाले, अपने रूखे अनवर के हलाल व जमाल के वास्ते से, अपनी अज़मत व किबरियाई के सदके से, अपनी लामहदूद सिफात के वसीले से हमारी यह हकीर जद्दोजहद अपनी बारगाहे समदी में कबूल फरमा।

ऐ इलाहुल अलमीन! हम तेरे निहायत आजिज़ हकीर गुनहगार और सियाकार बन्दे हैं। तेरा दामन अफ़ू व करम ज़मीन व आसमान की वुस्तअतों से भी वसीअतर है। तू इस किताब को शर्फे कुबूलियत अता फरमा और इसे हमारे वालिदेन अहूलो व अयाल और खुद हमारे लिए रहती दुनिया तक बेहतरीन सदका जारिया बना हमारी गुनाहों की मगफिरत और बखशिश का ज़रिया बना। हमें ज़िन्दगी और मौत के फितनों से बचा। अपने गज़ब और गुस्से से पनाह दे। बुरी तकदीर और बुरी मौत से महफूज़ रख। दाएं बाएं और आगे पीछे से हमारी हिफाज़त फरमा दुनिया व आखिरत में ज़िल्लत और रूसवाई से पनाह दे। मरते वक्त कलिमा तौहीद नसीब फरमा। कब्र में मुनकिर नकीर के सवाल व जवाब में साबित कदम रख अज़ाबे कब्र से बचा। हश्र व नशर की हौलनाकियों से पनाह दे, रसूले रहमत सल्ल० की शफाअत किबरी नसीब फरमा जहन्नम की आग से महफूज़ रख और जन्नत में रसूले अकरम सल्ल० की रिफाकत अता फरमा। आमीन।

मुहम्मद इकबाल कीलानी

परिशिष्ठ

शिर्क के बारे में कुछ अहम मुबाहिस

अकीदा तौहीद की वज़ाहत करते हुए हम यह लिख आए हैं कि अल्लाह तआला की ज़ात के साथ किसी को शरीक करना शिर्क फिज़्ज़ात, अल्लाह तआला की इबादत में किसी को शरीक करना शिर्क फिल इबादत, और अल्लाह तआला की सिफात में किसी को शरीक बनाना, शिर्क फिस्सिफात कहलाता है। शिर्क के मौज़ू पर मज़ीद गुफ्तगू करने से कब्ल निम्न मुबाहिस को पेशे नज़र रखना बहुत ज़रूरी है।

१. मुशिरकीन अल्लाह तआला को जानते और मानते थे

हर ज़माने के मुशिरक अल्लाह तआला को जानते और मानते हैं, यहां तक कि उसी का माबूदे आला और रब्बे अकबर (Grat Gog) तस्लीम करतें हैं और जो कुछ इस कायनात में है उन सबका खालिक, मालिक और राज़िक उसे ही समझते हैं। कायनात का मुदब्बिर और मुंतज़िम भी उसी को मानते हैं जैसा कि सूरह यूनुस की निम्न आयत से मालूम होता है:

﴿قُلْ مَن يَرْزُقُكُم مِّنَ السَّمَاءِ وَالأَرْضِ أَمَّنْ يَّمْلِكُ السَّمْعَ وَالأَبْصَارَ وَمَن يُّخْرِجُ الْحَيَّ مِنَ الْمَيِّتِ وَيُخْرِجُ الْمَيِّتَ مِنَ الْحَيِّ وَمَن يُدَبِّرُ الأَمْرَ فَسَيَقُولُونَ اللّٰه﴾ (١٠:٣٨)

तर्जुमा: "इनसे पूछो कौन तुमको आसमान और ज़मीन से रिज़्क देता है यह समाअत और बीनाई की कुव्वतें किसके इख्तियार में हैं? कौन बे-जान में से जानदार को और जानदार में से बेजान को निकालता है। कौन इस निज़ामे आलम की तदबीर कर रहा है? वे ज़रूर कहेंगे, "अल्लाह।" (सूरह यूनुस, आयत ३०)

﴿فَإِذَا رَكِبُوا فِي الْفُلْكِ دَعَوُا اللّٰهَ مُخْلِصِينَ لَهُ الدِّينَ فَلَمَّا نَجَّاهُمْ إِلَى الْبَرِّ

إِذَا هُمْ يُشْرِكُونَ﴾ (٦٥:٢٩)

तर्जुमाः "जब ये लोग कश्ती पर सवार होते हैं तो अपने दीन को अल्लाह तआला के लिए खालिस करके उससे दुआ मागते हैं। फिर जब वह उन्हें बचाकर खुशकी पर ले आता है तो यकायक शिर्क करने लगते हैं।" (सूरह अनकबूत, आयत ६५)-१ इस आयत से यह भी मालूम होता है कि मुशिरक न सिर्फ अल्लाह तआला को कायनात का मालिक और मुदब्बिर तस्लीम करते थे बल्कि मुश्किल कुशाई और हाजत रवाई के लिए उसी की बारगाह को आखिरी और बड़ी बारगाह समझते थे।

२. मुशिरकीन अपने उपास्यों के इख्तियारात खुदाई समझते थे

मुशिरक जिन्हें अपना मुश्किलकुशा और हाजतरवा समझते थे, उनके इख्तियारात को ज़ाती नहीं बल्कि अल्लाह तआला की तरफ से अता करदा समझते थे। दौराने हज मुशिरकीन जो तल्बिया पढ़ते थे उससे मुशिरकीन के इस अकीदे पर रोशनी पड़ती है जिसके शब्द यह थे।

﴿لَبَّيْكَ لَا شَرِيْكَ لَكَ لَبَّيْكَ إِلَّا شَرِيْكًا هُوَ لَكَ تَمْلِكُه وَمَا مَلَكَ﴾

तर्जुमाः "ऐ अल्लाह मैं हाज़िर हूं तेरा कोई शरीक नहीं मगर एक तेरा शरीक है जिसका तू ही मालिक है और वह किसी चीज़ का मालिक नहीं।" तल्बिया के इन शब्दों से निम्न बातें बिल्कुल स्पष्ट हैं।

१. मुशिरक अल्लाह तआला को रब्बे अकबर या खुदाए खुदावंद (Great God) मानते थे।

२. मुशरिक अपने ठहराए हुए शुरका (खुदाओं और माबूदों) का मालिक और खालिक भी रब्बे अकबर को ही समझते थे।

३. मुशरिक यह अकीदा रखते थे कि उनके ठहराए हुए शुरका ज़ाती हैसियत में किसी चीज़ के मालिक व मुख्तार नहीं बल्कि उनके इख्तिरयारात अल्लाह तआला की तरफ से अता करदा हैं जिननसे वे

---

१. इस विषय की कुछ दूसरी आयतें यह हैं: (२९:६१-६३), (३१:२५), (३९:३८), (४३:८७)

अपने पैरोकारों की मुश्किल कुशाई और हाजतरवाई करते हैं।

याद रहे मुश्रिकीन के तल्बिया से ज़ाहिर होने वाले इस अकीदे को रसूले अकरम सल्ल० ने शिर्क करार दिया है।

३. कुरआन मजीद की इस्तलाह 'मिन दूनिल्लाह' से क्या मुराद है?

मुश्रिकीन में पाए जाने वाले मुख्तलिफ अकाइद में से एक अकीदा यह भी है कि कायनात की हर चीज़ में खुदा मौजूद है या कायनात की मुख्तलिफ अशया दरअस्ल खुदा की कुव्वत और ताकत के मुख्तलिफ रूप और मज़ाहिर हैं इस अकीदे को सबसे ज़्यादा लोकप्रियता मुश्रिकीन के कदीम तरीन मज़हम "हिन्दू मत" में हासिल हुई जिनके यहां सूरज, चांद, सितारे आग, पानी, हवा, सांप, हाथी, गया, बन्दर, ईट, पत्थर, पौधे और पेड़ गोया हर चीज़ खुदा ही का रूप है जो पूजा और परस्तिश के काबिल है। इस अकीदे के तहत मुश्रिकीन अपने हाथों से पत्थरों के ख़्याली खूबसूरत मुजस्समे और बुत तराश्ते हैं फिर उनकी पूजा और परस्तिश करते हैं और उन्हीं को अपना मुश्किलकुशा और हाजतरवा माने तें। कुछ मुश्रिक पत्थरों को तराशते और कोई शक्ल दिए बगैर कुदरती शक्ल में उसे नहला धुलाकर फूल वगैरह पहनाकर उसके आगे सज्दा में गिर जाते हैं और उससे दुआएं फरियादें करने लगते हैं। इस किस्म तमाम तराशीदा या गैर तराशीदा बुत, मुजस्समें, मुर्तियां और पत्थर वगैरह कुरआन मजीद की इस्तलाह में "मिन दुनिल्लाह"-१ कहलाते हैं।

मुश्रिकीन में बुतपरस्ती की वजह एक दूसरा अकीदा भी थ जिसका उल्लेख इमाम इब्ने कसीर रह० ने सूरह नूह की आयत नम्बर २३ की तफसीर में किया है-२ और वह यह कि हज़रत आदम अलैहिस्सलाम की

---

१. मिन दुनिल्लाह का मतलब है अल्लाह तआला के सिवा दूसरे जिनकी पूजा और परस्तिश की जाती है वह "दूसरे" कौन कौन हैं? इन पंक्तियों में इसकी वज़ाहत की गई है।

२. तर्जुमा: और उन्होंने कहा हरगिज़ न छोड़ो अपने माबूदों को और न छोड़ो वुद और सुवाअ को और न यगूस, यऊक और नम्र को। (सूरह नूह आयत २३)

औलाद में से एक सालेह और वलीयुल्लाह मुसलमान मर गया तो उसके अकीदतमंद रोने और पीटने लगे। सदमा से निढाल उसकी कब्र पर आकर बैठ गए। इबलीस उनके पास इंसानी शक्ल में आया और कहा कि इस बुजुर्ग के नाम की यादगार क्यों कायम नहीं कर लेते ताकि हर वक्त तुम्हारे सामने रहे और तुम उसे भूलने न पाओ। इस नेक और सालेह बन्दे के अकीदत मन्दों ने यह तजवीज़ पसन्द की तो इबलीस ने खुदही इस बुजुर्ग की तस्वीर बनाकर उन्हें मुहैय्या कर दी। जिसे देख कर वे लोग अपने बुजुर्ग की याद ताज़ा करते और उसकी इबादत और जुहद के किस्से आपस में बयान करते रहते। इसके बाद दोबारा इबलीस उनके पास आया और कहा कि आप सब हज़रात को तकलीफ करके यहां आना पड़ता है, क्या मैं तुम सबको अलग अलग तस्वीरें न बनादूं ताकि तुम लोग अपने अपने घरों में उन्हें रख लो? अकीदत मन्दों ने इस तजवीज़ को भी पसन्द किया और इबलीस ने उन्हें इस बुजुर्ग की तस्वीरें या बुत अलग अगल मुहैय्या कर दिये जो उन्होंने अपने अपने घरों में रख लिए। इन अकीदत मन्दों ने यह तस्वीरें और बुत यादगार के तौर पर अपने पास महफूज़ रख लिए लेकिन उनकी दूसरी नस्ल ने आहिस्ता आहिस्ता उन तस्वीरों और बुतों की पूजा और परस्तिश शुरू कर दी। उस बुजुर्ग का नाम "वुद" था और यही पहला बुत था जिसकी दुनिया में अल्लाह तआला के सिवा पूजा और परस्तिश की गई। "वुद" के अलावा कौमे नूह दीगर जिन बुतों की पूजा करती थी उनके नाम सुवाअ, यगूस, यऊक, और नस्र थे। ये सब के सब अपने कौम के सालेह और नेक लोग थे। (बुखारी)

इस घटना से यह मालूम हुआ कि जहां कुछ मश्रिक पत्थरों के ख्याली बुत और मुजस्समें बनाकर उन्हें अपना माबूद बना लेते थे वहां कुछ मुश्रिक अपनी कौम के बुजुर्गों और वलियों के मुजस्समें और बुत बनाकर उन्हें भी अपना माबूद बना लेते थे। आज भी बुत परस्त अकवाम जहां फर्जी बुत तराश कर उनकी पूजा और परस्तिश करती हैं वहां अपनी कौम की अज़ीम और मुस्लह शख्सियतों के बुत और मुजस्समें तराश कर

उनकी पूजा और परस्तिश भी करती हैं। हिन्दू लोग "राम" उसकी मां "कौशल्या" उसकी बीवी "सीता" और उसके भाई "लक्षमण" के बुत तराशते हैं। "कृष्णा के साथ" उसकी मां "यशोधा" और उसकी बीवी "राधा" के बुत और मुर्तियां बनाई जाती हैं।-१ इसी तरह बौध मत् के पैरो कार "गौतम बुद्ध" का मुजस्समा और मूरत बनाते हैं। जैन मत् के पैरोकार स्वामी महावीर का बुत तराश्ते और उसकी पूजा पाठ करते हैं उनके नाम की नज़्र नियाज़ देते हैं। उनसे अपनी हाजतें और मुरादें तलब करते हैं। ये सारे नाम तारीख के फर्ज़ी नहीं बल्कि हकीकी किरदार हैं जिनके बुत तराशे जाते हैं ऐसे तमाम बुजुर्ग और उनके बुत भी कुरआन मजीद की इस्तलाह "मिन दुनिल्लाह" में शामिल हैं।

कुछ मुश्रिक लोग अपने वलियों और बुजुर्गों के बुत या मुजस्समें तराश्ने के बजाए उनकी कब्रों और मज़ारों के साथ बुतों जैसा मामला करते थे। मुश्रिकीन मक्का कौम के बुतों वुद, सवाअ, यगुस यऊक और नस्र के अलावा दूसरे जिन बुतों की पूजा और परस्तिश करते थे उनमें लात, मनात, उज़्ज़ा और हुबुल ज़्यादा मशहूर थे। उनमें से लात के बारे में इमाम इब्ने कसीर रह० ने कुरआन मजीद की आयत 'अ-फ-र अैतुमुल्ला-त वल उज़्ज़ा' तर्जुमा: "कभी तुमने लात और उज़्ज़ा की हकीकत पर भी गौर किया है? की तफसीर के तहत लिसखा है कि लात एक नेक व्यक्ति था जो मौसमें हज में हाजियों को सत्तू घोलकर पिलाया

१. यहां इस बात का उल्लेख दिलचस्पी से खाली नहीं होगा कि हिन्दुओं में दो मशहूर फिरके हैं सनातन धर्म और आर्य समाज। सनातन धर्म की मज़हबी कुतुब में चार वेद, ६ शास्त्र, १८ पुराण और १८ स्मृति शामिल हैं। इन कुतुब में ३३ करोड़ के बावजूद मुहिद होने का दावा रखता है। और चार वेदों के अलावा बाकी कुतुब को इस लिए नहीं तस्लीम करता कि उनमें शिर्क की तालीम दी गई है।

आर्य समाज फिर्के के एक मुबल्लिग राजा राम मोहन राय (१७७४ ई० से १८३३ ई०) में "तोहफुल मोहीदीन" एक किताब भी तस्नीफ की है जिस में बुत परस्ती की निन्दा और तौहीद की तारीफ की गई है। (हिन्दू धर्म की जदीद शख्सियतें अज़ मुहम्मद फारूक खां एम०ए०)

करताथा उसके देहान्त के बाद लोगों ने उसकी क़ब्र पर मुजाविरी शुरू कर दी और रफता रफता उसकी इबादत करने लगें पस व बुज़ुर्ग और औलिया किराम जिनकी क़ब्रों के साथ बुतों जैसा मामला किया जाए उन पर मुजाविरत की जाए, उनके नाम की नज़्र व न्याज़ की जाए। उनसे हाजतों और मुरादें तलब की जाएं, वही भी "मिन दुनिल्लाह" में इसीतरह शामिल हैं। जिस तरह वह बुत मिन दुनिल्लाह में शामिल हैं जिसकी पूजा और परस्तिश की जा़ती है।

हासिल बहस यह है कि कितब व सुन्नत की रू से मिन दुनिल्लाह से मुराद निम्न तीन चीज़ें हैं।

१. वह तमाम जानदार या गैर जानदार अशया जिन्हें खुदा का मज़हर या रूप समझ कर उनके सामने मरासिमें उबूदियत बजा लाए जाएं।

२. तारीख की वह अज़ीम शख्सियतें जिनके तराशिदा बुतों मुजस्समों और मुर्तियों के सामने मरासिमें उबूदियत बजा लाए जाएं।

३. औलिया किराम और उनकी क़ब्रों जहां मुख्तलिफ मरासिमे उबूदियत बजा लाए जाएं।

४. मुश्रिकीने अरब के मरासिमे उबूदियत क्या थे?

मुश्रिकीने अरब बुतकदों और खानकाहों अपने बुज़ुर्गो और औलिया किराम के बुतों के सामने जो मरासिमे उबूदियत बजा लाते थे उनमें दर्जे ज़ैल रसूम शामिल थी। बुत कदों में मुजाविर बनकर बैठना, बुतों से पनाह तलब करना, उन्हें ज़ोर ज़ोर से पुकारना, हाजत रवाई और मुश्किल कुशाई के लिए उनसे फरियादें और इल्तिजाएं करना। अल्लाह तआला के यहां उन्हें अपना सिफारिश समझकर मुरादें तलब करना। उनका हज और तवाफ करना, उनके सामने नज़्न व न्याज़ पेश करना, उन्हें सज्दा करना, उनके नाम के नज़राने और कुरबानियां देना, जानवरों को कभी बुत कदों

पर लेजाकर ज़ब्ह करना, कभी किसी भी जगह ज़ब्ह कर लेना।-१ यह तमाम रसूमात तब भी शिर्क थीं और अब भी शिर्क हैं।

५. कलिमा पढ़ने वाला भी मुशिरक हो सकता है

शिर्क करने वालें में से कुछ लोग तो ऐसे हैं जो रिसालत और आख़िरत पर ईमान नहीं रखते। मसलन रसूले अकरम सल्ल० के ज़ामने में कुरैश मक्का या हमारे ज़माने में हिन्दू मत के पैरोकार, उन्हें काफिर मुशिरक कहा जा सकता है। लेकिन कुछ लोग ऐसे भी हैं जो अल्लाह तआला, रिसालत और आखिरत पर ईमान रखने के बावजूद शिर्क करते हैं। यह ऐसी हकीकत है जिसकी गवाही खुद कुरआन मजीद ने दी है।

﴿الَّذِيْنَ آمَنُوا وَلَمْ يَلْبِسُوا إِيْمَانَهُمْ بِظُلْمٍ أُولَٰئِكَ لَهُمُ الْأَمْنُ وَهُمْ مُّهْتَدُونَ﴾ (٦:٨٢)

तर्जुमा: "(कयामत के रोज़) अम्न उन्ही के लिए है और राहेरास्त पर वही हैं जो ईमान लाए और अपने ईमान को जुल्म (शिर्क) के साथ आलूदा नहीं किया।" (सूरह अनआम, आयत ८२)

दसूरी जगह इरशाद बारी तआला है:

﴿وَمَا يُؤْمِنُ أَكْثَرُهُمْ بِاللَّهِ إِلَّا وَهُمْ مُّشْرِكُونَ﴾ (١٢:١٠٦)

तर्जुमा: "लोगों में से अकसर ऐसे हैं जो अल्लाह तआला परईमान लाने के बावजूद मुशिरक हैं।" (सूरह यूसुफ, आयत १०६) दोनों आयतों से यह बात वाज़ेह है कि कुछ लोग कलिमा पढ़ने रिसालत और आखिरत पर ईमान लाने के बावजूद शिर्क में मुबतिला होते हैं ऐसे लोगों को कलिमा पढ़ने वाला मुशिरक कहा जा सकता है।

६. शिर्क की किस्में

शिर्क की दो किस्में हैं, शिर्क अकबर और शिर्क असगर। अल्लाह

१. मुलाहिज़ा हो अर्रहिकुल मखतूम अज़ मौलाना सफीउर्रहमान मुबारक पूरी, सफहा-४८-४६

तआला की ज़ात इबादत और सिफात में किसी दूसरे को शरीक करना शिर्क अकबर कहलाता है। शिर्क अकबर का मुर्तकिब दाएरा इस्लाम से खारिज हो जाता है और उसकी सज़ा हमेशा हमेशा के लिए जहन्नम है। जैसा कि सूरह तौबा की निम्न आयत में है।

﴿وَمَا كَانَ لِلْمُشْرِكِينَ أَنْ يَعْمُرُوا مَسَاجِدَ اللّٰهِ شَاهِدِينَ عَلَى أَنْفُسِهِمْ بِالْكُفْرِ أُولَئِكَ حَبِطَتْ أَعْمَالُهُمْ وَفِي النَّارِ هُمْ خَالِدُونَ﴾ (۹:۱۷)

तर्जुमाः "मुश्रिकीन का यह काम नहीं कि वह अल्लाह तआला की मस्जिदों को आबाद करें। इस हाल में कि वह अपने ऊपर खुद कुफ्र की शहादत दे रहे हैं। उनके तो सारे आमाल ज़ाया हो गए। और उन्हें जहन्नम में हमेशा रहना है।" (सूरह तौबा, आयत १७)

शिर्के अकबर के अलावा कुछ ऐसे दीगर उमूर जिनके लिए अहादीस में शिर्क का शब्द इस्तेमाल हुआ है। मसलन रिया या गैरूल्लाह की कसम खाना वगैरह यह शिर्के असगर कहलाते हैं। शिर्के असगर का मुर्तकिब दाएरा इस्लाम से खारिज तो नहीं होता अलबत्ता गुनाह कबीरा का मुर्तकिब होता है। कबीरा गुनाह की सज़ा जहन्नम है जब तक अल्लाह तआला चाहे। शिर्क असगर से तौबा न करना शिर्क अकबर का बाइस बन सकता है।

याद रहे शिर्क खफी से मुराद हल्का या खफीफ शिर्क नहीं बल्कि मख्फी शिर्क है जो किसी इंसान के अन्दर छूपी हुई कैफियत का नाम है यह शिर्क अकबर ही होता है जैसा कि मुनाफिक का शिर्क और शिर्क असगर भी हो सकता है जैसा कि रियाकार का शिर्क है।

मुश्रिकीन के दलायल और उनका विश्लेषण

कुरआन मजीद की रू से मुश्रिकीन, शिर्क के हक में तीन किस्म के दलाइल रखते हैं। यहां तीनों दलाइल का अलग-अलग विश्लेषण पेश कर रहे हैं:

पहली दलील और उसका विश्लेषण

इससे पहले यह बात लिखी जा चुकी है कि मशिरकीन अल्लाह तआला को अपना रब्बे अकबर, माबूदे आला और खुदाए खुदावन्दी (Great God) तस्लीम करते हैं। उसे अपना खालिक और मालिक समझते हैं जान पे बन जाए तो खालिसन उसी को पुकारते भी हैं, लेकिन इसी के साथ यह अकीदा भी रखते हैं कि औलिया किराम चुंकि अल्लाह तआला के यहां बुलन्द मर्तबा होते हैं। अल्लाह के महबूब और प्यारे होते हैं। लिहाज़ा अल्लाह तआला ने अपने इख्तियारात में से कुछ इख्तियारात उन्हें भी दे रखे हैं। इस लिए उनसे भी मुरादें मांगी जा सकती हैं, उनसे भी हाजत और मदद तलब की जा सकती हैं, वह भी तकदीर बना और संवार सकते हैं। दुआ और फरियाद सुन सकते हैं। अल्लाह तआला ने कुरआन मजीद में मुश्रिकीन के उस अकीदे का उल्लेख इन शब्दों में किया है।

﴿وَاتَّخَذُوا مِن دُونِ اللَّهِ آلِهَةً لَعَلَّهُمْ يُنصَرُونَ﴾ (٣٦:٧٤)

तर्जुमाः "मुश्रिकों ने अल्लाह तआला के सिवा दूसरे इलाह इसलिए बना रखे हैं ताकि वे उनकी मदद करें। (सूरह या०सीन, आयत ७४) यही वह अकीदा है जिसके तहत मुश्रिकीन अरब बुतों की शक्ल में अपने बुजुर्गों और औलिया किराम को पुकारते और उनसे मुरादे तलब करते थे। इसी अकीदे के तहत हिन्दू, बुद्ध और जैनी, मुर्तियों, मुजस्समों और बुतों की शक्ल में अपने अपने बुजुर्गों और वलियों से हाजतें और मुरादें तलब करतें हैं। इसी अकीदे के तहत कुछ मुसलमान मृत औलिया किराम और बुजुर्गों को पुकारते हैं और उनसे हाजतें और मुरादें तलब करते हैं। -१

9. यहां यह बात काबिले ज़िक्र है कि आलमे असबाब के तहत किसी ज़िंदा इंसान से मदद तलब करना शिर्क नहीं, अलबत्ता आलमे असबाब से बालातर अल्लाह तआला के सिवा किसी दूसरे को पुकारना शिर्क है। मसलन समुन्द्र में डूबते हुए जहाज़ पर बैठे हुए लोगों का किसी करीब तरीन बंदरगाह पर मौजूद लोगों को वायरलेस के ज़रिए सूरतेहाल से खबरदार करके मदद तलब करना शिर्क नहीं क्योंकि डूबने और बचाने की कोशिश करना यह सारे काम सिसिला असबाबाके तहत हैं। अल्बत्ता अगर डूबने वाले "मेरी कश्ती तुफानों में से फेसी है ऐ मुईनुद्दीन चिश्ती तू मेरी मदद कर" की दुहाई देने लेगें तां यह शिर्क होगा। क्योंकि ऐसी

सय्यद अला हजवेरी रह० अपनी मशहूर किताब "कशफुल महजूब" में फरमाते हैं अल्लाह तआला के औलिया मुल्क के मुदब्बिर हैं और आलम (दुनिया) के निगरां हैं अल्लाह तअला ने खास तौर पर उनको आलम का वाली (हाकिम) गरदाना है और आलम (दुनिया) का हल व अक्द (इंतिज़ाम) उनके साथ वाबसता कर दिया है और अहकामे आलम को उन्हीं की हिम्मत के साथ जोड़ दिया है।-१ हज़रत निज़ामुद्दीन औलिया अपनी मारूप किताब "फवाइदुल फवाइल" में फरमाते हैं "शैख निज़ामुद्दीन अबुल मवेद बारहा फरमाया करते "मेरी वफात के बाद जिसको कोई मुहिम दरपेश हो तो उससे कहो तीन दिन मेरी ज़्यारत को आए आगर तीन दिन गुज़र जाने के बाद भी वह काम पूरा न हो तो चार दिन आए ओर अब भी काम न निकले तो मेरी कब्र की ईंट से ईट बजा दे-२ जनाब अहमद रज़ा खान बरेलवी फरमाते हैं "औलिया किराम मुर्दे को ज़िंदा कर सकते हैं मादरज़ाद अंधे को कोढ़ी को शिफा दे सकते हैं और सारी ज़मीन को एक कदम में तय कर सकते हैं। -३ नीज़ फरमातें हैं "औलिया किराम आनी कब्रों में हयात अबदी के साथ जिन्दा हैं उनके इल्म व इदराक समाअ बसर पहले की निस्बत ज़्यादा कवी हैं।-४

फारसी के एक शायर ने इसी अकीदे का इज़हार निम्न शेर में यूं किया:

फरियाद करने वाले का अकीदा होगा कि अव्वलन ख्वाजा मईनुद्दीन चिश्ती मरने के बावजूद सैकड़ों या हज़ारों मील दूर से सुनने की ताकत रखते हैं यानी वह अल्लाह तआला की तरह समीअ हैं। दूसरे, फरियाद और पुकार सुनने के बाद ख्वाजा मईनुद्दीन चिश्ती फरियाद करने वाले की मदद करने और उसकी मुश्किल हल करने ककी पूरी कुदरत रचाते हैं। यानी वह अल्लाह तआला की तरह कादिर भी हैं। इन दोनों सूरतों में जो फर्क है वह ब-इसानी समझा जा सकता है।

१. तसव्वुफ की तीन अहम किताबें अज़ सय्यद अहमद उरूज कादरी, सफा ३२ मत्बूआ हिन्दुस्तान, पब्लिकेशन दिल्ली।

२. ब-हवाला साबिक, सफा ५६।

३. बरेलवियत अज़ अल्लामा ऐहसन इलाही ज़हीर मरहूम, सफा १३४-१३२५

४. मुलाहिज़ा हो अर्रहिकुल मख्तूम अज़ मौलाना सफीउर्रहमान मुबारक पूरी सफा-४८-४६

औलिया राहस्त कुदरत इज़ाला
तीर जस्ता गर कुछ गर्दाइंद ज़राह

तर्जुमाः "औलिया किराम को अल्लाह तआला की तरफ से ऐसी कुदरत हासिल होती है कि वह कमान से निकले हुए तीन को वापस ला सकते हैं।

किसी पंजाबी शायर ने अपने इस अकीदे की तर्जुमानी इन शब्दों में की है:

हथ वली दे कलम रब्बानी लिखे जो मन भावे
रब वली नूं ताकत बख्शी लिखे लेख मिटावे

तर्जुमाः "अल्लाह तआला का कलम वली के हाथ में है जो चाहे लिखे अल्लाह तआला ने वली को यह ताकत बख्शी है कि जो चाहे लिए जो चाहे मिटादे"

बुजुर्गाने दीन और औलिया किराम के बारे में इसी किस्म के मुबालिगा आमेज़ अकाइद और तसव्वुरात का यह नतीजा है कि लोग औलिया किराम के नामों की दुहादी देते और उनसे मदद और मुरादें मांगते हैं। खुद "इमाम अहले सुन्त" हज़रत अहमद रज़ा खां बरेलवी, शैख अब्दुल कादिर जीलानी रह० के बारे में फरमाते हैं "ऐ अब्दुल कादिर! ऐ फज़्ल करने वाले, बगैर मांगे सखावत करने वाले ऐ इनआम व इकराम के मालिक, तू बुलन्द व अज़ीम है, हम पर ऐहसान फरमा और सायल की पुकार को सुन ले। ऐ अब्दुल कादिर हमारी आरज़ुओं को पूरा कर-१ जनाब अहमद रज़ा खां के बारे में उनके एक अकीदत मन्द शाय्रर का इज़हारे अकीदत मुलाहिज़ा होः

चार जानिब मुश्किलें हैं एक
मैं एक मेरे मुश्किल कुशा अहमद रज़ा
लाज रखा मेरे फैले हाथ की
ऐ मेरे हाजत रवा अहमद रज़ा

१. बरेलवियत सफा १३०-१३१

शैख अब्दुल कादिर जीलानी रह० के बारे में भी किसी शायर ने ऐसा ही इज़हारे ख्याल किया है:

इमदाद कुन इमदाद कुन अज़ रंज व गम आज़ाद कुछ

दर दीन व दुनिया शाद कुन या शैख अब्दुल कादिरा

तर्जुमा: ऐ शैख अब्दुल कादिर मेरी मदद कीजिए, मेरे मदद कीजिए, और मुझे हर रंज व गम से आज़ाद कर दीजिए, नीज़ दीन व दुनिया के तमाम मामलात मे मुझे खुश कीजिए।

हज़रत अली रज़ि० के बारे में अरबी के एक शायर ने अपने अकीदे का इज़हार यूं किया है:

نَادِ عَلِيًّامَظْهَرُ الْعَجَائِبِ تَجِدْه عَوْنًا فِيْ النَّوَائِبُ

كُلُّ هَمٌّ وَ غَمٍ سَيَنْجَلِيْ بِوَلا يَتِکَ يَا عَلِيُ يا عَلِیُ

तुर्जमा: अजाएबात ज़ाहिर करने वाले अली को पुकारो हर मुसिबत में उसे अपना मददगार पाओगे। ऐ अली तेरी वलायत के सदके अंकरीब सारे गम दूर हो जाएंगे।

इन अफकार व अकाएद को सामने रखते हुए या मुहम्मद, या अली, या हुसैन, या गौस आज़म जैसे निदाइया कलिमात की हकीकत आसानी से समझी जा सकती है और यह अंदाज़ा लगाना मुश्किल नहीं कि इन कलिमात के पसेमंज़र में कौनसा अकीदा कार फरमा है ?

औलिया किराम और बुजुर्गाने दीन के बारे में पाये जाने वाले उन तसव्वुरात और अकाइद का अब हमें किताब व सुन्नत की रोशनी में जाएज़ा लेना है कि क्या वाकई औलिया किराम ऐसी कुदरत और इख्तियारात रखते हैं कि जैसा कि उनके पैरोकार समझते हैं?

पहले कुरआन मजीद की कुछ आयात मुलाहिज़ा हो:

١. ﴿وَالَّذِيْنَ تَدْعُونَ مِن دُونِهِ مَا يَمْلِكُونَ مِن قِطْمِيرٍ﴾ (١٣:٣٥)

तर्जुमा: "अल्लाह तआला को छोड़कर जिन्हें तुम पुकारते हो वे एक

पर काह के भी मालिक नहीं हैं ?" (सूरह फातिर, आयत १३)

٢. ﴿قُلِ ادْعُوا الَّذِينَ زَعَمْتُم مِّن دُونِ اللَّهِ لَا يَمْلِكُونَ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ فِي السَّمَاوَاتِ وَلَا فِي الْأَرْضِ وَمَا لَهُمْ فِيهِمَا مِن شِرْكٍ وَمَا لَهُ مِنْهُم مِّن ظَهِيرٍ﴾ (٢٢:٣٤)

तर्जुमाः "कहो पुकार कर देखो उन्हें जिन्हें तुम अल्लाह तअला के सिवा अपना माबूद समझ बैठे हजों वे न आसमान में ज़र्रा बराबर किसी चीज़ के मालिक हैं न ज़मीन मेंवे आसमान व ज़मीन की मिल्कियत में भी शरीक नहीं। न ही उनमें से कोई अल्लाह तआला का मददगार है।"

(सूरह सबा, आयत २२)

٣. ﴿مَا لَهُم مِّن دُونِهِ مِن وَلِيٍّ وَلَا يُشْرِكُ فِي حُكْمِهِ أَحَدًا﴾ (١٨:٢٦)

तर्जुमाः "मख्लूकात का अल्लाह के सिवा कोई खबरगीर नहीं और वह अपनो हुकूमत में किसी को शरीक नहीं करता।"

(सूरह कहफ, आयत २६)-१

इन आयात में अल्लाह तआला ने स्पष्ट रूप से यह बात इरशाद फरमाई है कि मैं अपनी हुकूमत अपने मामलात और इख्तियार में किसी दूसरे को शरीक नहीं करता और मेरे अलावा जिन्हे लोग पुकारते हैं या जिनसे मुरादें और हाजतें तलब करतें हैं वे ज़र्रा बराबर का इख्तियार नहीं रखते न ही उनमें से कोई मेरा मददगार है।

इस दुनिया में अंबिया और रसुल अल्लाह तआला के पैगम्बर और नुमाइन्दा होने की हैसियत से अल्लाह के सबसे ज़्यादा मुकर्रब, सबसे ज़्यादा महबूब और सबसे ज़्यादा प्यारे होतें हैं। कुरआन मजीद में अल्लाह तआला ने बहुत से अंबिया किराम के वाकिआत बयान फरमाए हैं कि वे किस तरह अपनी अपनी कौम के पास दावते तौहीद लेकर आए और कौम ने उनके साथ क्या सुलूक रवा रखा। किसी को कौम ने जिला वतन

१. इस मज़मून की कुछ दूसरी आयत ये हैं: (६:१७), (१७:५६-५७),(२१:४३),(२७:६२), (५:७६),(२५:३),(७२:२०-२१),(७:१९४),(१६:१०-२१),(१३:११)

कर दिया किसी को कैद कर दिया, किसी को कत्ल कर दिया, किसी को मारा पीटा, लेकिन वह खुद अपनी कौम काकुछ भी न बिगाड़ सके। हज़रत हूद अलैहिस्सलाम ने कोम को तौहीद की दावत दी। कौम न मानी बल्कि उलटा कहाः ''फातिना बिमा ताअिदना इन कुन-त मिनस्सादिकीन० ''तर्जुमाः ''अच्छा तो ले आ वह अज़ाब जिसकी तू हमें धमकी देता है अगर अपनी बात में सच्चा है।'' (सूरह आराफ आयत ७०) इस पर अल्लाह तआला का पैगम्बर सिर्फ इतना ही कहकर खामोश हो गयाः 'फन-त-ज़ि-रू इन्नी म-अ-कुम मिनल मुंतज़िरीन०' तर्जुमाः तुम भी (अज़ाब का) इंतिज़ार करो मैं भी तुम्हारे साथ इंतिज़ार करता हूं (यानी अज़ाब लाना मेरे बस में नहीं।)'' (सूरह आराफ, आयत ७१) ऐसा ही मामला दूसरे अंबिया किराम के साथ भी पेश आता रहा। हम यहां अल्लाह तआला के एक जलीलुल कद्र पैगम्बर हज़रत लूत अलैहिस्सलाम की घटना तफसील से बयान करना चाहते हैं। जिनकी कौम इगलाम के मर्ज़ में मुब्तिला थी। फरिश्ते अज़ासब लेकर खूबसूरत लड़कों की शक्ल में आए तो हज़रत लूत अलैहिस्सलाम अपनी बदकिरदार कौम के बारे में सोचकर घबरा उठे कहने लगेः 'हाज़ा यौमुन असीब' तर्जुमाः ''यह दिन तो बड़ी मुसीबत का है।'' (सूरह हूद, आयत ७८) और अपनी कौम से यह दरख्वास्त की।

﴿فَاتَّقُوا اللَّهَ وَلَا تُخْزُونِ فِي ضَيْفِي أَلَيْسَ مِنكُمْ رَجُلٌ رَّشِيدٌ﴾

तर्जुमाः ''अल्लाह तआला से डरो और मेरे महमानो के मामले में मुझे ज़लील न करो क्या तममें कोई भला आदमी नहीं।'' (सूरह हूद, आयत ७८) कौम पर आपकी इस मिन्नत समाजत का कोई असर न हुआ, तो आजिज़ और मजबूर होकर यहां तक कह डाला कि : ''हा उला-इ बनाती कुनतुम फा-इ-लीन तर्जुमा : ''अगर तुम्हें कुछ करना ही है तो यह मेरी बेटियां (निकाह के लिए) मौजूद हैं।'' (सूरह हिज्र आयत ७१) बदबख्त कौम इस पर भी राज़ी न हुई तो पैगम्बर की ज़बान पर बडी हसरत के साथ यह शब्द आ गए : 'लव अन्न ली बिकुम कुव्वतन अव आवी इला रूकनिन शदीद' ''ऐ काश, मेरे पास इतनी ताकत होती

कि तुम्हें सीधा कर देता या कोई मज़बूत सहारा होता जिसकी पनाह लेता।" (सूरह हूद, आयत ८०) हज़रत लूत अलैहिस्सला की इस घटना को सामने रखिए और फिर गौर फरमाइए कि पैगम्बर की बात के एक एक शब्द से बे बसी, बकसी और मजबूरी किस तरह टपक रही है। सोचने की बात यह है कि क्या खुदाई इख्तियारात का मालिक कोई व्यक्ति मेहमानों के सामने यूं अपने दुश्मन से मिन्नत समाजत करना गवारा करता है। और फिर यह कि कोई साहिबे इख्तियार और साहिबे कुदरत व्यक्ति अपनी बेटियों को यूं बदकिरदार और बदमाश लोगों के निकाह में देना पसन्द करता है?

एक नज़र सैयदुल अंबिया सरवरे आलम सल्ल० की हयाते तैयबा पर भी डालकर देखिए, मस्जिदुलहराम में नमाज़ पढ़ते हुए मुश्रिकीन ने सज्दा की हालत में आप सल्ल० की पीठ पर ऊंट की ओझ रख दी हज़रत फातिमा रज़ि० ने आकर अपने बाबा को उस मुश्किल से निजात दिलाई। एक मुश्रिक उकबा बिन अबी मोईत ने आप सल्ल० के गले में चादर डालकर सख्ती से गला घोंटा, हज़रत अबू बकर सिद्दीक रज़ि० दौड़कर आए और आप सल्ल० की जान बचाई। ताइफ में मुश्रिकीन ने पत्थर मार मार कर इतना ज़ख्मी कर दिया कि आपके नालैन मुबारक खून से तर बतर हो गए और आप सल्ल० ने बिल आखिर शहर से बाहर एक बाग में पनाह ली। ताइफ से वापसी पर मक्का मुअज्ज़मा में दाखिल होने के लिए आप सल्ल० को एक मुश्रिक मुतइम बिन अदी की पनाह हासिल करना पड़ी। मुश्रिकीने मक्का के ज़ुल्म व सितम से तंग आकर रात की तारीकी में आप सल्ल० को अपना घर बार छोड़ना पड़ा । जंगे उहुद में एक मुश्रिक ने आप सल्ल० को एक पत्थर मारा जिससे आप नीचे गिर गए और एक निचला दांत टूट गया। इसी जंग में एक दूसरे मुश्रिक ने आप सल्ल० के चेहरे मुबारक पर इस ज़ोर से तल्वार मारी की खोद की दो कड़ियां चेहरे के अन्दर धंस गई जिन्हें बाद में सहाबा किराम रज़ि० ने निकाला हज़रत आईशा रज़ि० पर बद कारी का बोहतान लगाया गया। आप सल्ल० ४० दिन तक शदीद परेशानी में

मुबतिला रहे यहां तक कि बज़रिये 'वह्नी' हज़रत आइशा रज़ि० की बरात नाज़िल की गई। आप सल्ल० १५०० मुसलमानों के साथ मदीना से उमरा अदा करने के लिए निकले, मुश्रिकीने मक्का ने आप सल्ल० को रास्ते में रोक दिया आप उमरा अदा न कर सके। कुछ मश्रिकों ने दो मरतबा धोखा देकर तबलीग इस्लाम के बहाने जलीलुल कद्र सहाबा किराम रिज़वा० (जिनकी मजमूई तादाद ७० से ८० तक बनती है) को लेजाकर शहीद कर दिया जिससे आप को शदीद सदमा पहुंचा।

सीरते तैयबा की इन तमाम घटनाओं को सामने रखा जाए तो हमारे सामने एक ऐसे इंसान की तस्वीर आती है जो पैगम्बर होने के बावजूद कानूने इलाई और मशीयते एज़दी के सामने बे बस और लाचार नज़र आता है। मौलाना अलताफ हुसैन हाली रह० ने किताब व सुन्नत के इस दुष्टिकोण की बड़ी ठीक ठीक तर्जुमानी निम्न अश्आर में की है:

जहां दार मगलूब व मकहूर हैं वां
नबी और सिद्दीक मजबूर हैं वां
न पुरसिश है रोहबान व अहबार की वां
न परवा है अबरार व अहरार की वां

अब एक तरफ बुजुर्गों और औलिया किराम के अकाएद और उनसे मनसूब घटनाएं सामने रखिए और दूसरी तरफ कुरआनी तालीमात और कुरआन मजीद में बयान किए गए अंबिया किराम अलैहि० के वाकियात को सामने रखिए दोनों के तकाबुल से जो नतीजा निकलता है वह यह कि या तो किताब व सुन्नत की तालीमात और अंबिया किराम अलैहि० की घटनाएं मात्र किस्से और कहानियां हैं जिनका हकीकत से दूर का भी वास्ता नहीं या फिर बुजुर्गों और औलिया किराम के अकाइद और उनसे मनसूब घटनाएं सरासर झूट और मनगढ़त हैं। इन दोनों सूरतों में से जिसका जो जी चाहे रास्ता इख्तियार कर ले। अहले ईमान के लिए तो सिर्फ एक ही रास्ता है:

﴿رَبَّنَا آمَنَّا بِمَا أَنزَلْتَ وَاتَّبَعْنَا الرَّسُولَ فَاكْتُبْنَا مَعَ الشَّاهِدِينَ﴾(٣/ ٥٣)

तर्जुमाः "ऐ हमारे परवरदिगार! जो फरमान तूने नाज़िल किया है हमने उसे मान लिया और रसूल की पैरवी की हमरा नाम गवाही देने वालों में लिख ले।" (सूरह आले इमरान, आयत ५३)

दूसरी दलील और उसका विश्लेषण

कुछ लोग यह अकीदा रखते हैं कि बुजुर्गाने दीन और औलिया किराम अल्लाह के यहां बुलन्द मरतबा रखते हैं। अल्लाह तआला के महबूब और प्यारे होते हैं इस लिए अल्लाह तआला की बारगाह बुलन्द व बरतर तक रसाई हासिल करने के लिए औलिया किराम और बुजुर्गों का वसीला या वास्ता पकड़ना बहुत ज़रूरी है। कहा जाता है कि जिस तरह दुनिया में किसी अफसरे आला तक दरख्वास्त पहुंचाने के लिए मुख्तलिफ सिफारिशों की ज़रूरत पड़ती है इसी तरह अल्लाह तआला की जनाब में अपनी हाजत पेश करने के लिए वसीला पकड़ना ज़रूरी है। अगर कोई व्यक्ति बिला वसीला अपनी हाजत पेश करेगा तो वह उसी तरह नाकाम व नामुराद होगा जिस तरह अफसरे आला को बिला सिफारिश पेश की गई दरख्वास्त बे नतीजा रहती है। कुरआन मजीद में अल्लाह तआला ने इस अकीदे का उल्लेख निम्न शब्दों में किया हैः

﴿وَالَّذِيْنَ اتَّخَذُوْا مِنْ دُوْنِهٖۤ اَوْلِيَآءَ مَا نَعْبُدُهُمْ اِلَّا لِيُقَرِّبُوْنَاۤ اِلَى اللّٰهِ زُلْفٰى﴾

तर्जुमाः "वे लोग जिन्होंने अल्लाह तआला के सिवा दूसरों को अपना सरपरस्त बना रखा है (वे अपने इस फेअल की तौज़ीह यह करते हैं कि) हम तो उनकी इबादत सिर्फ इस लिए करते हैं ताकि वे अल्लाह तआला तक हमारी रसाई करादें। (सूरह ज़ुमर-३)

शैख अब्दुल कादिर जीलानी रह० से मंसूब निम्न इक्तिबास इसी अकीदे की तर्जुमानी करता है-

"जब भी अल्लाह तआला से कोई चीज़ मांगो मेरे वसीले से मांगो ताकि मुराद पूरी हो और फरमाया कि जो किसी मुसीबत में मेरे वीसीले से मदद चाहे, उसकी मुसीबत दूर हो। और जो किसी सख्ती में मेरा नाम

लेकर पुकारे उसे कुशादगी हासिल हो, जो मेरे वीसीले से अपनी मुरादें पेश करे तो पूरी हों।"-१ चुनांचे शैख के अकीदत मन्द इन शब्दों से दुआ मांगते हैं "ऐ अल्लह दोनो जहानो के फरयाद रस, अब्दुल कादिर जीलानी के सदके मेरी हाजत पूरी फरमा"। जनाब अहमद रज़ा खां बरेलवी फरमाते हैं: "औलिया से मदद मांगना उन्हें पुकारना उनके साथ तवस्सुल करना अम्र मशरूअ और शैई मरगूब है जिसका इंकार न करेगा मगर हठ धर्म या दुशमन इंसान।"-२

वसीला पकड़ने के सिलसिले में हज़रत जुनैद बगदादी की निम्न घटना भी काबिले ज़िक्र है कि एक मर्तबा हज़रत जुनैद बगदादी रह० या अल्लाह या अल्लाह कह कर दरया उबूर कर गए लेकिन मुरीद से कहा कि या जुनैद या जुनैद कहकर चला आ। फिर शैतान लईन ने उस (मुरीद) के दिल में वसवसा डाला क्यों न मैं भी या अल्लाह कहूं जैसा कि पीर साहब कहते हैं या अल्लाह कहने की देर थी कि डूबने लगा। फिर जुनैद को पुकारा जुनैद ने कहा "वही कह या जुनैद या जुनैद" जब पार लगा तो पूछा "हज़रत! यह क्या बात है?" फरमायाः "ऐ नादान! अभी तू जुनैद तक तो पहुचां नहीं अल्लाह तआला तक रसाई की हवस है।"-३ अल्लाह तआला की बारगाह तक रसाई हासिल करने के लिए बुजुर्गाने दीन और औलिया किराम का वसीला और वास्ता पकड़ने का अकीदा सही है या गलत। यह देखने के लिए किताब व सुन्नत की तरफ रूजूअ करेंगे ताकि मालूम करें कि शरीअत की अदालत इस बारे में क्या फैसला करती है। पहले कुरआन मजीद की कुछ आयात मुलाहिज़ा हों।

١. ﴿وَقَالَ رَبُّكُمُ ادْعُونِي أَسْتَجِبْ لَكُمْ﴾ (٤٠:٦٠)

तर्जुमाः "तुम्हारा रब कहता है मुझे पुकारो मैं तुम्हारी दुआएं कबूल करूंगा।" (सूरह मोमिन आयत- ६०)

१. शरीअत व तरीकत, सफा ३६६

२. बरेलवियत, सफा ११०

३. शरीअत व तरीकत, सफा ३२८

२. ﴿وَإِذَا سَأَلَكَ عِبَادِىْ عَنِّىْ فَإِنِّىْ قَرِيْبٌ أُجِيْبُ دَعْوَةَ الدَّاعِ إِذَا دَعَانِ﴾ (١٨٦:٢)

तर्जुमा: "ऐ नबी, मेरे बन्दे अगर तुम से मेरे मुतअल्लिक पूछें तो उन्हें बता दो कि मैं उनसे करीब भी हूं। पुकारने वाला जब मुझे पुकारता है तो मैं उसकी पुकार का जवाब देता हूं। (सूरह बकरा आयत- १८६)

﴿إِنَّ رَبِّىْ قَرِيْبٌ مُّجِيْبٌ﴾ (٦١:١١)

तर्जुमा: "मेरा रब करीब भी है और जवाब देने वाला भी है।"

(सूरह हूद आयत- ६१)

उपरोक्त आयतों से दर्जेज़ैल बातें मालूम होती हैं।

१. अल्लाह तआला बिला इस्तसना अपने तमाम बन्दों, नेकोंकार हों या गुनहगार, परहेज़गार हों या खताकार, आलिम हों या जाहिल, मुरशिद हों या मुरीद, अमीर हों या गरीब, मर्द हों या औरत सब को यह हुक्म दे रहा है तुम मुझे बराहरास्त पुकारो मुझी से अपनी हाजतें और मुरादें तलब करो, मुझी से दुआऐं और फरियादें करो।

२. अल्लाह तआला अपने तमाम बन्दों के बिल्कुल करीब है। (अपने इल्म और कुदरत के साथ) लिहाज़ा हर व्यक्ति खुद अल्लाह के सामने अपनी दरख्वास्तें और हाजतें पेश कर सकता है। उससे अपना गम और दुखड़ा बयान कर सकता है, चाहे तो रात की तारीकियों में, चाहे तो दिन के उजालों में, चाहे तो बन्द कमरों की तहनाईयों में,चाहे तो मज्मा आम में, चाहे तो हजर में, चाहे तो सज़र में, चाहे तो जंगलों में, चाहे तो सहराओं में, चाहे तो समुन्द्रों में, चाहे तो फिज़ाओं में, जब चाहे जहां चाहे उसे पुकार सकता है, उससे बात चीत कर सकता है कि वह हर व्यक्ति की रगे गर्दन से सभी ज़्यादा करीब है।

३. अल्लाह तआला अपने तमाम बन्दों की दुआओं और फरियादों का जवाब किसी वसीले या वास्ते के बगैर खुद देता है, गौर फरमाइए, जो हाकिमे वक्त रिआया की दरख्वास्तें खुद वसूल करने के लिए २४ घण्टे

अपना दरबारे आम खुला रखता हो और उनपर फैसला खुद ही सादिर फरमाता हो उसके हुजूर दरख्वास्तें पेश करने के लिए वसीले और वास्ते तलाश करना जिहालत नहीं तो और क्या है?

रसूले अकरम सल्ल० से अहादीस में जितनी भी दुआएं मरवी हैं उनमें से कोई एक ज़ईफ से ज़ईफ हदीस भी ऐसी नहीं मिलती जिनमें आप सल्ल० ने अल्लाह से कोई हाजत तलब करते हुए या दुआ मांगते हुए अंबिया किराम हज़रत इब्राहीम अलैहि०, हज़रत इस्माईल अलैहि०, हज़रत मूसा अलैहि० या हज़रत ईसा अलैहि० को वसीला या वास्ता बनाया हो इसी तरह आप सल्ल० की वफात के बाद सहाबा किराम रिज़वा० से भी कोई ऐसी रिवायत या घटना साबित नहीं जिसमें सहाबा किराम रिज़वा० ने दुआ मांगते हुए सैयदुल अंबिया सरवरे आलम सल्ल० को वसीला या वास्ता बनाया हो। अगर वसीला या वास्ता पकड़ना जाइज़ होता तो सहाबा किराम रिज़वा० के लिए रसूले अकरम सल्ल० से बढ़कर अफज़ल और आला वसीला कोई नहीं हो सकता था। जिस काम को रसूलल्लुल्लाह सल्ल० और सहाबा किराम रिज़वा० ने इख्तियार नहीं फरमाया आज उसे इख्तियार करने का जवाज़ कैसे पैदा किया जा सकता है?

अल्लाह तआला के सामने रसाई हासिल करने के लिए वसीला और वास्ता तलाश करने की जो दुनियावी मिसालें दी जाती हैं आइए लम्हार भर के लिए उनपर भी गौर कर लें और यह देखें कि उनमें कहां तक सदाकत है?

दुनिया में किसी भी अफसरे बालातक रसाई हासिल करने के लिए वसीला और वास्ता के ज़रूरत निम्न वजूहात की बिना पर हो सकती हैं।

१. अफसराने बाला के दरवाज़ों पर हमेशा दरबान बैठते हैं जो तमाम दरख्वास्त गुज़ारों की अन्दर नहीं जाने देते अगर कोई अफसरे बाला का मुकर्रब और अज़ीज़ साथ हो तो यह रूकावट फौरन दूर हो जाती है लिहाज़ा वसीला और वास्ता मतलूब होता है।

२. मुतअल्लिका अफसर अगर सायल के ज़ाती हालात और मामलात से आगाह न हो तब भी वसीले और वास्ते की ज़रूरत पड़ती है तकि मुतअल्लिका अफसर का मतलूब मालूमात फराहम की जा सकें जिन पर वह ऐतमाद कर सके।

३. अगर अफसरे बाला बे रहम, बे-इंसाफ और ज़ालिम तबियत का मालिक हो तब भी वसीले और वास्ते की ज़रूरत महसूस की जाती है कहीं खुद सायल ही बे इंसाफी और जुल्म का शिकार न हो जाए।

४. अगर अफसरे बाला से नाजाएज़ मुराआत और मफादात का हुसूल मतलूब हो (मसलन रिश्वत देकर या किसी करीबी रिश्तेदार वालिदैन, बीवी, या औलाद वगैरह का दबाव डालकर मफाद हासिल करना हो) तब भी वसीले की और वास्ते की ज़रूरत महसूस की जाती है।

ये हैं वे मुख्तलिफ सूरतें जिनमें दुनियावी वास्तों और वसीलों की ज़रूरत महसूस की जाती है। इन तमाम निकात को ज़ेहन में रखिए और फिर सोचिए क्या वाकई अल्लाह तआलाके यहां दरबान मुकर्रर हैं कि अगर कोई आम आदमी दरख्वास्त पेश करना चाहे तो उसे मुशकिल पेश आए और अगर उसके मुकर्रब और महबूब आएं तो उनके लिए इज़्ने आम हो? क्या वाकई अल्लाह तआला भी दुनियावी अफसरों की तरह अपनी मखलूक के हालात और मामलात से लाइल्म है जिन्हें जानने के लिए उसे वसीले या वास्ते की ज़रूरत हो? क्या अल्लाह तआला के बारे में हमारा ईमान यही है कि दुनिया की अदालतों की तरह उसके दरबार में भी रिश्वत या वास्ते और वसीले के दबाव से नाजाइज़ मुराआत और मफादात का हुसूल मुमकिन है ? अगर इन सारे सवालों का जवाब "हां" में है तो फिर कुरआन मजीद और हदीरस शरीफ में अल्लाह सुबहानहू तआला के बार में बताई गई सारी सिफात मसलन रहमान, रहीम, करीम, रऊफ, वदूद, समीअ, बसीर, अलीम, कदीर, खबीर, मुकसित आदि का सर्वथा इंकार कर दिजिए और फिरयह भी तसलीम कर दीजिए कि जो जुल्म व सितम अंधेर नगरी और जंगल का कानून इस दुनिया में राइज है

(मआज़ल्लाह) अल्लाह तआला के यहां भी वही कानून राइज है और अगर इन सवालों का जवाब नफी में है (और वाकई नफी में है) तो फिर सोचने की बात यह है कि उपरोक्त अस्बाब के अलावा आखिर वह कौनसा सबब है जिसके लिए वसीले और वास्ते की ज़रूरत है?

हम इस मसले को एक मिसाल से स्पष्ट करना चाहेंगे। गौर फरमाईए आगर कोई हाजत मंद ५० या १०० मील दूर अपने घर बैठे किसी अफसर मजाज़ को अपनी परेशानी और मुसीबत से आगाह करना चाहे तो क्या ऐसा कर सकता है? हरगिज़ नहीं, साइल और मसऊल दोनों ही वास्ते और वसीले के मोहताज हैं। फर्ज़ कीजिए साइल की दरख्वास्त किसी तरह अफसर मजाज़ तक पहुंचा दी गई क्या अब वह अफसर इस बात की कुदरत रखता है कि साइल की बयान करदा हालात की अपने ज़ाती इल्म की बिना पर तसदीक या तरदीद कर सके? हरगिज़ नहीं इंसान का इल्म इस कद्र महबूब है कि वह किसी के सही हालात जानने के लिए काबिले एतेमाद और सिका गवाहों का मोहताज है। फर्ज़ कीजिए अफसर बाला अपनी इन्तिहाई ज़हानत और फिरासत के सबब खुद ही हकाइक की तह तक पहुंच जाता है तो क्या वह इस बात पर कादिर है कि अपने दफतर में बैठे बठाए पचास या सौ मील दूर बैठे हुए साइल की मुश्किल आसान कर दे? हरगिज़ नहीं बल्कि एसा करने के लिए भी उसे वसीले और वास्ते की ज़रूरत है गोया साइल सवाल करने के लिए वास्ते का मोहताज है और अफसर मजाज़ मदद करने के लिए वास्ते और वसीले का मोहताज है। यही वह बात है जो अल्लह करीम ने कुरआन मजीद में यूं इरशाद फरमाईः 'ज़-उ-फत तालिबु वल मतलूब' तर्जुमाः "मदद चाहने वाले भी कमज़ोर और जिनसे मदद चाही जीती है वह भी कमज़ोर" (सूरह हज- ७३) इसके बरअक्स अल्लाह तआला की सिफात इख्तियारात और कुदरत कामिला का हाल तो यह है कि सातों ज़मीनों के नीचे पत्थर के अन्दर मौजूद छोटी सी चींटी की पुकार भी सुन रहा है उसके हालात का पुरा इल्म रखता है और खरबों मील दूर बैठे बिठाए किसी वसीले और वास्ते के बगैर उसकी सारी ज़रूरतें और हाजतें भी

पूरी कर रहा है। फिर आखिर अल्लाह तआला की सिफात और कुदरत के साथ इंसानों की सिफात और कुदरत को कौनसी निस्बत है कि अल्लाह तआलाके लिए दुनियावी मिसालें दी जाएं और वसीले या वास्ते का जवाज़ साबित किया जाए।

हकीकत यह है कि अल्लाह तआलाके मामले में तमाम दुनियावी मिसालें महज़ शैतानी फरेबहैं। वसीअत कुदरतों और लामहदूद सिफात के मालिक अल्लाह सुब्हानहू व तआला की ज़ात बाबरकात के मामलात को इंतिहाई महदूद, कलील और आरज़ी इंख्तयारात के मालि इंसानों के मामलात पर महमूल करना और अल्लाह तआला कीज़ात के लिए अफसरे बाला की मिसालें देना अल्लाह की जनाब में बहुत बड़ी तौहीन और गुस्ताखी है। जिससे खुद अल्लाह तआला ने मुसलमानों को इन शब्दों में मना फरमाया है: ''फला तज़रिबबू लिल्लाहि अमसाल० इन्नल्ला-ह यअलमु व अन्तुम ला ताअलमून०' तर्जुमाः ''लोगों अल्लाह तआला के लिए मिसालें न दो बेशक अल्लाह तआला हर चीज़ जानता है और तुम नहीं जानते।'' (सूरह नह्ल आयत ७४)

पस हासिल कलाम यह है कि न तो किताब व सुन्नत की रू से वसीला और वपस्ता पकड़ना जाइज़ है न ही अक्ले इंसानी इसकी ताईद करती है 'सुब्हानल्लाहि व तआला आम युशरिकून० तर्जुमाः ''पस अल्लाह तआला पाक और बालातर है उस शिर्क से जो लोग करते हैं।'' (सूरह, कसस, आयत ६८)

तीसरी दलील और उसका विश्लेषण

कुछ लोग यह अकीदा रखते हैं कि औलिया किराम चूंकि अल्लाह तआला के यहां बड़े बुलन्द मर्तबे और मुकर्रब होते हैं, लिहाज़ा उनका अल्लाह के यहां बड़ा असर व रूसूख है। अगर नज़र व नियाज़ देकर उन्हें खुश कर लिया जाए तो वे अल्लाह तआला के यहां हमारी सिफारिश करके हमें बख्शवा लेंगे। अल्लाह तआला ने कुरआन मजीद में इस अकीदे का इज़्हार इन शब्दों में किया है।

﴿وَيَعْبُدُونَ مِن دُونِ اللّٰهِ مَا لَا يَضُرُّهُمْ وَلَا يَنفَعُهُمْ وَيَقُولُونَ هَـٰؤُلَاءِ شُفَعَاؤُنَا عِندَاللّٰهِ﴾ (١٠:١٨)

तर्जुमा: "ये लोग अल्लाह तआला के सिवा उनकी इबादत करतें हैं जो न उनको नुक्सान पहुंचा सकते हैं न नफा और कहते हैं कि ये अल्लाह के यहां हमारे सिफारिशी हैं।" (सूरह यूनुस-१८)

एक बुजुर्ग जनाब खलील बरकाती साहब ने इस अकीदे का इज़्हार इन शब्दों में किया है: "बेशक औलिया और फुकहा अपने पैरोकारों की शफाअत करते हैं और उनकी निगहबानी करतें हैं। जब उनकी रूह निकलती है, जब मुंकिर नकीर उनसे सवाल करते हैं, जब उनका हश्र होता है, जब उनका नामाए आमाल खुलता है, जब उनसे हिसाब लिया जाता है, जब उनके अमल मिलते हैं, जब वे पुल सिरात पर चलते है।, हर वक्त हर हाल में उनकी निगाहबानी करते हैं, किसी जगह उनसे गाफिल नहीं होते।"-१

शफाअत के सिलसिले में शैख अब्दुल कादिर जीलानी रहि० की एक घटना पाठकों की दिलचस्पी के लिए हम याहं नकल कर रहे हैं जिससे अंदाज़ा होता है कि कुछ लागों के नज़दीक औलिया किराम किस कद्र साहिबे इख्तियार और साहिबे शफाअत होते हैं। घटना यह है-

"जब शैख अब्दुल कादिर जीलानी रह० जहां फानी से आलमे जाविदानी में तशरीफ ले गए तो एक बुजुर्ग को ख्वाब में बताया कि मुंकिर नकीर ने जब मुझसे मन रब्बु-क? (तुम्हारा रब कौन है) पूछा, तो मैंने कहा इस्लाकी तरीका यह है कि पहले सलाम और मुसाहफा करते हैं। चुनांचे फरिश्तोंने नादिम होकर मुसाहफा किया तौ शैख अब्दुल कादिर जीलानी रह० ने हाथ मज़बूती से पकड़ लिए और कहा कि तख्लीके आदम के वक्त तुमने 'अतजअलु फीहा मयं युफसिदू फीहा' तर्जुमा: "क्या तू पैदा करता है उसे जो ज़मीन में फसाद बरपा करे" कहकर अपने इल्म को अल्लाह तआला के इल्म से ज़्यादा समझने की गुस्ताखी क्यों की। नीज़

१. बरेलवीयत सफा ३१२

तमाम बनी आदम की तरफ फसाद और खूं रेज़ी की निस्बत क्यों की? तुम मेरे इल सवालें का जवाब दोगे तो छोड़ूंगा वरना नहीं। मुंकिर नकीर हक्का बक्का एक दूसरे का मुंह देखने लगे। अपने आपको छुड़ाने के की कोशिश की मगर उस दिलावर, यकताए मैदाने जबरूत और गव्वास कहरे लाहूत के सामने कुव्वते मलकूती क्या काम आती। मजबूरन फरश्तिों ने अर्ज़ किया हुजूर! यह बात सारे फरिश्तों ने कही थी, लिहाज़ा आप हमें छोड़ दें ताकि बाकी फरिश्तों से पूछकर जवाब दें। हज़रत गौस सकलैन रह. ने एक फरिश्ते को छोड़ा दूसरे को पकड़ रखा, फरिश्ते ने जाकर सारा हाल बयान किया तो सब फरिश्ते उस सवाल के जवाब से आजिज़ रह गए। तब बारी तआला की तरफ से हुक्म हुआ कि मेरे महबूब की खिदमत में हाज़िर होकर अपनी खता माफ कराओ। जब तक वह माफ न करेगा रिहाई न होगी। चुनांचे तमाम फरिश्ते महबूब सुब्हानी रज़ि० की खिदमत में हाज़िर होकर माफी के लिए हाज़िर हुए। हज़रत समदिय्यत (यानी अल्लाह तआला) की तरफ से भी शफाअत का इशारा हुआ उस वकत हज़रत गौस आज़म ने जनाब बारी तआला में अर्ज़ किया, ऐ खालिके कुल! रब्बे आकबर! अपने रहम व करम से मरेरे मुरीदीन को बख्श दे और उनको मंकिर नकीर के सवालों से बरी फरमा दे तो मैं इन फरिश्तों का कुसूर माफ करता हूं। फरमाने इलाही पहुंचा कि मेरे महबूब! मैंने तेरी दुआ कुबूल की फरिश्तों को माफ कर। तब जनाब गौसियत मआब ने फरिश्तों को छोड़ा और वह आलमे मलकूत को चले गए।-१

गौर फरमाइए इस घटना में औलिया किराम के बाइख्तियार होने, औलिया किराम का वसीला पकड़ने और औलिया किराम को अल्लाह तआला के यहां सिफारिशी बनाने के अकीदे की किस कद्र भरपूर तर्जुमानी की गई है। इस घटना से पता चलता है कि औलिया किराम जब चाहें सिफारिश करके अल्लाह तआला से बख्शवा सकते हे। और अल्लाह

१. तोहफतुल मजालिस अज़ हज़रत रियाज़ अहमद गोहर शाही, सफा ८-११ ब-हवालपा गुलिस्ताने औलिया

तआला को उनकी सिफारिश के बरअक्स मजाल इंकार नहीं। बलिक इस घटना से यह अंदाज़ा होता है कि औलियश किराम, अल्लाह तआला को सिफारिश मानने पर मजबूर भी कर सकते हैं।

आइए एक नज़र कुरआनी तालीमात पर डालकर देखें क्या अल्लाह तआला के सामने इस तरह की सिफारिश मुमकिन है या नहीं? सिफारिश से मुताल्लिक कुछ कुरआनी आयात निम्न हैं:

١. مَن ذَا الَّذِىْ يَشْفَعُ عِندَهُ إِلَّا بِإِذْنِه (٢٥٥:٢)

तर्जुमा: "कौन है जो उसकी जनाब में उसकी इजाज़त के बगैर सिफारिश कर सके।" (सूरह बकरा- २५५)

٢. وَلَا يَشْفَعُونَ إِلَّا لِمَنِ ارْتَضَى (٢٨:٢١)

तर्जुमा: "वे फरिश्ते किसी के हक में सिफारिश नहीं करते सिवाए उसके जिसके हक में सिफारशि सुनने पर अल्लाह तआला राज़ी हो।"

(सूरह अंबिया- २८)

٣. قُل لِّلّٰهِ الشَّفَاعَةُ جَمِيعًا (٤٤:٣٩)

तर्जुमा: "को सिफारिश सारी की सारी अल्लाह तआला के हाथ में है।" (सूरह जुमर-४४)

इन आयात में अल्लाह तआला के हुजूर सिफारिश की जो हुदूद व कुयूद बयान की गई हैं वह ये हैं:

१. सिफारिश सिर्फ वही व्यक्ति कर सकेगा जिसे अल्लाह तआला सिफारिश करने की इजाज़त देगा।

२. सिफारिश सिर्फ उसी व्यक्ति के हक में हो सकेगी जिसके लिए अल्लाह तआला सिफारिश करना पसन्द फरमाएगा।

३. सिफारिश की इजाज़रत देने या न देने, कुबूल करने या न करने का सारा इख्तिरया सिर्फ अल्लाह तआला के पास है।

कुरआन मजीद की इन मुकर्रर करदा हुदूद में रहते हुए कयामत के

दिन अंबिया व सुलहा, अल्लाह तआला से सिफारिश करने की इजाज़त कैसे हालिस करेंगे और फिर सिफारिश करने का तरीका क्या होगा, इसका अंदाज़ा मुखारी व मुस्लिम में दीगई तवील हदीसे शफाअत से किया जा सकता है जिसमें रसूले अकरम सल्ल० इरशाद फरमाते हैं "कयामत के दिन लोग बारी बारी हज़रत आदम अलैहिस्सलाम, नूह अलैहिस्सलाम, इब्राहीम अलैहिस्सलाम, मूसा अलैहिस्सलाम, और हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम की खिदमत में हाज़िर होंगे कि अल्लाह तआला के हुजूर हमारी सिफारिश कीजिए, लेकिन सब अंबिया किराम अपनी अपनी मामूली लग्ज़िशों को याद करके अल्लाह तआला से खौफ महसूस करते हुए सिफारिश करने से मना कर देंगे, बिल आखिर लोग रसूले अकरम सल्ल० की खिदमत में हाज़िर होंगे तब आप सल्ल० अल्लह तआला से हाज़िरी की इजाज़त तलब करेंगे। इजाज़त मिलने पर अल्लाह तआला के हुजूर सज्दे में गिर पड़ें गे और उस वक्त तक मज्दे में पड़े रहेंगे जब तक अल्लाह तआला चाहेगा। तब अल्लाह तआला इरशाद फरमाएगा "ऐ मुहम्मद (सल्ल०)! सर उठाओ सिफारिश को तुम्हारी सिफारिश सुनी जाएगी।" चुनांचे रसूले अकरम सल्ल० पहले अल्लाह तआला की हम्द व सना करेंगे और उसके बाद अल्लाह तआला की मुकर्रर करदा हद के अंदर सिफारिश करेंगे जो कुबूल होगी। (मुलाहिज़ा हो मस्ला नं० ५०) किताब व सुन्नत में जाइज़ सिफारिश की हो हुदूद व कुयूद बयान की गई हैं कुरआन मजीद में अंबिया किराम की दी गई घटनाएं उनकी ताईद और तस्दीक करती हैं। हम यहां मिसाल के तौर पर सिर्फ एक पैगम्बर हज़रत नूह अलैहिस्सलाम की घटना बयान करना चाहते हैं। हज़रत नूह अलैहिस्सलाम साढ़े नौ सौ साल तक मंसबे रिसालत के फराइज़ अंजाम देते रहे। कौम पर जब अल्लाह तआला की तरफ से अज़ासब आया तो नबी कक मुशिरक बेटा भी डूबने वालों में शामिल था जिसे देखकर यकीनन बुढ़े बाप का कलेजा कटा होगा। चुनांचे अल्लाह तआला रब्बुल इज़्ज़त की बारगाह में सिफारिश के लिए हाथ फैलाकर अर्ज़ किया:

﴿إِنَّ ابْنِي مِنْ أَهْلِي وَإِنَّ وَعْدَكَ الْحَقُّ وَأَنتَ أَحْكَمُ الْحَاكِمِينَ﴾ (११:४५)

तर्जुमाः "ऐ रब! मेरा बेटा घर वालों में से है और तेरा वायदा सच्चा है तू सब हाकिमों से बढ़कर हाकिम है।" (सूरह हूद आयत ४५) जवाब में इरशाद हुआः

﴿فَلَا تَسْأَلْنِ مَا لَيْسَ لَكَ بِهِ عِلْمٌ إِنِّي أَعِظُكَ أَن تَكُونَ مِنَ الْجَاهِلِينَ﴾ (١١:٤٦)

तर्जुमाः "ऐ नूह! जिस बात की तू हकीकत नहीं जानता उसकी मुझसे दरख्वास्त न कर। मैं तुझे नसीहत करता हूं कि अपेन आपको जाहिलों की तरह न बना ले।" (सूरह हूद आयत ४६) अल्लाह तआला की तरफ से इस तंबीह पर हज़रत नूह अलैहिस्सलाम अपने लख्ते जिगर का सदमा तो भूल ही गए अपनी फिक्र लाहिक हो गई चुनांचे फौरन अर्ज़ किया :

﴿رَبِّ إِنِّي أَعُوذُ بِكَ أَنْ أَسْأَلَكَ مَا لَيْسَ لِي بِهِ عِلْمٌ وَإِلَّا تَغْفِرْ لِي وَتَرْحَمْنِي أَكُن مِّنَ الْخَاسِرِينَ﴾ (١١:٤٧)

तर्जुमाः "ऐ मेरे रब मैं तेरी पनाह मांगता हूं इससे कि वह चीज़ तुझसे मांगू जिसका मुझे इल्म नहीं। अगर तूने मुझे माफ न किया और रहम न फरमाया तो मैं बर्बाद हो जाऊंगा।" (सूरह हूद आयत ४७) यूं एक जलीलुल कद्र पैगम्बर की अपने बेटे के हक में कीगई सिफारिश बारगाहे ईज़दी से रद्द कर दी गई और पैगम्बर ज़ादा अपने शिर्क की वजह से अज़ाब में मुब्तिला होकर रहा।

किताब व सुन्नत की तालीमात जान लेने के बावजूद अगर कोई व्यक्ति यह अकीदा रखता है कि हम फलां हज़रत साहब या पीर साहब के नाम की नज़र व नियाज़ देते हैं लिहाज़ा वे हमें कयामत के दिन सिफारिश करके बख्श्वा लेंगे तो इसका अंजाम उस व्यक्ति से मुख्तलिफ केसे हो सकता है जो अपना कोई जुर्म बख्श्वाने के लिए हुकूमत के किसी कारिन्दे को बादशाह सलामत के पास अपना सिफारिशी बनाकर भेजना चाहे जबकि वह कारिन्दा खुद हाकिमे वक्त के जाह व जलाल से थर थर

कांप रहा हो और सिफारिश करने से बार बार माज़रत कर रहा हो, लेकिन मुजरिम व्यक्ति यहीं कहता चला जाए कि हुजूर! बादशाह सलामत के दरबार में आप ही हमारे सिफारिशी और हिमायती हैं आप ही हमारा वसीला और वास्ता हैं तो क्या ऐसे मुजरिम की वाकई सिफारिश हो जाएगी या वह खुद अपनी हिमाकत और नादानी के हाथों तबाह व बर्बाद होगा।?

﴿لَا إِلٰهَ إِلَّا هُوَ فَأَنّٰى تُؤْفَكُونَ﴾ (٣:٣٥)

तर्जुमा: "उसके सिवा कोई इलाह नहीं आखिर तुम कहां से धोखा खा रहे हो।" (सूरह फातिर-३)

असबाबे शिर्क

यूं तो न मालूम इबलीस किन किन और कैसे कैसे दीदा व नादीदा तरीकों से शब व रोज़ इस शजरा खबीसा "शिर्क" की आबयारी में मसरूफ है, और न मालूम जाहिल आवाम के साथ साथ बज़ाहिर कितने नेक सीरत दुर्वेश, पाक तीनत बुजुर्गाने दीन, साहिबे कश्फ व करामात औलिया उज़्ज़ाम, तर्जुमाने शरीअत उलमा किराम, मुल्क व कौम के सियासी मुक्तिदहन्दा और खादीमें इस्लाम हुक्मरां भी हज़रत इबलीस के कदम ब कदम इस "कारेखैर" में शिरकत फरमारहे हैं।

बकौल हज़रत अब्दुल्लाह बिन मुबारक रह०:

فهل أفسد الدين الا الملوک   وأحبار سوء و رهبانها

तर्जुमा: "क्या दीन बिगाड़े वालों में बादशाहों, उलमाए सू और दुर्वेशों के अलावा कोई और भी हैं?"

इस लिए ऐसे असबाब व अवामिल का ठीक ठीक शुमार करना तो मुश्किल है ताहम जो हमारे समाज में शिर्क की अधिकता का बाइस बन रहे हैं हमारे नज़दीक शिर्क के दिन प्रति दिन फैलाव के मुख्तलिफ असबाब में से अहम तरीन असबाब निम्न हैं:

१. जिहालत २. हमारे सनम कदे (तालीमी इदारे) ३. दीने खानकाही ४. फल्सफा वहदतुल वजूद, वहदत शहूद और हुलूल ५. बर्रे सगीर हिन्द व पाक का कदीम तरीन मज़हब, हिन्दू मत ६. हुकमरां तबका।

१. जिहालत

किताब व सुन्नत से लाइल्मी वह सबसे बड़ा सबब है जो शिर्क के फलने फूलने का बाइस बन रहा है। इसी जिहालत के नतीजे में इंसान

पुर्वजों और रस्म व रिवाज की अंधी तकलीद का असीर होता है, इसी जिहालत के नतीजे में इंसान कमज़ोर अकीदे का शिकार होता है, इसी जिहालत के नतीजे में इंसान बुजुर्गाने दीन और औलिया किराम से अकीदत में गुलू का तर्ज़ेअमल इख्तियार करता है। निम्न घटनाएं इसी जिहालत के कुछ करिश्में हैं।

१. धनी राम रोड लाहौर में तजावीज़ात पर जो तीर चल रहा है उसकी ज़द से बचने के लिए म्यू अस्पताल के नज़दीक एक मेडिकल स्टोर के मन चले मालिक ने अपने स्टोर के बैतुल खला पर रात के अंधेरे में "शाह अज़ीजुल्लाह" के नाम से एक फर्ज़ी मज़ार बना डाला इस मज़ार पर दिन भर सैकड़ों अफराद जमा हुए जो मज़ार का दीदार करते और दुआएं मांगत रहते।-१

२. "इख्तिलाफे उम्मत का अल्मिया" के मुसन्निफ फैज़ आलम सिद्दीक साहब लिखते हैं "मैं आपके सामने एक घटना हल्फिया पेश करता हूं। कुछ रोज़ हुए मेरे पास एक अज़ीज़ रिश्तेदार आए जो शिद्दत से पीर परस्त हैं। मैंने बातों बातों में कहा कि फलां पीर साहब के मुतअल्लिक अगर आकिल बालिग गवाह पेश कर दूं जिन्होंने उन्हें ज़िना का इर्तेकाब करते देखा हो तो फिर उनके मुतअल्लिक क्या कहोगे? कहने लगे "यह भी कोई फकीरी का राज़ होगा जो हमारी समझ में न आता होगा।" फिर एक पीर साहब की शराब खोरी और भंग नोशी का ज़िक्र किया तो कहने लगे "भाई जान यह बातें हमारी समझ से बाहर हैं वह बहुत बड़े वली हैं।"-२

३. ज़िला गूजरो वाला के गांव कोटली के एक पीर साहब (नहवां वाली सरकार) के चश्मदीद हालात के रिपोर्ट का एक इकतेबास मुलाहिज़ा हो "सुबह आठ बजे हज़रत साहब नमूदार हुए इर्द गिर्द (मर्द व ख्वातीन) मूरीद हो लिए। कोई हाथ बांधे खड़ा था कोई सर झुकाए खड़ा था कोई पांव पकड़ रहा था कुछ मुरीद हज़रत के पीछे पीछे हाथ बांधे चल रहे थे

१. नवाए वक्त १६ जुलाई १६६०
२. इख्तिलाफे उम्मत का अल्मिया, सफा ६४

जबकि पीर साहब सिर्फ एक ढीली ढाली लंगोटी बांधे हुए थे चलते चलते न जाने हज़रत को क्या ख्याल आया कि उसे भी लपेट कर कंधे पर डाल लिया ख्वातीन ने जिनके मेहरम (भाई, बेटे या बाप) साथ थे शर्म के मारे सर झुकालिया, लेकिन अकीदत के पर्दे में यह सारी बेइज़्ज़ती बर्दाश्त की जा रही थी।-१

हमने यह कुछ घटनाएं बतौर मिसाल पेश की हैं वरना इस कूचे के इसरार व रमूज़ से वाकिफ लोग खूब जानते हैं हकीकते हाल इससे कहीं ज़्यादा है। अक्ल व खिरद की यह मौत, फिक्र व नज़र की यह मुफलिसी, अखलाक व किरदार की यह पस्ती, इज़्ज़ते नफ्स और गैरत इंसानी की यह रूसवाई, ईमान व अकीदे की यह जांकनी किताब व सुन्नत से लाइल्मी और जिहालत का नतीजा नहीं तो और क्या है?

२. हमारे सनम कदे (तालीमी एदारे)

किसी मुल्क के तालीमी एदारे उस कौम का नज़रिया और अकीदा बनाने या बिगाड़ने में बुनियादी किरदार अदा करते हैं। हमारे मुल्क और कौम की यह बदनसीबी है कि हमारे तालीमी एदारों में दी जाने वाली तालीम हमारे दीन के बुनियादी-अकीदा तौहीद- से कोई मुताबिकत नहीं रखती इस वक्त हमारे सामने दूसरी, तीसरी, चौथी, पांचवी, छठीं, सातवी और आठवीं जमाअत की उर्दू की कुतुब मौजूद हैं, जिनमें हज़रत अली रज़ि०, हज़रत फातिमा रजि०, हज़रत दाता गंज बख्श रह०, हज़रत बाबा फ़रीद गंज शकर रह०, हज़रत सखी सरवर रह०, हज़रत सुलतान बाहू रह० हज़रत पीर बाबा कोहिस्तानी रह० और हज़रत बहाउद्दीन ज़करिया रह० पर मज़ामीन लिखे गए हैं। हज़रत फातिमा रज़ि० पर लिखे गए मज़मून के आखिर में जन्नतुल बकीअ (मदीना का कब्रिस्तान) की एक फर्ज़ी तस्वीर देकर नीचे यह फिकरा तहरीर किया गया है "जन्नतुल बकीअ (मदीना मुनव्वरा) जहां अह्ले बैत के मज़ार हैं।"- जिन लोगों ने जन्नतुल बकीअ देखा है वह जानते हैं कि सारे कब्रिस्तान में "मज़ार" तो

१. मुजल्लाह दावत लाहौर मार्च १९९२, सफा ४

क्या किसी कब्र पर पक्की ईंट भी नहीं रखी गई। "अह्ले बैत के मज़ार" लिख कर मज़ार को न सिर्फ तकद्दुस और एहतराम का दर्जा दिया गया है बल्कि उसे सनदे आवाज़ भी मुहैया किया गया है। इन सारे मज़ामीन को पढ़ने के बाद दस बारह साल के खाली ज़ेहन बच्चे पर जो असरात मुरत्तब हो सकते हैं वह ये हैं:

१. बुजुर्गों के मज़ार और मकबरे तामीर करना, उन पर उर्स और मेले लगाना, उनकी ज़ियारत करना नेकी और सवाब का काम है।

२. बुजुर्गों के उर्सों में ढोल ताशे बजाना रंग दार कपड़ों के झण्डे उठाकर चलना बुजुर्गों की इज़्ज़त और एहतराम का बाइस है।

३. बुजुर्गों के मज़ारों पर फूल चढ़ाना, फातिहा पढ़ना, चिरागां करना, खाना तकसीम करना और वहां बैठकर इबादत करना नेकी और सवाब का काम है।

४. बुजुर्गों के मज़ार और मकबरों के पास जाकर दुआ करना कुबूलियत का बाइस है।

५. मुर्दा बुजुर्गों के मज़ारों से फैज़ हासिल होता है और इस इरादे से वहां जाना कारे सवाब है।

इस तालीम का नतीजा यह है कि मुल्क की कलीदी ओहदों पर जो लोग फाइज़ होते हैं वे अकीदा तौहीद की शहादत या तंफीज़ के मुकद्दस फरीज़े को सर अंजाम देना तो दर किनार, शिर्क की एशाअत और उसको फैलाने का बाइस बनते हैं। कुछ तल्ख हकाइक मुलाहिज़ा फरमाएं।

१. सदर अय्युब खां एक नंगे पीर (बाबा लाल शाह) के मुरीद थे जो मरी के जंगलात में रहा करता था और अपने मोतकेदीन मो गालिया बकता था और पत्थर मारता था उस वक्त की आधी काबीना और हमारे बहुत से जरलन भी उसके मुरीद थे।-१

२. हमारे समाज में "जस्टिस" को जो मकाम और मर्तबा हासिल है उससे हर आदमी वाकिफ है। मोहतरम जस्टिस मुहम्मद इलियास

साहब, हज़रत सैय्यद कबीरूद्दीन अल मारूफ शाहदोला (गुजरात) के बारे में एक मज़मून लिखते हुए रकम तराज़ हैं "आपका मज़ारे अकदस शहर के वस्त में है। अगर दुनिया में नहीं तो बर्रे सगीर पाक व हिन्द में यह वाहिद बुलन्द मर्तबा हस्ती हैं जिनके दरबार पुरअनवार पर इंसान का नज़राना पेश किया जाता है, वह इस तरह की जिन लोगों के यहां औलाद न हो वह आपके दरबारे मुबारक पर हाज़िर होते हैं और औलाद के लिए दुआ करते हैं साथ ही यह मन्न्त मानते हैं कि जो पहली औलाद होगी वह उनकी नज़र की जाएगी। इस पर जो अव्वलीन बच्चा पैदा होता है उसे उर्फ आम में "शाहदोला का चूहा" कहा जाता है। कुछ बच्चे को बतौर नज़राना दरबारे अकदस में छोड़ दिया जाता है और फिर उसकी निगह दाश्त दरबार शरीफ के खुद्दाम करते हैं। बाद में जो बच्चे पैदा होते हैं वह आम बच्चों की तरह तन्दुरूस्त होते हैं। रिवायत है कि अगर कोई व्यक्ति उल्लिखित मन्नत मानकर पूरी न करे तो फिर अव्वलीन बच्चे के बाद पैदा होने वाले बच्चे भी पहले बच्चे की तरह होते हैं।"-२

३. जनाब जस्टिस उसमान अली शाह साहब मुमलिकते खुदा दाद इस्लामी जमहूरिया पाकिस्तान के एक इन्तिहाई आला और अहम मुंसिफ "वकाफी मोहतसिब आला" पर फाइज़ हैं। एक इन्टर व्यू में उन्हों ने यह इंकशाफ फरमाया "मेरे दादा भी फकीर थे उनके मुतअल्लिक मशहूर था कि अगर बारिश न हो तो उस मस्त आदमी को पकड़कर दरिया में फेंक दो तो बारिश हो जाएगी उन्हें दरिया में फेंकते ही बारिश हो जाती थी। आज भी उनके मज़ार पर पानी के घड़े भर भर कर डालते हैं।"-३

४. हज़रत मुजददिद अल्फी सानी रह० के उर्स शरीफ में शामिल होने वाले पाकिस्तान वफद के सरबराह सैय्याद इफतेखारूल हसन मिम्बर सूबाई असेम्बली ने अपनी तकरीर में सर हिन्द को काबा का दर्जा देते

१. पाकिस्तान मैगज़ीन २८ फरवरी १९९२

२. नवाए वक्त, २६ मार्च १९९१ ई०

३. उर्दू डाइजेस्ट, सितम्बर १९९१ ई०

हुए दावा किया कि "हम नक्श बन्दियों के लिए मुजददिद अल्फी सानी रह० का रौज़ा हज के मकाम (बैतुल्लाह शरीफ) का दर्जा रखता है।"-१

सदर मुमलिकत, काबिना के अरकान, फौज के जरनल, अदलिया के जज और असेम्बलियों के मिम्बर सभी हज़रात वतन अज़ीज़ के तालीमी इदारों के सनद याफ्ता और फारिग हैं। उनके अकीदे और ईमान का इफ्लास पुकार पुकार कर यह गवाही दे रहा है कि हमारे तालीमी इदारे दर हकीकत इल्म कदे नहीं सनम कदे हैं। जहां तौहीद की नहीं शिर्क की तालीम दी जाती है। इस्लाम की नहीं जिहालत की इशाअत हो रही है जहां से रोशनी नहीं तारीकी फैलाई जा रही है। हकीमुल उम्मत अल्लामा इकबाल रह० ने हमारे तालीमी इदारों पर कितना दुरूस्त तबसेरा फरमाया है:

गला तो घोंट दिया अह्ले मदरसा ने तेरा
कहां से आए सदा ला इला-ह इल्लल्लाह

उपरोक्त हकाइक से इस तसव्वुर की भी मुकम्मल नफी हो जाती है कि कब्र परस्तीं और पीर परस्ती के शिर्क में सिर्फ अनपढ़, जाहिल और गंवार किस्म के लोग ही मुबतिला होते हैं और पढ़े लिखे लोग उससे महफूज़ हैं।

३. दीने खानकाही

इस्लाम के नाम पर दीने खानकाही दर हकीकत एक खुली बगावत है। दीने मुहम्मद सल्ल० के खिलाफ। अकाइद व इफकार में भी और आमाल व अफआल में भी। अम्र वाकिया यह है कि दीने इस्लाम की जितनी रूसवाई खानकाहों, मज़ारों, दरबारों, और आस्तानों पर हो रही है शायद गैर मुस्लिमों के मन्दिरों, गिरजों और गुरूद्वारों में भी न होती हो। बुजुर्गों की कब्रों पर कुब्बे तामीर करना, उनकी तज़ईन व आराइश करना, उन पर चिरागां करना, फूल चढ़ाना, उन्हें गुस्ल देना, उन पर मुजाविरी

१. नवाए वक्त, ११ अक्तूबर १९९१ ई० जुमा मैगज़ीन, सफा ५

करना, उन पर नज़र व नियाज़ चढ़ाना वहां खाना और शिरनी तकसीम करना जानवर ज़ब्ह करना, वहां रूकूअ और सुजूद करना, हाथ बांध करना बा अदब खड़े होना, उनसे मुरादें मांगना, उनके नाम की खेटी रखना, उनके नाम के धागे बांधना, उनके नाम की दुहाई देना, तकलीफ और मुसीबत में उन्हें पुकारना, मज़ारों का तवाफ करना, तवाफ के बाद कुरबानी करना, और सर के बाल मुंडवाना, मज़ार की दीवारों को बोस देना, वहां से खाक शिफा हासिल करना, नंगे कदम मज़ार तक पैदल चलकर जाना और उल्टे पांव वापस पलटना यह सारे अफआल तो वे हैं जो हर छोटे बड़े मज़ार पर रोज़ मर्रा का मामूल हैं और जो मशहूर औलिया किराम के मज़ार हैं उनमें से हर मज़ार का कोई न कोई अलग इम्तियाज़ी वस्फ है मसलन: कुछ खानकाहों पर बहिश्ती दरवाज़े तामीर किये गए हैं जहां गद्दी नशीन और सज्जादा नशीन नजराने वसूल करके और जन्नत की टिकटें तकसीम फरमातें हैं। कितने ही उमरा, उज़रा, अराकीन, असेम्बली, सिविल और फौज के आला ओहदे दार सर के बल वहां पहुंचते हैं और दौलत दुनिया के एवज़ जन्नत खरीदते हैं। कुछ ऐसी खानकाहें भी हैं जहां मनासिके हज अदा किये जाते हैं। मज़ार का तवाफ करने के बाद कुरबानी दी जाती है, बाल कटवाए जाते हैं, और मस्नूई आबे ज़म ज़म नोश किया जाता है। कुछ ऐसी खानकाहें भी हैं जहां नव मौलूद मासूम बच्चों के चढ़ावे चढ़ाऐ जाते हैं। कुछ खानकाहें ऐसी हैं जहां कुंवारी दोशिज़ाएं खिदमत के लिए वक्फ की जाती हैं। कुछ ऐसी खानकाहें भी हैं जहां औलाद से महरूम ख्वातीन "नौराता" बसर करने जाती हैं।–१ इन्हीं खानकाहों में से बेशतर भंग, चरस, आफीम, गांजा और हिरोइन जैसी मंशियात के कारोबारी मराकिज़ बने हुए हैं। कुछ खानाकाहों में

१. मुल्तान के इलाके में ऐसी बहुंत सी खानकाहें हैं जहां बे-औलाद ख्वातीन नौ रातों के लिए जाकर कयाम करती हैं और सहिबे मज़ार के हुज़ूर नज़र नियाज़ पेश करती हैं, मुजाविरों की खिदमात और सेवा करती हैं और यह अकीदा रखती हैं कि इस तरह साहिबे मज़ार उन्हें औलाद से नवाज़ देगा। उर्फ आम में इसे नौराता कहा जाता है।

फहाशी बद कारी और हवसपरस्ती के अड्डे भी बने हुए हैं-१ कुछ खानकाहें मुजरिमों और कातिलों की महफूज़ पनाह गाहें तसव्वुर की जाती हैं इन खानकाहों के गद्दी नशीनों और मुजाविरों के हुजरों में जन्म लेने वाली हयासूज़ दास्तानें सुनें तो कलेजा मुंह को आता है। इन खानकाहों पर मुनअकिद होने वाले सालाना उर्सों में मर्दों, औरतों का खुलेआम इख्तिलात, इश्किया और शिर्किया मज़ामीन पर मुश्तमिल कव्वालियां-२

१. वैसे तो अखबारों में आए दिन मज़ारों और खानकाहों पर पेश आने वाली दुखद घटनएं लोगों की नज़रों से गुज़रती ही रहती हैं हम यहां मिसाल के तौर पर सिर्फ एक खबर का हवाला देना चाहते हैं जो रोज़नामा "खबरें" दिनांक १५ अक्तूबर १९९२ ई० में प्रकाशित हुई है। वह यह कि ज़िला मावलपुर में ख्वाजा मुहकमुद्दीन मीराई के सालाना उर्स पर आने वाली मावलपूरी यूनीवर्सिटी की दो तालिबात को सज्जादा नशीन के बेटे ने इगवा कर लिया जबकि मुल्ज़िम का बाप सज्जादा नशीन मंशियात फरोख्त करते हुए पकड़ा गया।

२. कव्वाली के बारे में कहा जाता है कि हिन्दुओं को इसलाम की तरफ माइल करने के लिए औलिया किराम ने कव्वाली का सहारा लिया और यूं बर्रे सगीर में कव्वाली इस्लाम की तबलीग का ज़रिया बनी। नावमर कव्वाल नुसरत फतह अली खान ने अपने एक इंटर व्यू में दावा किया है कि स्पैन, फ्रांस और दूसरे बहुत से मुमालिक में लातादाद लोगा हमारी कव्वाली सुनने के बाद मुसलमान हो गए। (नवाए वक्त फैमली मैगज़ीन १२-१८ मई १९९२ ई०) चुनांचे हमने कुछ नामवर कव्वालों के कैसेट हासिल करके सुने जिनके कुछ हिस्से बतौरे नमूना यहां नकल किए जा रहे हैं। इन कव्वालियों से बखूबी अंदाज़ा लगाया जा सकता है कि कव्वालियों के ज़रिय औलिया किराम किस किस्म के इस्लाम की तब्लीग फरमाया करते थे और आज अगर लातादाद लोग मगरिबी मुमालिक में कव्वालियां सुनकर वाकई मुसलमान हुए हैं तो वे किस किस्म के मसलमान हुए हैं।

इब्ने ज़ोहरा को दुल्हा बनया गया
औलिया अंबिया को बुलाया गया, मरहबा, मरहबा, मरहबा, मरहबा
जागने को मुकद्दर है इंसान का
उर्स है आज महबूब सुब्हान का
हर तरफ आज रहत की बरसात है
आज खुलने पे कफल मेहमात है
हर सू जलवा आराई जात है,
कोई भरने पे मशकोल हाजात है
जागने को मुकद्दर है इंसान का
उर्स है आज महबूब सुब्हान का मरहबा, मरहबा, मरहबा, मरहबा
वहदत वहदत वहदत वहदत
तेरे खज़ाने में सिवाए वहदत के रखा क्या है?
मज़हर ज़ात रब कदीर आप हैं, दस्तगीर आप हैं
शाह बगदाद पीराने पीर आप हैं, अस्तगीर आप हैं।

ढोल ढमके के साथ नव जवान मलंगों और मलंगलियों की धमालें, खुले बालों के साथ औरतों के रक्स तवाइफों के मुजरे, थियेटर और फिल्मों के मनाज़िर आम नज़र आते हैं। दीने खानकाही की इन्ही रंग रनिलयों ओर अय्याशियों के बाइस गली गली, मुहल्ले मुहल्ले, गांव गांव, शहर शहर नित नये मज़ार तामीर हो रहे हैं।

रहीम यार खां (ज़िला पंजाब पाकिस्तान) में दीने खानकाही के अलमबरदारों ने पेशा वर माहिरीन आसारे कदीमा से भी ज़्यादा महारत का सुबूत देते हुए चौदह सौ साल बाद रांझे खां बस्ती के करीब सड़क के किनारे एक सहाबी रसूल सल्ल० की कब्र तलाश करके उस पर न सिर्फ मज़ार तामीर कर डाला है बल्कि "सहाबी रसूल खुमैर बिन रबीअ

पूरी सरकार सबकी तमन्ना करो,
हर भिखारी की दाता जी झोली भरो।
किस शै दी नई दाता कोल थोड़ ऐ
पूरी करदा सवालियां दी लोड़ ऐ।
गुल झूठ नहीं अल्लाह दी सोंह मेरी
तूं सचचे दिलों देख मंग के।
दिल गनाह गार दा नही तोड़दा,
खाली दाता कदे वी नहीं मोड़दा
झोली भर देगा सरदारां नाल तेरी तों,
सच्चे दिलों देख मंग के।
अली साडे दिलां विच, अली सांडे सवां विच
अली साडे आसे पासे, ऐ अली निगाहवां विच
अली दा मलंग में ते अली दा मलांग तर्में ते अली दा मलंग
हाड़ा ते तूफानां विच किनारा मौला अली ऐ
दुखियां दे दिलां दा सहारा मौला अली ऐ।
अली दा मलग में ते अली दा मलंग में ते अली दा मलंग
नज़र करम दी करदा सोहना, खाली झोलियां भरदा सोहना।
बेड़ा वी आईहा विर्द प ुकांदा, मुरशद बेड़ी मार लगांदा
अली मौला अली मौला दम अली अली अली
दम अली अली अली दम अली अली
जिन्हां जिन्हां कर लई पहचान मौला अली दी,
ओहिनां ताई मिल गई अमान मौला अली दी
दम अली दम अली दम अली मौला अली मौला अली मौला अली

१. हफ्ता रोज़ा अल ऐतसाकम लाहौर १८ मई १९९० ई०

का रोज़ा मुबारक" का बोर्ड लगाकर अपना कारोबार भी शुरू कर दिया है-१ गुज़िशता कुछ सालों से एक नई रस्म देखने में आर रही है वह यह कि अपनी अपनी खानकाहों की रौनक बढ़ाने के लिए बुजुर्गों के मज़ारात पर रसूले अकरम सल्ल० के इस्म मुबारक से उर्स मुंअकीद किए जाने लगे हैं। मुसलमानों की इस हालते ज़ार पर आज अल्लामा इकबाल रह० का यह तबस्सरा किस क्द्र दुरूस्त साबित हो रहा है।

हों को नाम जो कब्रों की ज़ियारत करके
क्या न बेचोगे जो मिल जाए सनम पत्थर के

दीने खानकाही की तारीख में यह दिलचस्प और अनोखी घटना भी पायी जाती है कि एक बुजुर्ग शैख हुसैन लाहौर (सन! १०५२ हि०) एक खूबसूरत ब्राहमण लड़के "माधव लाल" पर आशिक हो गए, परिस्तान ने औलिया किराम ने "दोनों बुजुर्गों" का मज़ार शालीमार बाग लाहौर के दामन में तामीर कर दिया जहां हर साल ८ जमादिउस्सनी को दोनों "बुजुर्गों" के मुश्तरक नाम "माधव लाल हुसैन" से बड़ी धूम धाम से उर्स मुंअिकद कराया जाता है। जिसे जिंदा दिलाने लाहौर उर्फ आम में मेला चिरागां कहते हैं। हज़रत माधव लाल के दरबार पर कुंदा कतबा भी बड़ा अनोखा और मुंफरिद है जिसके शब्द य हैं "मज़ार पुर अनवार" मर्कज़ फैज़ व बरकात, राज़ हसन का अमीन, माशूक महबूब नाज़नीन। महबूबुल हक, हज़रत शैख माधव कादरी लाहौरी" यूं तो ये मज़ार और मकबरे तामीर हीर उर्सों के लिए किए जाते हैं। छोटे कस्बों और देहातों में न मालूम कितने ऐसे उर्स मुंअकिद होते हैं जो किसी गिनती और शुमार में नहीं आते। लेकिन जो उर्स रिकार्ड पर मौजूद हैं उन पर एक नज़र डालिए ओर अंदाज़ा कीजिए कि दीने ख्वानकाही का कारोबार किस क्द्र वुस्अत पज़ीर है। और हज़रते इब्लीस ने जाहिल अवाम की अक्सरियत को किस तरह अपने शिकन्जों में जकड़ रखा है। ताज़ा तरीन आदाद व शुमार के मुताबिक में एक साल के अंदर ६३४ उर्स शरीफ मुंअकिद होते हैं गोया एक महीने में ५३ या दूसरे शब्दों में रोज़ाना १.७६ यानी पौने दो

१. हफ्ता रोज़ा अल ऐतसाकम लाहौर १८ मई १६६० ई०

अदद उसे मुंआकिद होते हैं जो उर्स रिकार्ड पर नहीं या जिनका इजरा दौराने साल होता है उनकी तादाद भी शामिल कि जाए तो यकीनन यह तादाद दो उर्स योमिया से बढ़ जाएगी। उन आदाद व शुमार के मुताबिक मुमलिकत खुदादाद इस्लामी जमहूरिया पाकिस्तान की सरज़मीन पर अब ऐसा कोई सूरज तुलूअ नहीं होता जब यहां उर्सो के ज़रीए शिर्क व बिदअत का बाज़ार गर्म करके अल्लाह तआला के गैज़ व गज़ब को दावत न दी जाती हो । (अल अियाज़ बिल्लाह)

पाकिस्तान में साल भर में मुंअकिद होने वाले उर्सों की तफ्सील

कमरी महीनों में उर्सों की तादाद			ईसवी महीनों में उर्सों की तादाद		विक्रमी महीनों में उर्सों की तादाद	
नं०	महीना	तादाद	महीना	तादाद	महीना	तादाद
1	मुहर्रम	41	जनवरी	8	फूह	3
2	सफर	24	फरवरी	2	माघ	3
3	रबीउल	40	मार्च	15	फागून	3
4	रबी उस्सानी	18	अप्रैल	7	चैत	25
5	जमादिल उला	24	मई	11	बैसाख	5
6	जामदिस्सानी	50	जून	11	जेठ	17
7	रजब	44	जूलाई	5	हाड़	22
8	शाबान	60	अगस्त	3	सावन	4
9	रमज़ान	39	सितम्बर	6	भादों	2
10	शव्वाल	21	अक्तूबर	7	असोज	9
11	ज़िल कादा	22	नवम्बर	9	कातक	8
12	ज़िल हिज्जा	38	दिसम्बर	4	मघर	6
योग		439		88		107

कमरी, ईसवी और विक्रमी महीनों के हिसाब से साल भर में मुंअकिद होने वाले उर्सों की कुल तादादः ६३४

उर्सों के इंएकाद में काबिले ज़िक्र बात यह है कि यह सिलसिला दौराने रमज़ानुल मुबारक भी पूरे ज़ोर व शोर से जारी रहता है। इससे अन्दाज़ा लगाया जा सकता है कि दीने खानकाही में इस्लाम के बुनियादी फरइज़ का किस कद्र एहतमाम पाया जाता है? याद रहे रमज़ानुल मुबारक के रोज़ों के बारे में हदीस शरीफ में है कि "नबी अकरम सल्ल० ने रोज़ा

खोरों को जहन्नम में इस हालत में देखा कि उल्टे लटके हुए हैं उनके मुंह चीरे हुए हैं। जिससे खून बह रहा है।" (इब्ने खज़ैमा) हिन्दुस्तान के एक मशहूर सूफी बुजुर्ग हज़रत बू अली कलन्दर रह० का उर्स शरीफ भी इसी मुबारक महीने (तेरह रमज़ान) में पानी पत के मकाम पर मुंअकिद होता है। दीने खानकाही में रमज़ान के अलावा बाकी फराइज़ का कितना एहतमाम पाया जाता है इसका अंदाज़ा इस बात से लगाया जा सकता है कि सूफिया के नज़दीक तसव्वुर शैख-१ के बगैर अदा की गई नमाज़ नाकिस होती है। हज के बारे में कहा जाता है कि मुर्शिद की ज़ियारत हज बैतुल्लाह से अफज़ल है। दीने इस्लाम के फराइज़ के मुकाबले में दीने खानकाही के अलम बरदार खानकाहों, मज़ारों, दरबारों और आस्तानों को क्या मकाम और मर्तबा देते हैं इसका अंदाज़ा खानकाहों में लिखे गए कतबों, या औलिया किराम के बारे में अकीदत मंदों के लिखी हुए अश्आर से लगाया जा सकता है। कुछ मिसालें मुलाहिज़ा हों।

१. मदीना भी मुतहर है मुकद्दस है अली पुर भी
उधर जाएं तो अच्छा है इधर जाएं तो अच्छा है
२. मखदूम का हुजरा भी गुलज़ारे मदीना है
यह गंज फरीदी का अनमोल नगीना है
३. दिल तड़पता है जब रौज़े की ज़ेयारत के लिए
पाक पत्तन तेरे हुजरे को मैं चुम आता हूं।
४. आरजू है कि मौत आए तेरे कूंचे में
रश्क जन्नत तरे कलियर की गली पाता हूं।
५. चाचड़ वांग मदीना दसे ते कुट मिठन बैतुल्लाह
ज़ाहिर दे विच पीर फरीदन ते बातिन दे विच अल्लाह

तर्जुमाः - चाचड़ (जगह का नाम) मदीना की तरह है और कुट मिठन (जगह का नाम) बैतुल्लाह शरीफ की तरह है। हमारा मुर्शिद, पीर, फरीद ज़ाहिर में तो इंसान है लेकिन बातिन में अल्लाह है।

---

१. तसव्वुर शैख यह है कि दौरान नमाज़ अपने मुर्शिद का तसव्वुर ज़ेहन में कायम किया जाए।

बाबा फरीद शकर गंज रह०- के मज़ार पर "ज़ब्दतुल अंबिया (यानी तमाम अंबिया किराम का सरदार) का कतबा लिखा गया है। सैयद अलाउद्दीन अहमद साबरी रह० कलियर के हुजरे शरीफ (पाक पत्तन) पर यह इबारत कंदा है "सुल्तान अलाउद्दीन कुतबे आलम, गौसुल गयास, हश्त दो हज़ार आलमीन (वलियों का बादशाह, सारे जहान का कुतुब, १८००० जहानों के फरियाद का सबसे बड़ा फरियाद रस)- हज़रत लाल हुसैन लाहौर के मज़ार पर "गौसुल इस्लाम वल मुस्लिमीन" (इस्लाम और मुसलमानों का फरियाद रस) का कतबा लिखा हुआ है। सैयद अली हजवीरी रह० के मज़ार पर लगाया गया कतबा तो कुरआनी आयात की तरह उर्सों में पढ़ा जाता है। "गंज बख्श, फैज़ आलम, मज़हरे नूरे खुदा (खज़ाने अता करने वाला, सारी दुनिया को फैज़ पहुंचाने वाला, खुदा के नूर के ज़हूर की जगह)

गौर फरमाइये जिस दीन में तौहीन, रिसालत, नमाज़ रोज़े और हज के मुकाबिले में पीरों, बुजुर्गों, उर्सों मज़ारों और खानकाहों को यह तकद्दुस और मरतबा हासिल हो वह दीन मुहम्मद सल्ल० के खिलाफ बगावत नहीं तो और क्या है। शायरे मिल्लत अल्लामा इकबाल रह० ने अरमगाने हिजाज़ की एक तवील नज़्म "इबलीस की मजलिसे शुरा" में इबलीस के खिताब की जो तफ्सीर लिखी है उसमें इबलीस मुसलमानों को दीने इस्लाम का बागी बनाने के लिए अपनी शुरा के अरकान को जो हिदायत देता है उनमें सबसे आखिरी हिदायत दीने खानकाही पर बड़ा जामेअ तबसेरा है। मुलाहिज़ा फरमाएं..........

मस्त रखो ज़िक्र व फिक्र सुबह गाही में इसे
पुख्तातर कर दो मिजाज़े खानकाही में इसे

हमारे जाइज़े के मुताबिक उल्लिखत ६३४ खानकाहों या आसतानों में से बेशतर गद्दियां ऐसी हैं जो वसीअ और अरीज़ जागिरों की मालिक हैं। सुबाई असेम्बली, कौमी असेम्बली यहां तक कि सिनेट में भी उनकी नुमाइन्दगी मौजूद होती है। सूबाई और कौमी असेम्बली की नशिश्तों में उनके मद्दे मुकाबिल कोई दूसरा आदमी खड़ा होने की जुरअत नहीं कर

सकता।

किताब व सुन्नत के निफाज़ के अलम्बरदारों और इस्लामी इंकलाब के दाइओं ने अपने रास्ते के इस संगे गरां के बारे में भी कभी संजीगी से गौरी किया है?

४. फलसफा वहदतुल वजूद, वहदत शहूद और हुलूल

कुछ लोग यह अकीदा रखते हैं कि इंसान इबादत और रियाज़त के ज़रिए उस मकाम पर पहुंच जाता है कि उसे कायनात की हर चीज़ में अल्लाह नज़र आने लगता है या वह हर चीज़ को अल्लाह की ज़ात का जुज़ समझने लगता है। तसव्वुफ की इत्तला में इस अकीदे को वहदतुल वजूद कहा जाता है। इबादत और रियाज़त में मज़ीद तरक्की करने के बाद इंसान की हस्ती अल्लाह की हस्ती में मुदगम हो जाती है और वह दोनों (खुदा और इंसान) एक हो जाते हैं। इस अकीदे को वहदत शहूद या "फनाफिल्लाह" कहा जाता है। इबादत और रियाज़त में मज़ीद तरक्की से इंसान का आईना दिल इस कद्र लतीफ और साफ हो जाता है अल्लाह कि ज़ात खुद उस इंसान में दाखिल हो जाती है जिसे हुलूल कहा जाता है।

गौर किया जाए तो इन तीनों इस्तलाहात के शब्दों में कुछ न कुछ फर्क ज़रूर है, लेकिन नतीजे के एतेबार से उनमें कोई फर्क नहीं और वह यह कि "इंसान अल्लाह की ज़ात का जुज़ और हिस्सा है" यह अकीदा हर ज़माने में किसी न किसी शक्ल में मौजूद रहा है। हिन्दूमत के अकीदे "औतार" बुद्धमत के अकीदे "निर्वान" और जैनमत के यहां बुत परस्ती की बुनियाद ही फलसफा वहदतुल वजूद और हुलूल है-१ यहूदियों ने

१. मुसलमानों में इसकी इबतेदा अब्दुल्लाह बिन सबा ने की जो यमन का यहूदी था। अहदे नबवी में यहूदियों की ज़िल्लत व रुसवाई का इंतकाम लेने के लिए मुनाफिकाना तौर पर अहदे फरुकी (या अहदे उसमानी) में इमान लाया अपने मज़मूम अज़ाएम को अमल में लाने के लिज हज़रत अली रज़ि० को माफूकुल बशर हस्ती कहना शुरू किया। बिल आखिर, अपने मोतकिदीन का एक ऐसा हल्का पैदा करने में कामयाब हो गया जो हज़रत अली रज़ि० को खिलाफत का असल हकदार और बाकी खुलफा को गासिब समझने लगा। इस गुमराहकुन परो पेगण्डा के नतीजे में सैयदना हज़रत उसमान रज़ि० की मज़लूमाना शहादत वाकेअ हुई। जमल

फलसफा हुलूल के तहत ही हज़रत ओज़ैर अलैहि० को अल्लाह का बेटा (जुज़) करार दिया। ईसाईयों ने इसी फलसफे के तहत हज़रत ईसा अलैहि० को अल्लाह का बेटा (जुज़) करार दिया। मुसलमानों के दो बड़े गिरोंहों, अहले तशीअ और अह्ले तसव्वुफ, के अकाइद की बुनियाद भी यही फलसफा वहदतुल वजूद और हुलूल है। सुफिया के सरखैल जनाब हसीन बिन मंसूर हल्लाज (इरानी) ने सबसे पहले खुल्लम खुल्ला यह दावा किया कि खुदा उसके अन्दर हुलूल कर गया है और अनल हक (मैं अल्लाह हूं) का नारा लगाया। मंसूर बिन हल्लाज के दावा खुदाई की ताईद और तौसीफ करने वालों में हज़रत अली हजवेरी रह० पीराने पीर शैख अब्दुल कादिर जिलानी रह० और सुल्तान औलिया ख्वाजा निज़ामुद्दीन औलिया रह० जैसे कब्बार औलिया शामिल हैं। हम यहां मिसाल के तौर पर जनाब अहमद रज़ा खां बरैलवी के शब्द नकल करने पर ही इक्तिफा करेंगे। फरमाते हैं ''हज़रत मूसा अलैहि० ने पेड़ से सुना 'इन्नी अनल्लाह' यानी मैं अल्लाह हूं। क्या पेड़ ने यह कहा था? हाशा, बल्कि अल्लाह ने यूंही हज़रात (औलिया किराम) अनल हक कहते वक्त शजर मूसा होते हैं-१ (अहकामे शरीअत, सफा ६३) हज़रत बायज़ीद बुस्तानी ने भी इसी अकीदे की बुनियाद पर यह दावा किया 'सुब्हाना मा आज़मों शानी' (मैं पाक हूं मेरी शान बुलन्द है) वह दतुल वजूद वा हुलूल का नज़रिया मानने वाले हज़रात को न तो खुद खुदाई का दावा करने में कोई दिक्कत महसूस

और सफ्फीन की खूब रंज जंगें हुई। इस सारे अर्से में अब्दुल्लाह बिन सबा और उसके पैरोकार हज़रत अली रज़ि० का साथ देते रहे और फितने पैदा करने के मौके तलाश करते रहे। हज़रत अली रज़ि० से मुहब्बत व अकीदत के नाम पर बिल आखिर उसने हज़रत अली रज़ि० को अल्लाह तआला का रूप या औतार कहना शुरू कर दिया और मुश्किल कुशा, हाजत रवा, आलिमुल गैब और हाज़िर नाज़िर जैसी खुदाई सिफात उसने मंसूब करना शुरू कर दी। उस मकसद के हुसूल के लिए कुछ रिवायत भी गढ़ दी गई। मसलन जंग उहुद में जब रसूले अकरम सल्ल० ज़ख्मी हो गए तो जिब्रईल ने आकर कहा (ऐ मुहम्मद सल्ल०) नादे अली वाली दुआ पढ़ो या नी अली को पुकारो जब रसेले अकरम सल्ल० ने यह दुआ पढ़ी तो हज़री अली रज़ि० फौरन आपकी मदद को आए और कुफ्फार को कत्ल करके आप सल्ल० को और तमाम मुसलमानों को कत्ल होने से बचा लिया। (इस्लामी तसव्वुफ में गैर इस्लामी तसव्वुफ की आमेज़िश अज़ प्रोफेसर यूसुफ सलीम चिश्ती, सफा ३४)

१. शरीअत व तरीकत अज़ मौलाना अब्दुर्रहमान कीलानी, सफा-७४

होती है, न ही उनक पास किसी दूसरे के दावा खुदाई को मुस्तरद करने का कोई जवाज़ होता है-१ यही वजह है कि सूफिया की शायरी में रसूले अकरम सल्ल० और अपने पीरों व मुर्शिदों को अल्लाह का रूप या अवतार कहने के अकीदे का इज़हार बकसरत पाया जाता है। चन्द अशआर मुलाहिज़ा हों।

१. खुदा कहते हैं जिसको मुस्तफा मालूम होता है
जिसे कहते हैं बन्दा खुद खुदा मालूम होता है
२. बजाते थे जो अना अब्दहु की बांसुरी हर दम
खुदा के अर्श पर इन्नी अनल्लाह बनके निकलेंगे
३. शरीअत का डर है वगरना यह कहदूं
खुदा खुद रसूले खुदा बन के आया
४. वही जो मस्तवी अर्श था खुदा होकर
उतर पड़ा मदीना में मुस्तफा होकर
५. बन्दगी से आपकी हम को खुदावन्दी मिली
हैखुदा वन्द जहां बन्दा रसूलुल्लाह का
६. पीर कामिल सूरत ज़िल्ले इलाह
यानी दीद पीर दी किबरिया

तर्जुमाः कामिल पीर गोया ज़िल्ले इलाह है, ऐसी पीर की ज़ियारत खुदा की ज़ियारत है।

७. इले लोग जहान दे भले फिर दे सब

---

१. यहां एक घटना का उल्लेख यकीनन पाठकों की दिलचस्पी का बाइस होगा जिसे "हकीकत वजूद" के मुसन्निफ अब्दुल हकीम अंसारी ने अपनी किताब मे तहरीर किया है। जो कि हस्बे ज़ैल है: "हमारे एक चिश्तियां खानदान के पीर भाई सूफी जी के नाम से मशहूर थे। एक दिन मेरे पास आए तो हम मिलकर चाय पीने लगे। चाय पीते पीते सूफी जी के चेहरे पर "कैफियत" के असर नुमाया हुए। चेहरा सुर्ख हो गया, आंखों में लाल डोरे उभर आये। फिर कुछ नशा की सी हालत तारी हुई यकायक सूफी जी ने सर उठाया और कहने लगे "भाई जान मैं खुदा हूं।" इस पर मैंने ज़मीन से एक तिंका उठाया और उसके दो टुकड़े कर के सूफी जी से कहा "आप खुदा हैं तो इसे जोड़ दीजिए" सूफी जी ने दोनों टूटे हुए टुकड़ों को मिलाकर उनपर "तवज्जोह" फरमाई, लेकिन क्या बनना था साथ ही वह उनकी वह कैफियत भी गायब हो गई जिसकी वजह से वह खुदाई का दावा कर रहे थे। (शरीअत व तरीकत कीत, सफा-६४)

सामने देख के पीर नूं फरीदी पछदे रब

तर्जुमाः वे लोग बेवकुफ हैं और भटके हुए हैं जो पीर को अपने सामने देखकर भी रब के बारे में सवाल करते हैं।

८. मर्दाने खुदा, खुदा न बाशद
लेकिन ज़ खुदा, जुदा न बाशद

तर्जुमाः खुदा के बन्दे खुदा तो नहीं होते, लेकिन खुदा से जुदा भी नहीं होते।

६. अपना अल्लाह मियां ने हिन्द में नाम
रखा लिया ख्वाजा गरीब नवाज़
१०. चाचड़ वांग मदीना दसे ते कुंट मिठन बैतुल्लाह
ज़ाहिर दे विच पीर फरीदन ते बातिन दे विच अल्लाह

जनाब अहमद रज़ा खां बरेलवी ने रसूले अकरम सल्ल० में अल्लाह तआला के हुलूल के साथ पीराने पीर शैख अब्दुल कादिर जीलानी रह० में रसूले अकरम सल्ल० के हुलूल को भी तसलीम किया है। फरमाते हैं "हुज़ूर पुरअनवर (यानी रसूले अकरम सल्ल०) मैं अपनी सिफात जमाल व जलाल, कमाल व अफज़ाल के हूज़ूर पुरअनवर सैयदना गौसे आज़म पर मुतजल्ली हैं जिस तरह ज़ात अहदियत (यानी अल्लह तआला) में जुमला सिफात व जलालियात आइनाए मुहम्मदी में तजल्ली फरमां हैं-१ (फतावा अफ्रीका, सफा १०१)

कदीम व जदीद सुफिया किराम ने फलसफा वहदतुल वजूद और हुलूल का दुरूस्त साबित करने के लिए बड़ी तूल व तवील बहसें की हैं, लेकिन सच्ची बात यह है कि आज के साइंसी दौर में अक्ल उसे तसलीम करने के लिए बिल्कुल तैयार नहीं। जिस तरह ईसाइयत का अकीदा तसलीम "एक में से तीन और तीन में से एक" आम आदमी के लिए ना काबिले फहम है इसी तरह सुफिया किराम का यह फलसफसा "कि इंसान अल्लाह में या अल्लाह इंसान में हुलूल किये हुए है" नाकाबिले फहम है।

१. शरीअत वतरकीत सफा-७४

अगर यह फलसफा दुरूस्त है तो इसका सीधा सीधा मतलब यह है कि इंसान ही दर हकीकत अल्लाह है और अल्लाह ही दरहकीकत इंसान है। अगर वास्तविक घटना यह है तो फिर सवाल पैदा होता है कि आबिद कौन है माबूद कौन? साजिद कौन है मसजूद कौन? खालिक कौन है मखलूक कौन? हाजत मन्द कौन है हाजत रवा कौन? मरने वाला कौन है मारने वाला कौन? ज़िन्दा होने वाला कौन है ज़िन्दा करने वाला कौन? गुनाह गार कौन है बख्शने वाला कौन? रोज़े जज़ा हिसाब लेने वाला कौन है देने वाला कौन? और फिर जज़ा या सज़ा के तौर पर जन्नत या जहन्नम में जाने वाले कौन और भेजने वाला कौन? इस फलसफे को तसलीम करने के बाद इंसान, इंसान का मकसद तखलीक और आखिरत यह सारी चीज़ें क्या एक पहेली और मसला नहीं बन जातीं? अगर अल्लाह तआला के यहां वास्तव में मुसलमानों का यह अकीदा काबिले कुबूल है तो फिर यहूदियों और ईसाइयों का अकीदा "इब्नुल्लाह" क्यों काबिले कबूल नहीं? मुश्रिकीन मक्का का यह अकीदा कि इंसान अल्लाह का जुज़ है क्यों काबिले कबूल नहीं?-१ वहदतुल वजूदक के कायल बुत परस्तों की बुत परस्ती क्यों काबिले कूबूल नहीं?

हकीकत यह है कि किसी इंसान को अल्लाह की ज़ात का जुज़ समझना (या अल्लाह की ज़ात में मुदगम समझना) या अल्लाह तआला को किसी इंसान में मुदगम समझना ऐसा खुला और नंगा शिर्क फिज़्ज़ात है जिस पर अल्लाह तआला का शदीद गज़ब भड़क सकता है। ईसाईयों ने हज़रत ईसा अलैहि० को अल्लाह का बेटा (जुज़) करार दिया तो इस पर अल्लाह तआला ने कुरआन मजीद में जो तबसेरा फरमाया है उसका एक-एक शब्द काबिले गौर है। इरशाद बारी तआला है:

﴿لَقَدْ كَفَرَ الَّذِينَ قَالُوا إِنَّ اللَّهَ هُوَ الْمَسِيحُ ابْنُ مَرْيَمَ قُلْ فَمَنْ يَمْلِكُ مِنَ اللَّهِ شَيْئاً إِنْ أَرَادَ أَن يُهْلِكَ الْمَسِيحَ ابْنَ مَرْيَمَ وَأُمَّهُ وَمَن فِي الْأَرْضِ جَمِيعاً وَلِلَّهِ مُلْكُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا يَخْلُقُ مَا يَشَاءُ وَاللَّهُ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ﴾ (۵:۱۷)

---

१. तर्जुमा *और उन्होने उसके बन्दों में से कुछ को उसका जुज़ बना डाला। (सूरह जुखरूफ-१५)*

तर्जुमाः ''यकीनन कुफ्र किया उन लोगों ने जिन्होंने कहा मरयम का बेटा, मसीह ही अल्लाह है। ऐ नबी कहो अगर अल्लाह मसीह इब्ने मरयम को और उसकी मां को और तमाम ज़मीन वालों को हलाक कर देना चाहे तो किसकी मजाल है कि इस इरादे से रोक रखे? अल्लाह तो ज़मीन और आसमानों का और उन सब चिज़ों का मालिक है जो ज़मीन और आसमान के दरमियान पाई जाती है। जो कुछ चाहता है पैदा करता है और वह हर चीज़ पर कादिर है।'' (सूरह माइदा-१७)

सूरह मरयम में इससे भी ज़्यादा सख्त शब्दों में उन लोगों को चेतावनी दी गई है जो बन्दों को अल्लाह तआला का जुज़ करार देते हैं। इरशाद मुबारक है:

﴿وَقَالُوا اتَّخَذَ الرَّحْمٰنُ وَلَداً • لَقَدْ جِئْتُمْ شَيْئاً إِدّاً • تَكَادُ السَّمَاوَاتُ يَتَفَطَّرْنَ مِنْهُ وَتَنْشَقُّ الْأَرْضُ وَتَخِرُّ الْجِبَالُ هَدّاً • أَن دَعَوْا لِلرَّحْمَنِ وَلَدًا﴾

(٩١_٨٨:١٩)

तर्जुमाः ''वे कहते हैं कि रहमान ने किसी को बेटा बनाया है सख्त बेहूदा बात है जो तुम गढ़ रहे हो, करीब है कि आसमान फट पड़ें ज़मीन शक हो जाए और पहाड़ गिर जाएं इस बात पर कि लोगों ने रहमान के लिए औलाद होने का दावा किया है।'' (सूरह मरयम-८८-९१)

बन्दों को अल्लाह का जुज़ या बेटा करार देने पर अल्लाह तआला के उस शदीद गुस्से और नाराज़गी की वजह साफ ज़ाहिर है कि किसी को अल्लाह का जुज़ करार देने का लाज़मी नतीजा यह होगा कि उस बन्दे में अल्लाह तआला की सिफात तसलीम की जाएं। मसलन यह कि वह हाजत रवा और इख्तियारात और कुव्वतों का मालिक है, यानी शिर्क फिज़्ज़ात का लाज़मी नतीजा शिर्क फिस्सिफात है और जब किसी इंसान में अल्लाह की सिफात तसलीम कर ली जाएं तो फिर उसका लाज़मी नतीजा होगा कि उसकी रज़ा हासिल हो जाए। जिसके लिए बन्दा तमाम मरासिम उबूदियत, रूकूअ और सूजूद, नज़र व नियाज़, इताअत व फरमा बरदारी बजा लाता है यानी शिर्क फिस्सिफात का लाज़मी नतीजा है शिर्क फिल इबादत। गोया

शिर्क फिज़्ज़ात ही सबसे बड़ा दरवाज़ा है। दूसरी किस्म के शिर्क का। जैसे ही यह दरवाज़ा खुलता है हर किस्म के शिर्क का आगाज़ होने लगता है। यही वजह है कि शिर्क फिज़्ज़ात पर अल्लाह तआला का गैज़ व गज़ब इस कद्र भड़कता है कि मुमकिन है आसमान फट जाए, ज़मीन दो टुकड़े हो जाए और पहाड़ चूरा चूरा हो जाएं।

फलसफा वहदतुल वजूद और हुलूल का यह खुल्लम खुल्ला और खुला टकराव है अकीदा तौहीद के साथ जिसमें बेशुमार मखलूक खुदा पीरी मुरीदी के चक्कर में आकर फंसी हुई है। दीने इस्लाम की बाकी तालीमात पर, वहदतुल वजूद और हुलूल के क्या असरात हैं यह एक अलग तफसील तलब विषय है जो हमारी किताब के विषय से हटकर है इस लिए हम सारे में कुछ बातों की तरफ इशारा करने पर इकतिफा करते हैं।

१. रिसालत

सूफिया के नज़दीक वलायत, नबूवत और रिसालत दोनों से अफल है।-१ शैख महिउद्दीन इब्ने अरबी फरमाते हैं "नुबुव्वत का मकाम दरमियानी दर्जा है। वली से नीचे और रिसालत के ऊपर-२। बायज़ीद बुस्तामी का इरशाद है "मैंने समुद्र में गोता लगाया जबकि अंबिया उसके साहिल पर खड़े हैं।" नीज़ फरमाते हैं "मेरा झण्डा कयामत के दिन मुहम्मद सल्ल० के झण्डे से बुलन्द होगा-३ (हज़रत निज़ामुद्दीन अवलिया

---

१. अहले तशीअ के नज़दीक भी वलायत अली (या इमामत अली) नुबुव्वत से अफज़ल है यह साबित करने के लिए कुछ रिवायत भी गढ़ली गई हैं। "यानी अगर अली न होते तो ऐ मुहम्मद सल्ल० मैं तुझे भी पैदा न करता" (इस्लामी तसव्वुफ में गैर इस्लामी तसव्वुफ की आमेज़िश-८३) इससे कब्ल जंगे उहुद नादे अली की रिवायत आप पढ़ही चुके हैं। यह अजीब इत्तिफाक है कि अहले तशीअ और अहले तसव्वुफ के बुनियादी अकाएद बिल्कुलज यकसां हैं। दोनों फिरके हुलूल को तसलीम करते है दोनों की अकीदत का मरकज़ हरज़रत अली रज़ि. हैं। दोनों के नज़दीक वलायत नबुव्वत से अफज़ल है। अहले तशीअ के अइम्मा मासूमन कायतनात के कण कण के मालिक व मुख्तार हैं। जबकि अहले तसव्वुफ के अवलिया किराम माफूकुल फितरत कुव्वत और इख्तियारात के मालिक समझे जाते हैं।

२. शरीअत वतरीकत-११८

३. शरीअत वतरीकत-१३०

रह० फरमाते हैं "पीर का फरमान रसूलुल्लाह सल्ल० के फरमान की तरह है-१ हाफिज़ शिराज़ी का इरशाद है अगर तुझे बुजुर्ग पीर अपने मुसल्ले को शराब में रंगीन करने का हुक्म दे तो ज़रूर ऐसा कर कि सालिक (सुलूक की) मंज़िलों के आदाब से नावाकिफ नहीं होता-२

२. कुरआन व हदीस

दीने इस्लाम की बुनियाद कुरआन व हदीस पर है लेकिन सूफिया के नज़दीक इन दोनों का मकाम और मरतबा क्या है इसका अन्दाज़ा एक मशहूर सूफी अफीफुद्दीन तिल मसानी के इस इरशाद से लगाए। "कुरआन में तौहीद है कहां? वह तो पूरे का पूरा शिर्क से भरा हुआ है जो व्यक्ति उसकी इत्तेबा करेबा वह कभी तौहीद के बुलन्द मर्तबा पर नहीं पहुंच सकता।"-३ (इमाम इब्ने तैमिया अज़ कोकून उमरी सफा ३२१)-४ हदीस शरीफ के बारे में जनाब बायज़ीद बुस्तानी का यह तबसेरा पढ़ लेना काफी होगा "तुम (अहले शरीअत) ने अपना इल्म मुर्दा लोगों (यानी मुहद्देसीन) से हासिल किया है और हमने अपना इल्म उसी ज़ात से हासिल किया है जो हमेशा ज़िन्दा है (यानी सीधे अल्लाह तआला से) हम लोग कहते हैं मेरे दिल में अपने रब से रिवायत किया और तुम कहते हो फलां (रावी) ने मुझ से रिवायत किया (और अगर सवाल किया जाए कि) वह रावी कहां है? जवाब मिलता है मर गया। (और अगर पूछा जाए कि) उस फलां (रवी) ने फलां (रावी) से बयान किया तो वह कहां है? जवाब वही कि मर गया है-५ कुरआन व हदीस का यह इसतहज़ा और तमसखुर और उसके साथ हवाए नफ्स की इत्तेबा के लिए "मेरे दिल ने मेरे रब से रिवायत किया"-६ का पुर फरेब जवाज़ किस कद्र जसारत है। अल्लाह और उसके रसूल सल्ल० के मुकाबिले में इमाम इब्ने जौज़ी इस बातिल

१. तसव्वुफ की तीन अहमद किताबें-६८
२. शरीअत व तरीकत-१५२
३. बहवाला साबिक
४. बहवाला साबिक
५. फुतूहात मक्किया अज़ इब्नुल अरबी-५७, भाग-१
६. तलबीस इब्लीस-३७४

दावे पर तबसरा करते हुए फरमाते हैं जिसने "मेरे दिल ने मेरे रब से रिवायत किया" कहा उसने दर पर्दा इस बात का इकरार किया कि वह रसूलुल्लाह सल्ल० से मुस्तगना है। अतः जो व्यक्ति ऐसा दावा करे वह काफिर है-१

३. इबादत और साधना

सूफिया के यहां नमाज़, रोज़ा, ज़कात, हज वगैरह का जिस कद्र एहतेमाम पाया जाता है उसका तज़किरा इससे कब्ल दीने खानकाही में गुज़र चुका है। यहां हम सूफिया की इबादत और रियाज़त के कुछ ऐसे खुद साख्ता तरीकों का ज़िक्र करना चाहते हैं जिन्हें सूफिया के यहां बड़ी कद्र व मंज़िलत से देखा जाता है। लेकिन किताब व सुन्नत में उनका जवाज़ तो क्या शदीद मुखालिफत पाई जाती है। कुछ मिसालें मुलाहिज़ा हों:

१.पीराने पीर (हज़रत शैख अब्दुल कादिर जिलानी) पन्द्रह साल तक नमाज़ इशा के बाद तोलूअ सुबह से एक कुरआन शरीफ खत्म करते। आपने यह सारे कुरआन पाक एक पांव पर खड़े होकर खत्म किए नीज़ खुद फरमाते हैं "मैं २५ साल तक इराक के जंगलों में तन्हा फिरता रहा एक साल तक साग घास और फेंकी हुई चीज़ों पर गुज़ारा करता रहा और पानी बिल्कुल न पिया और फिर एक साल तक पानी भी पीता रहा फिर तीसरे साल सिर्फ पानी पर गुज़ारा रहा फिर एक साल न कुछ खाया न पिया न सोया"-२ (गौसूस सकलैन)

२. हज़रत बायज़ीद बुस्तानी ३० साल तक शाम के जंगलों में रियाज़त व मुजाहिदा करते रहे। एक साल आप हज को गए तो हर कदम पर दो गाना अदा करते थे यहां तक कि १२ साल में मक्का मुअज़्ज़मा पहुंचें।-३ (सूफिया नक्श बन्दी सफा-८६)

---

१. शरीअत व तरीकत-४६१

२. शरीअत व तरकीत-४३१

३. शरीअत व तरकीत-४३१

४. बहवाला साबिक सफा ५६१

३. हज़रत मोइनुद्दीन चिश्ती अजमेरी कसीरूल मुजाहिदा थे, ७० साल तक रात भर नहीं सोए-१

४.हज़रत फरीद गंज शकर ने ४० दिन कुएं में बैठकर चिल्ला कशी की।-२ (तारीख मशाइख चिश्त-१७८)

५. हज़रत जुनैद बगदादी कामिल ३० साल तक इशा की नमाज़ पढ़ने के बाद एक पांव पर खड़े होकर अल्लाह अल्लाह करते रहे।-३ (सूफिया नक्श बन्दी-८६)

६. ख्वाजा मुहम्मद चिश्ती ने अपने मकान में एक गहरा कुवां खोद रखा था जिसमें उल्टा लटक कर इबादते इलाही में मसरूफ रहते।-४

७. हज़रज मुल्ला शाह कादरी फरमाया करते "तमाम उम्र हमको गुस्ल जनाबत और एहतिलाम की हाजत नहीं हुई क्योंकि यह दोनों गुस्ल निकोह और नींद से मुतअल्लिक हैं हमने न निकाह किया है न सोते हैं।-५ (हदीकतुल औलिया सफा ५७)

इबादत और रियाज़त के ये तमाम तरीके किताब व सुन्नत से तो दूर हैं ही लेकिन तअज्जुब की बात यह है कि जिस कद्र यह तरीके किताब व सुन्नत से दूर हैं उसी कद्र हिन्दू मज़हब की इबादत और रियाज़त के तरीकों से करीब हैं। आइन्दा सफहात में हिन्दू मज़बह का मुतआला करने के बाद आपको अन्दाज़ा होगा कि दोनों मज़ाहिब में किस कद्र ना काबिले यकीन हद तक समानंता और एक रूपता पाई जाती है।

फलसफा वहदतुल वजूद और हुलूल के मुताबिक चूंकि इंसान खुद तो कुछ भी नहीं बल्कि वही ज़ात बरहक कायनात की हर चीज़ (बिशमुल इंसान) में जलवागर है, लिहाज़ा इंसान वही करता है जो ज़ात बरहक

१. बहवाला साबिक सफा ५६१
२. बहवाला साबिक सफा ३४०
३. बहवाला साबिक सफा ४६१
४. बहवाला साबिक सफा ४३१
५. बहवाला साबिक सफा २७१

चाहती है। इंसान उसी रास्ते पर चलता है जिसपर वह ज़ात बरहक चलाना चाहती है।

"इंसान का अपना कोई इरादा है न कोई इख्तियार" इस नज़रिए ने अहले तसव्वुफ के नज़दीक नेकी और बुराई, हलाल और हराम, इताअत और नाफरमानी, सवाब व अज़ाब, जज़ा व सज़ा का तसव्वुर ही खत्म कर दिया है। यही वजह है कि अकसर सूफिया हज़रात ने अपनी तहरीरों में जन्नत और दोज़ख का तमसखुर और मज़ाक उड़ाया है।

हज़रत निज़ामुद्दीन औलिया अपने मलफूज़ात फवाइदुल फवादइ में फरमाते हैं कयामत के दिन हज़रत मारूफ करखी को हुक्म होगा बहिश्त में चलो वह कहेंगे "मैं नहीं जाता मैंने तेरी बहिश्त के लिए इबादत नहीं की थी" चुनांचे फरिश्तों को हुक्म दिया जाएगा कि उन्हें नूर की ज़ंजीरों में जकड़कर खींचते खींचते बहिश्त में ले जाओ–१

हज़रत राबिआ बसरी के बारे में कहा जाता है कि उन्होंने एक दिन दाएं हाथ में पानी का प्याला और बाएं हाथ में आग का अंगारा लिया और फरमाया यह जन्नत है और यह जहन्नम है। इस जन्नत को जहन्नम पर उडेलती हूं ताकि न रहे जन्नत न रहे जहन्नम और लोग खालिस अल्लाह की इबादत करें।

४. करामात

सूफिया किराम, वहदतुल वजूद और हुलूल के कायल होने की वजह से खुदाई इख्तियारात रखते हैं इस लिय जिन्दों को मार सकते हैं, मुर्दों को ज़िन्दा कर सकते हैं। हवा में उड़ सकते हैं, किस्मतें बदल सकते हैं। कुछ मिसालें मुलाहिज़ा हों।

१. "एक बार पीराने पीर शैख अब्दुल कादिर ज़ीलानी रह० ने मुर्गी का सालन खाकर हड्डियां एक तरफ रख दीं इन हड्डियों पर हाथ रखकर फरमाया 'कुम बिइज़निल्लाह' तो वे मुर्गी ज़िन्दा हो गई।–२ (सीरते

१. शरीअत व तरकीत–५०० २. बहवाला साबिक–४९१

गौस-१६१)

२. "गवैय्ये की कब्र पर पीराने पीर ने 'कुम बिइज़निल्लाह' कहा कब्र फटी और मुर्दा गाजा हुआ निकल आया।-१ (तफरीहुल खातिर-१६)

३. "ख्वाजा अबू इसहाक चिश्ती जब सफर का इरादा फरमाते तो दो सौ आदमियों के साथ आंख बन्द कर फौरन मंज़िले मकसूद पर पहुंच जाते।-२ (तारीख मशाइख़ चिश्त अज़ मौलाना ज़करिया-१६२)

४. "सैयद मौदूद चिश्ती की वफात ६७ साल की उम्र में हुई आपकी नमाज़े जनाज़ा अव्वल रिजालुल गैब (मुर्दा बुजुर्ग) ने पढ़ी, फिर आम आदमी ने। उसके बाद जनाज़ा खुद ब खुद उड़ने लगा। इस करामात से बेशुमार लोगों ने इस्लाम कुबूल किया।"-३ (तारीख मशइख चिश्त-१६०)

५. "ख्वाजा उसमान हारूनी ने वुज़ू का दो गाना अदा किया और एक कमसिन बच्चे को गोद में लेकर आग में चले गए और दो घण्टे उसमें रहे आग ने दोनों पर कोई असर न किया। उसपर बहुत से आतिश परस्त मुसलमान हो गए।" ४

६. "एक औरत ख्वाजा फरीदुद्दीन गंज शकर के पास रोती हुई आयी और कहा बादशाह ने मेरे बे गुनाह बच्चे को तख्तादार पर लटकवा दिया है चुनांचे आप अस्हाब समेत वहां पहूंचे और कहा "इलाही अगर यह बेगूनाह है तो इसे ज़िन्दा कर दे।" लड़का ज़िन्दा हो गया और साथ चलने लगा यह करामात देखकर (एक हज़ार हिन्दू मुसलमान हो गए)।-५ (इसरारूल औलिया-११०-१११)

७. "एक व्यक्ति ने बारगाह गौसिया में लड़के की दरख्वास्त की आपने उसके हक में दुआ फरमाई। इत्तिफाक से लड़की पैदा हो गई

१. बहवाला साबिक-४१३ *२. बहवाला साबिक-४१८*
३. बहवाला साबिक-७४ *४. शरीअत व तरीकत-३७५*
५. शरीअत व तरकीत-३७६

आपने फरमाया इसे घर ले जाओ और कुदरत का करिश्मा देखो जब घर आया तो उसे लड़की के बजाए लड़का पाया।-१ (सकीना औलिया-१७)

८. "पीराने पीर गौसे आज़म मदीने से हाज़री देकर नंगे पांव बगदार आ रहे थे। रास्ते में चोर मिला जो लूटना चाहता था। जब चोर को इल्म हुआ कि आप गौसे आज़म हैं तो कदमों पर गिर पड़ा और ज़बान पर "या सैयदि अब्दुल कादिर शैअन लिल्लाह" जारी हो गया। आपको उसकी हालत पर रहम आ गया उसकी इस्लाह के लिए बारगाहे इलाही में मुतवज्जह हुए। गैब से निदा आई "चोर को हिदायत की रहनुमाई करते हो कुतुब बना दो चुनांचे आपकी एक निगाह फैज़ से वह कुतुब के दर्जे पर फायज़ हो गया।-२ (सीरत गौसिया-६४०)

९. "मियां इस्माईल लाहौर अल मारूफ मियां कलां ने सुबह की नमाज़ के बाद सलाम फेरते वक्त जब निगाह करम डाली तो दायीं तरफ के मुकतदी सब के सब हाफिज़े कुरआन बन गए और बायीं तरफ के नाज़रा पढ़ने वाले।"-३ (हदीकतुल औलिया-१७६)

१०. "ख्वाजा अलाउद्दीन साबिर कलियरी को ख्वाजा फरीदुद्दीन गंज शकर ने कलियर भेजा। एक रोज़ ख्वाजा साहब इमाम के मुस्सले पर वैठ गए लोगों ने मना किया तो फरमाया "कुतुब का रूतबा काज़ी से बढ़कर है।" लोगों ने ज़बर दस्ती मुसल्ला से उठा दिया हज़रत को मस्जिद में नमाज़ पढ़ने के लिए जगह न मिली तो मस्जिद को मुखातब कर के फरमाया "लोग सज्दा कते हैं तू भी सज्दा कर" यह बात सुनते ही मस्जिद मय छत और दीवार के लोगों पर गिर पड़ी और सब लोग हलाक हो गए।"-४ (हदीकतुल औलिया-७०)

५. बातिनियत

किताब व सुन्नत से सीधा टकराव अकाइदव इफ्कार पर पर्दा डालने के लिए अहले तसव्वुफ ने बातिनियत का सहारा भी लिया है। कहा जाता

१. शरीअत व तरीकत-२६६ २. शरीअत व तरीकत-१७३
३. शरीअत व तरीकत-३०४ ४. शरीअत व तरीकत-१६६

है कि कुरआन व हदीस के शब्दों के दो दो मायना हैं। एक ज़ाहिरी दूसरे बातिनी (या हकीकी) यह अकीदा बातिनियत कहलाता है। अहले तसव्वुफ के नज़दीक दोनों मायना को आपस में वही निस्बत है जो छिलके को मग्ज़ से होती है। यानी बातिनी मायना ज़ाहिरी मायना से अफज़ल और मुकद्दम है। ज़ाहिरी मायना से तो उलमा वाकिफ हैं लेकिन बातिनी मायना को सिर्फ अहले इसरार व रमूज़ ही जानते हैं। इन इसरार व रमूज़ का स्रोत औलिया किराम के मुकाशिफे, मुराकबे, मुशाहिदे और इल्हाम या फिर बुजुर्गों का फैज़ और तवज्जोह करार दिया गया। जिसके ज़रिए पवित्र शरीअत की मन मानी तावीलें की गईं। मसलन कुरआन मजीद की आयत वअबुद रब्ब-क हत्ता याति-य-कल यकीन (१५:६६) का तर्जुमा यह है कि अपने रब की इबादत उस आखिरी घड़ी तक करते रहो जिसका आना यकीनी है (यानी मौत)। (सूरह हुजरात, आयत ६६) अहले तसव्वुफ के नज़दीक यह उलमा (अहले ज़ाहिर) का तर्जुमा हैं उसका बातिनी या हकीकी तर्जुमा यह है कि "सिर्फ उस वक्त तक अपने रब की इबादत करो जब तक तुम्हें यकीन (मारफत) हासिल न हो जाए" यकीन या मारफत से मुराद मारफते इलाही है यानी जब अल्लाह की पहचान हो जाए तो सूफिया के नज़दीक नमाज़, रोज़ा, हज, ज़कात और तिलावत वगैरह की ज़रूरत बाकी नहीं रहती। इसी तरह सूरह बनी इसराईल कीआयत २३ 'व कज़ा रब्बु-क अल्ला तअबुदू इल्ला इय्याहु' यानी तेरे रब ने फैसला कर दिया है कि तुम लोग किसी की इबादत न करो मगर सिर्फ उसी की" यह उलमा का तर्जुमा है और अहले इसरार व रमूज़ का तर्जुमा यह है "तुम न इबादत करो मगर वह उसी (यानी अल्लाह) की होगी जिस चीज़ की भी इबादत करो।" जिसका मतलब यह है कि तुम चाहे किसी इंसान को सज्दा करो या कब्र को या किसी मुजस्समे और बुत को वह दरहकीकत अल्लाह ही की इबादत होगी। कलिमा तौहीद ला इला-ह इल्लल्लाहु का साफ और सीधा मतलब यह है कि "अल्लाह के सिवा कोई इलाह नहीं" सुफिया के नज़दीक इसका मतलब यह है ला मौजू-द इल्लल्लाह यानी दुनिया में अल्लाह के सिवा कोई चीज़ मौजूद नहीं। इलाह

का तर्जुमा मौजूद करके अहले तसव्वुफ ने कलिमा तौहीद से अपना नज़रिया वहदतुल वजूद तो साबित कर दिया लेकिन साथ ही कलिमा तौहीद को कलिमा शिर्क में बदल डाला। तर्जुमाः "जो बात उनसे कही गई थी ज़ालिमों ने उसे बदल कर कुछ और कर दिया।" (सूरह बकरा आयत-५६)

बातिनियत के पर्दे में किताब व सुन्नत के अहकामात और अकाइद की मन मानी तावीलों के अलावा अहले तसव्वुफ ने कैफ जज़्ब, मस्ती, इस्तगराक, सकर (बेहोशी) और सहू (होश) जैसी अस्तलाहात गढ़ करके जिसे चाहा हलाल करार दे दिया जिसे चाहा हराम ठहरा दिया। ईमान की तारीफ यह की गई कि यह दरअस्ल इश्क हकीकी (इश्के इलाही) का दूसरा नाम है इसी के साथ यह फलसफा तराशा गया कि इश्के हकीकी का हुसूल इश्के मजाज़ी के बगैर मुमकिन ही नहीं चुनांचे इश्के मुजाज़ी के सारे लवाज़मात, गिना, मौसीकी, रक्स व सुरूर, समाअ, वज्द, हाल वगैरह और हुस्न व इश्क की दास्तानों और जाम व सुबू की बातों से लबरेज़ शायरी मुबाह ठहरी। शैख हसीन लाहौरी जिनका एक ब्रहामण लड़के के साथ इश्क का किस्सा हम "दीने खानकाही" में बयान कर चुके हैं, के बारे में "खज़ाना असफिया" में लिखा है कि "वह बहलोल दरियाई के खलीफा थे। ३६ साल वीराने में रियाज़त व मुजाहिदा किया। रात को दातागंज बख्श के मज़ार पर ऐतिकाफ में बैठते। आपने तारीका मिलामिया इख्तियार किया। चार अबरू का सफाया, हाथ में शराब का प्याला सुरूर व नगमा चंग व रबाब तमाम शरई कैदों से आज़ाद जिस तरफ चाहते निकल जाते" यह है वह बातिनियत जिसके खुशनुमा पर्दे में अहले हवा व हवस दीने इस्लाम के अकाइद ही नहीं अख्लाक और शर्म व हया का दामन भी तार तार करते रहे और फिर भी बकौल मौलाना अलताफ हुसैन हाली रह०

"न तौहीद में खलल इससे आए
न इस्लाम बिगड़े न ईमान जाए"।

१. शरीअत व तरीकत-२०४

पाठक गणो! फलसफा वहदतुल वजूद और हुलूल के नतीजे में पैदा होने वाली गुमराही का यह मुख्तसर सा परिचय है जिससे बखूबी अंदाज़ा लगाया जा सकता है कि मुसलमानों को इलहाद और कुफ्र व शिर्क के रास्ते पर डालने में इस बातिल फलसफे का कितना बड़ा हिस्सा है?

हिन्द व पाक का कदीम तरीन मज़्हब, हिन्दूमत

पंद्रह सौ साल (पूर्व मसीह), जहां गर्द आर्यन अकवाम मध्य एशिया से आकर वादी सिंध के इलाके हड़प्पा और मोहन जूदड़ो में आबाद हुईं। यह इलाके इस वक्त बर्रे सगीर ही तहज़ीब व तमद्दुन का सर चश्मा समझे जाते थे। हिन्दुओं की पहली मुकद्दस किताब "ऋगवेद" उन्ही आर्यन अकवाम के विचारकों ने लिखी जो उनके देवी देवताओं की महानता के गीतों पर मुश्तमिल है। यहीं से हिन्दू मज़हब की इब्तिदा हुई-१ जिसका मतलब यह है कि हिन्दू मज़हब गुज़िश्ता साढ़े तीन हज़ार साल से बर्रेसगीर की तहज़ीब व तमद्दुन, मुआशिरत और मज़ाहिब पर असर अंदाज़ होता चला आ रहा है।

हिन्दूमत के अलावा बुद्धमत और जैनमत का शुमार भी कदामतरीन मज़ाहिब में होता है। बुद्धमत का बानी गौतम बुद्ध ५६३ (पूर्व मसीह) में ८० साल की उम्र पाकर गुज़र गया। जबकि जैन मत का बानी महावीर जैन ५६६ (पूर्व मसीह) में पैदा हुआ और ७२ साल की उम्र पाकर ५२७ (पूर्व मसीह) में मरा जिसका मतलब यह है कि यह दोनों मज़हब भी कम से कम चार पांच सौ साल पूर्व मसीह से बर्रे सगीर की तहज़ीब व तमद्दुन, मुआशिरत और मज़ाहिब पर असर अंदाज़ हो रहे हैं।

हिन्दूमत, बुद्धमत और जैनमत तीनों मज़ाहिब मवदतुल वजूद और हुलूल के फलसफे पर ईमान रखते हैं। बुद्धमत के पैरोकार गौतम बुद्ध को अल्लाह तआला का अवतार समझकर उसके मुजस्समों और मूतियों की पूजा और परस्तिश करते हैं। जैनमत के पैरोकार महावीर के मुजस्समे के अलावा तमाम मज़ाहिर कुदरत, मसलन, सूरज, चांद, सितारे, हजर,

१. मुकदमा अर्थ शास्त्र अज़ मौलाना मुहम्मद इस्माईल ज़बीह, सफा ५६।

शाजर, दरिया, समुन्द्र आग और हवा वगैरह की पूजा करते हैं। जिन्दूमत के पैरोकार अपनी कौम के महान व्यक्तियों (मर्द व औरत) के मुजस्समों के लिावा मज़ाहिर कुदरत की पूजा भी करते हैं हिन्दू कुतुब में इसके अलावा जिन चीज़ों को पूजा योग्य कहा गया है उनमें गाय (बिशमोल गाय का मक्खन, दूध, घी, पेशाब और गो) बैल, आग पीपल का पेड़, हाथी, शेर, सांप, चूहे, सूवर और बन्दर भी शामिल हैं। उनके बुत और मुजस्समे भी इाबदत के लिए मंदिरों में रखे जाते हैं। औरत और मर्द के लिंग व योनि भी पूजा योग्य समझे जाते हैं, चुनांचे शिवाजी महाराज की पूजा उसके मर्दाना लिंग की पूजा करके की जाती है। और शक्ति देवी की पूजा उसके पोशीदा अंग की पूजा करके की जाती है।-१

बर्रे सगीर में बुत परस्ती की कदीमतरीन तीनों मज़ाहिब के मुख्तसर परिचय के बाद हम हिन्दू मज़हब की कुछ तालीमात का उल्लेख करना चाहते हैं। ताकि यह अंदाजा किया जा सके कि बर्रे गसीर हिन्द व पाक में शिर्क की इशाअत और फैलाव में हिन्दूमत के असरात किस कद्र गहरे हैं।

१. हिन्दू मज़हब में इबादत और रियाज़त के तरीके

हिन्दू मज़हब की तालीमात के मुताबिक निजात हासिल करने के लिए हिन्दू दूर जंगलों और गारों में रहते। अपने जिस्म को रियाज़तों से तरह तरह की तकलीफें पहुंचाते। गर्मी, सर्दी, बारिश, और रेतीली ज़मीन पर नंगे बदन रहना अपनी रियाज़तों का मुकद्दस अमल समझते जहां यह अपने आपको दीवाना वार तकलीफें पहुंचाकर अंगारों पर लोटकर, गर्म सूरज में नंगे बदन बैठकर, कांटों के बिस्तर पर लेटकर, पेड़ों की शाखों पर घण्टों लटककर और अपने हाथ को बेहरकत बनाकर या सर से ऊंचा

१. पिछले दिनों विश्व हिन्दू परिषद के रहनुमा राम चन्द्र जीने खड़ाओ की पूजा और परस्तिश करने की मुहिम का बाकायदा आगाज़ किया। अखबारात में जो तसावीर प्रकाशित हुई उनमें राम चन्द्र जी आला किस्म की खड़ाओं पहनकर ताज़ीमन खड़े नज़र आ रहे हैं। (मुलाहिज़ा हो नवाए वक्त, ८ अक्तूबर ११६२ ई०) गोया अब उपरोक्त अश्या के साथ साथ खड़ाव भी हिन्दूओं की मुकद्दस अशया में शामिल हो गई हैं।

ले जाकर इतने तवील अर्से तक रखते ताकि वह बेहिस हो जाएं और सुख कर कांटा बन जाएं। इन जिस्मानी आज़ार की रियाज़तों के साथ हिन्दूमत में दिमागी और रूहानी मशक्कतों को भी निजात का ज़रिया समझा जाता। चुनांचे हिन्दू अकेले शहर से बाहर गौर व फिक्र में मसरूफ रहते और उनमें से बहुत से झोपड़यों में अपने ग्रहों की रहनुमाई में गुरूप बनाकर भी रहते। उनमें से कुछ भीख पर गुज़ारा करते हुए सैयाहत करते उनमें से कुछ बिल्कुल नंगे रहते और कुछ लंगोटी बांध लेते। भारत के तूल व अर्ज़ में इस किस्म के जटाधारी या नंग धड़ंग और खाकतर मैले साधुओं की एक बड़ी संख्या, जंगलों, दरयाओं, और पहाड़ों में कसरत से पाई जाती है। और आम हिन्दू समाज में उनकी पूजा तक की जाती है।-१

रूहानी कुव्वत और ज़ब्ते नफ्स के हुसूल की खातिर रियाज़त एक अहम तरीका "योगा" इजाद किया गया जिसपर हिन्दूमत बुद्धमत और जैनमत के पैरोकार सभी अमल करते हैं। इस तरीके रियाज़त में योगी इतनी देर तक सांस रोक लेते हैं कि मौत का शुब्हा होने लगता है। दिल की हरकत का इसपर असर नहीं होता। सर्दी गर्मी उनपर असर अन्दाज़ नहीं होती। योगी तवील तरीन फाके के बाद भी ज़िन्दा रहते हैं। अर्थशास्त्र के नामा निगार इस तर्ज़े रियाज़त पर तबसिरा करते हुए आखिर में लिखते हैं कि यह सारी बातें मगरिबी इल्म इज्साम के माहिरीन के लिए तो हैरान कुन हो सकती हैं, लेकिन मुस्लिम सुफिया के लिए चन्दा हैरानकुन नहीं, क्योंकि इस्लामी तसव्वुफ के बहुत से सिलसिलों बिलखुसूस नक्श बन्दी सिलसिले में फना फिल्लाह या फना फिश्शैक या ज़िक्र कल्ब के औराद में हब्से दम के कई तरीके हैं। जिनपर सुफिया आमिल होते हैं।-२

योगा इबादत का एक भयानक नज़ारा साधुओं और योगियों का देहकते हुए शौला फिशां अंगारों पर नंगे कदम चलना और बगैर जले सालिम निकल आना है। तेज़ धारा नोकिले खंजर से एक गाल से दूसरे गाल तक और नाक के दोनों हिस्सों तक और दोनों होटों के आर पर

१. मुकदमा अर्थ शास्त्र, सफा ६६ *२. मुकदमा अर्थ शास्त्र, सफा १२६*

खंजर उतार देना और इस तरह घण्टों खड़े रहना। ताज़ा कांटों और नोकिली किलों के बिस्तर पर लेटे रहना या रात दिन दोनों पैरों या एक पैर के सहारे खड़े रहना या एक टांग और एक हाथ को इस लम्बे अर्से तक बेकार बना देना कि वह सूख जाए या मुसलसल उल्टे लटके रहना। सारी उम्र हर मौसम और बारिश में नंगे रहना, तमाम उम्र ब्रहम्चारी यानी कुवारा रहना या अपने तमाम अहले खाना से अलग होकर बुलन्द पहाड़ों के गारों में ज्ञान ध्यान करना वगैरह भी योगा इबादत के मुखतलिफ तरीके हैं। उसे हिन्दू योगी हिन्दू धर्म या वेदान्त यानी तसव्वुफ के मज़ाहिर करार देते हैं।-१

हिन्दूमत और बुद्धमत में जंतर मंतर और जादू के ज़रिए इबादत का तरीका भी राइज है। इबादत का यह तरीका इख्तियार करने वालों को "तांत्रिक" फिरका कहते हैं। ये लोग जादूई मंतर जैसे आदम मनी "पदममनी ओम" योगा के अन्दाज़ में ज्ञान ध्यान को निजात का ज़रिया समझते हैं। कदीम वेदिक लिटरेचर बताता है कि साधु और उनके कुछ वर्ग जादू और सिफली अमलियात में महारत हासिम करने के अमल दोहराया करते थे। इस फिरके में तेज़ बेहोश करने वाली शराबों का पीना, गोश्त और मछली खाना, जिन्सी अफआल का बढ़ चढ़कर गिलाज़तों को गिज़ा बनाना, मज़हबी रस्मों के नाम पर कत्ल करना, जैसी कबीह और मकरूह हरकात भी इबादत समझी जाती हैं।-२

२. हिन्दू बुज़ुर्गों के अलौकिक इख्तियारात

जिस तरह मुसलमानों के यहां गौस, कुतुब, नजीब, अबदाल, वली, फकीर और दरवेश वगैरह मुखलिफ मरातिब और मनासिब के बुज़ुर्ग समझे जाते हैं जिन्हें अलौकिक कुव्वत और इख्तियारात हासिल होते हैं इसी तरह हिन्दुओं में ऋषि, मुनी, महात्मा, अवतार, साधू, संत, सन्यासी, योगी, शास्त्री और चध्चधुरवेदी वगैरह मुख्तलिफ मरातिब और मनासिब के बुज़ुर्ग समझे जाते हैं। जिन्हे अलौकिक कुव्वत और इख्तियारात हासिल

---

१. बहवाला साबिक सफा १३० *२. बहवाला साबिक सफा ११७*

होते हैं। हिन्दुओं की मुकद्दस किताबों के मुताबिक यह बुजुर्ग माज़ी हाल और मुस्तकबिल को देख सकते हैं। जन्नत में दौड़ते हुए जा सकते हैं। दोवताओं के दरबार मे उनका बड़े सम्मान से इस्तकबाल किया जाता है। यह इतनी ज़बरदस्त जादूई ताकत के मालिक होते हैं कि अगर चाहें तो पहड़ों को उठाकर समुद्र में फेंक दें। यह एक निगाह से अपने दुश्मनों को जलाकर खाक कर सकते हैं। तमाम फसलों को बरबाद कर सकते हैं, अगर यह खुश हो जाएं तो पूरे शहर को तबाही से बचा लेते हैं, दौलत में ज़बरदस्त इज़ाफा कर सकते हैं, कहतसाली में से बचा सकते हैं, दुश्मनों के हमले रोक सकते हैं।-१ मुनी वह मुकद्दस इंसान है जो कोई कपड़ा नहीं पहनते हवा को बतौर लिबास इस्तेमाल करते हैं, जिनकी गिज़ा उनकी खामोशी है, वे हवा में उड़ सकते हैं, और परिन्दों से ऊपर जा सकते हैं, यह मुनी तमाम इंसानों के अन्दर पोशिदा ख्यालों को जानते हैं क्योंकि उन्होंने वह शराब पी हुई है जो आम इंसानों के लिए ज़हर है।-२ शिव जी के बेटे लार्ड गणेश के बारे में हिन्दुओं का अकीदा है कि वह किसी भी मुश्किल को आसान कर सकते हैं, अगर चाहें तो किसी के लिए भी मुश्किल पैदा करते हैं इस लिए बच्चा जब पढ़ने की उम्र मो पहुंचता है तो सबसे पहले गणेश की पूजा करना ही सिखाया जाता है।-३

३. हिन्द बुजुर्गों की कुछ करामात

हिन्दुओं की मुकद्दस कुतुब में अपने बुजुर्गों से मंसूब बहुत सी करामात का उल्लेख मिलता है हम यहां दो चार मिसलों पर ही इकतिफा करेंगे।

१. हिन्दुओं की मज़हबी किताब रामायण में राम और रावण का तवील किस्सा दिया गया है कि राम अपनी बीवी सीता के साथ जंगलात में ज़िन्दगी में बसर कर रहा था। लंका का राजा रावण उसकी बीवी को इगवा करके ले गया। राम ने हनुमान (बन्दरों के शहन्शा) की मदद से ज़बरदस्त खूनी जंग के बाद अपनी बीवी वापस हासिल कर ली लेकिद

१. मुकदमा अर्थ शास्त्र सफा-९९-१०० *२ बहवाला साबिक-९८*

३. रोज़नामा सियासत, कलाम फिक्र व नज़र दिनांक २० सितम्बर १९९१ हैदराबाद हिन्द

मुकद्दद कवानीन के तहत उसे बाद में अगल कर दिया। सीता यह गम बरदाश्त न कर सकी और अपने आपको हलाल करने के लिए आग में कूद गई अगनी देवता जो मुकद्दस आग के मालिक हैं उन्होंने आग को हुक्म दिया कि वह बुझ जाए और सीता को न जलाए। इस तरह सीता दहकती हुई आग से सालिम निकल आई और अपने अपने बेदाग किरदार का सुबूत फराहम कर दिया।-१

२. एक बार बुद्धमत के दुर्वेश (भिक्षू) ने यह चमत्कार दिखलाया कि एक पत्थर से एक ही रात में उस में हज़ारों शाख वाला आम का पेड़ पैदा कर दिया। (मुकदा अर्थ शास्त्र, ११६-११७)-२

३. मुहब्बत के देवता (काम) और उसकी देवी (रति) और उन देवी देवताओं के दोस्त खासतौर से मौसम बहार के खुदा जब बाहम खेलते तो "काम देवता" आने फूलों के तीरों से "शिव देवता" पर बारिश करते और शिव देवता अपनी तीसरी आंख से उन तीरों पर निगाह डालते तो यह तीर बुझी हुई खाक की शक्ल में तबाह हो जाते और वह हर किस्म के नुकसान से महफूज़ रहता क्योंकि वह जिस्मानी शक्ल से आज़ाद था।-३

४. हिन्दुओं के एक देवता लार्ड गणेश के वालिद शिव जी के बारे

१. मुकदमा अर्थ शास्त्र - १०१-१०२

२. एक तरफ बुद्धमत के भिक्षू यह चमत्कार और दूसरी तरफ बुद्धमत के संस्थापक गौतम बुद्ध के बारे में यह दिलचश्प खबर मुलाहिज़ा हो "हैदराबाद की खूबसूरत सागर झील में एक छोटे जहाज़ से गौतम बुद्ध का मुजस्मा फिसलकर झील में गिर गया। मुजस्समें का वज़त ४५० टन था और उसे ६ मई को बुद्ध पुर्णिमा के मौके पर नकाब कुशाई के लिए नसब किया जाना था। यह मुजस्समा दुनिया का सबसे बड़ा बुजस्समा था इस हादसे में (गौतम बुद्ध को बचाते बचात) दस लोग झील में डूब गए और ६ व्यक्ति ज़खमी हो गए। (नवाए वक्त ११ मार्च १६६० ई०) मुशिरकीन के माबूदों की असल हकीकत तो यह है कि चाहे वह बुद्धिस्टों के हों या हिन्दुओं के या मुसलमानों के ला इला-ह इल्लल्लाहु- वह फअन्ना तुफकून० तर्जुमा: उस अल्लाह तआला के सिवा कोई दूसरा इलाह नहीं आखिर तुम कहां से धोखा खारहे हो।(सूहर फातिर-३)

३. मुकदमा अर्थ शास्त्र-६०

४. हिन्दू इन तीनों शख्सियतों के बुत और मुर्तियां तराशकर पूजते हैं।

में रिवायत है कि देवी पारवती-४ (उनकी बीवी का नाम) ने एक दिन तय किया कि लार्ड शिव उनके गुस्ल के वक्त शरारतन गुस्ल खाना में घुसकर उन्हें परेशान करते हैं, चुनांचे उसका निवारण करने के लिए एक इंसानी पुतला बनाया और उसमें जान डालकर उसे गुस्ल खाने के दरवाज़े पर पहरा देने के लिए बिठा दिया। फिर यह हुआ कि शिव जी हस्बे आदत देवी पारवती को छेड़ने और सताने के लिए गुस्ल खाने की सिम्त चले आए उनकी हैरत की इंतिहा न रही जब उन्होंने गुस्ल खाना के दरवाज़े पर एक खूबसूरत बच्चे को पहरा देते देखा। शिव जी ने गुस्ल खाने में घुसने की कोशिश की तो उस बच्चे ने रास्ता रोक लिया। शिव जी को इस बात पर इतना गुस्सा आया कि उन्होंने त्रिशुल (तीन नोक का नेज़ा) से उसका सर काटकर धड़ से अलग कर दिया। देवी पारवती के लिए यह कत्ल शदीद सदमे का कारण बना तब शिव जी ने मुलाज़मीन को हुक्म दिया कि वह फौरी किसी का सर काटकर ले आएं। मुलाज़मीन भागे बाहर निकले तो सबसे पहले उनका सामना हाथी से हुआ और वह हाथी का सर काटकर ले आए शिव जी ने बच्चे के धड़ पर हाथी का सर जमाकर फिरसे जान डालदी और देवी पारवती बच्चे की नई ज़िन्दगी से बहुत खुश हुई।-१

हिन्दूमत की तालीमात का मुताला करने के बाद यह अन्दाज़ा लगाला मुश्किल नहीं है कि मुसलमानों के एक बड़े फिरके "अहले तसव्वुफ" के अकाईद और तालीमात हिन्दू मज़हब से किस दर्जे मुतस्सिर हैं। अकीदा वहदतुल वजूद और हुलूल समान, इबादत और रियाज़त के तरीके समान, बुज़ुर्गों के अलौकिक इख्तियारात समान और बुज़ुर्गों की करामात का सिलसिला भी समान। अगर कोई फर्क है तो वह है सिर्फ नामों का। तमाम मामिलात में समानता और एक रूपता पालेने के बाद हमारे लिए हिन्दुस्तान की तारीख में ऐसी मिसालें बाइसे तअज्जुब नहीं रहतीं कि हिन्दू लोग, मुसलमान पीरों, फकीरों के मुरीद क्यों बन गए और

१. रोज़नामा सियासत, कालम फिक्र व नज़र, हैदराबाद हिन्द, दिनांक २० सितम्बर १९९१ ई०

मुसलमान हिन्दू साधुओं और जोगियों के ज्ञान ध्यान में क्यों हिस्सा लेने लगे।–१ इस मेले जोल का नतीजा यह है कि हिन्द व पाक के मुसलमानों की बड़ी संख्या जिस इस्लाम पर आज अमल करती है उसपर किताब व सुन्नत के बजाए हिन्दू मज़हब के नुक्श कहीं ज़्यादा गहरे और नुमाया हैं।

६. शासक वर्ग

हिन्द व पाक में शिर्क व बिदअत के अस्बाब तलाश करते हुए अकसर यह बात कही जाती है कि चूंकि यहां इस्लाम पहली सदी हिजरी के आखिर में उस वक्त पहुंचा जब मुहम्मद बिन कासिम रह० ने ६६ हिजरी में सिंध फतह किया उस वक्त मुहम्मद बिन कासिम रह० और उसकी सेना के जल्द वापस चले जाने की वजह से एक तो इस्लाम खालिस किताब व सुन्नत की शक्ल में पहुंचा ही नहीं, दूसरे इस्लाम की यह दावत बड़े महदूद पैमाने पर थी। यही वजह हे कि हिन्द व पाक के मुसलमानों की बड़ी तादाद के विचार व आमाल में मुश्रिकाना और हिन्दवाना रस्म व रिवाज बड़े स्पष्ट और नुमाया हैं।

तारीखी एतिबार से यह बात दुरूस्त साबित नहीं होती। असल बात यह है कि सर ज़मीन हिन्द व पाक अहदे फरूकी (१५ हिजरी) से ही सहाबा किराम रज़ि० के आगमन से पवित्र होनी शुरू हो गई थी। अहदे

१. ज़बदतुल आरिफीन कुदवतुस्सालिकीन हाज़ि गुलाम कादिर अपने ज़माने के कुतुबुल अकताब और गौसुल अगवास और महबूब खुदा थे जिनका फैज़ रूहानी हर खास व आम के लिए अबतक जारी है। यही वजह थी कि हिन्दू, सिख, ईसाई हर कौम और फिरके के लोग आपसे फैज़ रूहानी हासिलक करते थे। आपके उर्स में तमाम फिरकों के लोग शामिल होते थे। आपके तमाम मुरीदीन बासफा फैज़ रूहानी से मालामाल और पाबन्द शरअ शरीफ हैं। (रियाज़ज़सालिकीन सफा-२७२ बहवाला शरीअत व तरकीत सफा-४७७) दूसरी तरफ इस्माइलिया फिरका के पीर शमशुद्दीन साहब कशमीर तशरीफ लाए तो तकैया करके अपने अपने आपको यहां के बाशिन्दों के रंगे में रंग लिया। एक दिन जब हिन्दू दशहरे की खुशी में गरबा नाच रहे थे पीर साहब भी उस नाच में शरीक हो गए और २८ गरबा गीत तसनीफ फरमाए। इसी तरह एक दूसरे पीर सदरूद्दीन साहब (इस्माइली) ने हिन्दुस्तान में आकर अपना हिन्दुवाना नाम "साह देव" (बड़ा दुर्वेश) रख लिया और लोगों के बताया कि विषणू का दस्वां अवतार हज़रत अली रज़ि० की शक्ल में हाज़िर हो चुका है। उसके पीर व सुफियों की ज़बान में मुहम्मद और अली की तारीफ में भजन गाया करते थे। (इस्लामी तसव्वुफ में गैर इस्लामी तसव्वुफ की आमेज़िश, सफा ३२-३३)

फारूकी और अहदे उस्मानी में इस्लाम रियासत के अन्तर्गत आने वाले मुमालिक में शाम, मिस्र, इराक, यमन, तुर्किस्तान, समरकन्द, बुखारा, तुर्की, अफ्रीका और हिन्दुस्तान में मालाबार जज़ाइर सरान द्वीप, माल द्वीप गुजरात औरी सिन्ध के इलाके शामिल थे। और इस अवधि में सर ज़मीन हिन्द में तशरीफ लाने वाले सहाबा किराम रज़ि० की तादाद २५, ताबईन की तादाद ३७ और तबअ ताबईन की तादाद १५ बताई जाती है।-१ अर्थात पहली सदी हिजरी के आरम्भ में ही इस्लाम हिन्द व पाक में खालिस किताब व सुन्नत की शक्ल में पहुंच गया था और हिन्दूमत के हज़ारों साला पुराने और गहरे असरात के बावजूद सहाबा किराम रज़ि० ताबईन और तबह ताबईन रह० की सई जमीला के नतीजा में मुसलल प्रगति पर था। जो बात तारीख हकाइक से साबित है वह यह कि जब कभी मुहिद और मोमिन अफराद बर सररे इकतदार आए तो वह इस्लाम की शान व शौकत में इज़ाफे का बाइस बने। मुहम्मद बिन कासिम के बाद सुल्तान सुबुकतगीन, सुल्तान महमूद गज़नवी और सुल्तान शहाबुद्दीन मुहम्मद गौरी का अहद (६८६-११७५ ई०) इस बात का स्पष्ट सुबूत है कि उस दौर में इस्लाम हिन्द व पाक की एक ज़बर दस्त सियासी और समाजी कुव्वत बन गया था उसके विपरीत जब कभी मुलहिद और बे दीन किस्म के लोग सत्ता में आय तो वह इस्लाम की पसपाई और रूसवाई का बाइस बने उसकी एक स्पष्ट मिसल अहदे अकबरी है जिसमें सरकारी तौर पर ला इला-ह इल्लल्लाहु अकबरू खलीफतुल्लाह मुसलमानों का कलिमा करार दिया गया। अकबर को दरबार में बाकायदा सजदा किया जाता। नबुव्वत, वह्य, हश्न, नश्र और जन्नत दोज़ख का मज़ाक उड़ाया जाता। नमाज़ रोज़ा हज और दीगर इस्लामी शआइर पर खुल्लम खुल्ला इतराज़ात किये जाते सूद, जुआ और शराब हलाल ठहराए गए सुअर को एक मुकद्दस जानवर करार दिया गया हिन्दुओं की खुशनूदी हासिल करने के लिए गाए का गोश्त हराम कर दिया गया। दीवाली, दशहरा, राखी, पूनण, शिवरात्री जैसे त्योहार हिन्दुवाना रसूम के साथ सरकारी सतह पर मनाए

---

१. मुलाहिज़ा हो "अकलीम हिन्द में इशाअत इस्लाम" अज़ गाज़ीज़ अज़ीज़

जाते।-१ हकीकत यह है कि हिन्दुस्तान में हिन्दुस्तान में हिन्दू मज़हब के अहया और शिर्क के फैलाव का अस्ल सबब ऐसे ही बे दीन और इकतदार परस्त मुसलमान हुकमरान थे।

तकसीम हिन्द के बाद का जाइज़ा लिया जाए तो यह हकीकत और भी स्पष्ट होकर सामने आती है कि शिर्क व बिदअत और शैकुलरिज़्म को फैलाने या रोकने में हुकमरानों का किरदार बड़ी अहमियत रखता है हमारे नज़दीक हर पाकिस्तानी को इस सवाल पर संजीदगी से गौर करना चाहिए कि आखिर क्या वजह है दुनिया की वह वाहिद रियासत जो कम वबेश निस्फ सदी पहले केवल कलिमा तौहीद ला इला-ह इल्लल्लाहु की बुनियाद पर वजूद में आई थी। उसमें आज फिर कलिमा तौहीद को लागू करने का दूर दूर कोई निशान नज़र नहीं आ रहा? अगर इसका सबब जिहालत कराद दिया जाए तो जिहालत खत्म करने की ज़िम्मदारी भी हुकमरानों पर थी। अगर उसका सबब निज़ामे तालीम करार दिया जाए तो निमाज़े तालीम को बदलने की ज़िम्मेदारी भी हुक्मरानों पर थी अगर उसका सबब दीने खनकाही करार दिया जाए तो दीने खानकाही के अलम्बरदारों को सही राह पर लाना भी हुक्मरानों की ज़िम्मदारी थी। लेकिन विडम्बना तो यह है कि तौहीद को लागू करने के मुकद्दस फरीज़े की बात तो दूर की बात, हमारे हुक्मरान खुद किताब व सुन्नत के निफाज़ की राह में सबसे बड़ी रूकावट बनते आए हैं। सरकारी सतह पर शरअी हुदूद को ज़ालिमाना करार दिना, किसास, दैत और कानून शहादत को दकियानूसी कहना, इस्लामी शआइर का मज़ाक उड़ाना सूदी निज़ाम के तहफ्फुज़ के लिए अदालातों के दरवाज़े खट खटाना आइनी कवानीन और फैमली पलानिंग जैसे गैर इस्लामी मंसूबे ज़बरदस्ती मुसल्लत करना, सकाफती ताइफों, कव्वालों गाने वालियों और संगीत कारों को सम्मानित करना।-२ साले नव और जश्न आज़ादी जैसे तकारीब के बहाने शराब व सबाब की महफिलें आयोजित करना हमाने सभ्य हुक्मरानों का मामूल बन चुका है।

१. तजदीद व अहयाए दीन अज़ सैयद अबुल आला मौदूदी, सफा ८०

२. एक दावत में वज़ीरे आज़म ने पुलिस बैण्ड की दिलकश धुनों से खुश होकर बैंड मास्टर को ५०००० रूपये इनाम दिया। (अल एतसाम ५ जून १९९२ ई०)

दूसरी तरफ खिदमत इस्लाम के नाम पर हमारी सभी हुक्मरान (इल्लाह माशा अल्लाह) जो कारनामे सर अंजाम देते चले आ रहे हैं उनमें सबसे नुमाया और सरे फहरिस्त दीने खानकाही से अकीदत का इज़हार और उसका तहफ्फुज़ है। शायद हमारे हुक्मरानों के नज़दीक इस्लाम का सबसे प्रमुख गुण यही है कि बानी पाकिस्तान मुहम्मद अली जिनाह रह० को लेकर मरहूम मुहम्मद ज़ियाउल हक तक और हकीमुल उम्मत अल्लामा इकबाल रह० से मरहूम हफीज़ जालन्धरी तक तमाम कौमी लीडरों के खूबसूरत संगमरमर के मुनक्कश मज़ार तामीर कराए जाएं उन पर मुजाविर (गार्ड) मुतअय्यन किए जाएं। कौमी दीनों में उन मज़ारों पर हाज़री दी जाए। फूलों की चादरें चढ़ाई जाएं। सलामी दी जाए। फातिहा खानी और क़ुरआनी खानी के ज़रिये उन्हें सवाब पहुंचाने का काम किया जाए। तो यह दीन इस्लाम की बहुत बड़ी खिदमत है।

याद रहे बानी पाकिस्तान मुहम्मद अली जिनाह रह० के मज़ार की देख भाल और हिफाज़त के लिए बाकायदा एक अलग मैनेजिंग बोर्ड कायम है जिसके मुलाज़िम सरकारी खज़ाने से वेतन पाते हैं पिछले वर्ष मज़ार के तकद्दुस की खातिर सिनेट की सेटिंग कमेटी ने मज़ार के इर्द गिर्द ६ फरलांग के इलाके में मज़ार से बुलन्द किसी भी इमारत की तामीर पर पाबन्दी आयद करने का फैला किया है। (रोज़नामा जंग १३ अगस्त १९९१ ई०)-१

१९७५ में शहन्सा इरान ने सोने का दरवाज़ा सैयद अली हज़वरी रह० के मज़ार की नज़री किया जिसे पाकिस्तान के उस वक्त के वज़ीरे आज़म ने अपने हाथों से दरबार में नसब फरमाया। १९८६ ई० में फेडरल हुकूमत ने झंग में एक मज़ार की तामीर व तज़ईन के लिए ६८

1. याद रहे मक्का मुअज़्ज़मा में बैतुल्लाह शरीफ की इमारत के इर्द गिर्द बैतुल्लाह शरीफ से दूगनी तीगुनी बुलन्द व बाला इमारतें मोजूद हैं जो मस्जिदुल हराम के बिल्कुल करीब वाकेअ हैं इसी तरह मदीना मुनव्वरा में रोज़ा रसूलुल्लाह सल्ल० के इर्द गिर्द रौज़ा मुबारक से दूगनी तीगुनी बुलन्द व बाला इमारतें मौजूद हैं जिनमें आम लोग रहते हैं। उलमा किराम के नज़दीक उन रिहायशी इमारतों की वजह से न तो बैतुल्लाह शरीफ का तकद्दुस मजरूह होतो है न रौज़ा रसूल सल्ल० का।

लाख रूपये का अतिया सरकारी खज़ाने-१ से अदा किया। १९९१ में सैयद अली हजवरी के उर्स का इफतताह वज़ीरे आला पंजाब ने मज़ार को ४० मन अर्क गुलाब से गुस्ल देकर किया-२ जबकि इस साल "दाता साहब" के ९४८ वीं उर्स के इफतताह के लिए जनाब वज़ीरे आज़म साहब स्वयं तशरीफ ले गऐ मज़ार पर फूलों की चादर चढ़ाई, फातिहा खानी की, मज़ार से मुत्तसिल मस्जिदमें नमाज़े इशा अदा की और दूध की सबील का इफतताह किया नीज़ मुल्क में शरीअत के निफाज़ कशमीर और फलस्तीन की आज़ादी अफगनिस्तान में अम्न व अमान और मुल्क कीह यकजहती तरक्की और खुश्हाली के लिए दुआऐं कीं-३ पिछले दिनों वज़ीरे आज़म साहब अज़ बकसतान तशरीफ ले गए जहां उन्होंने ४० लाख डालर (तकरीबन एक करोड़ रूपये पाकिस्तानी) इमाम बुखारी रह० के मज़ार की तामीर के लिए बतौरे अतिया इनायत फरमाए।-४

उपरोक्त कुछ मिसलों को देखते हुए अहले बसीरत के समझने के लिए बहुत कुछ मौजूद हैं ऐसी सर ज़मीन जिसके शासक खुद यह "खिदमते इस्लाम" सर अंजाम दे रहे हों वहां के अवाम की अकसरियत अगर गली गली मुहल्ले मुल्ले, गांव गांव, शब व रोज़ मराकिज़ शिर्क कायम करने में व्यस्त हों तो उसमें तअज्जुब की कौन सी बात है? कहा जाता है कि अन्नासू अला दीनी मुलूकिहिम (यानी अवाम अपने हुक्मरानों के दीन पर चलते हैं)

यह दौर अपने ब्राहीम की तलाश में है
सनम कदे हैं जहां ला इला-ह इल्लाह

जैसा कि हम पहले स्पष्ट कर चुके हैं इंसानी समाज में तामतर शर व फसाद की अस्ल बुनियाद शिर्क ही है। शिर्क का ज़हर जिस तेज़ी से समाज में काम कर रहा है उसी तेज़ी से पूरी कौम हलाकत और बरबादी की तरफ बढ़ती चली जा रही है। इस सूरते हाल का तकाज़ा यह है कि

---

१. सफीहा अहले हदीस कराची १६ दिसम्बर १९८६ ई०
२. रोज़नामा जंग २३ जुलाई १९९१ ई० *३. रोज़नामा जंग १६ अगस्त १९९२ ई०*
४. मुजल्लाह अद्दावत अगस्त १९९२ ई०

अकीदाए तौहीद की समझ रखने वाले लोग व्यक्तिगत और सामुहिक हर सतह पर शिर्क के खिलाफ जिहाद करने का अज़्म करें। व्यक्तिगत सतह पर सबसे पहले अपने अपने घरों में अह्ल अयाल पर तवज्जों दें जिनके बारे में अल्लाह तआला का स्पष्ट हुक्म भी है।

﴿يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا قُوا أَنفُسَكُمْ وَأَهْلِيكُمْ نَارًا﴾

तर्जुमा: "ऐ लोगो जो ईमान लाए हो, अपने आपको और अपने अहल व अयाल को (जहन्नम की) आग से बचाओ।" (सूरह तहरीम-६) उसके बाद अपने अज़ीज़ व आकरिब पर तवज्जो दी जाए और फिर धर घर, गली गली, मुहल्ले मुहल्ले और बस्ती बस्ती जाकर अकीदा तौहीद की दावत पेश की जाए। लोगों को शिर्क की बरबादियों और तबाह कारियों से सचेत किया जाए।

सामुहिक सतह पर मुल्क में अगर कोई गिरोह या जमाअत खालिस तौहीद की बुनियाद पर गलबा इस्लाम के लिए जद्दो जहद कर रही हो तो उसके साथ सहयोग किया जाए कोई फर्द या इदारा यह मुकद्दस फरीज़ा अंजाम दे रहा हो तो उसके साथ सहयोग किया जाए। कोई अख्बार जरीदा, या रिसाला इस कारे खैर में लगा होतो उसके साथ सहयोग किया जाए। शिर्क अपने सामने होते देखना और फिर उसे रोकने या मिटाने के लिए जद्दो जहद न करना सरासर अल्लाह तआला के अज़ाक को दावत देना है। एक हदीस शरीफ में इर्शाद मुबारक है।

"जब लोग कोई खिलाफे शरअ काम होता देखें और उसे न रोकें तो करीब है कि अल्लाह तआला उन सब पर अज़ाब नाज़िल फरमादे।" (इब्ने माजा, तिर्मीज़ी)

एक दूसरी हदीस शरीफ में इर्शाद नबवी सल्ल० है:

"उस ज़ात की कसम जिसके हाथ में मेरी जान है तुम दूसरों को नेकी का हुक्म देते रहो, और बुराई से रोकते रहो वरना अल्लाह तआला तुम पर अज़ाब नाज़िल कर देगा। फिर तुम उससे दुआ करोगे तो वह

तुम्हारी दुआ भी कबूल नहीं करेगा।" (तिर्मीज़ी)

गौर फरमाईए कि अगर आम गुनाहों से लोगों को न रोकने पर अल्लाह तआला का अज़ाब नाज़िल हो सकता है तो फिर शिर्क, जिसे खुद अल्लाह तआला ने सबसे बड़ा गुनाह (जुल्म) करार दिया है.....को ना रोकने पर क्यों नाज़िल न होगा? रसूले अकरम सल्ल० का इर्शाद मुबारक है:

"जो व्यक्ति खिलाफे शरअ काम होता देखे उसे चाहिए कि वह उसे हाथ से रोके, अगर उसकी ताकत न होतो फिर ज़बान से रोके, और अगर इसकी भी ताकत न होतो फिर दिल से ही बुरा जाने, और यह इमान का कमज़ोर तरीन दर्जा है।" (मुस्लिम शरीफ)

तो ऐ अहले ईमान! अपने आपको अल्लाह तआला के अज़ाब से बचाओ और हर हाल में शिर्क के खिलाफ जिहाद करने के लिए उठ खड़े हो, जो जान से कर सकता होतो वह जान से करे, जो माल से कर सकता हो वह माल से करे, जो हाथर से कर सकता हो वह हाथ से करे, जो ज़बान से कर सकता हो वह ज़बान से करे, जो कलम से कर सकता हो वह कलम से करे। इर्शाद बारी तआला है:

﴿انفِرُوا خِفَافًا وَثِقَالًا وَجَاهِدُوا بِأَمْوَالِكُمْ وَأَنفُسِكُمْ فِي سَبِيلِ اللَّهِ ذَٰلِكُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ إِن كُنتُمْ تَعْلَمُونَ﴾ (٩:٤١)

तर्जुमाः "निकलो, चाहे हल्के हो या बोझल और जिहाद करो अल्लाह तआला की राह में अपने मालों और अपनी जानों के साथ, यह तुम्हारे लिए बेहतर है अगर तुम जानो।" (सूरह तौबा-४१)

اَلنِّيَّةُ

नियत के मसाइल

मसला 9 : आमाल के अज्र व सवाब का दारोमदार नियत पर है।

عَنْ عُمَرَ بْنِ الْخَطَّابِ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ سَمِعْتُ رَسُولَ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُوْلُ اِنَّمَا الْاَعْمَالُ بِالنِّيَّاتِ وَ اِنَّمَا لِكُلِّ امْرِئٍ مَا نَوٰى فَمَنْ كَانَتْ هِجْرَتُهُ اِلٰى دُنْيَا يُصِيْبُهَا اَوْ اِلٰى امْرَاَةٍ يَنْكِحُهَا فَهِجْرَتُهُ اِلٰى مَا هَاجَرَ اِلَيْهِ. رَوَاهُ الْبُخَارِيُّ (١) (باب كيف كان بدء الوحى الى رسول الله ﷺ)

हज़रत उमर बिन खत्ता रज़ि० कहते हैं मैंने रसूलुल्लाह सल्ल० को फरमाते हुए सुना है कि "आमाल का दारो मदार नियत पर है हर व्यक्ति को आमाल का बदला नीयत के मुताबिक मिलेगा जिसने दुनिया हासिल करने की नीयत से हिजरत की उसे दुनिया मिलेगी और जिसने किसी औरत से निकाह के लिए हिजरत की (उसे औरत की मिलेगी) तो मुहाजिर की हिजरत का सिला वही है जसके लिए उसने हिजरत की।" इसे बुखारी ने रिवायत किया है।

عَنْ اَبِىْ عُبَيْدَةَ بْنِ مُحَمَّدِ بْنِ عَمَّارِ بْنِ يَاسِرٍ عَنْ اَبِيْهِ قَالَ اَخَذَ الْمُشْرِكُوْنَ عَمَّارَ بْنَ يَاسِرٍ فَلَمْ يَتْرُكُوْهُ حَتّٰى سَبَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَذَكَرَ آلِهَتَهُمْ بِخَيْرٍ ثُمَّ تَرَكُوْهُ فَلَمَّا اَتٰى رَسُوْلَ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ مَا وَرَآءَكَ؟ قَالَ شَرٌّ يَا رَسُوْلَ اللّٰهِ مَا تَرَكْتُ حَتّٰى نِلْتُ مِنْكَ وَذَكَرْتُ آلِهَتَهُمْ بِخَيْرٍ قَالَ كَيْفَ تَجِدُ قَلْبَكَ قَالَ مُطْمَئِنًّا بِالْاِيْمَانِ قَالَ اِنْ عَادُوْا فَعُدْ. رَوَاهُ الْبَيْهَقِيُّ (٢) (كتاب المرتد باب المكره على الردة)

हज़रत अबू उबैदा बिन मुहम्मद बिन यासिर रज़ि० अपने बाप से

रिवायत करते हैं कि हज़रत उम्मार बिन यासिर रज़ि० को मुश्रिकों ने पकड़ लिया और उस वक्त तक न छोड़ा (यानी सज़ा देते रहे) जब तक उन्होंने नबी अकरम सल्ल० को गाली न दी और उनके माबूदों าक भइलाई से उल्लेख न किया। जब हज़रत अम्मार रज़ि० रसूले अकरम सल्ल० की खिदमत में हाज़िर हुए तो आपने पूछा, "क्या हुआ" हज़रत अम्मार रज़ि० ने अर्ज़ किया "बहुत बुरा हुआ या रसूलुल्लाह! मुझे उस वक्त तक नहीं छोड़ा गया जब तक मैने आप सल्ल० के बारे में नाज़ेबा कलिमात न कहे और उनके माबूदों की तारीफ नहीं कि।" आप सल्ल० ने पूछा, "अपने दिल की क्या कैफियत महसूस करते हो?" हज़रत अम्मार रज़ि० ने अर्ज़ किया, "ईमान पर पूरी तरह मुतमइन है" तब आप सल्ल० ने इरशाद फरमाया "अगर यह मुश्रिक दोबारा ऐसा करें तो तब भी ऐसा ही करना।" इसे बैहकी ने रिदायत किया है।

عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ، قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِنَّ اللَّهَ لَا يَنْظُرُ إِلَى صُوَرِكُمْ وَأَمْوَالِكُمْ وَلٰكِنْ يَنْظُرُ إِلَىٰ قُلُوبِكُمْ وَأَعْمَالِكُمْ . رَوَاهُ مُسْلِمٌ

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० कहते हैं रसूले अकरम सल्ल० ने फरमाया "अल्लाह तआला तुम्हारी सूरतों और मालों को नहीं देखता बलिक तुम्हारे दिलों (की नियत) और आमाल देखता है।" इसे मुस्लिम ने रिवायत किया है।

عَنْ أَبِي الدَّرْدَاءِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ يَبْلُغُ بِهِ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ مَنْ أَتَىٰ فِرَاشَهُ وَهُوَ يَنْوِي أَنْ يَقُومَ يُصَلِّي مِنَ اللَّيْلِ فَغَلَبَتْهُ عَيْنَاهُ حَتَّى أَصْبَحَ كُتِبَ لَهُ مَا نَوَى وَكَانَ نَوْمُهُ صَدَقَةً عَلَيْهِ مِنْ رَبِّهِ عَزَّوَجَلَّ.

صحيح سنن انسائی رقم الحدیث١٦٨٦ ا (٢)

हज़रत अबू दाऊद रज़ि० को नबी अकरम सल्ल० की बात पहुंची

कि आप सल्ल० ने इरशाद फरमाया "जो व्यक्ति (रात को) अपने बिस्तर पर इस नियत से लेआ कि उठकर तहज्जुद की नमाज़ पढ़ेगा। लेकिन उसकी आंखों पर नींद इस कदर गालिब आ गई कि सुबह हो गई तो उसे उसकी नीयत का सवाब मिल जाएगा और उसकी नींद उसके रब की तरफ से उस पर सदका शुमार होगी।"इसे नसाई ने रिवायत किया है।

فَضُلُ التَّوُحِيد

तौहीद की फज़ीलत

मसला २ : कलिमा तौहीद का इकरार दीने इस्लाम का सबसे पहला स्तंभ है।

عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِیَ اللّٰهُ عَنهُمَا أَنَّ النَّبِیَّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بَعَثَ مُعَاذًا رَضِیَ اللّٰهُ عَنهُ إِلَى الْيَمَنِ فَقَالَ ادْعُهُمْ إِلَى شَهَادَةِ أَنْ لَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَأَنِّى رَسُولُ اللّٰهِ فَإِنْ هُمْ أَطَاعُوا لِذٰلِكَ فَأَعْلِمْهُمْ أَنَّ اللّٰهَ قَدِافْتَرَضَ عَلَيْهِمْ خَمْسَ صَلَوَاتٍ فِى كُلِّ يَوْمٍ وَلَيْلَةٍ فَإِنْ هُمْ أَطَاعُوا لِذٰلِكَ فَأَعْلِمْهُمْ أَنَّ اللّٰهَ افْتَرَضَ عَلَيْهِمْ صَدَقَةً فِى أَمْوَالِهِمْ تُؤْخَذُ مِنْ أَغْنِيَائِهِمْ وَتُرَدُّ عَلَى فُقَرَائِهِمْ. رَوَاهُ الْبُخَارِىُّ (١)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ि० से रिवायत है कि नबी अकरम सल्ल० ने हज़रत मुआज़ रज़ि० को हकिम यमन बनाकर भेजा तो फरमाया "लोगों को (पहले) ला इला-ह इल्लल्लाहु और फिर यह कि मैं यानी (मुहम्मद सल्ल०) अल्लाह का रसूल हूं, इसकी तरफ दावत देना। अगर वे इसे मान लें तो फिर उन्हें बताना कि अल्लाह तआला ने हर दिन रात में उनपर पांच नमाज़ें फर्ज़ की हैं अगर वे उसे भी मान लें तो फिर उन्हें बताना कि अल्लाह तआला ने उनके मालों पर ज़कात फर्ज़ की है जो उनके मालदारों से वसूल की जाएगी और उनके फुकरा को दी जाएगी।" इसे बुखारी ने रिवायत किया है। (किताबुज़्ज़कात)

मसला ३ : गैर मुस्लिम कलिमा तौहीद का इकरार कर ले तो उसे कत्ल करना मना है।

عَنْ اُسَامَةَ بْنِ زَيْدٍ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ بَعَثَنَا رَسُولُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِي سَرِيَّةٍ فَصَبَّحْنَا الْحُرُقَاتِ مِنْ جُهَيْنَةَ فَاَدْرَكْتُ رَجُلًا فَقَالَ لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ فَطَعَنْتُهُ فَوَقَعَ فِي نَفْسِي مِنْ ذٰلِكَ فَذَكَرْتُهُ لِلنَّبِيِّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ رَسُولُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ اَقَالَ لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَقَتَلْتَهُ قَالَ قُلْتُ يَا رَسُولَ اللّٰهِ اِنَّمَا قَالَهَا خَوْفًا مِنَ السِّلَاحِ قَالَ اَفَلَا شَقَقْتَ عَنْ قَلْبِهِ حَتّٰى تَعْلَمَ اَقَالَهَا اَمْ لَا فَمَا زَالَ يُكَرِّرُهَا عَلَيَّ حَتّٰى تَمَنَّيْتُ اَنِّي اَسْلَمْتُ يَوْمَئِذٍ.

رَوَاهُ مُسْلِمٌ (١)

हज़रत उसामा बिन ज़ैद रज़ि० कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने हमें एक लश्कर में भेजा। हुरकात (एक गांव का नाम) में हमने जुहैना (कबीला का नाम) से सुबह के वक्त जंग की एक आदमी से मेरा सामना हुआ तो उसने ला इला-ह इल्लल्लाहु पढ़ा लेकिन मैंने उसे बरछी से मार डाला। (बाद में) मेरे दिल में तश्वीश पैदा हुई (कि मैंने गलत किया या सही) तो मैंने नबी अकरम सल्ल० से इसका ज़िक्र किया आप सल्ल० ने फरमाया "क्या उसने ला इला-ह इल्लल्लाहु कहा और तूने उसे कत्ल कर डाला ?" मैंने अर्ज़ किया "या रसूलुल्लाह सल्ल०! उसने हथियार के डर से कलिमा पढ़ा था आप ने फरमाया "क्या तूने उसका दिल चीर कर देख लिया था कि तुझे पता चल गया उसने खुलूसे दिल से कलिमा पढ़ा था या नहीं ?" फिर आप सल्ल० बार बार यही बात इरशाद फरमाते रहे यहां तक कि मैंने आरज़ू की काश मैं आज के रोज़ मुसलमान हुआ होता। इसे मुस्लिम ने रिवायत किया है। (किताबुल ईमान)

मसला ४ : कलिमा तौहीद पर ईमान गुनाहों के कफ्फारे का कारण बनेगा।

عَنْ اَبِي ذَرٍّ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ اَتَيْتُ النَّبِيَّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَهُوَ نَائِمٌ عَلَيْهِ ثَوْبٌ اَبْيَضُ ثُمَّ اَتَيْتُهُ فَاِذَا هُوَ نَائِمٌ ثُمَّ اَتَيْتُهُ وَقَدِ اسْتَيْقَظَ فَجَلَسْتُ

اِلَیْہِ فَقَالَ مَا مِنْ عَبْدٍ قَالَ لَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ ثُمَّ مَاتَ عَلٰی ذٰلِکَ اِلَّا دَخَلَ الْجَنَّۃَ قُلْتُ وَاِنْ زَنٰی وَاِنْ سَرَقَ قَالَ وَاِنْ زَنٰی وَاِنْ سَرَقَ قُلْتُ وَاِنْ زَنٰی وَاِنْ سَرَقَ قَالَ وَاِنْ زَنٰی وَاِنْ سَرَقَ ثَلَاثًا ثُمَّ قَالَ فِی الرَّابِعَۃِ عَلٰی رَغْمِ اَنْفِ اَبِیْ ذَرٍّ قَالَ فَخَرَجَ اَبُوْذَرٍّ وَھُوَ یَقُوْلُ وَاِنْ رَغِمَ اَنْفُ اَبِیْ ذَرٍّ. رَوَاہُ مُسْلِمٌ (۲)

हज़रत अबूज़र रज़ि० कहते हैं मैं नबी अकरम सल्ल० की खिदमत में हाज़िर हुआ आप एक सफेद कपड़े में सो रहे थे। मैं दो बारा हाज़िर हुआ तब भी आप सो रहे थे, मैं तीसरी बार आया तो आप जाग रहे थे। मैं आप के पास बैठ गया, आपने फरमाया "जिस व्यक्ति ने ला इला-ह इल्लल्लाहु कहा और उसी पर मरा वह जन्नत में दाखिल होगा।" मैंने अर्ज़ किया, "चाहे ज़िना किया हो, चारहे चोरी की हो ? आप सल्ल० ने इर्शाद फरमाया "चाहे ज़िना किया हो चाहे चोरी की हो।" यह बात आपने तीन बार फरमाई फिर चौथी मर्तबा आपने फरमाया, "चाहे अबूज़र की नाक खाक आलूद हो।" तो जब अबूज़र रज़ि० (आपकी मजलिस से उठकर) बाहर आए तो कह रहे थे "चाहे अबूज़र की नाक खाक आलूद हो।" इसे मुस्लिम ने रिवायत किया। (किताबुल ईमान)

عَنْ عَبْدِاللّٰہِ بْنِ عَمْرِوبْنِ الْعَاصِ قَالَ سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللّٰہِ صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّمَ یَقُوْلُ: اِنَّ اللّٰہَ سَیُخَلِّصُ رَجُلًا مِنْ اُمَّتِیْ عَلٰی رُءُ وْسِ الْخَلَائِقِ یَوْمَ الْقِیَامَۃِ فَیَنْشُرُ عَلَیْہِ تِسْعَۃً وَ تِسْعِیْنَ سِجِلًّا کُلُّ سِجِلٍّ مِثْلُ مَدِّ الْبَصَرِ ثُمَّ یَقُوْلُ :اَتُنْکِرُ مِنْ ھٰذَا شَیْئًا؟اَظَلَمَکَ کَتَبَتِیَ الْحَافِظُوْنَ فَیَقُوْلُ لَا یَا رَبِّ فَیَقُوْلُ اَفَلَکَ عُذْرٌ؟فَیَقُوْلُ لَا یَا رَبِّ! فَیَقُوْلُ بَلٰی،اِنَّ لَکَ عِنْدَنَا حَسَنَۃً، فَاِنَّہٗ لَا ظُلْمَ عَلَیْکَ الْیَوْمَ فَتَخْرُجُ بِطَاقَۃٌ فِیْھَا :اَشْھَدُ اَنْ لَا اِلٰہَ اِلَّااللّٰہُ وَاَشْھَدُ اَنَّ مُحَمَّداً عَبْدُہٗ وَرَسُوْلُہٗ فَیَقُوْلُ: احْضُرْ وَزْنَکَ فَیَقُوْلُ یَا رَبِّ مَا ھٰذِہِ الْبِطَاقَۃُ مَعَ ھٰذِہِ السِّجِلَّاتِ ؟فَقَالَ:اِنَّکَ لَا تُظْلَمُ قَالَ:فَتُوضَعُ السِّجِلَّاتُ فِیْ کَفَّۃٍ،وَالْبِطَاقَۃُ فِیْ کَفَّۃٍ فَطَاشَتِ السِّجِلَّاتُ،وَثَقُلَتِ الْبِطَاقَۃُ وَلَا یَثْقُلُ مَعَ اسْمِ

اللّٰهِ شَیْءٌ. رَوَاہُ التِّرْمِذِیُّ (١) (صَحِیْح)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अम्र बिन आस रज़ि० कहते हैं मैंने रसूले अकरम सल्ल० को फरमाते हुए सुना है कि कयामत के दिन अल्लाह तआला सारी मखलूक के सामने मेरी उम्मत के एक आदमी को लाएगा और उसके सामने (गुनाहों) के निन्नान्वे दफतर रख दिये जाएंगे हर दफतर हदे निगाह तक फैला होगा, फिर अल्लाह तआला इस आदमी से पूछेगा, "तू अपने इन आमाल में से किसी का इंकार करता है ?" क्या (नामाए आमाल तैयार करने वाले) मेरे कातिबों ने तुझ पर जुल्म तो नहीं किया ? वह आदमी कहेगा "नहीं या अल्लाह।" फिर अल्लाह तआला पूछगा (उन गुनाहों के बारे में) "तेरे पास कोई उज़्र है ?" वह आदमी कहेगा "नहीं या अल्लाह।" अल्लाह तआला फिर इर्शाद फरमाएगा, "अच्छा ठहरो! हमारे पास तुम्हारी एक नेकी भी है और आज तुम पर कोई जुल्म नहीं होगा चुनांचे एक कागज़ का टुकड़ा लाया जाएगा जिसमें اشهد ان لا الٰه الا اللّٰه واشهد ان محمدا عبده ورسوله अशहदु अल्ला इला-ह इल्लल्लाहु व अन्न मुहम्मदन अब्दुहु व रसूलहु तहरीर होगा। अल्लाह तआला इरशाद फरमाएगा, नामाए आमाल वज़न होने की जगह चले जाओ।" बन्दा अर्ज़ करेगा, "या अल्लाह इस छोटे से कागज़ के टुकड़े को मेरे गुनाहों के ढेर से क्या निसबत हो सकती है ?" अल्लाह तआल इरशाद फरमाएगा, "बन्दे! आज तुम पर कोई जुल्म नहीं होगा।" (यानी हर छोटे बड़े अमल का हिसाब ज़रूर होगा) रसूलुल्लाह सल्ल० ने फरमाया, "गुनाहों के ढेर तराजू के एक पलड़े में और कागज़ का टुकड़ा दूसरे पलड़े में रख दिया जाएगा, गुनाहों के दफतर हलके साबित होंगे और कागज़ का टुकड़ा भारी हो जाएगा। (फिर आप सल्ल० ने इरशाद फरमाया), "अल्लाह तआला के नाम से ज़्यादा कोई चीज़ भारी नहीं हो सकती इसे तिर्मिज़ी ने रिवायत किया है। (सही सुनन तिर्मिज़ी लिलबानी भाग दो हदीस २१२७)

عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللّٰهِ. صَلَّی

اَللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ قَالَ اللّٰهُ تَبَارَكَ وَتَعَالَى يَا بْنَ آدَمَ اِنَّكَ مَا دَعَوْتَنِي وَرَجَوْتَنِي غَفَرْتُ لَكَ عَلَى مَا كَانَ فِيكَ وَلاَ أُبَالِي، يَا ابْنَ آدَمَ لَوْ بَلَغَتْ ذُنُوبُكَ عَنَانَ السَّمَاءِ ثُمَّ اسْتَغْفَرْتَنِي غَفَرْتُ لَكَ وَلاَ أُبَالِي يَا ابْنَ آدَمَ اِنَّكَ لَوْ أَتَيْتَنِي بِقُرَابِ الْأَرْضِ خَطَايَا ثُمَّ لَقِيْتَنِي لاَ تُشْرِكُ بِي شَيْئًا لَأَتَيْتُكَ بِقُرَابِهَا مَغْفِرَةً. رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ(١) (حَسَن)

हज़रत अनस रज़ि० कहते हैं मैंने रसूलुल्लाह सल्ल० को फरमाते हुए सुना है, अल्लाह तआला फरमाता है: "ऐ इब्ने आदम! तू जबतक मुझे पुकारता रहेगा और मुझ से बखशिश की उम्मीद रखेगा मैं तुझ से होने वाला हर गुनाह माफ करता रहूंगा। ऐ इब्ने आदम! मुझे कोई परवा नहीं अगर तुम्हारे गुनाह आसमान के किनारे तक पहुंच जाएं और तू मुझ से माफी तलब करे तो मैं तुझे माफ कर दूंगा। ऐ इब्ने आदम! मुझे कोई परवा नहीं अगर तू रूए ज़मीन के बराबर गुनाह लेकर आए और मुझे इस हाल में मिले कि किसी को मेरे साथ शरीक न किया हो तो मैं रूए ज़मीन के बराबर ही तुझे मगफिरत अता करूंगा। (यानी सारे गुनाह माफ करूंगा)।" इसे तिर्मिज़ी ने रिवायेत किया है (सही सुनन तिर्मिज़ी लिलबानी, भाग-३ हदीस-२८०५)

मसला ५ : खुलूसे दिल से कलिमा तौहीद का इकरार करने वाले के लिए रसूले अकरम सल्ल० सिफारिश करेंगे।

عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ أَسْعَدُ النَّاسِ بِشَفَاعَتِي يَوْمَ الْقِيَامَةِ مَنْ قَالَ لاَ اِلٰهَ اِلاَّ اللّٰهُ خَالِصًا مِنْ قَلْبِهِ أَوْ نَفْسِهِ. رَوَاهُ الْبُخَارِيُّ(٢)

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० से रिवायत है कि नबी अकरम सल्ल० ने फरमाया "कयामत के दिन मेरी सिफारिश से फैज़याब होने वाले लोग वे हैं जिन्होंने सच्चे दिल से या (आपने फरमाया) जी जान से ला इला-ह

इल्लल्लाहु का इकरार किया है।" इसे बुखारी ने रिवायत किया है।

عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِىَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ قَالَ رَسُولُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ. لِكُلِّ نَبِيٍّ دَعْوَةٌ مُسْتَجَابَةٌ فَتَعَجَّلَ كُلُّ نَبِيٍّ دَعْوَتَهُ وَإِنِّي اخْتَبَأْتُ دَعْوَتِي شَفَاعَةً لِأُمَّتِي يَوْمَ الْقِيَامَةِ فَهِيَ نَائِلَةٌ إِنْ شَاءَ اللّٰهُ مَنْ مَاتَ مِنْ أُمَّتِي لَا يُشْرِكُ بِاللّٰهِ شَيْئًا. رَوَاهُ مُسْلِمٌ(١)

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने फरमायाः "हर नबी के लिए एक दुआ ऐसी है जो ज़रूर कुबूल होती है। तमाम अंबिया ने वह दुआ दुनिया ही में मांग ली, लेकिन मैंने अपनी दुआ कयामत के दिन अपनी उम्मत की शफाअत के लिए महफूज़ कर रखी है। मेरी शफाअत इंशाअल्लाह हर उस आदमी के लिए होगी जो इस हाल में मरा कि उसने किसी को अल्लाह तआला के साथ शरीक नहीं किया।" इसे मुस्लिम ने रिवायत किया है। (किताबुल ईमान, बाब इख्तिबातुश शफाअत)

मसला ६ : अकीदा तौहीद पर मरने वाला जन्नत में दाखिल होगा।

عَنْ عُثْمَانَ رَضِىَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ قَالَ رَسُولُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مَنْ مَاتَ وَهُوَ يَعْلَمُ أَنَّهُ لَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ دَخَلَ الْجَنَّةَ. رَوَاهُ مُسْلِمٌ(٢)

हज़रत उसमान रज़ि० कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने फरमायाः "जो आदमी इस हाल में मरे कि उसे ला इला-ह इल्लल्लाहु का इल्म (यकीन) हो तो वह जन्नत में जाएगा।" इसे मुस्लिम ने रिवायत किया है। (किताबुल ईमान, बाबुद दलील)

मसला ७ : खुलूसे दिल से कलिमा तौहीद का इकरार अर्शे इलाही से कुर्बत का ज़रिया है।

عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِىَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ قَالَ رَسُولُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ

وَسَلَّمَ مَا قَالَ عَبْدٌ لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ قَطُّ مُخْلِصًا اِلَّا فُتِحَتْ لَهُ اَبْوَابُ السَّمَاءِ حَتّٰى تُفْضِىَ اِلَى الْعَرْشِ مَا اجْتَنَبَ الْكَبَائِرَ. رَوَاهُ التِّرْمِذِىُّ(٣) (صَحِيْح)

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने फरमायाः "जब बन्दा सच्चे दिल से ला इला-ह इल्लल्लाहु कहता है तो उसके लिए आसमान के दरवाज़े खोल दिये जाते हैं यहां तक कि वह अर्श तक पहुंच जाता है बशर्ते कि कबीरा गुनाहों से बचता रहे।" इसे तिर्मिज़ी ने रिवायत किया है (सही सुनन तिर्मिज़ी, लिलबानी जुज़-३ हदीस-२८३६)

मसला ८ : खुलूसे दिल से कलिमा तौहीद की गवाही देने वाले पर जहन्नम हराम है।

عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رَضِىَ اللّٰهُ عَنْهُ أَنَّ نَبِىَّ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَمُعَاذُبْنُ جَبَلٍ رَدِيْفُهُ عَلَى الرَّحْلِ قَالَ يَا مُعَاذُ!قَالَ لَبَّيْكَ يَا رَسُوْلَ اللّٰهِ وَسَعْدَيْكَ ،قَالَ يَا مُعَاذُ!قَالَ لَبَّيْكَ رَسُوْلَ اللّٰهِ وَسَعْدَيْكَ ،قَالَ يَا مُعَاذُ!قَالَ لَبَّيْكَ رَسُوْلَ اللّٰهِ وَسَعْدَيْكَ ،قَالَ مَا مِنْ عَبْدٍ يَشْهَدُ أَنْ لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهَ وَأَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُوْلُهُ اِلَّا حَرَّمَهُ اللّٰهُ عَلَى النَّارِ قَالَ يَارَسُوْلَ اللّٰهِ أَفَلَا أُخْبِرُ بِهَا النَّاسَ فَيَسْتَبْشِرُوْا قَالَ اِذًا يَتَّكِلُوْا فَأَخْبَرَ بِهَا مُعَاذٌ عِنْدَ مَوْتِهِ تَأَثُّمًا. رَوَاهُ مُسْلِمٌ(١)

हज़रत अनस बिन मालिक रज़ि० से रिवायत है कि मुआज़ बिन जबल रज़ि० रसूले अकरम सल्ल० के पीछे सवारी पर बैठे थे। आप सल्ल० ने फरमायाः "ऐ मुआज़! "हज़रत मुआज़ रज़ि० ने अर्ज़ किया, "या रसूलुल्लाह सल्ल० आपका फरमांबरदर हाज़िर है।" आपने फिर फरमाया, "ऐ मुआज़।" हज़रत मुआज़ रज़ि० ने अर्ज़ किया "या रसूलुल्लाह सल्ल०! आप का फरमां बरदार हाज़िर है" रसूले अकरम सल्ल० ने फरमाया "जो व्यक्ति गवाही दे कि अल्लाह के सिवा कोई इलाह नहीं और मुहम्मद सल्ल० उसके बन्दे और रसूल हैं, अल्लाह

तआला उसको जहन्नम पर हराम कर देगा।" हज़रत मुआज़ रज़ि० ने अर्ज़ किया, "या रसूलुल्लाह सल्ल० क्या मैं लोगों को इससे आगाह न कर दूं वे ता कि खुश हो जाएं।" आप सल्ल० ने इरशाद फरमाया, "फिर तो लोग सिर्फ इसी पर तकिया कर लेंगे।" (आमाल की फिक्र नहीं करेंगे) चुनांचे हज़रत मुआज़ रज़ि० ने गुनाह से बचने के लिए मरते वक्त यही हदीस बयान की इसे मुस्लिम ने रिवायत किया है। (किताबुल ईमान बाबुद दलील मसला ६)

मसला ६ : खूलूसे दिल से कलिमा तौहीद का इकरार करने वाला जन्नत में जाएगा।

عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ قَالَ رَسُولُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مَنْ مَاتَ وَهُوَ يَشْهَدُ أَنْ لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَأَنَّ مُحَمَّدًا رَسُولُ اللّٰهِ صَادِقًا مِنْ قَلْبِهِ دَخَلَ الْجَنَّةَ. رَوَاهُ أَحْمَدُ(١)

हज़रत अनस रज़ि० कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने फरमाया : "जो आदमी इस हाल में मरा कि सच्चे दिल से गवाही देता था कि अल्लाह तआला के सिवा कोई इलाह नहीं और मुहम्मद सल्ल० अल्लाह के रसूल हैं वह जन्नत में दाखिल होगा।" इसे अहमद ने रिवायत किया है। (सिलसिलतुल अहादीस, लिलबानी, जुज़ ५, सफा ३४८)

वज़ाहत : तौहीद की फज़ीलत के बारे में उपरोक्त उल्लिखित तमाम अहदीस में मोहिद के जन्नत में जाने की ज़मानत का मतलब यह हरगिज़ नहीं कि मोहिद जैसे अमल चाहे करता रहे, वह गुनाहों की सज़ा पाए बगैर सीधा जन्नत में चला जाएगा, बल्कि इन तमाम अहादीस का मफहूम यह है कि मोहिद अपने गुनाहों की सज़ा भुगतने के बाद या अल्लाह तआला की तरफ से गुनाह माफ किये जाने के बाद जन्नत में ज़रूर जाएगा, और जिस तरह मुश्रिक का हमेशा का ठिकाना जहन्नम है, उसी तरह मोहिद का हमेशा का ठिकाना जन्नत होगा।

أَهَمِيَّةُ التَّوحِيدِ

तौहीद का महत्व

मसला १० : अकीदए तौहीद पर ईमान न लाने वाले जहन्नम में जाएंगे।

عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ مَسْعُوْدٍ رَضِىَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ قَالَ رَسُوْلُ اللَّهِ صَلىَّ اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مَنْ مَاتَ يَجْعَلُ لِلَّهِ نِدًّا أُدْخِلَ النَّارَ. رَوَاهُ الْبُخَارِيُّ (١)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ि० कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने फरमाया : "जो आदमी इस हाल में मरे कि अल्लाह तआला के साथ किसी को शरीक ठहराया था वह आग में दाखिल होगा।" इसे बुखारी ने रिवायत किया है। (किताबुल ईमान)

عَنْ جَابِرِ بْنِ عَبْدِاللَّهِ رَضِىَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللَّهِ صَلىَّ اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُوْلُ مَنْ لَقِىَ اللَّهَ لَا يُشْرِكُ بِهِ شَيْئًا دَخَلَ الْجَنَّةَ وَمَنْ لَقِيَهُ يُشْرِكُ بِهِ شَيْئًا دَخَلَ النَّارَ. رَوَاهُ مُسْلِمٌ (٢)

हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह रज़ि० कहते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह सल्ल० को फरमाते हुए सुना है कि : "जिसने अल्लाह तआला से इस हाल में मुलाकात की कि उसके साथ किसी को शरीक नहीं ठहराया, वह जन्नत में दाखिल होगा, और जो अल्लाह तआला से इस हाल में मिला कि उसने अल्लाह तआला के साथ शिर्क किया हो वह जहन्नत में जाएगा।" इसे मुस्लिम ने रिवायत किया है। (किताबुल ईमान)

मसला ११ : तौहीद का इकरार न करने वालों को नबी से

कराबतदारी भी जहन्नम के अज़ाब से नहीं बचा सकेगी।

عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُمَا أَنَّ رَسُوْلَ اللّٰهِ صَلیَّ اللّٰهُ عَلَیْهِ وَسَلَّمَ قَالَ أَهْوَنُ أَهْلِ النَّارِ عَذَابًا أَبُوْ طَالِبٍ وَهُوَ مُنْتَعِلٌ بِنَعْلَیْنِ یَغْلِی مِنْهُمَا دِمَاغُهُ. رواهُ مُسْلِمٌ(١)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ि० से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने फरमायाः "जहन्नमियों में से सबसे हल्का अज़ाब अबू तालिब को होगा वह आग की दो जुतियां पहने होंगे जिससे उनका दिमाग खौल रहा होगा।" इसे मुस्लिम ने रिवायत किया है। (किताबुल ईमान)

वज़ाहत : दूसरी हदीस मसला १०१ के तहत मुलाहिज़ा फरमाएं।

मसला १२ : रसूले अकरम सल्ल० ने हज़रत मुआज़ रज़ि को शिर्क करने की बजाए कत्ल हो जाने या आग में जल जाने की नसीहत फरमाई।

عَنْ مُعَاذٍ رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ أَوْصَانِیْ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلیَّ اللّٰهُ عَلَیْهِ وَسَلَّمَ بِعَشْرِ کَلِمَاتٍ قَالَ: لَا تُشْرِکْ بِاللّٰهِ شَیْئًا وَاِنْ قُتِلْتَ وَحُرِّقْتَ وَلَا تَعُقَّنَّ وَالِدَیْکَ وَاِنْ أَمَرَاکَ أَنْ تَخْرُجَ مِنْ أَهْلِکَ وَ مَالِکَ وَلَا تَتْرُکَنَّ صَلَاةً مَکْتُوْبَةً مُتَعَمِّدًا فَاِنَّ مَنْ تَرَکَ صَلَاةً مَکْتُوْبَةً مُتَعَمِّدًا فَقَدْ بَرِئَتْ مِنْهُ ذِمَّةُ اللّٰهِ وَلَا تَشْرَبَنَّ خَمْرًا فَاِنَّهُ رَأْسُ کُلِّ فَاحِشَةٍ وَ. اِیَّاکَ وَالْمَعْصِیَةَ فَاِنَّ بِالْمَعْصِیَةِ حَلَّ سَخَطُ اللّٰهِ عَزَّوَجَلَّ وَاِیَّاکَ وَالْفِرَارَ مِنَ الزَّحْفِ وَاِنْ هَلَکَ النَّاسُ وَاِذَا أَصَابَ النَّاسَ مُوْتَانٌ وَأَنْتَ فِیْهِمْ فَاثْبُتْ وَأَنْفِقْ عَلٰی عِیَالِکَ مِنْ طَوْلِکَ وَلَا تَرْفَعْ عَنْهُمْ عَصَاکَ أَدَبًا وَأَخِفْهُمْ فِی اللّٰهِ . رَوَاهُ أَحْمَدُ(٢)

हज़रत मुआज़ रज़ि० से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने मुझे दस बातों की ताकीद फरमाई। (१) अल्लाह तआला के साथ किसी को

शरीक न करना चाहे तुम्हें कत्ल कर दिया जाए या आग में जला दिया जाए। (२) अपने वालिदैन की नाफरमानी न करना, चाहे वे तुम्हें तुम्हारे अहल और माल से अलग होने का हुक्म दें। (३) जान बुझकर फर्ज़ नमाज़ तर्क न करना क्योंकि जिसने फर्ज़ नमाज़ जान बूझकर तर्क की वह अल्लाह तआला की हिफाज़त या माफी के जिम्मे से निकल गया। (४) शराब न पीना क्योंकि वह तमाम बे-हयाई का सरचश्मा है। (५) गुनाह से बचना, क्योंकि गुनाह से अल्लाह तआला का गज़ब नाज़िल होता है। (६) मैदाने जंग से भागने से गुरेज़ करना, चाहे लोग मर रहे हों। (७) जब (किसी जगह वबा या बीमारी के बाइस) लोग मरने लगें तो तुम पहले से वहां मुकीम हो तो वहीं ठहरे रहना। (८) अपने अहलो अयाल पर तौफीक के मुताबिक खर्च करना (६) अपने अहलो अयाल को (दीन पर चलाने के लिए) लाठी के इस्तेमाल से गुरेज़ नहीं करना। और अल्लाह तआला के बारे में उन्हें डराते रहना।" इसे तबरानी ने रिवायत किया है।

(सहीह तर्गीग)

मसला १३ : अकीदा तौहीद पर ईमान न रखने वाले को उसके नेक अमल कयामत के दिन कोई फायदा नहीं देंगे।

عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهَا قَالَتْ قُلْتُ يَا رَسُوْلَ اللّٰهِ اِبْنُ جُدْعَانَ كَانَ فِي الْجَاهِلِيَّةِ يَصِلُ الرَّحِمَ وَيُطْعِمُ الْمِسْكِيْنَ فَهَلْ ذَاكَ نَافِعُهُ قَالَ لَا يَنْفَعُهُ اِنَّهُ لَمْ يَقُلْ يَوْمًا رَبِّ اغْفِرْلِيْ خَطِيْئَتِيْ يَوْمَ الدِّيْنِ. رَوَاهُ مُسْلِمٌ(١)

हज़रत आइशा रज़ि० से रिवायत है कि मैंने रसूलुल्लाह सल्ल० से अर्ज़ किया कि, "जुदआन का बेटा जमाना जाहिलियत में सिला रहमी करता था, मिस्कीन को खाना खिलाता था, क्या यह काम उसे फायदा देंगे?" आप सल्ल० ने इरशाद फरमाया, "उसे कुछ फायदा न देंगे क्योंकि उसने कभी यूं नहीं कहा "ऐ मेरे रब! कयामत के दिन मेरे गुनाह माफ फरमाना।" इसे मुस्लिम ने रिवायत किया है। (किताबुल ईमान)

मसला १४ : अकीदा तौहीद पर ईमान न रखने वाले को मरने के बाद किसी दूसरे व्यक्ति की दुआ या नेक अमल का सवाब नहीं पहुंचता।

عَنْ عَبْدِاللّٰهِ بْنِ عَمْرٍو أَنَّ الْعَاصَ ابْنَ وَائِلٍ نَذَرَ فِي الْجَاهِلِيَّةِ أَنْ يَنْحَرَ مِائَةَ بَدَنَةٍ وَأَنَّ هِشَامَ بْنَ الْعَاصِ نَحَرَ حِصَّتَهُ خَمْسِينَ بَدَنَةً وَأَنَّ عَمْرًوا سَأَلَ النَّبِيَّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَنْ ذٰلِكَ فَقَالَ أَمَّا أَبُوكَ فَلَوْ كَانَ أَقَرَّ بِالتَّوْحِيْدِ فَصُمْتَ وَتَصَدَّقْتَ عَنْهُ نَفَعَهُ ذٰلِكَ . رَوَاهُ أَحْمَدُ (٢)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अम्र रज़ि० से रिवायत है कि आस बिन वाइल ने ज़ाहिलियत में सौ ऊंट कुर्बान करने की नज़र मानी थी, हिशाम बिन आस ने अपने हिस्से के पचास ऊंट जब्ह कर दिए, लेकिन हज़रत अम्र ने रसूलुल्लाह सल्ल० से मसला दरयाफ्त किया तो आप सल्ल० ने फरमायाः ''अगर तुम्हारा बाप तौहीदपरस्त होता और तुम उसकी तरफ से रोज़ा रखते या सदका करते तो उसे सवाब मिल जाता।'' इसे अहमद ने रिवायत किया है। (मुंतकिल अख्बार किताबुल जनाइज़)

मसला १५ : तौहीद का इकरार न करने वालों के खिलाफ हुकूमते वक्त को जंग करने का हुक्म है।

عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ عَنْ رَسُوْلِ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ أُمِرْتُ أَنْ أُقَاتِلَ النَّاسَ حَتّٰى يَشْهَدُوْا أَنْ لَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَ يُؤْمِنُوْا بِي وَ بِمَا جِئْتُ بِهِ فَإِذَا فَعَلُوْا ذٰلِكَ عَصَمُوْا مِنِّي دِمَاءَ هُمْ وَ أَمْوَالَهُمْ إِلَّا بِحَقِّهَا وَ حِسَابُهُمْ عَلَى اللّٰهِ. رَوَاهُ مُسْلِمٌ (١)

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने फरमाया : ''मुझे लोगों से लड़ने का हुक्म दिया गया है यहां तक कि वे ला इला-ह इल्लल्लाहु का इकरार करें। मुझ पर ईमान लाएं, मेरी लाई हुई तालीमात पर ईमान लाएं, अगर वे ऐसा करें तो उन्हेंने अपने खून (यानी जानें) और अपने माल मुझसे बचा लिया मगर हक के बदले और उनके

आमाल का हिसाब अल्लाह तआला क़े जिम्मे है। इसे मुस्लिम ने रिवायत कि है। (किताबुल ईमान)

वज़ाहत : १. "मगर हक के बदले" का मतलब यह है कि अगर वे कोई ऐसा काम करें जिसकी सज़ा कत्ल हो मसलन कत्ल या ज़िना या मुततद होना वगैरह तो फिर उन्हें शरीअत के मुताबिक कत्ल की सज़ा दी जाएगी।

२. तौहीद का इकरार न करने वाले अगर इस्लामी हुकूमत के तहत जिम्मी बनकर रहना कुबूल कर लें तो फिर उनके खिलाफ जंग नहीं होगी।

اَلتَّوحِيدُ فِي ضَوْءِ الْقُرْآن

तौहीद कुरआन की रोशनी में

मसला १६ : अल्लाह तआला खुद तौहीद की गवाही देता है।

﴿شَهِدَ اللّٰهُ أَنَّهُ لَا إِلٰهَ إِلَّا هُوَ وَالْمَلَائِكَةُ وَأُولُوا الْعِلْمِ قَائِمًا بِالْقِسْطِ لَا إِلٰهَ إِلَّا هُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ﴾ (١٨:٣)

"अल्लाह तआला ने खुद शहादत दी है कि उसके सिवा कोई इलाह नहीं। नज़ी फरिश्ते अैर इल्म वाले लोग जो इंसाफ पर कायम हैं वे भी (यही शहादत देते हैं) वाकई इस ज़बरदस्त और हकीम के अलावा कोइ इलाह नहीं है।" (सूरह आले इमरान अयात-१८)

मसला १७. कुरआन मजीद ने लोगों को सिर्फ एक अल्लाह तआला की इबादत और बन्दगी की दावत दी है।

﴿وَإِلٰهُكُمْ إِلٰهٌ وَاحِدٌ لَّا إِلٰهَ إِلَّا هُوَ الرَّحْمٰنُ الرَّحِيمُ﴾ (١٦٣:٢)

"लोगो! तुम्हारा इलाह तो बस एक ही है, उसके सिवा कोई इलाह नहीं, वह बड़ा मेहरबान और निहायत रहम करने वाला है।"

(सूरह बकरा, आयत-६३)

﴿وَلَا تَدْعُ مَعَ اللّٰهِ إِلٰهًا آخَرَ لَا إِلٰهَ إِلَّا هُوَ كُلُّ شَيْءٍ هَالِكٌ إِلَّا وَجْهَهُ لَهُ الْحُكْمُ وَإِلَيْهِ تُرْجَعُونَ﴾ (٨٨:٢٨)

"अल्लाह तआला के सिवा किसी दूसरे इलाह को न पुकारो, उसके

सिवा कोई इलाह नहीं, उसकी ज़ात के सिवा हर चीज़ हलाक होने वाली है। शासन उसी के लिए है और उसी की तरफ तुम सब पलट जाने वाले हो।" (सूरह कसस, आयत ८८)

﴿لَا إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ يُحْيِي وَيُمِيتُ رَبُّكُمْ وَرَبُّ آبَائِكُمُ الْأَوَّلِينَ﴾ (٨:٣٣)

"उसके सिवा कोई इलाह नहीं, वही ज़िंदगी अता करता है, वही मौत देता है, वह तुम्हारा भी रब है और तुम्हारे बाप दादा जो गुज़र चुके उनका भी रब है।" (सूरह दुखान, आयत ८)

मसला १८ : तमाम अंबिया किराम औररसूलों ने सबसे पहले अपनी अपनी कौमों को अकीदा तौहीद की दावत दी।

१. हज़रत नूह अलैहिस्सलाम :

﴿لَقَدْ أَرْسَلْنَا نُوحاً إِلَى قَوْمِهِ فَقَالَ يَا قَوْمِ اعْبُدُواْ اللَّهَ مَا لَكُم مِّنْ إِلَٰهٍ غَيْرُهُ إِنِّيَ أَخَافُ عَلَيْكُمْ عَذَابَ يَوْمٍ عَظِيمٍ﴾ (٥٩:٧)

"हमने नूह को उसकी कौम की तरफ भेजा, उन्होंने कहा : "ऐ बिरादाराने कौम ! अल्लाह तआला की बन्दगी करो, उसके सिवा तुम्हारा कोई इलाह नहीं, है, मैं तुम्हारे हक में एक हौलनाक दिन के अज़ाब से डरता हूं।" (सहत आराफ, आयत ५६)

२. हज़रत हूद अलैहिस्सलाम

﴿وَإِلَىٰ عَادٍ أَخَاهُمْ هُوداً قَالَ يَا قَوْمِ اعْبُدُواْ اللَّهَ مَا لَكُم مِّنْ إِلَٰهٍ غَيْرُهُ أَفَلاَ تَتَّقُونَ﴾ (٦٥:٧)

"और कौने आद की तरफ हमने उनके भाई हूद (अलैहिस्सलाम) को भेजा। उन्होंने कहा ऐ बिरादराने कौम! अल्लाह तआला की बन्दगी करो उसके सिवा तुम्हारा कोई इलाह नहीं, फिर क्या तुम गलत रविश से परहेज़ न करोगे?" (सूरह आराफ आयत ६५)

३. हज़रत सालेह अलैहिस्सलाम :

﴿وَإِلَى ثَمُودَ أَخَاهُمْ صَالِحاً قَالَ يَا قَوْمِ اعْبُدُواْ اللّهَ مَا لَكُم مِّنْ إِلَـهٍ غَيْرُهُ، قَدْ جَاءتْكُم بَيِّنَةٌ مِّن رَّبِّكُمْ هَـذِهِ نَاقَةُ اللّهِ لَكُمْ آيَةً فَذَرُوهَا تَأْكُلْ فِي أَرْضِ اللّهِ وَلاَ تَمَسُّوهَا بِسُوَءٍ فَيَأْخُذَكُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ﴾ (٧:٧٣)

"और कौमे समूद की तरफ उनके भाइ। सालेह (अलैहिस्सलाम) को भेजा। उन्होंने कहा : "ऐ बिरादराने कौम! अल्लाह तआला की बन्दगी करो उसके सिवा तुम्हारा कोई इलाह नहीं है तुम्हारे पास तुम्हारे रब की तरफ से खुली दलील आ गई है। यह अल्लाह तआला की ऊंटनी तुम्हारे लिए एक निशानी है, लिहाज़ा इसे छोड़े दो कि अल्लाह तआला की ज़मीन में चरती फिरे इसे किसी बुरे इरादे से हाथ न लगाना वरना एक दर्दनाक अज़ाब तुम्हें आ लेगा।" (सूरह आराफ आयत ७३)

४. हज़रत शुऐब अलेहिस्सलाम :

﴿وَإِلَى مَدْيَنَ أَخَاهُمْ شُعَيْباً قَالَ يَا قَوْمِ اعْبُدُواْ اللّهَ مَا لَكُم مِّنْ إِلَـهٍ غَيْرُهُ، قَدْ جَاءتْكُم بَيِّنَةٌ مِّن رَّبِّكُمْ فَأَوْفُواْ الْكَيْلَ وَالْمِيزَانَ وَلاَ تَبْخَسُواْ النَّاسَ أَشْيَاءهُمْ وَلاَ تُفْسِدُواْ فِي الأَرْضِ بَعْدَ إِصْلاَحِهَا ذَلِكُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ إِن كُنتُم مُّؤْمِنِينَ﴾ (٧:٨٥)

"और मदयन वालों की तरफ हमने उनके भाई शुऐब (अलैहिस्सलाम) को भोजा। उन्होंने कहा: "ऐ बिरादनो कौम! अल्लाह तआला की बन्दगी करो उसके सिवा तुम्हारा कोई इलाह नहीं, तुम्हारे पास तुम्हारे रब की तरफ से स्पष्ट दलील आ गई है। लिहाज़ा वज़न और पैमाने पूरे करो, लोगों को उनकी चीज़ों में घाटा न दो और ज़मीन में फसाद बरपा न करो जबकि उसकी इस्लाह हो चुकी, इसी में तुम्हारी भलाई है अगर तुम वाकई मोमिन हो।" (सूरह आराफ आयत८५)

५. हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम :

﴿وَإِبْرَاهِيمَ إِذْ قَالَ لِقَوْمِهِ اعْبُدُوا اللَّهَ وَاتَّقُوهُ ذَلِكُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ إِن كُنتُمْ تَعْلَمُونَ • إِنَّمَا تَعْبُدُونَ مِن دُونِ اللَّهِ أَوْثَانًا وَتَخْلُقُونَ إِفْكًا، إِنَّ الَّذِينَ تَعْبُدُونَ مِن دُونِ اللَّهِ لَا يَمْلِكُونَ لَكُمْ رِزْقًا فَابْتَغُوا عِندَ اللَّهِ الرِّزْقَ وَاعْبُدُوهُ وَاشْكُرُوا لَهُ إِلَيْهِ تُرْجَعُونَ﴾ (١٧.١٦:٢٩)

"और इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने अपनी कौम से कहा, "अल्लाह की बन्दगी करो और उसी से डरो यह तुम्हारे लिए बेहतर है अगर तुम जानो। तुम अल्लाह तआला को छोड़कर जिनकी इबादत कर रहे हो वे तो महज़ बुत हैं ओर तुम एक झूठ गढ़ रहो हो। दरहकीकत अल्लोह तआला के सिवा जिनकी तुम पूजा करते हो वे तुम्हें रिज़्क तक देनेका इख्तियार नहीं रखते। (लिहाज़ा) अल्लाह तआला से रिज़्क मांगो और उसी की बन्दगी करो और उसी का शुक्र अदा करो। उसी की तरफ बुलाए जाने वाले हो।" (सूरह अन्कबूत, आयत १६-१७)

६. हज़रत यूसुफ अलैहिस्सलाम :

﴿مَا تَعْبُدُونَ مِن دُونِهِ إِلَّا أَسْمَاءً سَمَّيْتُمُوهَا أَنتُمْ وَآبَاؤُكُم مَّا أَنزَلَ اللَّهُ بِهَا مِن سُلْطَانٍ إِنِ الْحُكْمُ إِلَّا لِلَّهِ، أَمَرَ أَلَّا تَعْبُدُوا إِلَّا إِيَّاهُ ذَلِكَ الدِّينُ الْقَيِّمُ وَلَكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُونَ﴾ (١٢:٤٠)

"अल्लाह तआला को छोड़कर जिनकी तुम बन्दगी कर रहे हो वे उसके सिवा कुछ नहीं हैं कि बस कुछ नाम है जो तुमने और तुम्हारे बाप दादा ने रख लिए हैं। अल्लाह तआला ने उनके लिए कोई सनद नाज़िल नहीं की।" (सूरह यूसुफ आयत-४०)

७. हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम :

﴿إِنَّ اللَّهَ هُوَ رَبِّي وَرَبُّكُمْ فَاعْبُدُوهُ هَذَا صِرَاطٌ مُّسْتَقِيمٌ﴾ (٤٣:٦٤)

"हकीकत यह है कि अल्लाह तआला मेरा भी रब है और तुम्हारा

भी रब, लिहाज़ा उसीकी तुम इबादत करो यही सीधा रास्ता है।''

(सूरह जुखरूफ-६४)

८. हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम :

﴿قُلْ إِنَّمَا أَنَا مُنذِرٌ وَمَا مِنْ إِلٰهٍ إِلَّا اللَّهُ الْوَاحِدُ الْقَهَّارُ ۝ رَبُّ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا الْعَزِيزُ الْغَفَّارُ﴾ (٣٨:٦٥.٦٦)

''ऐ मुहम्मद! कह दीजिए मैं तो बस खबरदार करने वाला हूं कि कोई हकीकी माबूद नहीं मगर अल्लाह जो यकता है सबस पर गालिब आसमान और ज़मीन का मालिक और उन सारी चीज़ों का मालिक जो उनके दरमियान है वह ज़बरदस्त भी है और बख्शने वाला भी''

(सूरह साद-६५-६६)

९. दीगर तमाम अंबिया किराम व रसूल :

﴿وَمَا أَرْسَلْنَا مِن قَبْلِكَ مِن رَّسُولٍ إِلَّا نُوحِىٓ إِلَيْهِ أَنَّهُ لَا إِلٰهَ إِلَّا أَنَا فَاعْبُدُونِ﴾ (٢١:٢٥)

''हमने तुम से पहले जो रसूल भी भेजा है उसको यही 'वह्य' की है कि मेरे सिवा कोई इलाह नहीं, अतः तुम लोग मेरी ही बन्दगी करो।'' (सूरह अंबिया-२५)

मसला १९ : किसी नबी ने अल्लाह तआला के सिवा अपनी या किसी दूसरे की बन्दगी की दावत नहीं दी।

﴿مَا كَانَ لِبَشَرٍ أَن يُؤْتِيَهُ اللَّهُ الْكِتَابَ وَالْحُكْمَ وَالنُّبُوَّةَ ثُمَّ يَقُولَ لِلنَّاسِ كُونُوا عِبَادًا لِّي مِن دُونِ اللَّهِ وَلَـٰكِن كُونُوا رَبَّانِيِّينَ بِمَا كُنتُمْ تُعَلِّمُونَ الْكِتَابَ وَبِمَا كُنتُمْ تَدْرُسُونَ﴾ (٣:٧٩)

''किसी इंसान का यह काम नहीं कि अल्लाह तआला उसे किताब और नुबुवत अता फरमाए और वह लोगों से कहे कि अल्लाह तआला के

बजाए तुम मेरे बन्दे बन जाओ और वह तो यही कहेगा कि सच्चे रब्बानी बनो जैसा कि उसकी किताब की तालीम का तकाज़ा है जिसे तुम पढ़ते और पढ़ाते हो।" (सूरह आले इमरान-७६)

मसला २०: अकीदा तौहीद इंसान की फितरत में शामिल है।

﴿فَأَقِمْ وَجْهَكَ لِلدِّيْنِ حَنِيْفاً فِطْرَةَ اللّٰهِ الَّتِيْ فَطَرَ النَّاسَ عَلَيْهَا لَا تَبْدِيْلَ لِخَلْقِ اللّٰهِ ذٰلِكَ الدِّيْنُ الْقَيِّمُ وَلٰكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُوْنَ﴾ (٣٠:٣٠)

"(ऐ नबी!) यकसू होकर अपना रूख उस दीन (इस्लाम) की तरफ जमा कर दो और कायम हो जाओ उस फितरत पर जिस पर अल्लाह तआला ने इंसानों को पैदा किया है। अल्लाह तआला की बनाई हुई साख्त बदली नहीं जा सकती यही सीधा दीन है, लेकिन अकसर लोग नहीं जानते।" (सूरह रूम-३०)

मसला २१: खालिस अकीदा तौहीद ही दुनिया व आखिरत में अम्न व सलामती का ज़ामिन है।

﴿الَّذِيْنَ آمَنُوْا وَلَمْ يَلْبِسُوْا إِيْمَانَهُمْ بِظُلْمٍ أُولٰئِكَ لَهُمُ الْأَمْنُ وَهُمْ مُّهْتَدُوْنَ﴾ (٦:٨٢)

"जो लोग ईमान लाए और अपने को जुल्म (शिर्क) के साथ आलूदा नहीं किया उन्हीं के लिए अम्न है और वही सीधी राह पर हैं।" (सूरह अनआम-८२)

मसला २२: अकीदा तौहीद पर ईमान लाने वाले हमेशा हमेशा जन्नत में रहेंगे।

﴿وَالَّذِيْنَ آمَنُوْا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ سَنُدْخِلُهُمْ جَنَّاتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِيْنَ فِيْهَا أَبَداً وَعْدَ اللّٰهِ حَقّاً وَمَنْ أَصْدَقُ مِنَ اللّٰهِ قِيْلًا﴾ (٤:١٢٢)

"वे लोग जो ईमान ले आएं और नेक अमल करें तो उन्हें हम ऐसे

बागों में दाखिल करेंगे जिनके नीचे नहरें बहती होंगी और वे, वहां हमेशा हमेशा रहेंगे, यह अल्लाह तआला का सच्चा वादा है और अल्लाह तआला से बढ़कर कौन अपनी बात में सच्चा होगा?" (सूरह निसा-१२२)

मसला २३. अकीदा तौहीद के लिए सारी दुनिया के इंसानों को कुरआन मजीद की दावते फिक्र।

﴿قُلْ أَرَأَيْتُمْ إِنْ أَخَذَ اللَّهُ سَمْعَكُمْ وَأَبْصَارَكُمْ وَخَتَمَ عَلَى قُلُوبِكُم مَّنْ إِلَٰهٌ غَيْرُ اللَّهِ يَأْتِيكُم بِهِ انظُرْ كَيْفَ نُصَرِّفُ الْآيَاتِ ثُمَّ هُمْ يَصْدِفُونَ﴾ (٦:٤٦)

"(ऐ नबी!) इनसे कहो कभी तुमने यह भी सोचा है कि अगर अल्लाह तआला तुम्हारी बिनाई और तुम्हारी समाअत तुम से छीन ले और तुम्हारे दिलों पर मुहर लगा दे तो अल्लाह तआला के सिवा और कौनसा इलाह है जो यह कुव्वतें तुम्हें वापस दिला सकता है? देखो किस तरह बार-बार हम अपने दलायल उनके सामने पेश करते हैं फिर भी यह मुह मोड़ लेते हैं।" (सूरह अनआन-४६)

﴿قُلْ أَرَأَيْتُمْ إِن جَعَلَ اللَّهُ عَلَيْكُمُ اللَّيْلَ سَرْمَداً إِلَى يَوْمِ الْقِيَامَةِ مَنْ إِلَٰهٌ غَيْرُ اللَّهِ يَأْتِيكُم بِضِيَاءٍ أَفَلَا تَسْمَعُونَ • قُلْ أَرَأَيْتُمْ إِن جَعَلَ اللَّهُ عَلَيْكُمُ النَّهَارَ سَرْمَداً إِلَى يَوْمِ الْقِيَامَةِ مَنْ إِلَٰهٌ غَيْرُ اللَّهِ يَأْتِيكُم بِلَيْلٍ تَسْكُنُونَ فِيهِ أَفَلَا تُبْصِرُونَ﴾ (٢٨:٧١،٧٢)

"ऐ नबी! इनसे कहो कभी तुम लोगों ने गौर किया कि अगर अल्लाह तआला कयामत तक तुम पर हमेशा के लिए रात तारी कर दे तो अल्लाह तआला के सिवा वह कौनसा इलाह है जो तुम्हें रोशनी दिलादे। क्या सुनते नहीं हो? इनेस पूछो कभी तुमने सोचा कि अगर अल्लाह तआला कयामत तक तुम पर हमेशा के लिए दिन तारी कर दे तो अल्लाह तआला के सिवा वह कौनसा इलाह है जो तुम्हें रात दिला दे ताकि तुम उसमें सुकून हासिल कर सको, क्या तुम देखते नहीं हो?" (सूरह

कसस-८१-८२)

﴿أَفَرَأَيْتُمُ الْمَاءَ الَّذِي تَشْرَبُونَ • أَأَنتُمْ أَنزَلْتُمُوهُ مِنَ الْمُزْنِ أَمْ نَحْنُ الْمُنزِلُونَ • لَوْ نَشَاءُ جَعَلْنَاهُ أُجَاجًا فَلَوْلَا تَشْكُرُونَ﴾(٥٦:٦٨-٧٠)

"कभी तुमने आखें खोलकर देखा, यह पानी जो तुम पीते हो इसे तुमने बादल से बरसाया है या इसके बरसाने वाले हम हैं? हम चाहें तो इसे सख्त खारी बनाकर रख दें फिर तुम शुक्र गुज़ार क्यों नहीं बनते?" (सूरह वाकिया-६८-७०)

﴿أَفَرَأَيْتُم مَّا تُمْنُونَ • أَأَنتُمْ تَخْلُقُونَهُ أَمْ نَحْنُ الْخَالِقُونَ • نَحْنُ قَدَّرْنَا بَيْنَكُمُ الْمَوْتَ وَمَا نَحْنُ بِمَسْبُوقِينَ • عَلَىٰ أَن نُّبَدِّلَ أَمْثَالَكُمْ وَنُنشِئَكُمْ فِي مَا لَا تَعْلَمُونَ • وَلَقَدْ عَلِمْتُمُ النَّشْأَةَ الْأُولَىٰ فَلَوْلَا تَذَكَّرُونَ﴾(٥٦:٥٨-٦٢)

"कभी तुमने गौर किया, यह नुत्फा जो तुमने डालते हो, उससे बच्चा तुम बनाते हो या उसके बनाने वाले हम हैं? हमने तुम्हारे दरमियान मौत को तकसीम किया है। और हम इससे आजिज़ नहीं हैं कि तुम्हारी शक्लें बदल दें और किसी ऐसी शक्ल में तुम्हें पैदा कर दें जिसको तुम नहीं जानते, अपनी पहली पैदाइश को तो तुम जानते हो, फिर क्यों सबक नहीं लेते?" (सूरह वाकिया-५८-६२)

﴿أَفَرَأَيْتُم مَّا تَحْرُثُونَ • أَأَنتُمْ تَزْرَعُونَهُ أَمْ نَحْنُ الزَّارِعُونَ • لَوْ نَشَاءُ لَجَعَلْنَاهُ حُطَامًا فَظَلْتُمْ تَفَكَّهُونَ • إِنَّا لَمُغْرَمُونَ • بَلْ نَحْنُ مَحْرُومُونَ﴾

(٥٦:٦٣-٦٧)

"कभी तुमने सोचा, यह बीज जो तुम बोते हो, उनसे खेतियां तुम उगाते हो या उनके उगाने वाले हम हैं? हम चाहें तो इन खेतियों को भूस बनाकर रख दें और तुम तरह तरह की बातें बनाते रह जाओ कि हम पर तो उल्टी चट्टी पड़ गई, बल्कि हमारे तो नसीब ही फूटे हुए हैं।"

(सूरह वाकिया-६३-६७)

﴿وَإِنَّ لَكُمْ فِي الأَنْعَامِ لَعِبْرَةً نُّسْقِيكُم مِّمَّا فِي بُطُونِهِ مِن بَيْنِ فَرْثٍ وَدَمٍ لَّبَناً خَالِصاً سَآئِغاً لِلشَّارِبِينَ﴾ (١٦:٦٦)

"और तुम्हारे लिए मवेशियों में भी एक सबक मौजूद है। उनके पेट से गोबर और खून के दरमियान से हम एक चीज़ तुम्हें पीलाते हैं यानी कि खालिस दूध जो पीने वालों के लिए निहायत खुशगवार है।" (सूरह नहल-६६)

﴿فَلَوْلَا إِذَا بَلَغَتِ الْحُلْقُومَ • وَأَنتُمْ حِينَئِذٍ تَنظُرُونَ • وَنَحْنُ أَقْرَبُ إِلَيْهِ مِنكُمْ وَلَكِن لَّا تُبْصِرُونَ • فَلَوْلَا إِن كُنتُمْ غَيْرَ مَدِينِينَ • تَرْجِعُونَهَا إِن كُنتُمْ صَادِقِينَ﴾ (٥٦:٨٣.٨٧)

"अब अगर तुम किसी के महकूम नहीं हो और अपने इस ख्याल में सच्चे हो तो जब मरने वाले की जान हलक तक पहुंच चुकी होती है और तुम आखों से देख रहे होते हो कि वह मर रहा है, उस वक्त उसकी निकलती हुई जान को वापस क्यों नहीं ले आते?"

(सूरह वाकिया -८३-८७)

تَعْرِيفُ التَّوْحِيدِ وَأَنْوَاعُهُ

तौहीद की तारीफ और उसकी किसमें

मसला २४ : तौहीद की तीन किस्में हैं- १. तौहीद फिज़्ज़ात २. तौहीद फिल इबादत ३. तौहीद फिस्सिफात

मसला २५ : अल्लाह तआला अपनी ज़ात में वाहिद और बे मिस्ल है उसकी बीवी है न औलाद, मां है न बाप। इस अकीदे को तौहीद फिज़्ज़ात कहते हैं।

عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ قَالَ اللّٰهُ كَذَّبَنِي ابْنُ آدَمَ وَلَمْ يَكُنْ لَهُ ذٰلِكَ وَ شَتَمَنِي وَلَمْ يَكُنْ لَهُ ذٰلِكَ فَأَمَّا تَكْذِيبُهُ إِيَّايَ فَقَوْلُهُ لَنْ يُعِيدَنِي كَمَا بَدَأَنِي وَ لَيْسَ أَوَّلُ الْخَلْقِ بِأَهْوَنَ عَلَيَّ مِنْ إِعَادَتِهِ وَأَمَّا شَتْمُهُ إِيَّايَ فَقَوْلُهُ اتَّخَذَ اللّٰهُ وَلَداً وَ أَنَا الْأَحَدُ الصَّمَدُ لَمْ أَلِدْ وَلَمْ أُولَدْ وَلَمْ يَكُنْ لِي كُفُواً أَحَدٌ. رَوَاهُ الْبُخَارِيُّ (١)

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने फरमायाः "अल्लाह तआला इरशाद फरमाता है कि इब्ने आदम ने मुझे झुठलाया है और यह उसके लिए मुनासिब न था। इब्ने आदम ने मुझे गाली दी है और यह उसके लिए मुनासिब न था। रहा उसका उसका मुझे झुठलाना तो वह उसका यह कहना है कि अल्लाह तआला मुझे हरगिज़ दोबारा नहीं पैदा करेगा जैसा कि उसने पहली बार पैदा किया। हांलांकि पहले पैदा करना दोबारा पैदा करने से ज़्यदा आसान नहीं है। और उसका मुझे गाली देना यह है कि उसने कहा कि अल्लाह तआला की औलाद है हालांकि मैं अकेला बे नियाज़ हूं न मेरी कोई औलाद है और न मैं किसी

की औलाद हूं और न कोई मेरा हमसर है।" इसे बुखारी ने रिवायत किया है। (किताबुततफसीर)

मसला २६ : हर किस्म की इबादत मसलन दुआ, नज़र, नियाज़, इस्तिआनत, इस्तमदाद, इस्तियाज़ा, सज्दा और इताअत वगैरह सिर्फ अल्लाह तआला ही के लायक है इस अकीदे को तौहीद फिल इबादत कहते हैं।

عَنْ مُعَاذٍ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ كُنْتُ رِدْفَ النَّبِيِّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَلَى حِمَارٍ يُقَالُ لَهُ عُفَيْرٌ فَقَالَ يَا مُعَاذُ ! هَلْ تَدْرِيْ حَقَّ اللّٰهِ عَلَى عِبَادِهِ وَمَا حَقُّ الْعِبَادِ عَلَى اللّٰهِ ؟ قُلْتُ اَللّٰهُ وَ رَسُوْلُهُ أَعْلَمُ قَالَ: فَإِنَّ حَقَّ اللّٰهِ عَلَى الْعِبَادِ أَنْ يَعْبُدُوْهُ وَلَا يُشْرِكُوْا بِهِ شَيْئاً وَ حَقُّ الْعِبَادِ عَلَى اللّٰهِ أَنْ لَا يُعَذِّبَ مَنْ لَا يُشْرِكُ بِهِ شَيْئًا، فَقُلْتُ يَا رَسُوْلَ اللّٰهِ ! أَفَلَا أُبَشِّرُ بِهِ النَّاسَ ؟ قَالَ: لَاتُبَشِّرْهُمْ فَيَتَّكِلُوْا. رَوَاهُ الْبُخَارِيُّ (١)

हज़रत मुआज़ बिन जबल रज़ि० से रिवायत है कि मैं नबी अकरम सल्ल० के पीछे गधे पर सवार था जिसे उफैर कहा जाता है। रसूलुल्लाह सल्ल० ने (मुझ से) पूछाः "ऐ मुआज़ क्या तू जानता है कि अल्लाह तआला का अपने बन्दों पर क्या हक है और बन्दों का अल्लाह तआला पर क्या हक है?" मैंने अर्ज़ किया, "अल्लाह तआला और उसके रसूल सल्ल० बेहतर जानते हैं।" आप सल्ल० ने फरमाया, "बन्दों पर अल्लाह तआला का हक यह है कि सिर्फ वह उसी की इबादत करें और उसके साथ किसी को शरीक न ठहराएं और बन्दों का अल्लाह पर हक यह है कि जो आदमी शिर्क न करे उसे अज़ाब न दे।" मैं (मुआज़) ने अर्ज़ किया, "या रसूलुल्लाह सल्ल०! क्या मैं लोगों को यह खुश खबरी न सुनाऊं?" आप सल्ल० ने फरमाया, "ऐसा न करो क्योंकि फिर वह उसी पर भरोसा कर बैठेंगे।" इसे बुखारी ने रिवायत किया है। (किताबुल

जिहाद)

मसला २७ : अल्लाह तआला अपनी सिफात में वाहिद और बे मिस्ल है जिनमें उसका कोई हमसर नहीं, इस अकीदे को तौहीद फिस्सिफात कहते हैं।

عَنْ أَبِى هُرَيْرَةَ رَضِىَ اللّٰهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِىِّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: اِنَّ لِلّٰهِ تِسْعَةً وَ تِسْعِيْنَ اِسْمًا مَنْ حَفِظَهَا دَخَلَ الْجَنَّةَ وَ اِنَّ اللّٰهَ وِتْرٌ يُحِبُّ الْوِتْرَ. رَوَاهُ مُسْلِمٌ (٢)

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० नबी अकरम सल्ल० से रिवायत करते है कि आप सल्ल० ने फरमायाः "अल्लाह तआला के निन्नान्वे (सिफाती) नाम हैं जो उन्हें याद कर ले वह जन्नत में दाखिल होगा। अल्लाह ताक है और ताक को ही पसन्द फरमाता है।" इसे मुस्लिम ने रिवायत किया है। (किताबुज़ ज़िक्र)

वज़ाहत : याद करने से मुराद ज़बानी याद करना या उन नामों के वसीले से दुआ करना या उनपर ईमान लाना और इताअत करना है।

اَلتَّوْحِيْدُ فِي الذَّاتِ

तौहीद फिज़्ज़ात

मसला २८ : अल्लाह तआला अपनी ज़ात में अकेला और बे मिस्ल है उसकी बीवी है न औलाद, मां है न बाप।

मसला २९ : अल्लाह तआला न कायनात की किसी जानदार या बे जान चीज़ में मुदगम है न उसका जुज़ है। न ही कायनात की कोई जानदार या बेजान चीज़ अल्लाह तआला की ज़ात में मुदगम है न उसका जुज़ है।

﴿قُلْ هُوَ اللّٰهُ أَحَدٌ • اللّٰهُ الصَّمَدُ • لَمْ يَلِدْ وَلَمْ يُولَدْ • وَلَمْ يَكُن لَّهُ كُفُواً أَحَدٌ﴾

(١١٢:١-٤)

"कहो, वह अल्लाह तआला यकता है। अल्लाह तआला सबसे बे नियाज़ है और सब उसके मोहताज हैं। न उसकी औलाद है, न वह किसी की औलाद है और न कोई उसका हमसर है।"(सूरह इख्लास-१-४)

عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ قَالَ اللّٰهُ كَذَّبَنِي ابْنُ آدَمَ وَلَمْ يَكُنْ لَهُ ذٰلِكَ شَتَمَنِي وَلَمْ يَكُنْ لَهُ ذٰلِكَ فَأَمَّا تَكْذِيبُهُ إِيَّايَ فَقَوْلُهُ لَنْ يُعِيدَنِي كَمَا بَدَأَنِي وَلَيْسَ أَوَّلُ الْخَلْقِ بِأَهْوَنَ عَلَيَّ مِنْ إِعَادَتِهِ وَ أَمَّا شَتْمُهُ إِيَّايَ فَقَوْلُهُ اتَّخَذَ اللّٰهُ وَلَداً وَأَنَا الْأَحَدُ الصَّمَدُ لَمْ أَلِدْ وَلَمْ أُولَدْ وَلَمْ يَكُنْ لِي كُفُوًا أَحَدٌ. رَوَاهُ الْبُخَارِيُّ (١)

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने फरमाया: "अल्लाह तआला इरशाद फरमाता है कि इब्ने आदम ने मुझे

झुठलाया है और यह उसके लिए मुनासिब न था। इब्ने आदम ने मुझे गाली दी है और यह उसके लिए मुनासिब न था। रहा उसका उसका मुझे झुठलाना तो वह उसका यह कहना है कि अल्लाह तआला मुझे हरगिज़ दोबारा नहीं पैदा करेगा जैसा कि उसने पहली बार पैदा किया। हांलांकि पहले पैदा करना दोबारा पैदा करने से ज़्यदा आसान नहीं है। और उसका मुझे गा़ली देना यह है कि उसने कहा कि अल्लाह तआला की औलाद है हालांकि मैं अकेला बे नियाज़ हुं, न मेरी कोई औलाद है और न मैं किसी की औलाद हूं और न कोई मेरा हमसर है।" इसे बुखारी ने रिवायत किया है। (किताबुततफसीर सूरह इख्लास)

मसला ३० : अल्लाह तआला की ज़ात अव्वल (अज़ली) और आखिर (अबदी) है जिसे फना नहीं।

मसला ३१ : अल्लाह तआला ज़ाहिर बीं निगाहों से पोशीदा है, लेकिन उसकी कुदरत हर चीज़ से ज़ाहिर है।

﴿هُوَ الْأَوَّلُ وَالْآخِرُ وَالظَّاهِرُ وَالْبَاطِنُ وَهُوَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ﴾ (٥٧:٣)

"वही अव्वल भी है और आखिर भी, ज़ाहिर भी और पोशीदा भी और वह हर चीज़ का इल्म रखता है।" (सूरह हदीद-३)

عَنْ سُهَيْلٍ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ كَانَ أَبُوْ صَالِحٍ يَأْمُرُنَا إِذَا أَرَادَ أَحَدُنَا أَنْ يَنَامَ أَنْ يَضْطَجِعَ عَلَى شِقِّهِ الْأَيْمَنِ ثُمَّ يَقُوْلُ: اَللّٰهُمَّ رَبَّ السَّمَاوَاتِ وَ رَبَّ الْأَرْضِ وَ رَبَّ الْعَرْشِ الْعَظِيْمِ رَبَّنَا وَ رَبَّ كُلِّ شَيْءٍ فَالِقَ الْحَبِّ وَالنَّوٰى وَمُنْزِلَ التَّوْرَاةِ وَالْاِنْجِيْلِ وَالْفُرْقَانِ أَعُوْذُبِكَ مِنْ شَرِّ كُلِّ شَيْءٍ أَنْتَ آخِذٌ بِنَاصِيَتِهِ اَللّٰهُمَّ أَنْتَ الْاَوَّلُ فَلَيْسَ قَبْلَكَ شَيْءٌ وَأَنْتَ الْآخِرُ فَلَيْسَ بَعْدَكَ شَيْءٌ وَأَنْتَ الظَّاهِرُ فَلَيْسَ فَوْقَكَ شَيْءٌ وَأَنْتَ الْبَاطِنُ فَلَيْسَ دُوْنَكَ شَيْءٌ اِقْضِ عَنَّا الدَّيْنَ وَأَغْنِنَا مِنَ الْفَقْرِ وَكَانَ يَرْوِي ذٰلِكَ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ . رَوَاهُ مُسْلِمٌ (١)

हज़रत सुहैल रज़ि० से रिवायत है जब हम में से कोई सोने लगता तो हज़रत अबू सालेह कहते दायीं करवट पर लेटो और यह दुआ पढ़ोः "ऐ अल्लाह! ज़मीन व आसमान और अर्शे ज़मीन के मालिक! हमारे परवरदिगार और हर चीज़ के पालनहार! दाने और गुठली को ज़मीन से उगते वक्त फाड़ने वाले! तौरात, इंजील और कुरआन के नाज़िल फरमाने वाले! मैं हर चीज़ के शर से तेरी पनाह मांगता हूं जिसकी पेशानी तेरे कबज़े में है। ऐ अल्लाह तू सबसे अव्वल है तुझ से पहले कोई चीज़ नहीं। तू सबसे आखिर है, तेरे बाद कोई चीज़ नहीं। तू कायनात की हर चीज़ से ज़ाहिर है, तुझ से बढ़कर ज़ाहिर कोई चीज़ नहीं। तू (ज़ाहिर में निगाहों से) पोशिदा है, तुझ से ज़्यादा पोशीदा कोई चीज़ नहीं, हमारा कर्ज़ अदा करदे और मोहताजी दूर करदे, हमें गनी बनादे।" अबू सालेह यह दुआ हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० से और वह रसूले अकरम सल्ल० से रविायत करते थे। इस मुस्लिम ने रिवायत किया है। (किताबुज़ ज़र वद्दुआ)

मसला ३२ : अल्लाह तआला अपनी ज़ात के साथ आसमानों के ऊपर अर्शे अज़ीम पर जल्वा फरमा है।

﴿اللّٰهُ الَّذِىْ خَلَقَ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا فِىْ سِتَّةِ أَيَّامٍ ثُمَّ اسْتَوٰى عَلَى الْعَرْشِ مَا لَكُم مِّن دُونِهِ مِن وَلِىٍّ وَلَا شَفِيعٍ أَفَلَا تَتَذَكَّرُونَ﴾ (٣٢:٤)

"वह अल्लाह ही है जिसने आसमानों और ज़मीनों को और उन सारी चीज़ों को जो उनके दरमियान हैं छः दिनों में पैदा किया और उसके बाद अर्श पर जल्वा फरमा हुआ। उसके सिवा न तुम्हारा कोई हामी व मददगार है और न कोई उसके आगे सिफारिश करने वाला, फिर क्या तुम होश में न आओगे।" (सूरह सजदा-४)

عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِىَ اللّٰهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُوْلَ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ يَتَنَزَّلُ رَبُّنَا تَبَارَكَ وَ تَعَالَى كُلَّ لَيْلَةٍ إِلَى السَّمَاءِ الدُّنْيَا حِيْنَ يَبْقَى ثُلُثُ

الـلَّيـلُ الآخـرُ يَـقُـوْلُ مَـنْ يَـدْعُـوْنِـىْ فَـأَسْـتَـجِيْبَ لَهُ مَنْ يَسْأَلُنِىْ فَأُعْطِيَهُ مَنْ يَسْتَغْفِرُنِىْ فَأَغْفِرَ لَهُ. رَوَاهُ الْبُخَارِىُّ (١)

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने फरमायाः "जब रात का तिहाई हिस्सा बाकी रह जाता है हमारा बुजुर्ग व बरतर परवरदिगार आसमाने दुनिया पर नाज़िल होता है और फरमाता है कौन है जो मुझ से दुआ करे और मैं उसकी दुआ कुबूल करूं? कौन है जो मुझ से अपनी हाजत मांगे और मैं उसे अता करूं? कौन है जो मुझ से बखशिश चाहे और मैं उसे बख्श दूं?" इसे बुखारी ने रिवायत किया है। (किताबुद दावत, बाब दुआ)

वज़ाहत : अल्लाह तआला अपने इल्म, कुदरत और अपने इख्तियारात के साथ हर जगह मौजूद है।

मसला ३३ : कयामत के दिन अहले जन्नत अल्लाह तआला का दीदार करेंगे।

﴿وُجُوهٌ يَوْمَئِذٍ نَّاضِرَةٌ ۝ إِلَىٰ رَبِّهَا نَاظِرَةٌ﴾ (۷۵:۲۲-۲۳)

"बहुत से चेहरे उस दिन तरोताज़ा और बा रौनक होंगे अपने रब की तरफ देख रहे होंगे।" (सूरह कियामह-२२-२३)

عَنْ جَرِيْرِ بْنِ عَبْدِ اللّٰهِ رَضِىَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ كُنَّا جُلُوْسًا عِنْدَ النَّبِىِّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ اِذْ نَظَرَ اِلَى الْقَمَرِ لَيْلَةَ الْبَدْرِ قَالَ اِنَّكُمْ سَتَرُوْنَ رَبَّكُمْ كَمَا تَرَوْنَ هٰذَا الْقَمَرَ، لَا تُضَامُّوْنَ فِىْ رُؤْيَتِهِ. رَوَاهُ الْبُخَارِىُّ (١)

हज़रत जरीर बिन अब्दुल्लाह रज़ि० से रिवायत है कि हम नबी अकरम सल्ल० के पास बैठे हुए थे। आप सल्ल० ने १४ वीं के चांद की तरफ देखा और फरमाया, "(जन्नत में) तुम अपने रब को इस तरह देखोगे जिस तरह इस चांद को देख रहे हो। अल्लाह तआला को देखने में तुम्हें कोई दिक्कत पेश नहीं आएगी।" इसे बुखारी ने रिवायत किया है।

(किताबुत तौहीद)

वज़ाहत : इस दुनिया में कोई इंसान अल्लाह तआला का दीदार नहीं कर सकता यहां तक कि रसूले अकरम सल्ल० ने भी इस दुनिया में अल्लाह तआला का दीदार नहीं किया। हज़रत आइशा रज़ि० फरमाती हैं, "जो व्यक्ति यह कहे कि मुहम्मद सल्ल० ने अपने रब का दीदार किया है वह झूठा है।" (बुखारी व मुस्लिम) कुरआन मजीद में हज़रत यूनुस अलैहि० का दिया गया वाकिया भी इस तसदीक करता है। तफ़सील के लिए मुलाहिज़ा हो सूरह आराफ, आयत-१४३।

तौहिदे फिज़्ज़ात के बारे में शिर्किया मामले

१. किसी फरिश्ते या नबी या किसी दूसरी मखलूक को अल्लाह तआला का बेटा या बेटी समझना या अल्लाह की ज़ात का जुज़ समझना या अल्लाह के नूर से नूर समझना शिर्क है। (मुलाहिज़ा हो मसला २६)

२. अल्लाह तआला के बारे में "तीन में से एक और एक में से तीन" का अकीदा रखना शिर्क है। (मुलाहिज़ा हो मसला २८)

३. अल्लाह तआला की ज़ाते बाबरकत को कायनात की हर चीज़ में मौजूद समझना "वहदतुल वजूद" कह लाता है। इस पर ईमान रखना शिर्क है। (मुलाहिज़ा हो २८-२६)

४. बन्दे का अल्लाह की ज़ात में मुदगम हो जाने का अकीदा "वहदत शहूद" कहला ता है, इस पर ईमान रखना शिर्क है।

५. अल्लाह तआला का बन्दे की ज़ात में मुदगम हो जाने का अकीदा "हुलूल" कहलाता है। इस पर ईमान रखना शिर्क है। (मुलाहिज़ा हो मसला २८-२६)

اَلتَّوحِيدُ فِى الْعِبَادَةِ

तौहीद फिल इबादत

मसला ३४ : इबादत की तमाम किस्में (ज़बानी, माली और जिस्मानी) सिर्फ अल्लाह तआला ही के लिए मखसूस हैं।

﴿قُلْ إِنَّ صَلاتِى وَنُسُكِى وَمَحْيَاىَ وَمَمَاتِى لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ ۝ لاَ شَرِيكَ لَهُ وَبِذَلِكَ أُمِرْتُ وَأَنَاْ أَوَّلُ الْمُسْلِمِينَ﴾ (٦:١٦٢. ١٦٣)

"कहो, मेरी नमाज़ मेरे तमाम मरासिम उबूदियत मेरा जीना मेरा मरना सब कुछ अल्लाह तआला रब्बुल आलमीन के लिए है जिसका कोई शरीक नहीं इसी बात का मुझे हुक्म दिया गया है और सबसे पहले सर इताअत झुकाने वाल मैं हूं।" (सूरह अनआम-१६२-१६३)

عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِىَ اللّٰهُ عَنْهُمَا أَنَّهُ قَالَ كَانَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يُعَلِّمُنَا التَّشَهُّدَ كَمَا يُعَلِّمُنَا السُّوْرَةَ مِنَ الْقُرْآنِ فَكَانَ يَقُوْلُ اَلتَّحِيَّاتُ لِلّٰهِ الْمُبَارَكَاتُ وَ الصَّلَوَاتُ وَالطَّيِّبَاتُ السَّلاَمُ عَلَيْكَ أَيُّهَا النَّبِىُّ وَ رَحْمَةُ اللّٰهِ وَ بَرَكَاتُهُ السَّلاَمُ عَلَيْنَا وَعَلَى عِبَادِ اللّٰهِ الصَّالِحِيْنَ أَشْهَدُ أَنْ لاَ إِلٰهَ إِلاَّ اللّٰهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّداً رَسُوْلُ اللّٰهِ . رَوَاهُ مُسْلِمٌ (١)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ि० रिवायत करते हैं कि नबी अकरम सल्ल० हमें कुरआन मजीद की किसी सूरह की तरह तशह्हुद भी सिखाया करते थे। आप सल्ल० फरमाते : "तमाम ज़बानी बाबरकत इबादतें और तमाम बदनी व माली इबादतें अल्लाह तआला ही के लिए (मखसूस) हैं। ऐ नबी! आप पर सलामती और अल्लाह तआला की रहमतें

और बरकतें नाज़िल हों सलाम हो हम पर और अल्लाह तआला के नेक बन्दों पर। मैं गवाही देता हूं कि अल्लाह तआला के सिवा कोई इलाह नहीं और मैं गवाही देता हूं कि मुहम्मद सल्ल० अल्लाह रसूल हैं।" इसे मुस्लिम ने रिवायत किया है। (मिश्कात, बाब तशहुद फस्ल अव्व्ल)

मसला ३५ : नमाज़ की तरह कयाम या बेहिस व हरकत बा अदब हाथ बांधकर खड़े होना अल्लाह तआला के लिए मखसूस है।

﴿حَافِظُوا عَلَى الصَّلَوَاتِ وَالصَّلَاةِ الْوُسْطَى وَقُومُوا لِلَّهِ قَانِتِينَ﴾(٢:٢٣٨)

"अपनी नमाज़ों की हिफाज़त करो और (खास तौर पर) नमाज़े अस्र की और अल्लाह तआला के सामने इस तरह अदब से खड़े हो जैसे फरमांबरदार गुलाम खड़े होते हैं।" (सूरह बकरा-२३८)

عَنْ مُعَاوِيَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُوْلُ مَنْ سَرَّهُ أَنْ يَتَمَثَّلَ لَهُ الرِّجَالُ قِيَامًا فَلْيَتَبَوَّأْ مَقْعَدَهُ مِنَ النَّارِ. رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ (١) (صَحِيْح)

हज़रत मुआविया रज़ि० कहते हैं कि मैंने रसूले अकरम सल्ल० को फरमाते हुए सुना है कि "जो आदमी यह पसन्द करे कि लोग उसके सामने तस्वीर की तरह (बे हिस व हरकत और बाअदब) खड़े रहें वह अपनी जगह जहन्नम में बना ले। इसे तिर्मिज़ी ने रिवायत किया है। (सही सुनन तिर्मिज़ी लिलबानी, जुज़ ३, हदीस २२१२)

मसला ३६ : रूकूअ और सजदा सिर्फ अल्लाह तआला ही के लिए मखसूस है।

﴿يَا أَيُّهَا الَّذِيْنَ آمَنُوا ارْكَعُوا وَاسْجُدُوا وَاعْبُدُوا رَبَّكُمْ وَافْعَلُوا الْخَيْرَ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ﴾ (٢٢:٧٧)

"ऐ लोगो जो ईमान लाए हो! रूकूअ करो, सज्दा करो और इबादत करो अपने रब की और नेक काम करो ताकि तुम फलाह पा सको।"

(सूरह हज-२२)

عَنْ قَيْسِ بْنِ سَعْدٍ رَضِىَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ أَتَيْتُ الْحِيْرَةِ فَرَأَيْتُهُمْ يَسْجُدُوْنَ لِمَرْزُبَانٍ لَهُمْ فَقُلْتُ رَسُوْلُ اللّٰهِ أَحَقُّ أَنْ يُسْجُدَ لَهُ قَالَ فَأَتَيْتُ النَّبِيَّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقُلْتُ اِنِّى أَتَيْتُ الْحِيْرَةَ فَرَأَيْتُهُمْ يَسْجُدُوْنَ لِمَرْزُبَانٍ لَهُمْ فَأَنْتَ يَا رَسُوْلَ اللّٰهِ أَحَقُّ أَنْ نَسْجُدَ لَكَ قَالَ أَرَأَيْتَ لَوْ مَرَرْتَ بِقَبْرِىْ أَكُنْتَ تَسْجُدَ لَهُ قَالَ قُلْتُ لَا قَالَ فَلَا تَفْعَلُوْا لَوْ كُنْتُ آمِرًا أَحَدًا أَنْ يَسْجُدَ لِأَحَدٍ لَأَمَرْتُ النِّسَاءَ أَنْ يَسْجُدْنَ لِأَزْوَاجِهِنَّ لِمَا جَعَلَ اللّٰهُ لَهُمْ عَلَيْهِنَّ مِنَ الْحَقِّ. رَوَاهُ أَبُوْ دَاوُدَ (٢) (صَحِيْح)

हज़रत कैस बिन साद रज़ि० कहते हैं मैं हैरह (यमन का शहर) आया तो वहां के लोगों को अपने हाकिम के आगे सज्दा करते देखा। मैंने ख्याल किया कि रसूलुल्लाह सल्ल० (इन हाकिमों के मुकाबिले में) सज्दा के ज़्यदा हकदार हैं, चुनांचे जब रसूलुल्लाह सल्ल० की खिदमते अकदस में हाज़िर हुआ तो अर्ज़ किया, "या रसूलुल्लाह सल्ल० मैंने हैरह के लोगों को अपने हाकिम के सामने सजदा करते देखा है हालांकि आप सज्दा के ज़्यादा हकदार हैं रसूले अकरम सल्ल० ने इरशाद फरमाया, "अच्छा बताओ अगर तुम्हारा गुज़र मेरी कब्र पर होता क्या तुम मेरी कब्र पर सज्दा करोगे?" मैंने अर्ज़ किया, "नहीं"। नबी अकरम सल्ल० ने इरशाद फरमाया, "फिर अब भी मुझे सज्दा न करो अगर मैं किसी को सज्दा करने का हुकम देता तो औरतों को हुक्म देता कि वे अपने शौहरों को सज्दा करें उस हक के बदले में जो अल्लाह तआला ने मर्दों के लिए मुकर्रर किया है।" इसे अबू दाऊद ने रिवायत किया है। (सही सुनन अबू दाऊद लिलबानी, जुज़ सानी, हदीस १८७३)

मसला ३७ : तवाफ (सवाब की नियत से किसी जगह के गिर्द चक्कर लगाना) और एतिकाफ (किसी जगह सवाब की नीयत से बैठना)

सिर्फ अल्लाह तआला ही के लिए मख़्सूस है।

﴿ وَعَهِدْنَا إِلَى إِبْرَاهِيمَ وَإِسْمَاعِيلَ أَن طَهِّرَا بَيْتِيَ لِلطَّائِفِينَ وَالْعَاكِفِينَ وَالرُّكَّعِ السُّجُودِ﴾ (۲:۱۲۵)

"और हमने इब्राहीम और इस्माईल (अलैहिस्सलाम) को ताकीद की थी कि मेरे इस घर को तवाफ, एतिकाफ, रूकूअ और सज्दाकरने वालों के लिए पाक साफ रखो। (सूर बकरा आयत १२५)

عَنْ أَبِيْ هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ لَأَنْ يَجْلِسَ أَحَدُكُمْ عَلَى جَمْرَةٍ فَتُحْرِقَ ثِيَابَهُ فَتَخْلُصَ اِلَى جِلْدِهِ خَيْرٌ لَهُ مِنْ أَنْ يَجْلِسَ عَلَى قَبْرٍ. رَوَاهُ مُسْلِمٌ (۱)

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने फरमाया : "किसी कब्र पर बैठने से यह बेहतर है कि आदमी आग के अंगारे पर बैठ जाए, जो उसके कपड़े और खाल तक को जला डाले।" इसे मुस्लिम ने रिवायत किया है। (किताबुल जनाइज़)

عَنْ أَبِيْ هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ لَا تَقُوْمُ السَّاعَةُ حَتَّى تَضْرِبَ أَلَيَاتُ نِسَاءِ دَوْسٍ حَوْلَ ذِي الْخَلَصَةِ. مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ (۲)

हज़रत अब हुरैरह रज़ि० कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने फरामाया : "कयामत उस वक्त तक कायम नहीं होगी जब तक कबीला दौस की औरतों की पीठें ज़िल ख ल सति के गिर्द तवाफ न करने लगें।" इसे बुखारी व मुस्लिम ने रिवायत किया है।(सही मुस्लिम किताबुन निफाक)

वज़ाहत : ज़िल ख ल सति ज़माना जाहिलियत में कबीला दौस का बुत था जिसके गिर्द मुश्रिक तवाफ किया करते थे।

मसला ३८ : नज़र, नियाज़ और चढ़ावा सिर्फ अल्लाह तआला ही

के नाम का होना चहिए।

﴿إِنَّمَا حَرَّمَ عَلَيْكُمُ الْمَيْتَةَ وَالدَّمَ وَلَحْمَ الْخِنزِيرِ وَمَا أُهِلَّ بِهِ لِغَيْرِ اللّٰهِ﴾

(١٧٣:٢)

"बेशक अल्लाह तआला ने तुम पर मुर्दार, खून, खिन्जीर का गोश्त और वह चीज़ें जो अल्लाह तआला के अलावा किसी दूसरे के नाम कर दी जाए, हराम कर दिया है। (सूरह बकरा-१७३)

عَنْ طَارِقِ بْنِ شِهَابٍ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ اَنَّ رَسُوْلَ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ دَخَلَ الْجَنَّةَ رَجُلٌ فِيْ ذُبَابٍ وَ دَخَلَ النَّارَ رَجُلٌ فِيْ ذُبَابٍ قَالُوْا وَ كَيْفَ يَا رَسُوْلَ اللّٰهِ (صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ) قَالَ: مَرَّ رَجُلَانِ عَلَى قَوْمٍ لَهُمْ صَنَمٌ لَا يُجَاوِزُهُ اَحَدٌ حَتَّى يُقَرِّبُ لَهُ شَيْئًا فَقَالُوْا لَا حَدِهِمَا قَرِّبْ،قَالَ لَيْسَ عِنْدِيْ شَيْءٌ اُقَرِّبُ قَالُوْا لَهُ قَرِّبْ وَ لَوْ ذُبَابًا فَقَرَّبَ ذُبَابًا فَخَلُّوْا سَبِيْلَه' فَدَخَلَ النَّارَ وَ قَالُوْا لِلآخَرِ: قَرِّبْ فَقَالَ مَا كُنْتُ لِاُقَرِّبَ لِاَحَدٍ شَيْئًا دُوْنَ اللّٰهِ عَزَّ وَ جَلَّ فَضَرَبُوْا عُنُقَهُ فَدَخَلَ الْجَنَّةَ. رَوَاهُ أَحْمَدُ (١)

हज़रत तारिक बिन शिहाब रज़ि० से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने फरमाया : "एक आदमी सिर्फ मक्खी की वजह से जन्नत में चला गया और दूसरा जहन्नम में।" सहाबा किराम रज़ि० ने अर्ज़ किया : "या रसूलल्लाह सल्ल०! वह कैसे?" नबी अकरम सल्ल० ने फरमाया, "दो आदमी एक कबीले के पास से गुज़रे, उस कबीले का एक बुत था जिस पर चढ़ावा चढ़ाए बगैर कोई आदमी वहां से नहीं गुज़र सकता था। चुनांच उनमें से एक आदमी से कहा गया कि इस बुत पर चढ़ावा चढ़ाओ। उसने कहा कि मेरे पास ऐसी कोई चीज़ नहीं कबीले के लोगों ने कहा तुम्हें चढ़ावा ज़रूर चढ़ाना होगा चाहे मक्खी पकड़ कर चढ़ाओ। मुसाफिर ने मक्खी पकड़ी और बुत की नज़र कर दी, लोगों ने उसे जाने दिया और वह जहन्नम में दाखिल हो गया, कबीले के लोगों ने दसूरे

आदमी से कहा तुम भी कोई चीज़ बुत की नज़र करो, उसने कहा मैं अल्लाह तआला अज्ज़ व जल के अलावा किसी दूसरे के नाम का चढ़ावाप नहीं चढ़ाऊंगा। लोगों ने उसे कत्ल कर दिया और वह जन्नतमें चला गया।" इसे अहमद ने रिवायत किया है। (कितबुत्तौहीद)

मसला ३६ : कुरबानी सिर्फ अल्लाह तआला ही के नाम की देनी चाहिए।

﴿وَلَا تَأْكُلُوا مِمَّا لَمْ يُذْكَرِ اسْمُ اللَّهِ عَلَيْهِ وَإِنَّهُ لَفِسْقٌ وَإِنَّ الشَّيَاطِينَ لَيُوحُونَ إِلَى أَوْلِيَائِهِمْ لِيُجَادِلُوكُمْ وَإِنْ أَطَعْتُمُوهُمْ إِنَّكُمْ لَمُشْرِكُونَ﴾ (٦:١٢١)

::और जिस जानवर को अल्लाह तआला के नाम पर जब्ह न किया गया हो उसका गोश्त न खाओ ऐसा करना फिस्क है। शयातीन अपने साथियों के दिलों में शकूकव शुब्हातडालते हैं ताकि (शयातीन के साथी शिर्क के लिए) तुमसे झगड़ा करें, लेकिन अगर तुमने उनकी इताअत कबूल कर ली तो तुम मुश्रिक हो।" (सूरह अनआम-१४१)

عَنْ عَلِيٍّ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ قَالَ رَسُوْلُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ لَعَنَ اللَّهُ مَنْ ذَبَحَ لِغَيْرِ اللَّهِ وَلَعَنَ اللَّهُ مَنْ سَرَقَ مَنَارَ الْأَرْضِ وَلَعَنَ اللَّهُ مَنْ لَعَنَ وَالِدَهُ وَلَعَنَ اللَّهُ مَنْ آوَى مُحْدِثًا. رَوَاهُ مُسْلِمٌ (١)

हज़रत अली रज़ि० कहते है। कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने फरमाया : "अल्लाह ताअला ने लानत फरमाई है उस आदमी पर जो गैरूल्लाह के नाम पर जानवर ज़ब्ह करे, जो ज़मीन की हदें तब्दील करे, जो अपने वालिद पर लानत करे और जो बिदअती को पनाह दे।" इसे मुस्लिम ने रिवायत किया है। (किताबुल ज़ाही)

मसला ४० : दुआ सिर्फ अल्लाह तआला ही से सीधी मांगनी चाहिए।

﴿وَإِذَا سَأَلَكَ عِبَادِىْ عَنِّىْ فَإِنِّىْ قَرِيْبٌ أُجِيْبُ دَعْوَةَ الدَّاعِ إِذَا دَعَانِ فَلْيَسْتَجِيْبُوْا لِىْ وَلْيُؤْمِنُوْا بِىْ لَعَلَّهُمْ يَرْشُدُوْنَ﴾ (١٨٦:٢)

"ऐ नबी! मेर बन्दे जब तुमसे मेरे मुताल्लिक पूछें (तो उन्हें बता दो) कि मैं उनके करीब ही हूं। जब कोई दुंआ करने वाला मुझसे दुआ करता है तो मैं कुबूल करता हूं, अतः उन्हें चाहिए कि वह मेरा हुक्म मानें मुझ पर ईमान लाएं ताकि सीधी राह पा लें।" (सूरह बकरा-१८६)

عَنِ النُّعْمَانِ بْنِ بَشِيْرٍ رَضِىَ اللّٰهُ عَنْهُ سَمِعْتُ عَنِ النَّبِىِّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: اَلدُّعَاءُ هُوَ الْعِبَادَةُ ثُمَّ قَرَأَ (وَقَالَ؛ رَبُّكُمُ ادْعُوْنِىْ أَسْتَجِبْ لَكُمْ اِنَّ الَّذِيْنَ يَسْتَكْبِرُوْنَ عَنْ عِبَادَتِىْ سَيَدْخُلُوْنَ جَهَنَّمَ دَاخِرِيْنَ.) رَوَاهُ التِّرْمِذِىُّ (١) (صحيح)

हज़रत नोमान बिन बशीर रज़ि० से रिवायत है कि नबी अकरम सल्ल० ने फरमाया : "दुआ इबादत है" फिर आप सल्ल० ने यह आयत तिलावत फरमाई "तुम्हारा रब कहता है मुझसे दुआ करो मैं तुम्हारी दुआ कुबूल करूंगा जो लोग मेरी इबादत से मुंह मोड़ते हैं मैं उन्हें जल्द ही रूस्वा करके जहन्नम में दाखिल करूंगा।" इसे तिर्मिज़ी ने रिवायत किया है। (सही सुनन तिर्मिज़ी, लिलबानी, जुज़ २, हदीस २६८५)

वज़ाहतः दूसरी मसला ५८ के तहत मुलाहिज़ा फरमाएं।

मसला ४१ : पनाह सिर्फ अल्लाह तआल ही से मांगनी चाहिए।

﴿قُلْ أَعُوْذُ بِرَبِّ النَّاسِ ۝ مَلِكِ النَّاسِ ۝ إِلٰهِ النَّاسِ ۝ مِنْ شَرِّ الْوَسْوَاسِ الْخَنَّاسِ ۝ الَّذِىْ يُوَسْوِسُ فِىْ صُدُوْرِ النَّاسِ ۝ مِنَ الْجِنَّةِ وَ النَّاسِ﴾ (٦.١:١١٤)

"कहो, मैं पनाह मांगता हूं इंसानों के रब, इंसाना के बादशाह, इंसानो के हकीकी माबूद की, उस वसवसा डालने वाले के शर से जो बार

बार पलटकर आता है, जो लोगों के दिलों में वसवसा डालता है, चाहे वह जिन्नों में से हो या इंसानों में से।" (सूरह नास-१-६)

عَنْ خَوْلَةَ بِنْتِ حَكِيْمٍ رَضِىَ اللّٰهُ عَنْهَا تَقُوْلُ سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُوْلُ مَنْ نَزَلَ مَنْزِلًا ثُمَّ قَالَ أَعُوْذُ بِكَلِمَاتِ اللّٰهِ التَّامَّاتِ مِنْ شَرِّ مَا خَلَقَ لَمْ يَضُرُّهُ شَيْءٌ حَتّٰى يَرْتَحِلَ مِنْ مَنْزِلِهِ ذٰلِكَ.

رَوَاهُ مُسْلِمٌ (٢)

हज़रत खोला बिन्ते हकीम रज़ि० कहती हैं कि मैंने रसूलुल्लाह सल्ल० को यह फरमाते हुए सुना है कि जो व्यक्ति जगह किसी जगह ठहरे और यह दुआ पढ़े "मैं अल्लाह तआला के मुकमम्ल कलिमात के ज़िरिए सारी मखलूकात के शर से अल्लाह तआला की पनाह मांगता हूं।" तो उसे उस जगह से रवाना होने तक कोई चीज़ नुक्सान नहीं पहंचाएगी। इसे मुस्लिम ने रिवायत किया है। (बाबुर्रकी)

मसला ४२ : तवक्कुल और भरोसा सिफ अल्लाह तआलाही पर करना चाहिए।

﴿إِن يَنصُرْكُمُ اللّٰهُ فَلَا غَالِبَ لَكُمْ وَإِن يَخْذُلْكُمْ فَمَن ذَا الَّذِي يَنصُرُكُم مِّن بَعْدِهِ وَعَلَى اللّٰهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُونَ﴾ (١٦٠:٣)

"अगर अल्लाह तआला तुम्हारी मदद पर हो तो कोई ताकत तुम पर गालिब आने वाली नहीं और अगर वह तुम्हें छोड़ दे तो उसके बाद कौन है जो तुम्हारी मदद कर सकता है। पस सच्चे मोमिनों को अल्लाह तआला ही पर तवक्कुल करना चाहिए।" (सूरह आले इमरान-१६०)

عَنْ عُمَرَ رَضِىَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُوْلُ لَوْ أَنَّكُمْ تَوَكَّلْتُمْ عَلَى اللّٰهِ حَقَّ تَوَكُّلِهِ لَرَزَقَكُمْ كَمَا يَرْزُقُ الطَّيْرَ تَغْدُوْ خِمَاصًا وَتَرُوْحُ بِطَانًا. رَوَاهُ ابْنُ مَاجَةَ (١) (صَحِيْح)

हज़रत उमर बिन खत्ताब रज़ि० कहते हैं मैनं रसूलुल्लाह सल्ल० को फरमाते सुना है कि "अगर तुम लोग अल्लाह तआला पर तवक्कुल करो जैसा तवक्कुल करने का हक है तो वह तुम्हें उसी तरह रिज़्क दे सिज तरह परिन्दों को देता है। परिन्दे सुबह खाली पेट निकलते हैं और शाम को पेट भरकर वापस आते हैं।" इसे इब्ने माजा ने रिवायत किया है। (सही सुनन इब्ने माजा, लिलबानी, जुज़२, हदीस ३३५६)

मसला ४३ : रज़ा और खूशनूदी सिर्फ अल्लाह तआला ही की तलब करनी चाहिए।

﴿فَآتِ ذَا الْقُرْبَى حَقَّهُ وَالْمِسْكِيْنَ وَابْنَ السَّبِيْلِ ذٰلِكَ خَيْرٌ لِّلَّذِيْنَ يُرِيْدُوْنَ وَجْهَ اللّٰهِ وَأُوْلٰئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ﴾ (٣٠:٣٨)

"रिश्तेदार, मिस्कीन और मुसाफिर को उसका हक अदा करो यही तर्ज़े अमल बेहतर है उन लोगों के लिए जो अल्लाह तआला की खूशनदी चाहते हैं और वही लोग फलाह परने वाले हैं।" (सूरह रूम-३८)

كَتَبَ مُعَاوِيَةُ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ اِلَى عَائِشَةَ. أُمِّ الْمُؤْمِنِيْنَ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهَا أَنِ اكْتُبِيْ اِلَيَّ كِتَابًا تُوْصِيْنِيْ فِيْهِ وَلَا تُكْثِرِيْ عَلَيَّ فَكَتَبَتْ عَائِشَةُ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهَا اِلَى مُعَاوِيَةَ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ سَلَامٌ عَلَيْكَ أَمَّا بَعْدُ فَإِنِّيْ سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُوْلُ مَنِ الْتَمَسَ رِضَا اللّٰهِ بِسَخَطِ النَّاسِ كَفَاهُ اللّٰهُ مُؤْنَةَ النَّاسِ وَمَنِ الْتَمَسَ رِضَا النَّاسِ بِسَخَطِ اللّٰهِ وَكَلَهُ اللّٰهُ اِلَى النَّاسِ وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ. رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ (٢) (صَحِيْح)

हज़रत मुआिविया रज़ि० ने उम्मुल मोमीनीन हज़रत आइशा रज़ि० को खत लिखा कि मुझे कोई नसीहत फरमाएं लेकिन तवील न हो। चुनांचे हज़रत आइशा रज़ि० ने लिखा, अस्सलामु अलैकुम, अल्लाह की हम्द व व सना के बाद, मैंने रसूले अकरम सल्ल० को यह फरमाते हुए सुना है: "जो आदमी लोगों की नाराज़गी मोल लेकर अल्लाह तआला की रज़ा

ढुंढता है अल्लाह तआला उसे लोगों से मुस्तगनी कर देता है। और जो आदमी लोगों की रज़ाजोई हासिल करेन के लिए अल्लाह तआला की नाराज़गी मोल लेता है, अल्लाह तआला उसे लोगों के सुपुर्द कर देता है।'' वस्सलामुल अलैक, इसे तिर्मिज़ी ने रिवायत किया है।

(सही सुनन तिर्मिज़ी, लिलबानी, जुज़ सालिस, हदीस १६६७)

मसला ४४ : तमाम मुहब्बतों पर गालिब अल्लाह तआला की मुहब्बत होनी चाहिए।

﴿وَمِنَ النَّاسِ مَن يَتَّخِذُ مِن دُونِ اللّهِ أَندَاداً يُحِبُّونَهُمْ كَحُبِّ اللّهِ وَالَّذِيْنَ آمَنُواْ أَشَدُّ حُبّاً لِّلّهِ﴾ (٢:١٦٥)

''लोगों में से कुछ लोग ऐसे हैं जो अल्लाह तआला के सिवा दूसरों को उसका हमसर और मदे मुकाबिल बनाते हैं, और उनसे ऐसी मुहब्बत करते हैं जैसी मुहब्बत अल्लाह तआला से करनी चाहिए हालांकि ईमान वाले तो अल्लाह तआला से टूटकर मुहब्बत करते हैं।'' (सूरह बकरा-१६५)

عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ ثَلاثٌ مَنْ كُنَّ فِيْهِ وَجَدَ بِهِنَّ حَلاوَةَ الْإِيْمَانِ مَنْ كَانَ اللّٰهُ وَرَسُوْلُهُ أَحَبُّ إِلَيْهِ مِمَّا سِوَاهُمَا وَأَنْ يُحِبَّ الْمَرْءَ لا يُحِبُّهُ إِلَّا لِلّٰهِ وَأَنْ يَكْرَهَ أَنْ يَعُوْدَ فِي الْكُفْرِ بَعْدَ أَنْ أَنْقَذَهُ اللّٰهُ مِنْهُ كَمَا يَكْرَهُ أَنْ يُقْذَفَ فِي النَّارِ. رَوَاهُ مُسْلِمٌ (١)

हज़रत अनस रज़ि० से रिवायत है कि नबी अकरम सल्ल० ने फरमाया : ''जिस आदमी में यह तीन आदतें होंगी वह उनकी वजह से ईमान की (हकीकी) हलावत और मिठास महसूस करेगा पहली यह कि अल्लाह तआला और रसूल सल्ल० से बाकी तमाम लोगों के मुकाबले में ज़्यादा मुहब्बत रखता हो। दूसरी यह कि किसी आदमी से अल्लह तआला के लिए मुहब्बत करता हो, तसीरी यह कि कुफ्र जिससे अल्लाह तआला ने

उसे बचाया है उसकी तरफ पलटना उसे इतना ही नापसन्द हो जिना आग में दाखिल होना।'' इसे मुस्लिम ने रिवायत किया है। (किताबुल ईमान)

मसला ४५ : हर किस्म के डर और खौफ पर अल्लाह तआला ही का खौफ और डर गालिब होना चाहिए।

﴿أَتَخْشَوْنَهُمْ فَاللَّهُ أَحَقُّ أَن تَخْشَوْهُ إِن كُنتُم مُّؤْمِنِينَ﴾ (٩ : ١٣)

''क्या तुम काफिरों से डरते हो हालांकि अल्लाह तआला इसका ज़्यादा हकदार है कि तुम उससे डरो अगर तुम वाकई मोमिन हो।'' (सूरह तौबा आयत-१३)

वज़ाहत : हदीस मसला ७२ के तहत मुलाहिज़ा फरमाएं।

मसला ४६ : दीन और दुनिया के तमाम मामलात में इताअत सिर्फ अल्लाह तआला ही की हरनी चाहिए।

﴿وَلَقَدْ بَعَثْنَا فِي كُلِّ أُمَّةٍ رَّسُولاً أَنِ اعْبُدُوا اللَّهَ وَاجْتَنِبُوا الطَّاغُوتَ فَمِنْهُم مَّنْ هَدَى اللَّهُ وَمِنْهُم مَّنْ حَقَّتْ عَلَيْهِ الضَّلَالَةُ﴾ (١٦ : ٣٦)

''हमने हर उम्मत में एक रसूल भेजा और उसके ज़रिए सबको खबरदार कर दिया कि ''अल्लाह तआला की इताअत करो और तागूत से बचो उसके बाद उनमें से किसी को अल्लाह तअला ने हिदायत बख्शी और किसी पर गुमराही मुसल्लत हो गई।'' (सूरह नहल-३६)

عَنْ عَدِيِّ بْنِ حَاتِمٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ أَتَيْتُ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَفِي عُنُقِي صَلِيبٌ مِنْ ذَهَبٍ فَقَالَ يَا عَدِيُّ اطْرَحْ عَنْكَ هَذَا الْوَثَنَ وَسَمِعْتُهُ يَقْرَأُ فِي سُورَةِ بَرَاءَةَ (اتَّخَذُوا أَحْبَارَهُمْ وَرُهْبَانَهُمْ أَرْبَابًا مِنْ دُونِ اللَّهِ) قَالَ أَمَا إِنَّهُمْ لَمْ يَكُونُوا يَعْبُدُونَهُمْ وَلَكِنَّهُمْ كَانُوا إِذَا أَحَلُّوا لَهُمْ شَيْئًا اسْتَحَلُّوهُ وَإِذَا حَرَّمُوا عَلَيْهِمْ شَيْئًا حَرَّمُوهُ. رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ (١) (صَحِيح)

हज़रत अदी बिन हातिम रज़ि० से रिवायत है कि मैंने नबी अकरम सल्ल० की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और मेरी गर्दन में सोने की सलीब थी। आप सल्ल० ने इरशाद फरमाया : "ऐ अदी! इस बुत (सलीब) को उतार फेंको।" मैंने (उस वक्त) आप सल्ल० को सूरह बराअत की यह आयत पढ़ते सुना : "उन्होंने (अहले किताब ने) अपने उलमा और दर्वेशों को अल्लाह के सिवा अपना रब बना लिया।" तब (हज़रत अदी के सवाल के जवाब में) आप सल्ल० ने यह बात इरशाद फरमाई कि वह (अहले किताब) अपने उलमा और दुर्वेशों की (ज़ाहिरी) इबादत न करते थे, लेकिन जब उलमा किसी चीज़ को हलाल कहते तो वे भी उसे हलाल जान लेते और जब उलमा किसी चीज़ को हराम ठहराते तो वे भी उसे हराम जान लेते।" (और यही मतलब है उलमा को अल्लाह तआला के सिवा रब बनाने का) इसे तिर्मिज़ी ने रिवायत किया है। (सही सुनन तिर्मिज़ी लिलबानी, जुज़ सालिस, हदीस-२४७१)

तौहीद इबादत के बारे में शिर्किया मामले

१. अल्लाह तआला के अलावा किसी ज़िन्दा या मुर्दा नबी, वली, गौस कुतुब या अबदाल के सामने बेहिस व हरकत, बा-अदम हाथ बांधकर खड़े होना शिर्क है। (मुलाहिज़ा हो मसला ३५)

२. अल्लाह तआला के अलावा किसी ज़िदा या मुर्दा नबी, वली, गौस, कुतुब या अबदाल वगैरह के सामने रूकूअ की तरह झुकना या सज्दा करना शिर्क है। (मुलाहिज़ा हो मसला ३६)

३. किसी मज़ार पर सवाब की नीयत से कम या ज़्यादा वक्त के लिए कयाम करना या मुजसविर बनकर बैठना या तवाफ करना शिर्क है। (मुलाहिज़ा हो मसला ३७)

४. अल्लाह तआला के अलावा किसी ज़िन्दा या मुर्दा नबी, वली, गौस, कुतुब या अबदाल वगैरह से दुआ मांगना या उन्हें दुआ में वसीला बनाना शिर्क है। (मुलाहिज़ा हो मसला ४०)

५. मुसीबत या तकलीफ में अल्लाह तआला के सिवा किसी ज़िंदा या मुर्दा नबी, वली, गौस कुतुब या अबदाल वगैरह को पुकारना उनसे फरियाद करना या उनसे पनाह तलब करना शिर्क है। (मुलाहिज़ा हो मसला ४१)

६. अल्लाह तआला के अलावा किसी ज़िंदा या मुर्दा नबी, वली, गौस, अबदाल कुतुब वगैरह के नाम का जानवर ज़ब्ह करना या उनके नाम की नज़र नियाज़ देना या उनकी मन्नत मानना या चढ़ावा चढ़ाना शिर्क है। (मुलाहिज़ा हो मसला ३८)

७. दुनिया या आखिरत में नुक्सान के डर से अल्लाह तआला के मुकाबले में किसी मुर्दा नबी, वली, गौस, कुतुब या अब्दाल वगैरह से डरना शिर्क है। (मुलाहिज़ा हो मसला ४५)

८. दुनिया या आखिरत में कामयाबी के हुसूल के लिए अल्लाह तआला के मुकाबले में किसी मुर्दा, नीब, वली, गौस, कुतुब या अबदाल वगैरह की रज़ा हासिल करना शिर्क है। (मुलाहिज़ा हो मसला ४३)

९. अल्लाह तआला के मुकाबले में किसी ज़िंदा या मुर्दा, नबी, वली, गौस, कुतुब या अबदाल वगैरह से बढ़कर मुहब्बत करना शिर्क है। (मुलाहिज़ा हो मसला ४४)

१०. अल्लाह तआला के बजाए किसी मुर्दा, नबी, वली, गौस, कुतुब या अबदाल वगैरह पर तवक्कुल करना शिर्क है। (मुलाहिज़ा हो मसला ४२)

११. अल्लह तआला के मुकर्रर करदा हलाल व हराम के मुकाबले में किसी वली, गौस, कुतुब, अबदाल या मुर्शिद किसी मज़हबी रहनुमा या किसी सियासी लीडर या किसी मार्लियामेंट या किसी असेम्वली वगैरह के मुतअय्यन करदा हलाल व हराम पर अमल करना शिर्क है। (मुलाहिज़ा हो मसला ४६)

اَلتَّوۡحِیۡدُ فِی الصَّفَاتِ

तौहीद फिस्सिफात

मसला ४७ : कायनात की हर चीज़ का हकीकी मालिक और बादशाह सिर्फ अल्लाह तआला ही है।

﴿هُوَ اللّٰهُ الَّذِیْ لَا إِلٰهَ إِلَّا هُوَ الْمَلِکُ الْقُدُّوسُ السَّلَامُ الْمُؤْمِنُ الْمُهَیْمِنُ الْعَزِیْزُ الْجَبَّارُ الْمُتَکَبِّرُ سُبْحَانَ اللّٰهِ عَمَّا یُشْرِکُوْنَ﴾ (۵۹:۲۳)

"वह अल्लाह तआला ही है जिसके अलावा कोई इलाह नहीं, वह बादशाह है, नियहायत मुकद्दस है। सरासर सलामती और अम्न देने वाला निगहबान, सब पर गालिब, अपना हुक्म बल पूर्वक लागू करन वाला और बड़ा ही होकर रहले वाला, पाक है अल्लाह तआला उस शिर्क से जो लोग कर रहे हैं।" (सूरह हश्र, आयत २३)

عَنْ عَبْدِ اللّٰهِ بْنُ عُمَرَ رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُمَا قَالَ قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَسَلَّمَ یَطْوِی اللّٰهُ عَزَّ وَجَلَّ السَّمَاوَاتِ یَوْمَ الْقِیَامَةِ ثُمَّ یَأْخُذُهُنَّ بِیَدِهِ الْیُمْنٰی ثُمَّ یَقُوْلُ أَنَا الْمَلِکُ أَیْنَ الْجَبَّارُوْنَ أَیْنَ الْمُتَکَبِّرُوْنَ ثُمَّ یَطْوِی الْأَرْضِیْنَ بِشِمَالِهِ. رَوَاهُ مُسْلِمٌ

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि० कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने फरमाया : "कयामत के दिन अल्लाह तआला आसमानों को लपेटेगा फिर उन्हें अपने दाएं हाथ में लेगा फिर फरमाएगा मैं हूं बादशाह। आज कहां हैं (दुनिया में) बड़े बनने वाले और घमंड करने वाले? फिर ज़मीनों

को अपने बाएं हाथ में लपेट लेगा।" इसे मुस्लिम ने रिवायत किया है। (मिश्कात)

मसला ४८ : क़ायनात में हुकूमत और शासन के तमाम इख़्तियारात सिर्फ अल्लाह तआला ही के पास हैं।

﴿إِنِ الْحُكْمُ إِلَّا لِلَّهِ أَمَرَ أَلَّا تَعْبُدُوا إِلَّا إِيَّاهُ ذَلِكَ الدِّينُ الْقَيِّمُ وَلَكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُونَ﴾ (۱۲ : ۴۰)

"हुक्म देना सिर्फ अल्लाह तआला ही का हक है, उसी ने हुक्म दिया है कि उसका सिवा किसी की इबादत न की जाए, यही सीधा रास्ता है लेकिन अकसर लोग नहीं जानते।" (सूरह यूसुफ-४०)

عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُمَا أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ يَا جِبْرِيلُ مَا يَمْنَعُكَ أَنْ تَزُوْرَنَا أَكْثَرَ مِمَّا تَزُوْرُنَا فَنَزَلَتْ (وَمَا نَتَنَزَّلُ إِلَّا بِأَمْرِ رَبِّكَ لَهُ مَا بَيْنَ أَيْدِيْنَا وَمَا خَلْفَنَا وَمَا بَيْنَ ذَلِكَ وَمَا كَانَ رَبُّكَ نَسِيًّا) قَالَ كَانَ هَذَا الْجَوَابَ لِمُحَمَّدٍ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ. رَوَاهُ الْبُخَارِيُّ

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ि० से रिवायत हे कि नबी अकरम सल्ल० ने हज़रत जिब्रील अलैहिस्सलाम से फरमाया : "तुम जितनी मर्तबा हमारे पास (अब) आते हो उससे ज़्यादा मर्तबा क्यों नहीं आते" इस पर यह आयत नाज़िल हुई "ऐ नबी हम तुम्हारे रब के हुक्म के बगैर नहीं आते जो कुछ हमारे आगे और पीछे है और जो कुछ उसके दर्मियान है उसका मालिक वही है और तुम्हारा रब भूलने वाला नहीं है।" यह आयत रसूले अकरम सल्ल० के मुतालबे का जवाब था (जो आप सल्ल० ने हज़रत जिब्रील अलैहिस्सलाम से किया था) इसे बुखारी ने रिवायत किया है। (किताबुत्तौहीद)

वज़ाहत : उल्लिखित आयत सूरह मरयम ही है आयत ६४।

मसला ४६ : नज़्मे कायनात और मामलाते कायनात का मुदब्बिर सिर्फ अल्लाह तआला ही है।

﴿اللّٰهُ الَّذِى رَفَعَ السَّمٰوٰتِ بِغَيْرِ عَمَدٍ تَرَوْنَهَا ثُمَّ اسْتَوٰى عَلَى الْعَرْشِ وَسَخَّرَ الشَّمْسَ وَالْقَمَرَ كُلٌّ يَجْرِى لِأَجَلٍ مُّسَمًّى يُدَبِّرُ الْأَمْرَ يُفَصِّلُ الْآيَاتِ لَعَلَّكُم بِلِقَاءِ رَبِّكُمْ تُوقِنُونَ﴾ (١٣:٢)

"वह अल्लाह तआला ही है जिसने आसमानों की ऐसे सतूनों के बगैर कायम किया जो तुम को नज़र आते हों। फिर वह अर्श पर जलवा फरमा हुआ। सूरज और चांद को (एक कानून का) पाबन्द बनाया, (कायनात की) हर चीज़ (उसके हुक्म से) एक वक्त मुकर्रर तक के लिए चल रही है अल्लाह तआला ही (कायनात के) सारे उमूर की तदबीर फरमा रहा है। अल्लाह तआला (अपनी तौहीद की) निशानियां खोल खोलकर बयान कर रहा है तकि तुम अपने रब से मुलाकात का यकीन कर लो।" (सूरह रअद-२)

عَنْ أَبِى هُرَيْرَةَ رَضِىَ اللّٰهُ عَنْهُ سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُوْلُ قَالَ اللّٰهُ عَزَّ وَجَلَّ يَسُبُّ ابْنُ آدَمَ الدَّهْرَ وَأَنَا الدَّهْرُ بِيَدِى اللَّيْلُ وَالنَّهَارُ. رَوَاهُ مُسْلِمٌ (١)

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० कहते हैं कि रसूले अकरम सल्ल० का इरशाद मुबारक है कि "अल्लाह तआला अज़्ज़ व जल फरमाता है इब्ने आदम ज़माने को गाली देता है हालांकि ज़माना तो मैं हूं दिन व रात मेरे कब्ज़े कुदरत में हैं।" इसे मुस्लिम ने रिवायत किया है। (किताबुल अल्फाज़)

मसला ५० : ज़मीन और आसमान के तमाम खज़ानों का मालिक सिर्फ अल्लाह तआला ही है।

﴿قُلْ لَّآ أَقُولُ لَكُمْ عِندِیْ خَزَآئِنُ اللّٰهِ وَلَآ أَعْلَمُ الْغَيْبَ وَلَآ أَقُولُ لَكُمْ إِنِّیْ مَلَكٌ إِنْ أَتَّبِعُ إِلَّا مَا يُوحَىٰٓ إِلَىَّ قُلْ هَلْ يَسْتَوِی الْأَعْمَىٰ وَالْبَصِيرُ أَفَلَا تَتَفَكَّرُونَ﴾ (٦:٥٠)

"ऐ नबी! उनसे कहो मैं तुमसे यह नहीं कहता कि मरे पास अल्लाह तआल के खज़ाने हैं न मैं गैब का इल्म रखता हूं और न यह कहता हूं कि मैं फरिश्ता हूं। मैं तो सिर्फ उस वह्य की पैरवी करा हूं जो मुझ पर नाज़िल की जाती है फिर उनसे पूछो: "क्या अंधा और आंखों वाला दोनों बराबर हो सकते हैं। क्या तुम गौर नहीं करते। (सूरह अनआम-५०)

عَنْ أَبِیْ هُرَيْرَةَ رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُوْلَ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ يَدُ اللّٰهِ مَلْأَىٰ لَا يَغِيْضُهَا نَفَقَةٌ سَحَّاءُ اللَّيْلِ وَالنَّهَارِ وَقَالَ أَرَأَيْتُمْ مَا أَنْفَقَ مُنْذُ خَلَقَ السَّمٰوَاتِ وَالْأَرْضَ فَإِنَّهُ لَمْ يَغِضْ مَا فِیْ يَدِهِ. رَوَاهُ الْبُخَارِیُّ (٢)

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने फरमाया: "अल्लाह तआला का हाथ भरा हुआ है खर्च करने से उसमें कमी नहीं आती, रात दिन उसकी बखशिश जारी है।" आप सल्ल० ने फरमाया ज़रा गौर करो ज़मीन व आसमान को बनाने पर अल्लाह तआला ने कितना खर्च किया लेकिन उससे उसके खज़ाने में कुछ भी कमी नहीं हुई।" इसे बुखारी ने रिवायत किया है। (किताबुत्तौहीद)

मसला ५१ : कयामत के दिन सिफारिश करने की इजाज़त देने या न देने ओर सिफारिश कुबूल करने या न करने का सारा इख्तियार सिर्फ अल्लाह तआला ही को होगा।

﴿أَمِ اتَّخَذُوا مِن دُونِ اللّٰهِ شُفَعَاءَ قُلْ أَوَلَوْ كَانُوا لَا يَمْلِكُونَ شَيْئًا وَلَا يَعْقِلُونَ ۝ قُل لِّلّٰهِ الشَّفَاعَةُ جَمِيعًا لَّهُ مُلْكُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ ثُمَّ إِلَيْهِ تُرْجَعُونَ﴾

(٣٩:٤٣-٤٤)

"क्या अल्लाह को छोड़कर उन लोगों ने दूसरों को सिफारिशी बना रखा है? उनसे कहो क्या वे सिफारिश करेंगे चाहे उनके इख्तियार में कुछ भी नहो और चाहे वे (मुर्दे तुम्हारी बातें) समझते भी न हों? कहो सिफारिश सारी की सारी अल्लाह तआला के इख्तियार में है (जिसे चाहे सिफारिश की इजाज़त दे जिसे चाहे न दे और जिसकी सिफारिश चाहे कुबूल करे जिसकी चाहे न करे) आसमानों और ज़मीन की बादशाही का वही मालिक है फिर उसी की तरफ तुम सब (मरने के बाद) पलटाए जाने वाले हो।" (सूर जुमर-४३-४४)

عَنْ أَنَسٍ رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَجْمَعُ اللّٰهُ النَّاسَ يَوْمَ الْقِيَامَةِ فَيَقُوْلُوْنَ لَوِ اسْتَشْفَعْنَا عَلٰى رَبِّنَا حَتّٰى يُرِيْحَنَا مِنْ مَكَانِنَا فَيَأْتُوْنَ آدَمَ فَيَقُوْلُوْنَ أَنْتَ الَّذِیْ خَلَقَكَ اللّٰهُ بِيَدِهٖ وَ نَفَخَ فِيْكَ مِنْ رُوْحِهٖ وَأَمَرَ الْمَلَائِكَةَ فَسَجَدُوْا لَكَ فَاشْفَعْ لَنَا عِنْدَ رَبِّنَا فَيَقُوْلُ لَسْتُ هُنَاكُمْ وَ يَذْكُرُ خَطِيْئَتَهٗ وَيَقُوْلُ ائْتُوْا نُوْحًا أَوَّلَ رَسُوْلٍ بَعَثَهُ اللّٰهُ فَيَأْتُوْنَهٗ فَيَقُوْلُ لَسْتُ هُنَاكُمْ وَ يَذْكُرُ خَطِيْئَتَهٗ ائْتُوْا اِبْرَاهِيْمَ الَّذِیْ اتَّخَذَهُ اللّٰهُ خَلِيْلًا فَيَأْتُوْنَهٗ فَيَقُوْلُ لَسْتُ هُنَاكُمْ وَيَذْكُرُ خَطِيْئَتَهٗ ائْتُوْا مُوْسَى الَّذِیْ كَلَّمَهُ اللّٰهُ فَيَأْتُوْنَهٗ فَيَقُوْلُ لَسْتُ هُنَاكُمْ فَيَذْكُرُ خَطِيْئَتَهٗ ائْتُوْا عِيْسٰى فَيَأْتُوْنَهٗ فَيَقُوْلُ لَسْتُ هُنَاكُمْ ائْتُوْا مُحَمَّدًا صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَدْ غُفِرَ لَهٗ مَا تَقَدَّمَ مِنْ ذَنْبِهٖ وَمَا تَأَخَّرَ فَيَأْتُوْنِیْ فَأَسْتَأْذِنُ عَلٰى رَبِّیْ فَاِذَا رَأَيْتُهٗ وَقَعْتُ سَاجِدًا فَيَدَعُنِیْ مَا شَآءَ اللّٰهُ ثُمَّ يُقَالُ لِیْ ارْفَعْ رَأْسَكَ سَلْ تُعْطَهْ وَقُلْ يُسْمَعْ وَاشْفَعْ تُشَفَّعْ فَأَرْفَعُ رَأْسِیْ فَأَحْمَدُ رَبِّیْ بِتَحْمِيْدٍ يُعَلِّمُنِیْ ثُمَّ أَشْفَعُ فَيَحُدُّ لِیْ حَدًّا ثُمَّ أُخْرِجُهُمْ مِنَ النَّارِ وَأُدْخِلُهُمُ الْجَنَّةَ ثُمَّ أَعُوْدُ فَأَقَعُ سَاجِدًا مِثْلَهٗ فِی الثَّالِثَةِ اَوِ الرَّابِعَةِ حَتّٰى مَا بَقِیَ

فِی النَّارِ اِلَّا مَنْ حَبَسَهُ الْقُرْآنُ. رَوَاهُ الْبُخَارِیُّ (١)

हज़रत अनस रज़ि० से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने फरमाया : 'अल्लाह तआला कयामत के दिन लोगोंको इकट्ठा करेगा कहेंगे कि अपने परवरदिगार के हुज़ूर किसी की सिफारिश करानी चाहिए ताकि वह इस कष्ट वाली जगह से हमें नजात दिलादे, चुनांचे लोग हज़रत आदम अलैहि० के पास आऐंगे और कहेंगे आप वह हैं जिसे अल्लाह तआला ने अपने हाथों से बनाया और फिर उसमें अपनी रूह फूंकी, फरिश्तों को हुक्म दिया कि आपको सज्दा करें, लिहाज़ा हमारे रब के हुज़ूर हमारे लिए सिफारिश करें, हज़रत आदम अलैहि० कहेंगे मैं इस लायक कहां और अपनी खताएं याद करेंगे, लोगों से कहेंगे आप लोग हज़रत नूह अलैहि० के पास जाएं वे पहले रसूल हैं जिन्हें अल्लाह तआला ने भेजा। लोग उनके पास (सिफारिश का मुतालबा लेकर) जाएंगे, वे कहेंगे मैं इस लायक नहीं और अपनी खताएं याद करेंगे और लोगों से कहेंगे कि तुम इब्राहीम अलैहि० के पास जाओ उन्हें अल्लाह तआला ने अपना दोस्त बनाया है। लोग इब्राहीम अलैहि० के पास आएंगे और वह कहेंगे मैं इस लायक नहीं और अपनी खताएं याद करेंगे, इब्राहीम अलैहि० कहेंगे तुम मूसा अलैहि० के पास चले जाओ उनसे अल्लाह तआला ने कलाम किया है। चुनांचे लोग हज़रत मूसा अलैहि० के पास जाएंगे, वे कहेंगे मैं इस लायक नहीं और अपनी खताएं याद करेंगे, मूसा अलैहि० कहेंगे तुम ईसा अलैहि० के पास जाओ चुनांचे लोग ईसा अलैहि० के पास आएंगे, वह भी कहेंगे मैं इस लायक कहां अल्बत्ता तुम लोग मुहम्मद सल्ल० के पास जाओ अल्लाह तआला ने उनके अगले पिछले सारे गुनाह माफ कर रखे हैं। चुनांचे लोग मेरे पास आएंगे और मैं अपने रब से हाज़री की इजाज़त तलब करूंगा। जब मैं अल्लह तआला को देखूंगा तो सज्दे में गिर पडूंगा, जब तक अल्लाह तआला चाहेगा मुझे सज्दे में पड़ा रहने देगा फिर फरमाएगा: "ऐ मुहम्मद सल्ल० सर उठाओ और मांगो दिये जाओग। बात

कहो तो सुनी जाएगी, सिफारिश करो तो मानी जाएगी, चुनांचे (इजाज़त मिलने के बाद) अपना सर सज्दे से उठाऊंगा और अपने रब की वह हम्द व सना करूंगा जो उस वक्त अल्लाह तआला मुझे सिखाएगा। उसके बाद (लोगों के लिए) सिफारिश करूंगा, चुनांचे मेरे लिए हद मुकर्रर कर दी जाएगी उस हद के अन्दर जो लोग होंगे (सिर्फ) उनको दोज़ख से निकाल कर बहिश्त में ले जाऊंगा फिर मैं दोबारा अपने रब के हुजूर हाज़िर हुंगा और इसी तरह सज्दे में गिर पड़ूंगा चुनांचे तीसरी या चौथी बार मैं अर्ज़ करूंगा "परवरदिगार! अब तो जहन्नम में वही लोग बाकी रह गए हैं जो कुरआन के हुक्म के मुताबिक हमेशा जहन्नम में रहने वाले हैं।" (यानी काफिर और मुश्रिक) इसे बुखारी ने रिवायत किया है। (किताबुर्रिकाक)

मसला ५२ : कयामत के दिन जज़ा या सज़ा देने का इख्तियार सिर्फ अल्लाह तआला ही को होगा।

﴿ضَرَبَ اللّٰهُ مَثَلاً لِّلَّذِيْنَ كَفَرُوا امْرَأَةَ نُوحٍ وَامْرَأَةَ لُوطٍ كَانَتَا تَحْتَ عَبْدَيْنِ مِنْ عِبَادِنَا صَالِحَيْنِ فَخَانَتَاهُمَا فَلَمْ يُغْنِيَا عَنْهُمَا مِنَ اللّٰهِ شَيْئاً وَقِيْلَ ادْخُلَا النَّارَ مَعَ الدَّاخِلِيْنَ﴾ (٦٦:١٠)

"अल्लाह तआला काफिरों के मामले में नूह अलैहि० और लूत अलैहि० की बिवीयों को बतौर मिसाल पेश करता है वह हमारे दो सालेह बन्दों की ज़ौजियत में थीं। मगर उन्हों ने अपने उन शौहरों से खियानत की (यानी काफिरों से साज़ बाज की) और वे दोनों (यानी नूह अलैहि० और लूत अलैहि०) अल्लाह तआला के मुकाबले में उन (बीवियों) के कुछ भी काम न आ सके। दोनों से कह दिया गया कि जाओ आग में जाने वालों के साथ तुम भी (आग में) चली जाओ।" (सूरह तहरीम-१०)

عَنْ أَبِیْ هُرَيْرَةَ رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ قَامَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ حِيْنَ أَنْزَلَ اللّٰهُ (وَأَنْذِرْ عَشِيْرَتَکَ الْأَقْرَبِيْنَ) قَالَ يَا مَعْشَرَ قُرَيْشٍ أَوْ

كَلِمَةً نَحْوَهَا اشْتَرُوا أَنْفُسَكُمْ لَا أُغْنِي عَنْكُمْ مِنَ اللَّهِ شَيْئًا يَا بَنِي عَبْدِ مَنَافٍ لَا أُغْنِي عَنْكُمْ مِنَ اللَّهِ شَيْئًا يَا عَبَّاسَ بْنَ عَبْدِ الْمُطَّلِبِ لَا أُغْنِي عَنْكَ مِنَ اللَّهِ شَيْئًا وَ يَا صَفِيَّةُ عَمَّةَ رَسُولِ اللَّهِ لَا أُغْنِي عَنْكِ مِنَ اللَّهِ شَيْئًا وَيَا فَاطِمَةُ بِنْتَ مُحَمَّدٍ سَلِينِي مَا شِئْتِ مِنْ مَالِي لَا أُغْنِي عَنْكِ مِنَ اللَّهِ شَيْئًا.

رَوَاهُ الْبُخَارِيُّ (١)

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० से रिवायत है कि रसूले अकरम सल्ल० पर जब (कुरआन मजीद की) यह आयत नाज़िल हुई "ऐ मुहम्मद (सल्ल०)! अपने रिश्ते दारों को (कयामत से) डराओ।" तो आप सल्ल० ने खड़े होकर फरमाया : "ऐ कुरैश के लोगो! या ऐसा ही कोई जुमला कहा, अपनी जानें बचाओ (कयामत के दिन) अल्लह तआलाके सामने मैं तुम्हारे किसी काम नहीं आ सकूंगा। ऐ अब्दे मनाफ के बेटो! (कयामत के दिन) अल्लाह तआला के सामने मैं तुम्हारे किसी काम न आ सकूंगा। ऐ अब्बास बिन अब्दुल मत्तलिब मैं अल्लाह तआला के सामने तुम्हारे किसी काम न आ सकूंगा। ऐ सफिया, (रसूल सल्ल० की फूफी) मैं अल्लाह तआला के सामने तुम्हारे किसी काम नहीं आ सकूंगा। और ऐ फातिमा बिन्ते मुहम्मद ! (दुनिया में) मेरे माल से जो चाहो मांग लो (लेकिन कयामत के दिन) अल्लाह तआला के सामने तुम्हारे किसी काम नहीं आ सकूंगा।" इसे बुखारी ने रिवायत किया है। (किताबुत तफसीर)

मसला ५३ : गुनाह माफ करने या न करने का इख्तियार सिर्फ अल्लाह तआला ही को है।

﴿اسْتَغْفِرْ لَهُمْ أَوْ لَا تَسْتَغْفِرْ لَهُمْ إِنْ تَسْتَغْفِرْ لَهُمْ سَبْعِينَ مَرَّةً فَلَنْ يَغْفِرَ اللَّهُ لَهُمْ ذَلِكَ بِأَنَّهُمْ كَفَرُوا بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ وَاللَّهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الْفَاسِقِينَ﴾

(٨٠:٩)

"ऐ नबी! तु चाहे इन (मुनाफिकों) के लिए माफी की दरख्वास्त करो या न करो। (एक ही बात है) अगर तुम सत्तर मर्तबा भी इन्हें माफ करने की दरख्वास्त करोगे तो अल्लाह तआला इन्हें हरगिज़ माफ नहीं करेगा, इसलिए कि उन्होंने अल्लाह तआला और उसके रसूल के साथ कुफ्र किया है और अल्लाह तआला फासिक लोगों को हिदायत नहीं देता।" (सूरह तौबा-८०)

عَنْ أُمِّ الْعَلاءِ الْاَنْصَارِيَّةِ رَضِىَ اللّٰهُ عَنْهَا قَالَتْ قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلىَّ اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَاللّٰهِ مَا اَدْرِىْ وَأَنَا رَسُوْلُ اللّٰهِ مَا يُفْعَلُ بِىْ. رَوَاهُ الْبُخَارِىُّ (١)

हज़रत उम्मुल अला अंसारिया रज़ि० कहती हैं कि रसूले अकरम सल्ल० ने फरमाया "अल्लाह की कसम! मैं नहीं जानता हालांकि मैं अल्लाह का रसूल हूं (मरने के बाद) मेरे साथ क्या मामला होगा।" इसे बुखारी ने रिवायत किया है। (किताबुल जनाइज़)

मसला ५४ : मशीय्यत और इरादे की तकमील का इख्तियार सिर्फ अल्लाह तआला ही के पास है।

मसला ५५ : अल्लाह तआला अपनी मशीय्यत और अपने इरादे पूरा करने के लिए किसी दूसरे की मशीय्यत या इजाज़त का मोहताज नहीं।

﴿إِنَّمَا أَمْرُهُ إِذَا أَرَادَ شَيْئًا أَنْ يَقُوْلَ لَهُ كُنْ فَيَكُوْنُ﴾ (٣٦ : ٨٢)

"अल्लाह तआला जब किसी काम का इरादा करता है तो उसका काम बस यह है कि उसे हुक्म दे हो जा और वह हो जाता है।" (सूरह या०सीन-८२)

عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِىَ اللّٰهُ عَنْهُمَا جَآءَ رَجُلٌ اِلَى النَّبِىِّ صَلىَّ اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَرَاجَعَهُ فِىْ بَعْضِ الْكَلَامِ فَقَالَ مَا شَاءَ اللّٰهُ وَ شِئْتَ ! فَقَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلىَّ اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ اجَعَلْتَنِىْ مَعَ اللّٰهِ عَدْلاً (وَ فِىْ لَفْظٍ نِداً) لاَ بَلْ مَا شَاءَ

اللّٰهُ وَحْدَهُ. رَوَاهُ الْبُخَارِيُّ فِي الْاَدَبِ الْمُفْرَدِ (۲)

हज़रत अब्दुल्लह बिन अब्बास रज़ि० से रिवायत है कि एक आदमी रसूल सल्ल० की खिदमत में हाज़िर हुआ और गुफतगू करते हूए कहा : "जो अल्लाह तआला चाहे और आप चाहें।" रसूलुल्लाह सल्ल० ने फरामाया : "क्या तूने मुझे अल्लाह तआला का शरीक बना लिया है।" (एक रिवायत में हमसर के शब्द हैं) आप सल्ल० ने इरशाद फरमाया : " (ऐसा न कहो) बल्कि यूं कहो जो अल्लाह तआला चाहे।" इसे बुखारी ने रिवायत किया है। (सिलसिलतुल अहादीस सही लिलबानी १-१३६)

मसला ५६ : शरीअत साज़ी, हलाल व हराम और जाएज़ व ना जाइज़ के निर्धारण का इख्तियार सिर्फ अल्लाह तआला ही को है।

﴿يَا أَيُّهَا النَّبِيُّ لِمَ تُحَرِّمُ مَا أَحَلَّ اللّٰهُ لَكَ تَبْتَغِي مَرْضَاتَ أَزْوَاجِكَ وَاللّٰهُ غَفُورٌ رَّحِيمٌ﴾ (۱:۶۶)

"ऐ नबी! तुम क्यों उस चीज़ को हराम करते हो जो अल्लाह तआला ने तुम्हारे लिए हलाल की है, (क्या) तुम अपनी बीवियों की खुशी चाहते हो? अल्लाह तआला बखशने वाला रहम फरमाने वाला है।" (सूरह तहरीम-१)

वज़ाहत : हदीस मसला ४६ के तहत मुलाहिज़ा फरमाएं।

मसला ५७ : इल्मे गैब सिर्फ अल्लाह तआला ही को है।

﴿قُل لَّا أَمْلِكُ لِنَفْسِي نَفْعًا وَلَا ضَرًّا إِلَّا مَا شَاءَ اللّٰهُ وَلَوْ كُنتُ أَعْلَمُ الْغَيْبَ لَاسْتَكْثَرْتُ مِنَ الْخَيْرِ وَمَا مَسَّنِيَ السُّوءُ إِنْ أَنَا إِلَّا نَذِيرٌ وَبَشِيرٌ لِّقَوْمٍ يُؤْمِنُونَ﴾ (۱۸۸:۷)

"ऐ नबी सल्ल०! उनसे कहो मैं अपनी ज़ात के लिए किसी नफा या नुकसान का इख्तियार नहीं रखता, अल्लाह तआला ही जो कुछ चाहता

है होता है और अगर मुझे गैब का इल्म होता तो मैं बहुत से फाएदे अपने लिए हासिल कर लेता और मुझे कभी नुकसान न पहुंचता। मैं तो महज़ एक खबरदार करने वाला और ख़ुशखबरी सुनाने वाला हूं। उन लोगों के लिए जो मेरी बात सुनें।" (सूरह आराफ-१८८)

عَنْ أَبِى هُرَيْرَةَ رَضِىَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ كَانَ رَسُوْلُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَوْمًا بَارِزًا لِلنَّاسِ فَأَتَاهُ رَجُلٌ فَقَالَ يَا رَسُوْلَ اللَّهِ مَتَى السَّاعَةُ؟ قَالَ مَا الْمَسْئُوْلُ عَنْهَا بِأَعْلَمَ مِنَ السَّائِلِ وَلَكِنْ سَأُحَدِّثُكَ عَنْ أَشْرَاطِهَا إِذَا وَلَدَتِ الْأَمَةُ رَبَّهَا فَذَاكَ مِنْ أَشْرَاطِهَا وَإِذَا كَانَتِ الْعُرَاةُ الْحُفَاةُ رُءُوْسَ النَّاسِ فَذَاكَ مِنْ أَشْرَاطِهَا وَإِذَا تَطَاوَلَ رِعَاءُ الْبُهْمِ فِى الْبُنْيَانِ فَذَاكَ مِنْ أَشْرَاطِهَا فِى خَمْسٍ لَا يَعْلَمُهُنَّ إِلَّا اللَّهُ ثُمَّ تَلَا صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ (إِنَّ اللَّهَ عِنْدَهُ عِلْمُ السَّاعَةِ وَيُنَزِّلُ الْغَيْثَ وَيَعْلَمُ مَا فِى الْأَرْحَامِ وَمَا تَدْرِى نَفْسٌ مَا ذَا تَكْسِبُ غَدًا وَمَا تَدْرِى نَفْسٌ بِأَىِّ أَرْضٍ تَمُوْتُ إِنَّ اللَّهَ عَلِيْمٌ خَبِيْرٌ)

رَوَاهُ مُسْلِمٌ

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० फरमाते हैं कि एक रोज़ रसूले अकरम सल्ल० सहाबा किराम रज़ि० के दरमियान तशरीफ फरमा थे कि एक आदमी आया और अर्ज़ किया, "या रसूलुल्लाह सल्ल०! कयामत कब आएगी?" आप सल्ल० ने फरमाया : "जिससे पूछ रहे हो वह पूछने वाले से ज्यादा नहीं जानता, हां अल्बत्ता मैं तुझे उसकी निशानियां बता देता हूं (पहली निशानी यह है कि) जब औरत अपना मालिक जने तो यह कयामत की निशानियों में से है। (दूसरी निशानी यह है कि) जब नंगे बदन और नंगे पांव फिरने वाले लोग सरदर बनें तो यह कयामत की निशानियों में से है। (तीसरी निशानी यह है कि) जब रेवड़ चराने वाले बड़े बड़े महल तामीर करें तो यह कयामत की निशानियों में से हैं। (फिर

फरमाया) कयामत तो उन पांच चीज़ों में से है जिनका इल्म अल्लाह तआला के सिवा किसी को नहीं। फिर आप सल्ल० ने यह आयत तिलावत फरमाई : इन्नल्ला-ह इन्दहु इल्मुस्सअति (सूरह लुकमान-३४) तर्जुमा : १. कयामत का वक्त सिर्फ अल्लाह तआला ही जानता है। २. वही बारिश बरसाता है। ३. वही जानता है मां के गर्भ में क्या है? ४. कोई आदमी यह नहीं जाना कल क्या करेगा और ५. कोई आदमी यह नहीं जानता कि उसे कौनसी जगह पर मौत आएगी। बेशक अल्लाह तआला (हर बात) जानने वाला और बाखबर है।" इसे मुस्लिम ने रिवायत किया है। (किताबुल ईमान बाब ईमान)

वज़ाहत : "औरत अपना मालिक जने" का मतलब यह है कि औलाद अपने मां बाप की इस कद्र ना फरमान होगी कि उनके साथ गुलामों और लौंडियों जैसा सुलूक करेगी।

मसला ५८ : हर वक्त और हर जगह बन्दों की दुआ सुनने वाला सिर्फ अल्लाह तआला ही है।

मसला ५९ : हर जगह हाज़िर नाज़िर (अपनी कुदरत और इल्म के साथ) सिर्फ अल्लाह तआला ही है।

﴿وَإِذَا سَأَلَكَ عِبَادِي عَنِّي فَإِنِّي قَرِيبٌ أُجِيبُ دَعْوَةَ الدَّاعِ إِذَا دَعَانِ فَلْيَسْتَجِيبُوا لِي وَلْيُؤْمِنُوا بِي لَعَلَّهُمْ يَرْشُدُونَ﴾ (١٨٦:٢)

"और ऐ नबी मेरे बन्दे जब तुमसे मेरे बारे में पूछें तो उन्हें बता दो कि मैं उनसे करीब ही हूं। पुकारने वाल जब मुझे पुकारता है, मैं उसकी पुकार सुनता हूं और जवाब देता हूं, लिहाज़ा उन्हें चाहिए कि मेरी दावत पर लब्बैक कहें और मुझ पर ईमान लाएं ताकि लोग सीधी राह पालें।" (सूरह बकरा-१८६)

﴿وَهُوَ مَعَكُمْ أَيْنَ مَا كُنتُمْ وَاللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرٌ﴾ (٤:٥٧)

"और अल्लाह तआल तुम्हारे साथ है जहां भी तुम हो और जो काम भी तुम करते हो उसे वह देख रहा है।" (सूरह हदीद-४)

عَنْ أَبِي مُوسَى رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ كُنَّا مَعَ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِي سَفَرٍ فَجَعَلَ النَّاسُ يَجْهَرُونَ بِالتَّكْبِيرِ فَقَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَيُّهَا النَّاسُ ارْبَعُوا عَلَى أَنْفُسِكُمْ إِنَّكُمْ لَيْسَ تَدْعُونَ أَصَمَّ وَلَا غَائِبًا إِنَّكُمْ تَدْعُونَ سَمِيعًا قَرِيبًا وَهُوَ مَعَكُمْ. رَوَاهُ مُسْلِمٌ (١)

हज़रत अबू मूसा रज़ि० से रिवायत है कि हम नबी अकरम सल्ल० के साथ एक सफर में थे लोग बुलन्द आवाज़ से तकबीर कहने लगे तो आप सल्ल० ने फरमाया : "अपनी जानों पर नरमी करो, (यानी अपनी आवाज़ नीची रखो) क्यों कि तुम किसी बहरे या गायब को नहीं पुकार रहे हो बल्कि उसे पुकार रहे हो जो (हर जगह) सुनने वाला है तुम्हारे नज़दीक है और (हर वक्त अपने इल्म और कुदरत के सबब) तुम्हारे साथ है।" इसे मुस्लिम ने रिवायत किया है। (किताबुज़्ज़िक्र)

मसला ६० : दिलों में छूपे भेद सिर्फ अल्लाह ताअला ही जानता है।

﴿وَأَسِرُّوا قَوْلَكُمْ أَوِ اجْهَرُوا بِهِ إِنَّهُ عَلِيمٌ بِذَاتِ الصُّدُورِ ۞ أَلَا يَعْلَمُ مَنْ خَلَقَ وَهُوَ اللَّطِيفُ الْخَبِيرُ﴾ (٦٧: ١٣، ١٤)

"तुम लोग चाहे आहिस्ता बात करो या ऊंची आवाज़ से (अल्लाह तआला के लिए बराबर है क्योंकि) वह दिलों के भेद जानता है। क्या वही न जानेगा जिसने लोंगों को पैदा किया है? हालांकि वह बारीकबीं और बा खबर है।" (सूरह मुल्क-१३-१४)

عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَنَتَ شَهْرًا بَعْدَ الرُّكُوعِ يَدْعُو عَلَى أَحْيَاءٍ مِنْ بَنِي سُلَيْمٍ قَالَ بَعَثَ أَرْبَعِينَ أَوْ سَبْعِينَ يَشُكُّ فِيهِ مِنَ الْقُرَّاءِ إِلَى أُنَاسٍ مِنَ الْمُشْرِكِينَ فَعَرَضَ لَهُمْ هَؤُلَاءِ فَقَتَلُوهُمْ

وَكَانَ بَيْنَهُمْ وَبَيْنَ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَهْدٌ فَمَا رَأَيْتُهُ وَجَدَ عَلَى أَحَدٍ مَا وَجَدَ عَلَيْهِمْ. رَوَاهُ الْبُخَارِيُّ (٢)

हज़रत अनस रज़ि० से रिवायत है कि नबी अकरम सल्ल० महीना भर रूकूअ के बाद कुनूत पढते रहे जिसमें बनू सलीम के कबाइल के लिए बद्दुआ फरमाते रहे। हज़रत अनस रज़ि० कहते हैं कि आप सल्ल० ने ४० या ७० कुर्रा (यानी उलमा) रावी को (तादाद में) शक है कुछ मुशिरकों के पास (दीन सीखाने के लिए) भेजे। बनू सलीम के लोग मुकाबिले में उतर आए और इन कुर्रा को कत्ल कर डाला, हालांकि बलू सलीम और नबी अकरम सल्ल० के दरमियान संधि थी। (लेकिन बनू सलीम ने गद्दारी की)। हज़रत अनस रज़ि० कहते हैं मैंने नबी अकरम सल्ल० को इतना रंजिदा कभी नहीं देखा जितना इस मौके पर देखा।" इसे बुखारी ने रिवायत किया है। (किताबुल जिहाद)

मसला ६१ : दीन व दुनिया की तमाम भलाइयां सिर्फ अल्लाह ताला ही के हाथ में है जिसे चाहता है अता करता जिससे चाहता है छीन लेता है।

﴿قُلِ اللَّهُمَّ مَالِكَ الْمُلْكِ تُؤْتِي الْمُلْكَ مَن تَشَاءُ وَتَنزِعُ الْمُلْكَ مِمَّن تَشَاءُ وَتُعِزُّ مَن تَشَاءُ وَتُذِلُّ مَن تَشَاءُ بِيَدِكَ الْخَيْرُ إِنَّكَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ﴾ (٣:٢٦)

"कहो ऐ अल्लाह! कायनात के बादशाह तू जिसे चाहे हुकूमत दे जिसे चाहे छीन ले, जिसे चाले इज़्ज़त बखशे और जिसको चाहे ज़लील करे। भलाई तेरे इख्तिरया में है, बेशक तू हर चीज़ पर कादिर है।"

(सूरह आले इमरान-२६)

عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ كَانَ أَكْثَرُ دُعَاءِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ اَللَّهُمَّ رَبَّنَا آتِنَا فِي الدُّنْيَا حَسَنَةً وَفِي الْآخِرَةِ حَسَنَةً وَ قِنَا عَذَابَ النَّارِ.

مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ (١)

हज़रत अनस रज़ि० फरमाते हैं कि नबी अकरम सल्ल० यह दुआ अधिकता से मांगा करते: "या अल्लाह! हमें दुनिया में भी भलाई अता फरमा और आखिरत में भी और हमें आग के अज़ाब से बचाले।" इसे बुखरी और मुस्लिम ने रिवायत किया है। (मिश्कात, बाब जामेअ दुआ, फस्ल अव्वल)

मसला ६२ : दिलों को फेरने वाला सिर्फ अल्लाह तआला ही है।

﴿يَا أَيُّهَا الَّذِيْنَ آمَنُوْا اسْتَجِيْبُوْا لِلّٰهِ وَلِلرَّسُوْلِ إِذَا دَعَاكُمْ لِمَا يُحْيِيْكُمْ وَاعْلَمُوْا أَنَّ اللّٰهَ يَحُوْلُ بَيْنَ الْمَرْءِ وَقَلْبِهِ وَأَنَّهُ إِلَيْهِ تُحْشَرُوْنَ﴾ (٨:٢٤)

"ऐ लोगो जो ईमान लाए हो, अल्लाह तआला और उसके रसूल की पुकार पर लब्बैक कहो जबकि रसूल तुम्हें उस चीज़ की तरफ बुलाता है जो तुम्हें ज़िन्दगी बखशने वाली है और ध्यान रखो कि अल्लाह तआला बन्दे और उसके दिल के दरमियान हाइल है और उसी की तरफ तुम इकट्ठा किये जाओगे।" (सूरह अनफाल-४२)

عَنْ شَهْرِ بْنِ حَوْشَبٍ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ قُلْتُ لِأُمِّ سَلَمَةَ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهَا يَا أُمَّ الْمُؤْمِنِيْنَ مَا كَانَ أَكْثَرُ دُعَاءِ رَسُوْلِ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِذَا كَانَ عِنْدَكِ؟ قَالَتْ كَانَ أَكْثَرُ دُعَائِهِ يَا مُقَلِّبَ الْقُلُوْبِ ثَبِّتْ قَلْبِيْ عَلَى دِيْنِكَ. قَالَتْ قُلْتُ يَا رَسُوْلَ اللّٰهِ مَا لِأَكْثَرِ دُعَائِكَ يَا مُقَلِّبَ الْقُلُوْبِ ثَبِّتْ قَلْبِيْ عَلَى دِيْنِكَ قَالَ يَا أُمَّ سَلَمَةَ إِنَّهُ لَيْسَ آدَمِيٌّ إِلَّا وَقَلْبُهُ بَيْنَ إِصْبَعَيْنِ مِنْ أَصَابِعِ اللّٰهِ فَمَنْ شَاءَ أَقَامَ وَمَنْ شَاءَ أَزَاغَ رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ (١) (صَحِيْح)

हज़रत शहर बिन होशब रज़ि० कहते हैं मैंने उम्मुल मोमिनीन हज़रत उम्मे सलमा रज़ि० से अर्ज़ किया : "रसूले अकरम सल्ल० जब

आपके पास होते तो कौनसी दुआ सबसे ज़्यदा पढ़ते?" हज़रत उम्मे सलमा रज़ि० ने फरमाया: "आप सल्ल० की ज़्यादातर दुआ यह होती : "या मुकल्लिबल कुलूब सब्बित कलबी अला दीनी क (ऐ दिलों के फेरने वाले मेरा दिल अपने दीन पर जमा दे) मैं (उम्मे सलमा) ने अर्ज़ किया : "या रसूलुल्लाह सल्ल० ! आप अकसर यह दुआ क्यों मांगते हैं आप सल्ल० ने इरशाद फरमाया: "ऐ उम्मे सलमा! कोई आदमी ऐसा नहीं जिसका दिल अल्लाह तआला की दो उंगलियों के दरमियान न हो फिर जिसे वह चाहता है (दीने हक पर) कायम रखता है। जिसे चाहता है (राहे रास्त) से हटा देता है।" इसे तिर्मिज़ी ने रिवायत किया है। (सही सुनन तिर्मिज़ी लिलबानी, जुज़ ३, हदीस २७६२)

मसला ६३ : रिज़्क देने और न देने वाल सिर्फ अल्लाह तआला ही है।

मसला ६४ : रिज़्क में तंगी या फराखी करने वाला भी सिर्फ अल्लाह तआल ही है।

﴿وَلَا تَقْتُلُوٓا أَوْلَادَكُمْ خَشْيَةَ إِمْلَاقٍ نَّحْنُ نَرْزُقُهُمْ وَإِيَّاكُم إِنَّ قَتْلَهُمْ كَانَ خِطْءًا كَبِيرًا﴾ (١٧:٣١)

"और अपनी औलाद को गुरबत के डर से कत्ल न करो हम उन्हें भी रिज़्क देंगे और तुम्हें भी। दर हकीकत औलाद का कत्त एक बड़ा गुनाह है।" (सूरह बनी इस्राईल-३१)

﴿قُلْ إِنَّ رَبِّى يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَن يَشَاءُ وَيَقْدِرُ وَلَٰكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُونَ﴾ (٣٤:٣٦)

"ऐ नबी उनसे कहो मेरा रब जिसे चाहता है कुशादा रिज़्क देता और जिसे चाहता तंग कर देता है। लेकिन अकसर लोग (उसकी हकीकत) नहीं जानते।" (सूरह सबा-३६)

عَنْ أَبِي ذَرٍّ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِيمَا رَوَى عَنِ اللّٰهِ تَبَارَكَ وَتَعَالَى أَنَّهُ قَالَ يَا عِبَادِي كُلُّكُمْ جَائِعٌ إِلَّا مَنْ أَطْعَمْتُهُ فَاسْتَطْعِمُونِي أُطْعِمْكُمْ يَا عِبَادِي كُلُّكُمْ عَارٍ إِلَّا مَنْ كَسَوْتُهُ فَاسْتَكْسُونِي أَكْسُكُمْ. رَوَاهُ مُسْلِمٌ (١)

हज़रत अबू ज़र रज़ि० से रिवायत है कि नबी अकरम सल्ल० जो अहदीस अल्लाह तबारक व तआला से रिवायत करते हैं (उनमें से एक यह है) कि अल्लह तआला फरमाता है : "ऐ मेरे बन्दों! तुम सब भूखे हो सिवा उसके जिसे मैं खिलाऊं अतः मुझसे खाना मांगो, मैं तुम्हें खिलऊंगा। ऐ मेरे बन्दों! तुम सब नंगे हो सिवाए उसके जिसे मैं पहनाऊं अतः तुम मुझसे लिबास मांगो मैं तुम्हें (लिबास) पहनाऊंगा।" इसे मुस्लिम ने रिवायत किया हैं। (किताबुल-गनम)

मसला ६५ : औलाद देने या न देने वाला सिर्फ अल्लाह तआला ही है।

मसला ६६ : बेटे और बेटियां देने वाला सिर्फ अल्लाह तआला ही है।

﴿لِلَّهِ مُلْكُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ يَخْلُقُ مَا يَشَاءُ يَهَبُ لِمَنْ يَشَاءُ إِنَاثًا وَيَهَبُ لِمَنْ يَشَاءُ الذُّكُورَ ۝ أَوْ يُزَوِّجُهُمْ ذُكْرَانًا وَإِنَاثًا وَيَجْعَلُ مَنْ يَشَاءُ عَقِيمًا إِنَّهُ عَلِيمٌ قَدِيرٌ﴾ (٤٢:٤٩-٥٠)

"अल्लाह तआल ज़मीन और आसमान की बादशाही का मालिक है। जो कुछ चाहात है पैदा करता है जिसे चाहता है लड़कियां देता है, जिसे चाहता है लड़के देता है, जिसे चाहता है लड़के और लड़कियां मिला जुला कर देता है। और जिसे चाहता है बांझ कर देता है वह सब कुछ जानता है और हर चीज़ पर कादिर है।" (सूरह शूरा-४६-५०)

عَنِ ابْنِ شِهَابٍ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ وَأَمَّا أُمُّ كُلْثُومٍ بِنْتُ رَسُولِ اللّٰهِ

صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فتزوّجها ايضا عُثْمَانُ ابْنُ عَفَّانَ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ بَعْدَ أُخْتِهَا رُقَيَّةَ بِنْتِ رَسُوْلِ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ ثُمَّ تُوُفِّيَتْ عِنْدَهُ وَلَمْ تَلِدْ لَهُ شَيْئًا. رَوَاهُ الطَّبْرَانِيُّ (٢)

इब्ने शहाब कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने हज़रत रूकैया रज़ि० बिन्ते मुहम्मद सल्ल० के बाद उनकी बहन हज़रत उम्मे कुलसुम रज़ि० बिन्ते मुहम्मद का निकाह भी हज़रत उसमान बिन अफफान रज़ि० से ही कर दिया। हज़रत रूकैया रज़ि० हज़रत उसमान रज़ि० के अकदे निकाह में ही फौत हुई लेकिन उनके यहां कोई औलाद न हुई इसे तबरानी ने रिवायत किया है।

मसला ६७ : सेहत और शिफा देने वाला सिर्फ अल्लाह तआला ही है।

﴿الَّذِىْ خَلَقَنِىْ فَهُوَ يَهْدِيْنِ ٭ وَالَّذِىْ هُوَ يُطْعِمُنِىْ وَيَسْقِيْنِ ٭ وَإِذَا مَرِضْتُ فَهُوَ يَشْفِيْنِ ٭ وَالَّذِىْ يُمِيْتُنِىْ ثُمَّ يُحْيِيْنِ ٭ وَالَّذِىْ أَطْمَعُ أَنْ يَغْفِرَ لِىْ خَطِيْئَتِىْ يَوْمَ الدِّيْنِ﴾ (٢٦:٧٨-٨٢)

"अल्लाह तआला ने मुझे पैदा किया वही मेरी रह नुमाई फरमाता है, वही मुझे खिलाता है और पिलाता है और जब बीमार हो जाता हूं तो मुझे शिफा देता है। वही मुझे मौत देगा और फिर दोबारा ज़िन्दगी बखशेगा उसी से मैं उम्मीद रखता हूं कि रोज़े जज़ा में मेरी खता माफ फरमाएगा।" (सूरह शुअरा-७८-८२)

عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهَا قَالَتْ كَانَ النَّبِيُّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يُعَوِّذُ بَعْضَهُمْ يَمْسَحُهُ بِيَمِيْنِهِ أَذْهِبِ الْبَاسَ رَبَّ النَّاسِ وَاشْفِ أَنْتَ الشَّافِيْ لَا شِفَاءَ إِلَّا شِفَاؤُكَ شِفَاءً لَا يُغَادِرُ سَقَمًا. رَوَاهُ الْبُخَارِيُّ (١)

हज़रत आईशा रज़ि० फरमाती हैं कि नबी अकरम सल्ल० कुछ

बीमार लोगों के जिस्म पर दाहिना हाथ फेरते और यह दुआ फरमाते: "ऐ लोगों के रब! बीमारी दूर फरमा और शिफा इनायत कर क्योंकि तूही शिफा देने वाला है अस्ल शिफा वही है जो तू इनायत फरमाए ऐसी सेहत अता फरमा कि किसी किस्म की बीमारी बाकी न रहे।" इसे बुखारी ने रिवायत किया है। (किताबुत तिब्ब)

मसला ६८ : हिदायत देना सिर्फ अल्लाह तआला ही के इख्तियार में है।

﴿إِنَّكَ لَا تَهْدِي مَنْ أَحْبَبْتَ وَلَـٰكِنَّ اللَّـهَ يَهْدِي مَن يَشَاءُ وَهُوَ أَعْلَمُ بِالْمُهْتَدِينَ﴾ (٥٦:٢٨)

"ऐ नबी तुम जिसे चाहो उसे हिदायत नहीं दे सकते लेकिन अल्लाह तआला जिसे चाहता है हिदायत देता है और अल्लाह तआला उन लोगों से खूब वाकिफ है जो हिदायत कबूल करने वाले हैं।" (सूरह कसस-५६)

عَنْ أَبِي ذَرٍّ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِيمَا رَوَى عَنِ اللَّهِ تَبَارَكَ وَتَعَالَى أَنَّهُ قَالَ يَا عِبَادِي كُلُّكُمْ ضَالٌّ إِلَّا مَنْ هَدَيْتُهُ فَاسْتَهْدُونِي أَهْدِكُمْ. رَوَاهُ مُسْلِمٌ (١)

हज़रत अबूज़र रज़ि० से रिवायत है कि जिन हदीसों में नबी अकरम सल्ल० अल्लाह तआला से रिवायत करते हैं उनमें से एक यह है कि अल्लाह तआला फरमाता है : "ऐ मेरे बन्दों तुम सब गुमराह हो सिवाए उसके जिसे मैं हिदायत दूं, पस मुझ से हिदायत मांगो मैं तुम्हें हिदायत दूंगा।" इसे मुस्लिम ने रिवायत किया है। (किताबुल इल्म)

मसला ६९ : नेकी करने और गुनाह से बचने की तौफीक देने वाल सिर्फ अल्लाह तआला ही है।

﴿إِنْ أُرِيدُ إِلَّا الْإِصْلَاحَ مَا اسْتَطَعْتُ وَمَا تَوْفِيقِي إِلَّا بِاللَّهِ عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ وَإِلَيْهِ

أُنِيبُ﴾ (١١:٨٨)

"हज़रत शुऐब ने अपनी कौम से कहा मैं तो अपनी इस्तेताअत के मुताबिक इस्लाह करना चाहता हूं और जो कुछ करना चाहता हूं उसका सारा आधार अल्लाह तआला की तौफीक पर है उसी पर मैंने भरोसा किया है और उसी तरफ पलटता हूं।" (सूरह हूद-८८)

عَنْ مُعَاذِ بْنِ جَبَلٍ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُوْلَ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَخَذَ بِيَدِهِ وَقَالَ يَا مُعَاذُ وَاللّٰهِ اِنِّيْ لَأُحِبُّكَ لَأُحِبُّكَ فَقَالَ أُوْصِيْكَ يَا مُعَاذُ لَا تَدَعَنَّ فِيْ دُبُرِ كُلِّ صَلَاةٍ تَقُوْلُ اَللّٰهُمَّ أَعِنِّيْ عَلٰى ذِكْرِكَ وَ شُكْرِكَ وَ حُسْنِ عِبَادَتِكَ. رَوَاهُ أَبُوْ دَاوُدَ (٢) (صَحِيْح)

हज़रत मुआज़ बिन जबल रज़ि० फरमाते हैं कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने मेरा हाथ पकड़कर फरमायाः "ऐ मुआज़! अल्लाह तआला की कसम मुझे तुम से बहुत मुहब्बत है। अल्लाह तआला की कसम! मुझे तुमसे बहुत मुहब्बत है।" फिर आप सल्ल० ने इरशाद फरमाया : "ऐ मुआज़! मैं तुझे ताकीद करता हूं कि किसी (फर्ज़) नमाज़ के बाद यह कलिमात कहना न छोड़ना, तर्जुमाः "या अल्लाह! मुझे अपना ज़िक्र, शुक्र और बेहतरीन इबादत करने की तौफीक अता फरमा।" इसे अबू दाऊद ने रिवायत किया है। (सही सुनन अबू दाऊद)

मसला ७० : नफा और नुक्सान का मालिक सिर्फ अल्लाह तआला ही है।

मसला ७१ : तकदीर का मालिक सिर्फ अल्लाह तआला ही है।

﴿قُلْ فَمَن يَمْلِكُ لَكُم مِّنَ اللّٰهِ شَيْئاً إِنْ أَرَادَ بِكُمْ ضَرّاً أَوْ أَرَادَ بِكُمْ نَفْعاً بَلْ كَانَ اللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُونَ خَبِيراً﴾ (٤٨:١١)

"(ऐ नबी सल्ल०) इन मुनाफिकों से कहो, कौन है जो तुम्हारे मामले में अल्लाह तआला के फैसले को रोकने का कुछ इख्तियार रखता

है। अगर वह तुम्हें नुकसान पहुंचाना चाहे या नफा पहुंचाना चाहे? तुम्हारे आमाल से अल्लाह तआला पूरी तरह बाखबर है।" (सूरह फतह-११)

عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُمَا قَالَ كُنْتُ خَلْفَ رَسُوْلِ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَوْمًا فَقَالَ يَا غُلَامُ اِنِّيْ أُعَلِّمُكَ كَلِمَاتٍ احْفَظِ اللّٰهَ يَحْفَظْكَ احْفَظِ اللّٰهَ تَجِدْهُ تُجَاهَكَ اِذَا سَأَلْتَ فَاسْأَلِ اللّٰهَ وَاِذَا اسْتَعَنْتَ فَاسْتَعِنْ بِاللّٰهِ وَاعْلَمْ أَنَّ الْاُمَّةَ لَوِ اجْتَمَعَتْ عَلٰى أَنْ يَنْفَعُوْكَ بِشَيْءٍ لَمْ يَنْفَعُوْكَ اِلَّا بِشَيْءٍ قَدْ كَتَبَهُ اللّٰهُ لَكَ وَاِنِ اجْتَمَعُوْا عَلٰى أَنْ يَضُرُّوْكَ بِشَيْءٍ لَمْ يَضُرُّوْكَ اِلَّا بِشَيْءٍ قَدْ كَتَبَهُ اللّٰهُ عَلَيْكَ رُفِعَتِ الْاَقْلَامُ وَجَفَّتِ الصُّحُفُ. رَوَاهُ التِّرْمِذِيُّ (١) (صَحِيْح)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ि० कहते हैं एक दिन मैं नबी अकरम सल्ल० के पीछे (सवार) था आप सल्ल० ने इरशाद फरमाया: "ऐ लड़के मैं तुझे चन्द कलिमे सिखाता हूं। (जो ये हैं) अल्लाह तआला के अहकाम की हिफाज़त कर, अल्लाह तआला (दीन व दुनिया के फितनों में) तुम्हारी हिफाज़त फरमाएगा। अल्लाह तआला को याद कर, तो तू उसे अपने साथ पाएगा। जब सवाल करना हो तो सिर्फ अल्लाह तआला से सवाल कर, जब मदद मांगाना होता सिर्फ अल्लाह तआला से मांग, और अच्छी तरह जान ले कि अगर सारे लोग तुझे नफा पहुंचाने के लिए इकट्ठा हो जाएं तो कुछ भी नफा नहीं पहुंचा सकेंगे सिवाए उसके जो अल्लाह तआला ने तुम्हारे लिए लिख दिया है। और अगर सारे लोग तुझे नुक्सान पहुंचाना चाहें तो तुझे कुछ भी नुक्सान नहीं पहुंचा सकेंगे सिवाए उसके जो अल्लाह तआला ने तुम्हारे लिए लिख दिया है। कलम (तकदीर लिखने वाले) उठा लिए गए हैं और सहीफे जिनमें तकदीर लीखी गई है खुशक हो चुके हैं।" इसे तिर्मिज़ी ने रिवायत किया है। (सही सुनन तिर्मिज़ी लिलबानी, जुज़ सानी)

वज़ाहत : तकदीर की दो किस्में हैं पहली तकदी मुबरम (यानी फैसला कुन) यह किसी सूरत में नहीं बदलती। दूसरी तकदीर मुअल्लक, यह दुआ करने से बदल जाती है, और इसके बारे में भी अल्लाह तआला के यहां लिखा जा चुका है फलां आदमी की फलां तकदीर फलां दुआ करने से बदल जाएगी। तकदीर मुअल्लक के बारे ही में रसूले अकरम सल्ल० का इरशाद मुबारक है यानी "तकदीर नहीं बदलती मगर दुआ से।"

मसला ७२ : ज़िन्दगी और मौत सिर्फ अल्लाह तआलाके हाथ में है।

﴿هُوَ الَّذِىْ يُحْيِى وَيُمِيْتُ فَإِذَا قَضَى أَمْراً فَإِنَّمَا يَقُولُ لَهُ كُن فَيَكُونُ﴾

(٦٨:٤٠)

"वह अल्लह तआला ही है जो ज़िंदा करता है और मारता है और जब किसी बात का फैसला कर लेता है तो बस एक हुक्म देता है कि हो जा और वह हो जाती है।" (सूरह मोमिन-६८)

عَنْ جَابِرٍ رَضِىَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ كُنَّا مَعَ النَّبِيِّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بِذَاتِ الرِّقَاعِ فَإِذَا أَتَيْنَا عَلَى شَجَرَةٍ ظَلِيْلَةٍ تَرَكْنَاهَا لِلنَّبِيِّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَجَاءَ رَجُلٌ مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ وَ سَيْفُ النَّبِيِّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مُعَلَّقٌ بِالشَّجَرَةِ فَاخْتَرَطَهُ فَقَالَ تَخَافُنِىْ قَالَ لَا قَالَ فَمَنْ يَمْنَعُكَ مِنِّىْ؟ قَالَ: اَللّٰهُ رَوَاهُ الْبُخَارِىُّ وَفِىْ رِوَايَةِ اَبِىْ بَكْرِ الْاِسْمَاعِيْلِىْ فِىْ صَحِيْحِهِ قَالَ: مَنْ يَمْنَعُكَ مِنِّىْ؟ فَقَالَ كُنْ خَيْرَ آخِذٍ أَوْرَدَهُ النَّوَوِىُّ (١)

हज़रत जाबिर रज़ि० से रिवायत है कि गज़वा ज़ातुर्रिकाअ में हम रसूलुल्लाह सल्ल० के साथ थे। (दौराने सफर) एक घने साये वाला पेड़ आया जिसे हमने रसूलुल्लाह सल्ल० से (आराम के लिए) छोड़ दिया इतने में एक मुशिरक आदमी आया और रसूलुल्लह सल्ल० की तलवार जो पेड़

के साथ लटक रही थी। उठाकर बोला, "क्या तुम मुझ से डरते हो (या नहीं)?" आप सल्ल० ने इरशाद फरमाया "नहीं" मुश्रिक कहने लगा तो तुम्हें मुझसे कौन बचाएगा?" आप सल्ल० ने इरशाद फरमायाः "अल्लाह" इसे बुखारी ने रिवायत किया है। अबू बक्र इस्माईल ने अपनी सहीह में यह बात भी रिवायत की है (कि जब) मुश्रिक ने कहाः "तुम्हें मुझसे कौन बचाएगा तो आप सल्ल० ने इरशाद फरमाया, "अल्लाह" इस पर तलवार मुश्रिक के हाथ से छूटकर नीचे गिर पड़ी और रसूलुल्लाह सल्ल० ने उठाली फिर आप सल्ल० ने पूछाः "तुझे मुझसे कौन बचाएगा?" मुश्रिक ने कहा "तुम बेहतर पकड़ने वाले बनो।" (यानी मुझ पर रहम करो और छोड़ दो) इसे नववी ने ज़िक्र किया है। (रियाज़ुस्सालिकीन बाब फिलयकीन, जुज़ अव्वल, २६७)

तौहीद सिफात के बारे में शिर्किया उमूर

१. उमूरे कायना और नज़्मे कायनात की तदबीर में अल्लाह तआला के सिवा किसी दूसरे नबी, वली, गौस, कुतुब या अबदाल को शरीक समझना शिर्क है। (मुलाहिज़ा हो मसला ४६)

२. ज़मीन व आसमान के तमाम खज़ानों में तसर्रूफ का इख्तियार सिर्फ अल्लाह तआला को है। उसमें किसी नबी, वली, गौस, कुतुब या अब्दाल को शरीक समझना शिर्क है। (मुलाहिज़ा हो मसला ५०)

३. कयामत के दिन किसी को सिफारिश करने की इजाज़त देने या न देने, सिफारिश कबूल करने या न करने, किसी को सवाब या अज़ाब देने, किसी को पकड़ने या छोड़ने का इख्तियार सिर्फ अल्लाह तआलो को होगा अल्लाह तआला के इस इख्तियार में किसी नबी, वली, गौस, कुतुब या अबदाल वगैरह को शरीक समझना शिर्क है। (मुलाहिज़ा हो मसला ५१)

४. गैब का इल्म रखने वाला और हर जगह हाज़िर व नाज़िर

सिर्फ अल्लाह तआला ही हैं किसी नबी, वली, गौस, कुतुब या अबदाल वगैरह को आलिमुल गैब या हाज़िर नाज़िर समझना शिर्क है। (मुलाहिज़ा हो मसला ५७)

५. दिलों को फेरने वाला, हिदायत देने वाला, नेकी की तौफीक देने वाला सिर्फ अल्लाह तआला ही है किसी नबी, वली, गौस, कुतुब य अबदाल को इस पर कादिर समझन शिर्क है। (मुलाहिज़ा हो मसला ६१,६८,६६)

६. रिज़्क की तंगीया फराखी, सेहत और बीमारी, नफा और नुकसान, ज़िंदगी और मौत देने वाला सिर्फ अल्लाह तआला ही है किसी नबी, वली, गौस, कुतुब या अबदाल को इस पर कादिर समझना शिर्क है। (मुलाहिज़ा हो मसला ६३,६४,६७,७०,७१)

७. औलाद देने या न देने वाला बेटे और बेटियां देने वाला सिर्फ अल्लाह तआला ही है किसी नबी, वली, गौस, कुतुब या अबदाल को इस पर कादिर समझना शिर्क है। (मुलाहिज़ा हो मसला ६५,६६)

८. दुनिया व आख़िरत की तमाम भलाईयां सिर्फ अल्लाह तआला के हाथ में है किसी नबी, वली, गौस, कुतुब या अबदाल वगैरह को इस में शरीक समझना शिर्क है। (मुलाहिज़ा हो मसला ६१)

६. दिलों में छूपे राज़ और भेद सिर्फ अल्लाह तआला ही जानता है किसी नबी, वली, गौस, कुतुब या अबदाल वगैरह के बारे में यह अकीदा रखन शिर्क है। (मुलाहिज़ा हो मसला ६०)

تَعْرِيفُ الشِّرْكِ وَأَنْوَاعُهُ

शिर्क की तारीफ और उसकी किस्में

मसला ७३ : शिर्क की दो किस्में हैं १. शिर्के अकबर २. शिर्के असगर।

मसला ७४ : अल्लाह तआला अपनी ज़ात इबादत और सिफात में अकेला और बेमिस्ल है किसी जानदार या बेजान, जिन्दा या फौत शुदा मखलूक को उसकी ज़ात में या इबादत में या उसकी सिफात में शरीक करना या उसके हमसर समझन शिर्के अकबर कहलाता है।

मसला ७५: शिर्के अकबर का करने वाला हमेशा हमेशा जहन्नम में रहेगा।

عَنْ عَبْدِ اللّٰهِ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مَنْ مَاتَ يَجْعَلُ لِلّٰهِ نِدًّا اُدْخِلَ النَّارَ. رَوَاهُ الْبُخَارِيُّ (١)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ि० से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने फरमाया : "जो व्यक्ति इस हाल में मरा कि अल्लाह तआला के साथ किसी को शरीक ठहराता था वह आग में दाखिल किया जाएगा।" इसे बुखारी ने रिवायत किया है। (किताबुल ईमान)

मसला ७६ : शिर्क फिज़्ज़ात, शिर्क फिल इबादात और शिर्क फिस्सिफात के अलावा कुछ ऐसे दीगर उमूर जिनके लिए अहादीस में शिर्क का लफ्ज़ इस्तेमाल हुआ है मसलन रिया या गैरूल्लाह की कसम खाना

वगैरह शिर्के असगर कहलाता है।

عَنْ مَحْمُوْدِ بْنِ لَبِيْدٍ رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُوْلَ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ اِنَّ أَخْوَفَ مَا أَخَافُ عَلَيْكُمُ الشِّرْكُ الْأَصْغَرُ قَالُوْا وَمَا الشِّرْكُ الْأَصْغَرُ يَا رَسُوْلَ اللّٰهِ ؟ قَالَ اَلرِّيَاءُ. رَوَاهُ أَحْمَدُ (١)

हज़रत महमूद बिन लूबैद रज़ि० से रिवायत है कि नबी अकरम सल्ल० से फरमाया : "तुम्हारे बारे में मुझे जिन चीज़ों का खौफ है उनमें सबसे ज़्यादा डराने वाली चीज़ शिर्के असगर है। सहाबा किराम रज़ि० ने अर्ज़ किया या रसूलुल्लाह सल्ल०: शिर्के असगर क्या है?" आप सल्ल० ने इर्शाद फरमायाः "रिया"। इसे अहमद ने रिवायत किया है। (मिश्कात बाब रिया)

वज़ाहत : १. शिर्के असगर की दीगर मिसालें "शिर्के असगर" के बाब में मुलाहिज़ा फरमाएं।

२. शिर्के अकबर का करने वाला दायरा इस्लाम से खारिज हो जाता है और वह हमेशा हमेशा जहन्नम में रहेगा। जबकि शिर्के असगर का करने वाला दायरा इस्लाम से खारिज नहीं होता, लेकिन कबीरा गुनाह का करने वाला होता है जिसकी सज़ा जहन्नम है। (जब तक अल्लाह चाहे) याद रहे शिर्के असगर से तौबा न करना शिर्के अकबर का कारण बन सकता है।

मसला ७७ : शिर्के खफी से मुराद छुपा हुआ शिर्क है जो इंसान के अन्दर की छूपी हुई कैफियत का नाम है, शिर्के खफी शिर्के असगर भी हो सकता है जैसा कि दिखावा करने वाले का शिर्क और शिर्के अकबर भी हो सकता है जैसा कि मुनाफिक का शिर्क।

عَنْ أَبِیْ سَعِيْدٍ رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ خَرَجَ عَلَيْنَا رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَ نَحْنُ نَتَذَاكَرُ الْمَسِيْحَ الدَّجَّالَ فَقَالَ أَلَا أُخْبِرُكُمْ بِمَا هُوَ

أَخْوَفُ عَلَيْكُمْ عِنْدِىْ مِنَ الْمَسِيْحِ الدَّجَّالِ ؟ قَالَ قُلْنَا بَلىٰ ! فَقَالَ الشِّرْكُ الْخَفِىُّ أَنْ يَقُوْمَ الرَّجُلُ يُصَلِّىْ فَيُزَيِّنُ صَلَاتَهُ لِمَا يَرَى مِنْ نَظَرِ رَجُلٍ. رَوَاهُ ابْنُ مَاجَةَ (٢) (صَحِيْح)

हज़रत अबू सईद रज़ि० कहते हैं रसूले अकरम सल्ल० हमारे पास तशरीफ लाए हम लोग आपस में मसीह दज्जाल का ज़िक्र कर रहे थे। आप सल्ल० ने इरशाद फरमायाः "क्या मैं तुम्हें ऐसी चीज़ की खबर न दूं जिसका मुझे तुम्हारे बारे में मसीह दज्जाल से भी ज़्यादा खौफ है।" हमने अर्ज़ कियाः "क्यों नहीं या रसूलुल्लाह सल्ल० (ज़रूर बताइए) आप सल्ल० ने इरशाद फरमाया : "वह है शिर्क खफी यानी यह कि आदमी नमाज़ पढ़ने के लिए खड़ा हो और जब उसे महसूस हो कि कोई उसे देख रहा है तो अपनी नमाज़ लम्बी कर दे।" इसे इब्ने माजा ने रिवायत किया है। (सहीह सुनन तिर्मिज़ी लिलबानी, जुज़ ३, हदीस ३३८६)

اَلشِّرْکُ فِیْ ضَوْءِ الْقُرْآنِ

शिर्क कुरआन मजीद की रोशनी में

मसला ७८ : शिर्क सबसे बड़ी जिहालत है।

मसला ७९ : शिर्क तमाम नेक आमाल को बर्बाद कर देता है चाहे नबी ही क्यों न हो।

﴿قُلْ أَفَغَيْرَ اللّٰهِ تَأْمُرُونِّيْ أَعْبُدُ أَيُّهَا الْجَاهِلُونَ ٭ وَلَقَدْ أُوحِيَ إِلَيْكَ وَإِلَى الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِكَ لَئِنْ أَشْرَكْتَ لَيَحْبَطَنَّ عَمَلُكَ وَلَتَكُونَنَّ مِنَ الْخَاسِرِيْنَ﴾

(٣٩:٦٤.٦٥)

"(ऐ नबी सल्ल०) इनसे कहो फिर क्या ऐ जाहिलो! तुम अल्लाह तआला के सिवा किसी और की बन्दगी करने के लिए मुझसे कहते हो? (हालांकि) तुम्हारी तरफ और तुमसे पहले गुज़रे हुए तमाम अंबिया की तरफ यह वह्य भेजी जा चुकी है कि अगर तुमने शिर्क किया तो तुम्हारा अमल नष्ट हो जाएगा और तुम घाटा में होगे।" (सूरह जुमर-६४-६५)

मसला ८० : शिर्क इंसान को आसामान की बुलन्दियों से ज़मीन की गहराई में गिरा देता है, जहां वह मसुलसल मुख्तलिफ गुमराहियों में धंसता चला जाता है यहां तक कि हलाक और बर्बाद हो जाता है।

﴿وَمَنْ يُشْرِكْ بِاللّٰهِ فَكَأَنَّمَا خَرَّ مِنَ السَّمَاءِ فَتَخْطَفُهُ الطَّيْرُ أَوْ تَهْوِيْ بِهِ الرِّيْحُ فِيْ مَكَانٍ سَحِيْقٍ﴾ (٢٢:٣١)

"और जिसने अल्लाह तआला के साथ शिर्क किया वह मानो आसमान से गिर पड़ा अब या तो उसे परिन्दे (यानी शयातीन) उचक ले जाएंगे या हवा (ख्वाहिशाते नफ्स) उसको ऐसी जगह ले जाकर फेंक देगी जहां उसके चीथड़े उड़ जाएंगे।" (सूरह हज-३१)

मसला ८१ : मुश्रिक को तौहीद का ज़िक्र बड़ा नागवार महसूस होता है।

﴿وَإِذَا ذُكِرَ اللَّهُ وَحْدَهُ اشْمَأَزَّتْ قُلُوبُ الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِالْآخِرَةِ وَإِذَا ذُكِرَ الَّذِينَ مِن دُونِهِ إِذَا هُمْ يَسْتَبْشِرُونَ﴾ (٣٩:٤٥)

"जब एक अल्लाह तआला का ज़िक्र किया जाता है तो आखिरत पर ईमान न रखने वालों के दिल कुढ़ने लगते हैं और जब उसके सिवा दूसरों का ज़िक्र होता है तो यकायक खुशी से खिल उठते हैं।" (सूरह जुमर-४५)

मसला ८२ : शिर्क के मामले में मां बाप या किसी आलिम या किसी मुर्शिद की इताअत करना हराम है।

﴿وَوَصَّيْنَا الْإِنسَانَ بِوَالِدَيْهِ حُسْنًا وَإِن جَاهَدَاكَ لِتُشْرِكَ بِي مَا لَيْسَ لَكَ بِهِ عِلْمٌ فَلَا تُطِعْهُمَا إِلَيَّ مَرْجِعُكُمْ فَأُنَبِّئُكُم بِمَا كُنتُمْ تَعْمَلُونَ﴾ (٢٩:٨)

"हमने इंसान को हिदायत की है कि वह मां बाप के साथ नेक सुलूक करे, लेकिन अगर मां बाप ज़ोर डालें कि तू मेरे साथ किसी (ऐसे माबूद) को शरीक ठहराए जिसे (शिर्क की हैसियत से) तू नहीं जानता। तो उनकी इताअत न कर, मेरी ही तरफ तुम सबको पलट कर आना है फिर मैं तुमको बताऊंगा कि तुम क्या करते रहे हो।" (सूरह अन्कबूत-८)

मसला ८३ : मुश्रिक मर्द या औरत का तौहीदपरस्त औरत या मर्द से निकाह हराम है।

﴿وَلَا تَنكِحُوا الْمُشْرِكَاتِ حَتَّى يُؤْمِنَّ وَلَأَمَةٌ مُّؤْمِنَةٌ خَيْرٌ مِّن مُّشْرِكَةٍ وَلَوْ أَعْجَبَتْكُمْ وَلَا تُنكِحُوا الْمُشْرِكِينَ حَتَّى يُؤْمِنُوا وَلَعَبْدٌ مُّؤْمِنٌ خَيْرٌ مِّن مُّشْرِكٍ وَلَوْ أَعْجَبَكُمْ﴾ (٢:٢٢١)

"मुश्रिक औरतों से निकाह हरगिज़ न करो जब तक वे ईमान न ले आएं एक मोमिन लौंडी मुश्रिक आज़ाद औरत से बेहतर ह।। अगरचे वह (यानी मुश्रिक औरत) तुम्हें पसन्द ही हो और अपनी औरतों के निकाह मुश्रिक मर्दों से भी हरगिज़ न करो जब तक वे ईमान न ले आएं। एक गुलाम मोमिन आज़ाद मुश्रिक से बेहतर है चाहे वह मुश्रिक तुम्हें कितना ही पसन्द हो।" (सूरह बकरा-२२१)

मसला ८४ : हालते शिर्क में मर जाने वाले मुश्रिकों के लिए दुआ मगफिरत करना मना है।

﴿مَا كَانَ لِلنَّبِيِّ وَالَّذِينَ آمَنُوا أَن يَسْتَغْفِرُوا لِلْمُشْرِكِينَ وَلَوْ كَانُوا أُولِي قُرْبَى مِن بَعْدِ مَا تَبَيَّنَ لَهُمْ أَنَّهُمْ أَصْحَابُ الْجَحِيمِ﴾ (٩:١١٣)

"नबी को और उन लोगों को जो ईमान लाए हैं ज़ेब नहीं देता कि मुश्रिकों के लिए मगफिरत की दुआ करें, चाले वे उनके रिश्तेदार ही क्यों न हों, जबकि उन पर यह बात खुल चुकी है कि वे जहन्नम के मुस्तहिक हैं।"
(सूरह तौबा-११३)

मसला ८५ : मुश्रिक पर जन्नत हराम है और वह हमेशा महेशा के लिए जहन्नम में रहेगा।

﴿وَقَالَ الْمَسِيحُ يَا بَنِي إِسْرَائِيلَ اعْبُدُوا اللَّهَ رَبِّي وَرَبَّكُمْ إِنَّهُ مَن يُشْرِكْ بِاللَّهِ فَقَدْ حَرَّمَ اللَّهُ عَلَيْهِ الْجَنَّةَ وَمَأْوَاهُ النَّارُ وَمَا لِلظَّالِمِينَ مِنْ أَنصَارٍ﴾
(٥:٧٢)

"हज़रत ईसा अलैहिस्साम ने (अपनी कौम बनी इसराईल) से कहा, ऐ बनी इसराईल अल्लह तआला की बन्दगी करो जो मेरा भी रब है और तुम्हारा भी। जिसने अल्लाह तआला के साथ किसी को शरीक ठहराया उस पर अल्लाह तआला ने जन्नत हराम कर दी है और उसका ठिकान्ना जहन्नम है। और ऐ से ज़ालिमों का कोई मददगार नहीं।" (सूरह माइदा-७२)

﴿إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْ أَهْلِ الْكِتَابِ وَالْمُشْرِكِينَ فِي نَارِ جَهَنَّمَ خَالِدِينَ فِيهَا أُولَئِكَ هُمْ شَرُّ الْبَرِيَّةِ﴾ (٦:٩٨)

"अहले किताब और मुशिरकीन में से जिन लोगों ने कुफ्र किया वह यकीनन जहन्नम की आग में जाएंगे और हमेशा उसमें रहेंगे ऐसे लोग बदतरीन प्राणी हैं।" (सूरह बय्यिना-६)

मसला ८६ : हकीकते शिर्क समझने के लिए कुरआन मजीद की कुछ हकीमाना मिसालें।

﴿مَثَلُ الَّذِينَ اتَّخَذُوا مِن دُونِ اللَّهِ أَوْلِيَاءَ كَمَثَلِ الْعَنكَبُوتِ اتَّخَذَتْ بَيْتاً وَإِنَّ أَوْهَنَ الْبُيُوتِ لَبَيْتُ الْعَنكَبُوتِ لَوْ كَانُوا يَعْلَمُونَ﴾ (٤١:٢٩)

"जिन लोगों ने अल्लाह तआला को छोड़कर दूसरे सरपरस्त बना लिए हैं उनकी मिसाल मकड़ी जैसी हो अपना एक घर बनाती है और सब घरों से ज़्यादा कमज़ोर घर मकड़ी का ही होता है। काश ये लोग इस हक़ीकत को जानते।" (सूरह अन्कबूत-४१)

﴿يَا أَيُّهَا النَّاسُ ضُرِبَ مَثَلٌ فَاسْتَمِعُوا لَهُ إِنَّ الَّذِينَ تَدْعُونَ مِن دُونِ اللَّهِ لَن يَخْلُقُوا ذُبَاباً وَلَوِ اجْتَمَعُوا لَهُ وَإِن يَسْلُبْهُمُ الذُّبَابُ شَيْئاً لَّا يَسْتَنقِذُوهُ مِنْهُ ضَعُفَ الطَّالِبُ وَالْمَطْلُوبُ ٥ مَا قَدَرُوا اللَّهَ حَقَّ قَدْرِهِ إِنَّ اللَّهَ لَقَوِيٌّ عَزِيزٌ ٥﴾

(٧٤،٧٣:٢٢)

"ऐे लोगो! एक मिसाल दी जाती है उसे ज़रा गौर से सुना। अल्लह तआला को छोड़कर जिन माबूदों को तुम पुकारते हो, वह सब मिलकर एक मक्खी भी पैदा नहीं कर सकते, बल्कि मक्खी अगर उनसे कोई चीज़ छीन ले जाए तो वह उसे छुड़ा भी नहीं सकते। मदद चाहने वाले भी कमज़ोर और जिनसे मदद चाही जाती है वह भी कमज़ोर। उन लोगों ने अल्लाह तआला की क्द्र नहीं पहचानी जैसा कि उसके पहचानने का हक था हकीकत यह है कि कुव्वत और इज़्ज़त वाला तो अल्लाह ही है।" (सूरह हज-७३-७४)

﴿وَالَّذِينَ يَدْعُونَ مِن دُونِهِ لَا يَسْتَجِيبُونَ لَهُم بِشَيْءٍ إِلَّا كَبَاسِطِ كَفَّيْهِ إِلَى الْمَاءِ لِيَبْلُغَ فَاهُ وَمَا هُوَ بِبَالِغِهِ وَمَا دُعَاءُ الْكَافِرِينَ إِلَّا فِي ضَلَالٍ﴾ (١٤:١٣)

"अल्लाह तआला को छोड़कर जिन्हें ये (मुशिरक) लोग पुकारते हैं वे (माबूदाने बातिल) उनकी दुआओं का कोई जवाब नहीं दे सकते, उन्हें पुकारना तो ऐसा ही है जैसा केई आदमी पानी की तरफ हाथ फैलाकर उससे विनती करे कि तू मेरे मुंह तक पहुंच जाए। हालांकि पानी उस तक पहुचने वाला नहीं। बस इसी तरह काफिरों की दुआएं बेकार जाने वाली हैं।" (सूरह राअद-१४)

﴿ضَرَبَ اللَّهُ مَثَلًا رَّجُلًا فِيهِ شُرَكَاءُ مُتَشَاكِسُونَ وَرَجُلًا سَلَمًا لِّرَجُلٍ هَلْ يَسْتَوِيَانِ مَثَلًا الْحَمْدُ لِلَّهِ بَلْ أَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُونَ﴾ (٢٩:٣٩)

"अल्लाह तआला का मिसाल देता है, एक गुलाम तो वह है जिसके मालिक होने में बहुत से कज खल्फ आका शरीक हैं जो उसे अपनी अपनी तरफ खींचते हैं और दूसरा आदमी मुकम्मल तौर पर सिर्फ एक ही आका का गुलाम है। क्या उन दोनों का हाल समान हो सकता है? अलहम्दु लिल्लाह (ऐसा नहीं) मगर अकसर लोग नहीं जानते।"

(सूरज जुमर-२६)

﴿ضَرَبَ لَكُم مَّثَلاً مِنْ أَنفُسِكُمْ هَل لَّكُم مِّن مَّا مَلَكَتْ أَيْمَانُكُم مِّن شُرَكَاءَ فِي مَا رَزَقْنَاكُمْ فَأَنتُمْ فِيهِ سَوَاءٌ تَخَافُونَهُمْ كَخِيفَتِكُمْ أَنفُسَكُمْ كَذَلِكَ نُفَصِّلُ الْآيَاتِ لِقَوْمٍ يَعْقِلُونَ﴾ (٣٠:٢٨)

"अल्लाह तआला तुम्हें तुम्हारी ज़ात से ही एक मिसाल देता है क्या तुम्हारे उन गुलामों में से जो तुम्हारी मिल्कियत में हैं कुछ गुलाम ऐसे भी हैं जो हमारे दिए हुए माल व दौलत में तुम्हारे साथ बराबर के शरीक हों और क्या तुम उनसे इस तरहे डरत हो जिस तरह आपस में अपने हमसरों से डरते हो? इस तरह हम आयत खोलकर पेश करते हैं उन लोगों के लिए जो अक्ल से काम लेते हैं।" (सूरह जुमर-२८)

﴿ضَرَبَ اللَّهُ مَثَلاً عَبْداً مَّمْلُوكاً لَّا يَقْدِرُ عَلَى شَيْءٍ وَمَن رَّزَقْنَاهُ مِنَّا رِزْقاً حَسَناً فَهُوَ يُنفِقُ مِنْهُ سِرّاً وَجَهْراً هَلْ يَسْتَوُونَ الْحَمْدُ لِلَّهِ بَلْ أَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُونَ﴾ (١٦:٧٥)

"अल्ला तआला एक मिसाल देता है एक तो है गुलाम जो दूसरे का ममलूक है औ खुद कोई इख्तियार नहीं रखता। (जैसे मुश्रिकों के ठहराए हुए शुरका) दूसरा आदमी वह है जिसे हमने अपनी तरफ से अच्छा रिज़्क अता किया है और वह उसमें से खुले और छुपे (अपनी मर्ज़ी से) खर्च करता है (यानी पूरी तरह इख्तियार रखता है जिसे अल्लाह तआला) बताओ क्या दोनों बराबर हैं? अलहम्दु लिल्लाह (हरगिज़ नहीं) मगर अकसर लोग नहीं जानत।" (सूरह नह्ल-७५)

मसला ८७ : कयामत के दिन अल्लाह तआला की बारगाह में फरिश्ते अंबिया व रूसुल और औलिया और सुलहा, उन मुश्रिकों के खिलाफ गवाही देंगे जो दुनिया में उन्हें अल्लाह तआला का शरीक ठहराते रहे होंगे।

मसला ८८ : कयामत के दिन मुशिरकीन के माबूद उनके किसी काम नहीं आएंगे

१. मलाइका

﴿وَيَوْمَ يَحْشُرُهُمْ جَمِيعاً ثُمَّ يَقُولُ لِلْمَلَائِكَةِ أَهَؤُلَاءِ إِيَّاكُمْ كَانُوا يَعْبُدُونَ • قَالُوا سُبْحَانَكَ أَنتَ وَلِيُّنَا مِن دُونِهِم بَلْ كَانُوا يَعْبُدُونَ الْجِنَّ أَكْثَرُهُم بِهِم مُّؤْمِنُونَ﴾ (٣٤: ٤٠، ٤١)

"और जिस दिन अल्लाह तआला तमाम इंसानों को जाम करेगा फिर फरिश्तों से पूछेगा : "क्या ये (मुशिरक) लोग तुम्हारी ही इबादत किया करते थे?" फरिश्ते जवाब देंगे, "पाक है तेरी ज़ात, हमारा ताल्लुक तो आप से है न कि इन लोगों से। दरअसल यं हमारी नहीं जिन्नों की इबादत करते थे। उन (मुशिरकों) में से अकसर उन्हीं पर ईमान लाए हुए थे।" (सूरह सबा-४०-४१)

२. अंबिया व रूसुल

﴿يَوْمَ يَجْمَعُ اللّٰهُ الرُّسُلَ فَيَقُولُ مَاذَا أُجِبْتُمْ قَالُوا لَا عِلْمَ لَنَا إِنَّكَ أَنتَ عَلَّامُ الْغُيُوبِ﴾ (٥: ١٠٩)

"जिस दिन अल्लाह तआला सब रसूलों को जमा करके पूछेगा कि तुम्हें क्या जवाब दिया गया तो वे अर्ज़ करेंगे: "हमें कुछ इल्म नहीं, गैब की बातें तो आप ही के इल्म में हैं।" (सूरह माइदा-१०९)

﴿وَإِذْ قَالَ اللّٰهُ يَا عِيسَى ابْنَ مَرْيَمَ أَأَنتَ قُلْتَ لِلنَّاسِ اتَّخِذُونِي وَأُمِّيَ إِلَٰهَيْنِ مِن دُونِ اللّٰهِ قَالَ سُبْحَانَكَ مَا يَكُونُ لِي أَنْ أَقُولَ مَا لَيْسَ لِي بِحَقٍّ إِن كُنتُ قُلْتُهُ فَقَدْ عَلِمْتَهُ تَعْلَمُ مَا فِي نَفْسِي وَلَا أَعْلَمُ مَا فِي نَفْسِكَ إِنَّكَ أَنتَ عَلَّامُ الْغُيُوبِ • مَا قُلْتُ لَهُمْ إِلَّا مَا أَمَرْتَنِي بِهِ أَنِ اعْبُدُوا اللّٰهَ رَبِّي وَرَبَّكُمْ وَكُنتُ

عَلَيْهِمْ شَهِيداً مَّا دُمْتُ فِيهِمْ فَلَمَّا تَوَفَّيْتَنِي كُنتَ أَنتَ الرَّقِيبَ عَلَيْهِمْ وَأَنتَ
عَلَى كُلِّ شَيْءٍ شَهِيدٌ﴾ (١١٧،١١٦:٥)

"(कयामत के दिन) जब अल्लाह तआला फरमाएगाः "ऐ ईसा बिन मरयम! क्या तूने लोगों से कहा था कि खुदा के सिवा मुझे और मेरी मां को भी खुदा बनाओ?" तो वह जवाब में अर्ज़ करेगा कि "सुब्हाल्लाह" मेरा यह काम न था कि वह बात कहता जिसके कहने का मुझे कोई हक नहीं था। अगर मैंने ऐसी बात कही होती तो तुझे ज़रूर पता होता तू जानता है जो कुछ मेरे दिल में है और मैं नहीं जानता जो तेरे दिल में है। बेशक तू सारी पोशीदा बातों से वाकिफ है। मैंने उनसे इसके सिवा कुछ नहीं कहा जिसका तूने हुक्म दिया था वह यह कि अल्लाह तआला की बन्दगी करो जो मेरा रब भी है और तुम्हारा रब भी। मैं उस वक्त तक उनका निगरां था जब तक कि मैं उनके दर्मियान था। जब तूने मुझे वापस बुला लिया तो फिर तू ही उन पर निगरां था और तू सारी ही चीज़ों पर निगरां हैं।" (सूर माइदा-११६-११७)

३. औलिया व सुलहा

﴿وَيَوْمَ يَحْشُرُهُمْ وَمَا يَعْبُدُونَ مِن دُونِ اللَّهِ فَيَقُولُ أَأَنتُمْ أَضْلَلْتُمْ عِبَادِي
هَؤُلَاءِ أَمْ هُمْ ضَلُّوا السَّبِيلَ • قَالُوا سُبْحَانَكَ مَا كَانَ يَنبَغِي لَنَا أَن نَّتَّخِذَ مِن
دُونِكَ مِنْ أَوْلِيَاءَ وَلَكِن مَّتَّعْتَهُمْ وَآبَاءَهُمْ حَتَّى نَسُوا الذِّكْرَ وَكَانُوا قَوْماً
بُوراً﴾ (١٨،١٧:٢٥)

"और जिस दिन अल्लह तआला उन (मुश्रिकों) को भी इकट्ठा कर लाएगा और उनके उन माबूदों को भी बुलाएगा जिन्हें आज ये अल्लाह तआला को छोड़कर पूज रहे हैं। फिर वह उन (माबूदों) से पूछेगाः "क्या तमने मेरे इन बन्दों का गुमराह किया था या ये खुद सीधी राह से भटक गए थे?" वे अर्ज़ करेंगेः "पा है तेरी ज़ात हमारी तो यह मजाल न

थी कि तेरे सिवा किसी दूसरे को अपना मौला बनाते। मगर तूने उनको उनके बाम दादा को खूब सामाने ज़िन्दगी दिया, यहां तक कि ये (तेरे) इरशादात को भूल गए और शामतज़दा होकर रहे।"

(सूरह फुरकान-१७-१८)

﴿وَيَوْمَ نَحْشُرُهُمْ جَمِيعاً ثُمَّ نَقُولُ لِلَّذِينَ أَشْرَكُوا مَكَانَكُمْ أَنتُمْ وَشُرَكَآؤُكُمْ فَزَيَّلْنَا بَيْنَهُمْ وَقَالَ شُرَكَآؤُهُم مَّا كُنتُمْ إِيَّانَا تَعْبُدُونَ • فَكَفَى بِاللّهِ شَهِيداً بَيْنَنَا وَبَيْنَكُمْ إِن كُنَّا عَنْ عِبَادَتِكُمْ لَغَافِلِينَ﴾ (١٠:٢٨.٢٩)

"और जिस दिन हम उन सब (यानी शरीक ठहराएगए ओर शरीक ठहराने वाले लोगों) को एक साथ इकट्ठा करेंगे तो उन लोगों से जिन्होंने शिर्क किया है कहेंगे कि ठहर जाओ तुम सभी और तुम्हारे ठहराए हुए शरीक भी। फिर हम उनके दर्मियान से अजनबियत का पर्दा हटा देंगे (यानी वे मुश्रिक और उनके ठहराए हुए शरीक एक दूसरे को पहचान लेंगे) तब उनके ठहरए हुए शरीक कहेंगे "तुम हमारी इबादत तो नहीं करते थे (और इस बात पर) हमारे और तुम्हारे दरमियान अल्लाह तआला की गवाी काफी है कि (अगर तुम हमारी इबादत करते भी थे तो) हम तुम्हारी उस इबादत से बिल्कुल बेखबर थे।" (सूरह यूनुस-२८-२९)

मसला ८९ : कयामत के दिन मुश्रिकों और शुरका की हालते ज़ार पर करआन मजीद का एक तन्ज़िया तबसरा :

﴿أُحْشُرُوا الَّذِينَ ظَلَمُوا وَأَزْوَاجَهُمْ وَمَا كَانُوا يَعْبُدُونَ • مِن دُونِ اللَّهِ فَاهْدُوهُمْ إِلَى صِرَاطِ الْجَحِيمِ • وَقِفُوهُمْ إِنَّهُم مَّسْئُولُونَ • مَا لَكُمْ لَا تَنَاصَرُونَ • بَلْ هُمُ الْيَوْمَ مُسْتَسْلِمُونَ﴾ (٣٧:٢٢.٢٦)

"(कयामत के दिन हुक्म होगा) घेर लाओ उन सब ज़ालिमों को, उनके साथियों को और उन माबूदों को जिनकी वे बन्दगी किया करते थे अल्लाह तआला को छोड़कर। फिर उन सबको जहन्नम का रास्ता दिखाओ

और (हां) ज़रा उन्हें ठहराओं उनसे कुछ पूछना है : "क्या हो गया तुम्हें तुम एक दूसरे की मदद क्यों नहीं कर रहे हो?" अरे आज तो ये सब बड़े फरमांबरदार बने हुए हैं? (यानी हर बात पर बिला चुं व रा अमल कर रहे हैं।) (सूरह साफ्फात-२२-२६)

मसला ६० : कयामत के दिन मुश्रिक अज़ाब देखकर शिर्क से इंकार और तौहीदक इकरार करेगा लेकिन उस वक्त तौहीद का इकरार उसे कोई फायदा नहीं देगा।

﴿فَلَمَّا رَأَوْا بَأْسَنَا قَالُوا آمَنَّا بِاللَّهِ وَحْدَهُ وَكَفَرْنَا بِمَا كُنَّا بِهِ مُشْرِكِينَ • فَلَمْ يَكُ يَنفَعُهُمْ إِيمَانُهُمْ لَمَّا رَأَوْا بَأْسَنَا سُنَّتَ اللَّهِ الَّتِي قَدْ خَلَتْ فِي عِبَادِهِ وَخَسِرَ هُنَالِكَ الْكَافِرُونَ﴾ (٨٥.٨٤:٤٠)

"जब उन्होंने हमारा अज़ाब देख लिया तो पुकार उठे कि हमने मान लिया अल्लाह वहदहु ला शरीक'क लहु को, और हम इंकार करते हैं उन सब माबूदों का जिन्हें हम उसका शरीक ठहराते थे। मगर हमारा अज़ाब देख लेने के बाद उनका ईमान उनके लिए कुछ भी लाभकारी न हो सकता था क्योंकि यही अल्लाह तआला का कानून है जो हमेशा से उसके बन्दों में चला आ रहा है। चुनांच उस वक्त काफिर लोग घाटे में पड़ जाएंगे।" (सूरह मामिन-८४-८५)

मसला ६१ : मुश्रिको के लिए कुरआन मजीद की दावते फिक्र :

١. ﴿قُلْ مَن يُنَجِّيكُم مِّن ظُلُمَاتِ الْبَرِّ وَالْبَحْرِ تَدْعُونَهُ تَضَرُّعًا وَخُفْيَةً لَّئِنْ أَنجَانَا مِنْ هَـٰذِهِ لَنَكُونَنَّ مِنَ الشَّاكِرِينَ • قُلِ اللَّهُ يُنَجِّيكُم مِّنْهَا وَمِن كُلِّ كَرْبٍ ثُمَّ أَنتُمْ تُشْرِكُونَ﴾ (٦٤.٦٣:٦)

"ऐ नबी! उनसे पूछो, मरूस्थल और समुन्द्र की तारिकियों में कौन तुम्हें खतरात से बचाता है? कौन है जिसे तुम मुसीबत के वक्त गिड़गिड़ा कर और चुपके चुपके दुआएं मांगते हो? किसे कहते हो कि अगर इस

बला से उसने हमें बचा लिया तो हम ज़रूर शुक्र गुज़ार होंगे? कहो अल्लाह तआला तुम्हें और हर तकलीफ से निजात देता है फिर तुम दूसरों को उसका शरीक ठहराते हो।" (सूरह अनआम-६३-६४)

٢. ﴿قُل لِّمَنِ الْأَرْضُ وَمَن فِيهَا إِن كُنتُمْ تَعْلَمُونَ • سَيَقُولُونَ لِلَّهِ قُلْ أَفَلَا تَذَكَّرُونَ • قُلْ مَن رَّبُّ السَّمَاوَاتِ السَّبْعِ وَرَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِيمِ • سَيَقُولُونَ لِلَّهِ قُلْ أَفَلَا تَتَّقُونَ • قُلْ مَن بِيَدِهِ مَلَكُوتُ كُلِّ شَيْءٍ وَهُوَ يُجِيرُ وَلَا يُجَارُ عَلَيْهِ إِن كُنتُمْ تَعْلَمُونَ • سَيَقُولُونَ لِلَّهِ قُلْ فَأَنَّى تُسْحَرُونَ﴾

(٢٣:٨٤.٨٩)

"मुश्रिकों से कहो बताओ, अगर तुम जानते हो कि यह ज़मीन और जो कुछ इसमें है वह सब किसकी मिलकियत है? ये ज़रूर कहेंगे अल्लाह तआला की। कहो फ़िर तुम होश में क्यो नहीं आते। इनसे पूछो सातों आसमान और अर्शे अज़ीम का मालिक कौन है? ये ज़रूर कहेंगे अल्लाह। कहो तुम डरते क्यों नहीं? इनसे कहो बताओ अगर तुम जानते हो कि हर चीज़ पर सत्ता किसकी है और कौन है जो पनाह देता है और उसके मुकाबले में कोई पनाह नहीं दे सकता। ये ज़रूर कहेंगे अल्लाह। कहों फिर कहों से तुम को धोख लगता है?" (सूरह मोमिनून-८४-८६)

٣. ﴿أَمِ اتَّخَذُوا آلِهَةً مِّنَ الْأَرْضِ هُمْ يُنشِرُونَ • لَوْ كَانَ فِيهِمَا آلِهَةٌ إِلَّا اللَّهُ لَفَسَدَتَا فَسُبْحَانَ اللَّهِ رَبِّ الْعَرْشِ عَمَّا يَصِفُونَ﴾ (٢١:٢١.٢٢)

"क्या उन लोगों के बनाए हुए अस्थाई माबूद ऐसे हैं कि (बेजान में जान डाल कर) उठा खड़ा करते हों? अगर आसामान व ज़ीमन में एक अल्लाह तआला के सिवा दूसरे माबूद भी होते तो (ज़मीन व आसमान) दोनों का निज़ाम बिगड़ जाता। अतः अर्श का मालिक अल्लाह पाक है उन बातों से जो ये लोग बना रहे हैं।" (सूरह अंबिया-२१-२२)

٤. ﴿أَمَّنْ جَعَلَ الْأَرْضَ قَرَاراً وَجَعَلَ خِلَالَهَا أَنْهَاراً وَجَعَلَ لَهَا رَوَاسِيَ وَجَعَلَ بَيْنَ الْبَحْرَيْنِ حَاجِزاً أَإِلَهٌ مَّعَ اللَّهِ بَلْ أَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُونَ﴾ (٢٧:٦١)

"वह कौन है जिसने ज़मीन को जाए करार बनाया और उसके अन्दर दरया रवां किए और उसमें (पहाड़ों की) मेखें गाड़ दीं और पानी के दो ज़खीरों के दरमियान पर्दे हाइल कर दिए?" क्या अल्लाह के साथ कोई और अल्लाह भी (इन कामों में शरीक) है?" "नहीं" बल्कि उनमें अकसर लोग नादान हैं।" (सूरह नम्ल-६१)

اَلشِّرۡکُ فِیۡ ضَوۡءِ السُّنَّةِ

शिर्क सुन्नत की रोशनी में

मसला ६२ : कबीरा गुनाहों में सबसे बड़ा गुनाह शिर्क है।

عَنۡ عَبۡدِ اللّٰهِ رَضِیَ اللّٰهُ عَنۡهُ قَالَ سَأَلۡتُ رَسُوۡلَ اللّٰهِ صَلَّی اللّٰهُ عَلَیۡهِ وَسَلَّمَ أَیُّ الذَّنۡبِ أَعۡظَمُ عِنۡدَ اللّٰهِ؟ قَالَ: أَنۡ تَجۡعَلَ لِلّٰهِ نِدًّا وَهُوَ خَلَقَکَ قَالَ قُلۡتُ لَهُ إِنَّ ذٰلِکَ لَعَظِیۡمٌ قَالَ قُلۡتُ ثُمَّ أَیٌّ ؟ قَالَ: ثُمَّ أَنۡ تَقۡتُلَ وَلَدَکَ مَخَافَةَ أَنۡ یَطۡعَمَ مَعَکَ قَالَ قُلۡتُ ثُمَّ أَیٌّ ؟ قَالَ: ثُمَّ أَنۡ تُزَانِیَ حَلِیۡلَةَ جَارِکَ. رَوَاهُ مُسۡلِمٌ (۱)

हज़रत अब्दुल्लाह (बिन मसऊद) रज़ि० से रिवायत है कि मैंने रसूलुल्लाह सल्ल० से पूछा: "अल्लाह तआला के नज़दीक कौनसा गुनाह सबसे बड़ा है?" आप सल्ल० ने इरशाद फरमाया, यह कि "तू अल्लाह तआला के साथ शिर्क करे हालांकि उसने तुझे पैदा किया है।" हज़रत अब्दुल्लाह रज़ि० कहते हैं मैंने अर्ज़ किया : "हां वाकई यह तो बहुत बड़ा गुनाह है।" फिर मैंने अर्ज़ किया : "शिर्क के बाद कौनसा गुनाह बड़ा है?" आप सल्ल० ने इरशाद फरमाया : " फिर यह कि तू अपनी औलाद को इस डर से कत्ल करे वह तेरे साथ खाना खाएगी।" फिर मैंने अर्ज़ किया : "इस के बाद?" आप सल्ल० ने इरशाद फरमाया : "यह तू हम साए की बीवी से ज़िना करे।" इसे मुस्लिम ने रिवायत किया है। (किताबुल ईमान)

मसला ६३ : शिर्क सबसे बड़ा जुल्म है।

عَنْ عَبْدِ اللّٰهِ رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ لَمَّا نَزَلَتْ هٰذِهِ الْاٰیَةُ (اَلَّذِیْنَ آمَنُوْا وَلَمْ یَلْبِسُوْا اِیْمَانَهُمْ بِظُلْمٍ) شَقَّ ذٰلِکَ عَلٰی أَصْحَابِ رَسُوْلِ اللّٰهِ صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَسَلَّمَ وَقَالُوْا أَیُّنَا لَمْ یَلْبِسْ اِیْمَانَهُ بِظُلْمٍ ؟ فَقَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَسَلَّمَ : اِنَّهُ لَیْسَ بِذَاکَ اَلَا تَسْمَعُ اِلٰی قَوْلِ لُقْمَانَ لِابْنِهِ (اِنَّ الشِّرْکَ لَظُلْمٌ عَظِیْمٌ) رَوَاهُ الْبُخَارِیُّ (٢)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ि० कहते हैं जब (सूरह अनआम की) आयत अल्लज़ी-न आमनू वलम यलबिसू....(यानी वे लोग जो ईमान लाए और अपने ईमान के साथ जुल्म को शामिल नहीं किया) नाज़िल हुई तो सहाबा किराम रज़ि० पर बहुत गरां गुज़री। उन्होंने कहा : "हम में से कौन ऐसा है जिसने ईमान लाने के बाद कोई जुल्म (गुनाह) न किया हो ?" (रसूले अकरम सल्ल० को मालूम हुआ तो) आप सल्ल० ने फरमाया "इस आयत में जुल्म से मुराद आम गुनाह नहीं (बल्कि शिर्क है) क्या तुमने (कुरआन मजीद में) लुकमान का कौल नहीं सुना जो उन्होंने अपने बेटे से कहा था कि "शिर्क सबसे बड़ा जुल्म है।" इसे बुखारी ने रिवायत किया है (किताबुत तफसीर सूरह लुकमान)

मसला ६४ : शिर्क अल्लाह तआला को सबसे ज़्यादा तकलीफ देने वाला गुनाह है।

عَنْ أَبِیْ مُوْسَی الْأَشْعَرِیِّ رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ قَالَ النَّبِیُّ صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَسَلَّمَ مَا أَحَدٌ أَصْبَرُ عَلٰی أَذًی سَمِعَهُ مِنَ اللّٰهِ یَدَّعُوْنَ لَهُ الْوَلَدُ ثُمَّ یُعَافِیْهِمْ وَ یَرْزُقُهُمْ. رَوَاهُ الْبُخَارِیُّ (١)

हज़रत मूसा अशअरी रज़ि० कहते हैं कि नबी अकरम सल्ल० ने फरमायाः "तकलीफ देह बात सुनकर अल्लाह तआला से ज़्यादा सब्र करने वाला कोई नहीं। मुशिरक कहते हैं अल्लाह तआला की औलाद है

फिर भी अल्लाह तआला उन्हें आफियत में रखता है और रोज़ी देता है।[१]
इसे बुखारी ने रिवायत किया है। (किताबुत्तौहीद)

मसला ६५ : शिर्क करने वाला अल्लाह तआला को गाली देता है।

वज़ाहत : हदीस मसला २६ के तरह मुलाहिज़ा फरमाएं।

मसला ६६ : कयामत के दिन अल्लाह तआला मुश्रिकों को उनके नेक आमाल का बदला देने से इंकार कर देगा।

عَنْ مَحْمُوْدِ بْنِ لَبِيْدٍ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُوْلَ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ إِنَّ أَخْوَفَ مَا أَخَافُ عَلَيْكُمُ الشِّرْكُ الْأَصْغَرُ قَالُوْا وَمَا الشِّرْكُ الْأَصْغَرُ يَا رَسُوْلَ اللّٰهِ؟ قَالَ: اَلرِّيَاءُ يَقُوْلُ اللّٰهُ عَزَّ وَجَلَّ لَهُمْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ إِذَا جُزِيَ النَّاسُ بِأَعْمَالِهِمْ اذْهَبُوْا إِلَى الَّذِيْنَ كُنْتُمْ تُرَاءُوْنَ فِي الدُّنْيَا فَانْظُرُوْا هَلْ تَجِدُوْنَ عِنْدَهُمْ جَزَاءً؟ رَوَاهُ أَحْمَدُ (٢)

हज़रत महमूद बिल लबीद रज़ि० कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने फरमाया : "तुम्हारे बारे में मुझे जिस चीज़ का सबसे ज़्यादा डर है वह शिर्के असगर है।" सहाबा किराम रज़ि० ने अर्ज़ किया : "या रसूलुल्लाह सल्ल०! शिर्के असगर क्या है? आप सल्ल० ने इरशाद फरमायाः "रिया" (दिखावा) कयामत के दिन जब लोगों को उनके आमाल का बदला दिया जा रहा होगा तो अल्लाह तआला (रिया के शिकार) लोगों से कहेगाः "जाओ उन लोगों के पास जिनको दिखाने के लिए तुम नेक अमल किया करते थे और देखो उनसे तुम क्या जज़ा पाते हो?" इसे अहमद ने रिवायत किया है। (सिलसिला अहादीस सहीह २: ९५१)

मसला ६७ : शिर्क इंसान को हलाक करने वाला गुनाह है।

عَنْ أَبِيْ هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُوْلَ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: اجْتَنِبُوا السَّبْعَ الْمُوْبِقَاتِ قِيْلَ يَا رَسُوْلَ اللّٰهِ وَمَا هُنَّ ؟ قَالَ: اَلشِّرْكُ

بِاللّٰهِ وَالسِّحْرُ وَ قَتْلُ النَّفْسِ الَّتِیْ حَرَّمَ اللّٰهُ اِلَّا بِالْحَقِّ وَأَكْلُ مَالِ الْيَتِيْمِ وَأَكْلُ الرِّبَا وَالتَّوَلّٰی يَوْمَ الزَّحْفِ وَ قَذْفُ الْمُحْصِنَاتِ الْغَافِلَاتِ الْمُؤْمِنَاتِ. رَوَاهُ مُسْلِمٌ (١)

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने इरशाद फरमाया : "हलाक करने वाले सात गुनाहों से बचो।" सहाबा किराम रज़ि० ने अर्ज़ किया "या रसूलुल्लाह सल्ल०! वे (सात गुनाह) कौनसे हैं?" आप सल्ल० ने फरमाया : "१. अल्लाह तआला के साथ शिर्क करना २. जादू ३. अकारण किसी जान को कत्ल करना जिसे अल्लाह तआला ने हराम ठहराया है ४. यतीम का माल खाना ५. सूद खाना ६. मैदाने जंग से भागना और ७. भोली भाली मोमिन औरतों पर तोहमत लगाना।" इसे मुस्लिम ने रिवायत किया है। (किताबुल ईमान)

मसला ६८ : रसूले अकरम सल्ल० ने मुश्रिकों के लिए बद्दुआ फरमाई।

عَنْ عَبْدِ اللّٰهِ رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ اسْتَقْبَلَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ الْبَيْتَ فَدَعَا عَلٰى سِتَّةِ نَفَرٍ مِنْ قُرَيْشٍ فِيْهِمْ أَبُوْ جَهْلٍ وَأُمَيَّةُ بْنُ خَلَفٍ وَ عُتْبَةُ بْنُ رَبِيْعَةَ وَ شَيْبَةُ بْنُ رَبِيْعَةَ وَ عُقْبَةُ بْنُ أَبِیْ مُعَيْطٍ فَأُقْسِمُ بِاللّٰهِ لَقَدْ رَأَيْتُهُمْ صَرْعٰی عَلٰى بَدْرٍ قَدْ غَيَّرَتْهُمُ الشَّمْسُ وَكَانَ يَوْمًا حَارًّا.

رَوَاهُ مُسْلِمٌ (٢)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ि० से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने बैतुल्लाह शरीफ की तरफ मुंह किया और कुरैश के छः आदमिया के लिए बद्दुआ फरमाई जिनमें अबू जहल, उमैया बिन खल्फ, उतबा बिन रबीआ, शैबा बिन रबीआ और उतबा बिन अबी मोईत शामिल थे। (अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ि० कहते हैं) मैं अल्लाह तआला की

कसम खाकर कहता हूं कि मैंने उन लोगों को बद्र के मैदान में इस हाल में देखा कि धूप से उनके जिस्म सड़े हुए थे क्योंकि वह बहुत गर्म दिन था। इसे मुस्लिन ने रिवायत किया है। (किताबुल जिहाद)

मसला ९९: मुश्रिक को ईसाले सवाब का कोई अमल फायदा नहीं पहुंचाता।

वज़ाहत : हदीस मसला १४ के तहत मुलाहिज़ा फरमाएं।

मसला १०० : शिर्क करने वाला कतई जहन्नमी है।

عَنْ عَبْدِ اللّٰهِ رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلیَّ اللّٰهُ عَلَیْهِ وَسَلَّمَ : مَنْ مَاتَ یَجْعَلُ لِلّٰهِ نِدًّا اُدْخِلَ النَّارَ. رَوَاهُ الْبُخَارِیُّ (۱)

हज़रत अबदुल्लाह बिन मसऊद रज़ि० कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने फरमाया : "जो आदमी इस हाल में मरे कि अल्लाह तआला के सिवा किसी दूसरे को शरीक बनाया था, वह आग में दाखिल होगा।" इसे बुखारी ने रिवायत किया है। (किताबुल ईमान)

मसला १०१ : किसी नबी या वली के साथ करीबी तअल्लुक भी मुश्रिक को जहन्नम के अज़ाब से नहीं बचा सकेगा।

عَنْ أَبِیْ هُرَیْرَةَ رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِیِّ صَلیَّ اللّٰهُ عَلَیْهِ وَسَلَّمَ قَالَ یَلْقٰی اِبْرَاهِیْمُ اَبَاهُ آزَرَ یَوْمَ الْقِیَامَةِ وَعَلٰی وَجْهِ آزَرَ قَتَرَةٌ وَ غَبَرَةٌ فَیَقُوْلُ لَهُ اِبْرَاهِیْمُ اَلَمْ اَقُلْ لَکَ لَا تَعْصِیْنِیْ فَیَقُوْلُ اَبُوْهُ فَالْیَوْمَ لَا اَعْصِیْکَ فَیَقُوْلُ اِبْرَاهِیْمُ یَا رَبِّ اِنَّکَ وَعَدْتَنِیْ اَنْ لَا تُخْزِیَنِیْ یَوْمَ یُبْعَثُوْنَ فَاَیُّ خِزْیٍ اَخْزٰی مِنْ اَبِیْ الْاَبْعَدِ؟ فَیَقُوْلُ اللّٰهُ تَعَالٰی اِنِّیْ حَرَّمْتُ الْجَنَّةَ عَلَی الْکَافِرِیْنَ ثُمَّ یُقَالُ لَهُ یَا اِبْرَاهِیْمُ مَا تَحْتَ رِجْلَیْکَ فَیَنْظُرُ فَاِذَا هُوَ بِذِیْخٍ مُلْتَطِخٍ فَیُؤْخَذُ بِقَوَائِمِهِ فَیُلْقٰی فِیْ النَّارِ. رَوَاهُ الْبُخَارِیُّ (۲)

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० से रिवायत है कि नबी अकरम सल्ल० ने फरमाया : "हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम कयामत के दिन अपने बाप आज़र को इस हाल में देखें गे कि उसके मुंह पर सियाही और गर्द व गुबार जमा होगा, चुनांचे हज़रत इब्राहीम अलैहि० कहेंगे: "मैंने दुनिया में तुम्हें कहा नहीं था कि मेरी नाफरमानी न करो?" आज़र कहेगा, "अच्छा, आज मैं तुम्हारी नाफरमानी नहीं करूंगा।" हज़रत इब्राहीम अलैहि० (अपने रब से विनती करेंगे) "ऐ मेरे रब! तुने मुझसे वायदा किया था कि मुझे कयामत के दिन रूसवा नहीं करेगा लेकिन इससे ज़्यादा रूसवाई और कया होगी कि मेरा बाप तेरी रहमत से महरूम है।" अल्लाह तआला इरशाद फरमाएगा: "मैंने जन्नत काफिरों पर हराम कर दी है फिर अल्लाह तआला फरमाएगा: "ऐ इब्राहीम तुम्हारे दोनों पांव के नीचे क्या है?" हज़रत इब्राहीम अलैहि० देखेंगे कि गिलाज़त में लत पत एक बिज्जू है जिसे (फरिश्ते) पांव से पकड़कर जहन्नम में डाल देंगे। इसे बुखारी ने रिवायत किया है। (किताब बदउल खलक)

वज़ाहत : दूसरी हदीस मसला ११ के तहत मुलाहिज़ा फरमाएं।

मसला १०२ : कयामत के दिन मुशिरक रूये ज़मीन की सारी दौलत देकर जहन्नम से निकलना चाहेगा लेकिन ऐसा मुम्किन न होगा।

عَنْ أَنَسِ ابْنِ مَالِكٍ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: يَقُوْلُ اللّٰهُ تَعَالٰى لِأَهْوَنِ أَهْلِ النَّارِ عَذَابًا يَوْمَ الْقِيَامَةِ لَوْ أَنَّ لَكَ مَا فِي الْأَرْضِ مِنْ شَيْءٍ أَكُنْتَ تَفْتَدِيْ بِهٖ؟ فَيَقُوْلُ نَعَمْ فَيَقُوْلُ أَرَدْتُ مِنْكَ أَهْوَنَ مِنْ هٰذَا وَأَنْتَ فِيْ صُلْبِ آدَمَ أَنْ لَا تُشْرِكَ بِيْ شَيْئًا فَأَبَيْتَ إِلَّا أَنْ تُشْرِكَ بِيْ. رَوَاهُ الْبُخَارِيُّ (١)

हज़रत अनस बिन मालिक रज़ि० से रिवायत है कि नबी अकरम सल्ल० ने फरमाया : "(कयामत के दिन) अल्लाह तआला उस जहन्नमी

से फरमाएगा जिसे सबसे हलक अज़ाब दिया जा रहा होगा कि अगर तेरे पास इस वक्त रूए ज़मीन की सारी दौलत मौजूद हो तो क्या तू अपने आप को आज़ाद कराने के लिए देगा?" वह कहेगाः "हां ज़रूर दे दूंगा" अल्लाह तआला इरशाद फरमाएगा, "दुनिया में मैंने तुझसे इसकी निसबत बहुत ही आसान बात का मुतालबा किया था, वे यह कि मेरे साथ किसी को शरीक न ठहराना लेकिन तूने मेरी यह बात न मानी और मेरे साथ शिर्क किया।" इसे बुखारी ने रिवायत किया है। (किताबुर रिकाक)

मसला १०३ : मुश्रिक से दीनी उमूर को मुतअस्सिर करने वाले तअल्लुकात रखने मना हैं।

عَنْ جَرِيْرٍ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ أَتَيْتُ النَّبِيَّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَهُوَ يُبَايِعُ فَقُلْتُ يَا رَسُوْلَ اللّٰهِ ابْسُطْ يَدَكَ حَتَّى أُبَايِعَكَ وَاشْتَرِطْ عَلَيَّ فَأَنْتَ أَعْلَمُ قَالَ أُبَايِعُكَ عَلَى أَنْ تَعْبُدَ اللّٰهَ وَ تُقِيْمَ الصَّلَاةَ وَتُؤْتِيَ الزَّكَاةَ وَ تُنَاصِحَ الْمُسْلِمِيْنَ وَ تُفَارِقَ الْمُشْرِكِيْنَ. رَوَاهُ النَّسَائِيُّ (٢) (صَحِيْح)

हज़रत जरीर रज़ि० कहते हैं कि मैं नबी अकरम सल्ल० की खिदमत में हाज़िर हुआ, आप (लोगों से) बैअत ले रहे थे, मैंने अर्ज़ कियाः "या रसूलुल्लाह सल्ल० ! अपना हाथ आगे बढ़ाइए ताकि मैं आपकी बैअत करूं और (हां) मुझे शराइत बात दीजिए (क्यों कि) आप मुझसे ज़्यादा जानते हैं।" आप सल्ल० ने इरशाद फरमाया "मैं तुझसे इन शराइत पर बैअत करूंगा १. तू अल्लाह तआला की बन्दगी करे २. नमाज़ कायम करे ३. ज़कात अदा करे ४. मुसलमानों की भलाई करे और ५. मुश्रिक से अलग रहे। इसे नसाई ने रिवायत किया है (सहीह सुनन नसाई, लिलबानी हदीस ३८६३)

मसला १०४ : ऐसी जगह जहां शिर्क किया जाता था या किया जाता हो वहां जाइज़ इबादत करना भी मना है।

عَنْ ثَابِتِ بْنِ الضَّحَّاكِ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ نَذَرَ رَجُلٌ عَلٰى عَهْدِ رَسُوْلِ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَنْ يَنْحَرَ اِبِلاً بِبُوَانَةَ فَأَتَى النَّبِيَّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ اِنِّيْ نَذَرْتُ أَنْ أَنْحَرَ اِبِلاً بِبُوَانَةَفَقَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ : هَلْ كَانَ فِيْهَا وَثَنٌ مِنْ أَوْثَانِ الْجَاهِلِيَّةِ يُعْبَدُ؟ قَالُوْا لَا قَالَ : هَلْ كَانَ فِيْهَا عِيْدٌ مِنْ أَعْيَادِهِمْ ؟ قَالُوْا لَا قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ :أَوْفِ بِنَذْرِكَ فَاِنَّهُ لَا وَفَاءَ لِنَذْرٍ فِيْ مَعْصِيَةِ اللّٰهِ وَلَا فِيْمَا لَا يَمْلِكُ ابْنُ آدَمَ.

رَوَاهُ أَبُوْ دَاوُدَ (١) (صَحِيْح)

हज़रत साबित बिन ज़हाक रज़ि० से रिवायत है कि एक आदमी ने रसूलुल्लाह सल्ल० के ज़माने में बुवाना नामी जगह पर ऊंट ज़बह करने की नज़र मानी। वह रसूले अकरम सल्ल० की खिदमत में हाज़ि हुआ (और अर्ज़ किया) मैंने बुवाना पर ऊंट ज़बह करने की नज़र मानी है। (अपनी नज़र पूरी करूं या न करूं?) आपने दरयाफ्त फरमाया "क्या वहां ज़माना जाहिलियत में कोई बुत था जिसकी पूजा की जाती रही हो?" सहाबाकिराम रज़ि० ने अर्ज़ किया, "नहीं" तब आपने पूछा: "क्या वहां मुश्रिकीन का कोई मेला लगता था।" सहाबा किराम रज़ि० अजमईन ने अर्ज़ किया: "नहीं" तब आपने इरशाद फमाया: "अपनी नज़र पूरी करो और याद रखो अल्लाह तआला की नाफरमानी वाली नज़र पूरी करना जाइज़ नहीं न ही वह नज़र जो इंसान के वस में न हो।" इसे अबूदाऊद ने रिवायत किया है। (सहीह सुनन अबी दाऊ लिलबानी, हदीस २८३४)

اَلشِّرْکُ الْاَصْغَرِ

शिर्क असगर के मसाइल

मसला १०५ : नज़रे बद या बीमारी से महफ़ूज़ रहने के लिए छल्ला, मनका, कड़ा, ज़ंजीर हलका, या तावीज़ पहनना शिर्क है।-१

मसला १०६ : नज़रे बद या हादसात से बचने के लिए कार, मकान, या दुकान वगैरह पर घोड़े की नाल लटकाना या मिट्टी की काली हडियां लटकाना शिर्क है।

मसला १०७ : छोटे बच्चे को नज़रे बद से बचान के लिए घर के दरवाज़े पर किसी विशेष पेड़ की टहनियां लटकाना शिर्क है।

मसला १०८ : हादसात से महफ़ूज़ रहने के लिए बाजू पर "ईमाम ज़ामिन" बांधना शिर्क है।

عَنْ عُقْبَةَ بْنِ عَامِرٍ الْجُهَنِيِّ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُوْلَ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَقْبَلَ إِلَيْهِ رَهْطٌ فَبَايَعَ تِسْعَةً وَ أَمْسَکَ عَنْ وَاحِدٍ فَقَالُوْا يَا رَسُوْلَ اللّٰهِ بَايَعْتَ تِسْعَةً وَ تَرَكْتَ هٰذَا؟ قَالَ: اِنَّ عَلَيْهِ تَمِيْمَةً فَأَدْخَلَ يَدَهُ فَقَطَعَهَا فَبَايَعَهُ وَقَالَ مَنْ عَلَّقَ تَمِيْمَةً فَقَدْ أَشْرَکَ . رَوَاهُ أَحْمَدُ (٢)

हज़रत उकबा बिन आमिल जहनी रज़ि० से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्ल० की खिदमत में एक जमाअत (इस्लाम लाने के लिए)

---

१. कुछ उलेमा के नज़दीक कुरआनी आयात या मसनून दुआओं पर मुश्तमिल तावीज़ इस्तेमाल करना जाइज़ है।

हाज़िर हुई नबी अकरम सल्ल० ने नौ आदमियों से बैअत ली और १० वें आदमी की बैअत लेने से हाथ रोक लिया। उन्होंने अर्ज़ किया, "या रसूलुल्लाह सल्ल० आपने नौ आदमियों की बैअत ली है और इस आदमी की बैअत नहीं ली" आप सल्ल० ने इरशाद फरमायाः "उसने तमीमा (तावीज़ धागा या मनका वगैरह) बांधा हुआ है।" चुनांचे आप सल्ल० ने अपना हाथ आगे बढ़ाकर उसे काट दिया और उसके बाद उससे बैअत ले ली। फिर इरशाद फरमायाः "जिसने तमीमा लटकाया उसने शिर्क किया।" इसे अहमद रिवायत किया है।

(सिलसिला अहादीस सहीह लिलबानी हदीस ४६३)

عَنْ عَبْدِ اللّٰهِ رَضِىَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُوْلُ اِنَّ الرُّقىَ وَالتَّمَائِمَ وَالتِّوَلَةَ شِرْكٌ. رَوَاهُ اَبُو دَاؤُدَ (١)

हज़रत अब्दुल्लाह (बिन मसऊद रज़ि०) कहते हैं मैंने रसूलुल्लाह सल्ल० का फरमाते हुए सुना कि "दम तावीज़ और टोने शिर्क हैं।" इसे अबू दाऊद ने रिवायत किया है (सिलसिला अहादीस सहीह लिलबानी हदीस ३३१)

عَنْ اَبِىْ بَشِيْرِ الْاَنْصَارِىِّ رَضِىَ اللّٰهُ عَنْهُ اَنَّهُ كَانَ مَعَ رَسُوْلِ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِىْ بَعْضِ اَسْفَارِهِ قَالَ فَاَرْسَلَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ رَسُوْلًا قَالَ عَبْدُ اللّٰهِ بْنُ اَبِىْ بَكْرٍ حَسِبْتُ اَنَّهُ قَالَ وَالنَّاسُ فِىْ مَبِيْتِهِمْ لَا تُبْقَيَنَّ فِىْ رَقَبَةِ بَعِيْرٍ قِلَادَةٌ مِنْ وَتَرٍ اَوْ قِلَادَةٌ اِلَّا قُطِعَتْ قَالَ مَالِكٌ اُرَى ذٰلِكَ مِنَ الْعَيْنِ. رَوَاهُ مُسْلِمٌ (٢)

हज़रत अबू बशीर अंसारी रज़ि० से रिवायत है कि वह एक सफर में रसूलुल्लाह सल्ल० के साथ थे आप सल्ल० ने एक संदेश वाहक भेजा। अब्दुल्लाह बिन अबी बक्र रज़ि० कहते हैं मैं समझता हूं उस वक्त लोग

अभी अपनी ख्वाबगाहों में होंगे और हुक्म दिया कि किसी ऊंट के गले में (दम किया हुआ) तांत (धागे) का कलादा या कोई तौक न रहने दिया जाए बल्कि उसे काट दिया जाए। इमाम मालिक रह० कहते हैं मेरा ख्याल है (मुश्रिक लोग यह तौक ऊंट को) नज़रे बद से बचान के लिए इस्तेमाल करते थे। इसे मुस्लिम ने रिवायत किया है। (किताबुल लिबास)

मसला १०६ : बदशगूनी लेना शिर्क है।

عَنْ فُضَالَةَ ابْنِ عُبَيْدِالْأَنْصَارِىِّ رَضِىَ اللّٰهُ عَنْهُ صَاحِبُ النَّبِىِّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَنَّهُ قَالَ مَنْ رَدَّتْهُ الطِّيَرَةُ فَقَدْ قَارَفَ الشِّرْكَ. رَوَاهُ ابْنِ وَهَبٍ فِى الْجَامِعِ، (٣)

हज़रत फुज़ाला बिन ओबैद अंसारी रज़ि० सहाबी रसूल सल्ल० कहते हैं "जिस आदमी को बद शगूनी ने काम करने से रोक दिया वह शिर्क का मुर्तकिब हुआ।" इसे इब्ने वहब ने रिवायत कियाा है। (सिलसिला अहादीस लिलबानी जुज़ तीन हदीस १०६५)

मसला ११० : गैरूल्लाह (मसलन मां बाप, बीवी, औलाद या कुरआन या काबा वगैरह) की कसम खाना शिर्क है।

عَنْ ابْنِ عُمَرَ رَضِىَ اللّٰهُ عَنْهُمَا أَنَّ رَسُوْلَ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ مَنْ حَلَفَ بِغَيْرِ اللّٰهِ فَقَدْ كَفَرَ أَوْ أَشْرَكَ. رَوَاهُ التِّرْمِذِىُّ (١) (صَحِيْح)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि० से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने फरमाया : "जिसने अल्लाह तआला के सिवा किसी दूसरे की कसम खाई उसने कुफ्र किया या फरमाया शिर्क किया। इसे तिर्मिज़ी ने रिवायत किया है। (सहीह सुनन तिर्मिज़ी लिलबानी हदीस १२४१)

عَنْ أَبِى هُرَيْرَةَ رَضِىَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَ سَلَّمَ مَنْ حَلَفَ مِنْكُمْ فَقَالَ فِى حَلِفِهِ بِاللَّاتِ فَلْيَقُلْ لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَمَنْ قَالَ

لِصَاحِبِهِ تَعَالَ أُقَامِرْكَ فَلْيَتَصَدَّقْ. رَوَاهُ مُسْلِمٌ (٢)

हज़रत अबू हरैहर रज़ि० कहते है रसूलुल्लाह सल्ल० ने फरमायाः "तुम में से जो आदमी (गैरूल्लाह की) कसम खाए और अपनी कसम में यूं कहेः "लात की कसम" उसे लाइला-ह इल्लल्लाह कहना चाहिए (यानी अपने ईमान की तजदीद करनी चाहिए) और जो आदमी अपनी साथी से कहे आओ मैं तुमसे जुआ खेलूं तो उसे (अपनी इस्तेताअत के मुताबिक) सदका करना चाहिए (ताकि गुनाह का कफ्फारा अदा हो जाए) इसे मुस्लिम ने रिवायत किया है। (किताबुल ईमान)

मसला १११ : रिया और दिखवा शिर्क है।

عَنْ أَبِي سَعِيدٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ قَالَ خَرَجَ عَلَيْنَا رَسُوْلُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَ نَحْنُ نَتَذَاكَرُ الْمَسِيحَ الدَّجَّالَ فَقَالَ أَلا أُخْبِرُكُمْ بِمَا هُوَ أَخْوَفُ عَلَيْكُمْ عِنْدِي مِنَ الْمَسِيحِ الدَّجَّالِ؟ قَالَ قُلْنَا بَلَى فَقَالَ: اَلشِّرْكُ الْخَفِيُّ أَنْ يَقُوْمَ الرَّجُلُ يُصَلِّي فَيُزَيِّنُ صَلاتَهُ لِمَا يَرَى مِنْ نَظَرِ رَجُلٍ.

رَوَاهُ ابْنُ مَاجَةَ (٣) (صَحِيْح)

हज़रत अबू सईद रज़ि० कहते है। कि हम लोग मसीह दज्जाल का ज़िक्र कर रहे थे (इतने में रसूले अकरम सल्ल०) तशरीफ लाए और आप सल्ल० ने इरशाद फरमायाः "क्या मैं तुम्हें ऐसी बात न बताऊं जिसका मुझे तुम्हारे बारे में मसीह दज्जाल से भी ज़्यादा डर है?" हमने अर्ज़ किया : "क्यों नहीं (ज़रूर बताइए) आप सल्ल० ने फरमाया : "शिर्क खफी (और वह यह है कि) एक आदमी नमाज़ के लिए खड़ा होता है और सिर्फ इस लिए उमदा नमाज़ पढ़ता है कि उसे कोई (दूसरा आदमी) देख रहा है।" इसे इब्ने माजा ने रिवायत किया है। (सहीह सुनन इब्ने माजा लिलबानी, जुज़ २ हदीस ३३८६)

मसला ११२ : तर्के नमाज़ शिर्क और कुफ्र है।

عَنْ جَابِرٍ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ يَقُوْلُ سَمِعْتُ النَّبِيَّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُوْلُ اِنَّ بَيْنَ الرَّجُلِ وَبَيْنَ الشِّرْكِ وَالْكُفْرِ تَرْكَ الصَّلَاةِ .

رَوَاهُ مُسْلِمٌ (٣)

हज़रत जाबिर रज़ि० से रिवायत है कि मैंने नबी अकरम सल्ल० को फरमाते हुए सुना है: "कुफ्र व शिर्क और बन्दे के दर्मियान तर्के नमाज़ (का फर्क) है।" इसे मुस्लिम ने रिवायत किया है। (किताबुल ईमान)

मसला ११३ : गैब का हाल मालूम करने के लिए किसी को हाथ दिखाना शिर्क है।

عَنْ صَفِيَّةَ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهَا عَنْ بَعْضِ أَزْوَاجِ النَّبِيِّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ : مَنْ أَتَى عَرَّافًا فَسَأَلَهُ عَنْ شَيْءٍ لَمْ تُقْبَلْ لَهُ صَلَاةٌ أَرْبَعِيْنَ لَيْلَةً. رَوَاهُ مُسْلِمٌ (١)

हज़रत सफिया रज़ि० नबी अकरम सल्ल० की किसी पत्नी से रिवायत करती हैं कि आप सल्ल० ने फरमाया: "जो आदमी नजूमी के पास जाए और उससे (मुस्तकबिल के बारे में) कोई बात दरयाफ्त करे तो उसकी चालीस रोज़ की नमाज़ कबूल नहीं होती।" इसे मुस्लिम ने रिवायत किया है। (किताबुस्सलात)

मसला ११४ : सितारों के प्रभाव पर यकीन रखना शिर्क है।

عَنْ أَبِيْ هُرَيْرَةَ عَنْ رَسُوْلِ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ مَا أَنْزَلَ اللّٰهُ مِنَ السَّمَاءِ مِنْ بَرَكَةٍ اِلَّا أَصْبَحَ فَرِيْقٌ مِنَ النَّاسِ بِهَا كَافِرِيْنَ يُنْزِلُ اللّٰهُ الْغَيْثَ فَيَقُوْلُوْنَ الْكَوْكَبُ كَذَا كَذَا . رَوَاهُ مُسْلِمٌ (٢)

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० से रिवायत है कि रसूलुल्लह सल्ल० ने फरमाया: "नहीं नाज़िल फरमाई अल्लाह तआला ने बरकत (बारिश) आसमान से मगर लोगों में से कुछ ने सुबह को उसका इंकार किया

हालांकि बारिश अल्लाह तआला ही बरसाता है, लेकिन इंकार करने वाले कहते हैं कि फलां फलां तारे की वजह से बारिश हुई।" इसे मुस्लिम ने रिवायत किया है। (किताबुल ईमान)

मसला ११५ : अंबिया, औलिया और सुलहा से अकीदत में गुलू करना शिर्क है।

عَنْ عُمَرَ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُوْلُ : لاَ تُطْرُوْنِيْ كَمَا اَطْرَتِ النَّصَارٰى ابْنَ مَرْيَمَ فَاِنَّمَا اَنَا عَبْدُهُ فَقُوْلُوْا عَبْدُ اللّٰهِ وَرَسُوْلُهُ. مُتَّفَقٌ عَلَيْهِ (٣)

हज़रत उमर रज़ि० कहते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह सल्ल० को फरमाते हुए सुना कि "मेरी तारीफ में इस तरह मुबालिगा न (अतिशीयोक्ती) करो जिस तरह ईसाईयों ने हज़रत ईसा अलैहि० के बारे में मुबालिगा (अतिशीयोक्ती) किया बेशक में एक बन्दा हूं, लिहाज़ा मुझे अल्लाह तआला का बन्दा और उसका रसूल ही कहो।" इसे बुखारी और मुस्लिम ने रिवायत किया है। (सहीह बुखारी, किताबुल अंबिया)

الاَحَادِيْثُ الضَّعِيْفَةُ وَالمَوْضُوْعَةُ

ज़ईफ और मौज़ूअ अहादीस

(١) كُنْتُ كَنْزًا ، مَخْفِيًّا اَنْ اُعْرَفَ فَخَلَقْتُ الْخَلْقَ

१. "मैं एक पोशिदा खज़ाना था मैंने चाहा कि पहचाना जाऊं चुनांचे मैंने प्राणियों के पैदा किया।"

वज़ाहत- यह हदीस मौज़ूअ है मुलाहिज़ा हो सिलसिलतुल अहादीस ज़ईफ वल मौज़ूअ, हदीस ६६।

(٢) "مَنْ عَرَفَ نَفْسَهُ فَقَدْ عَرَفَ رَبَّهُ"

२. "जिसने अपने आप को पहचाना उसने अपने रब को पहचाना।"

वज़ाहत- यह हदीस बे बुनियाद है। तफसील के लिए मुलाहिज़ा हो सिलसिलतुल अहादीस ज़ईफ वल मौज़ूअ जिल्द प्रथम हदीस, ६६

(٣) "مَنْ عَرَفَنِيْ فَقَدْ عَرَفَ الْحَقَّ وَمَنْ رَآنِيْ فَقَدْ رَأَى الْحَقَّ"

३. "जिसने मुझे पहचाना उसने अपने खुदा को पहचाना और जिसने मुझे देखा उसने खुदा को देखा।" (रियाज़स सालिकीन, सफा-७२)

वज़ाहत- यह हदीस मौज़ूअ है मुलाहिज़ा हो शरीअत व तरीकत-७६७

(٤) "قَالَ اللّٰهُ تَعَالٰى: خَلَقْتُ مُحَمَّدًا مِّنْ نُوْرِ وَجْهِيْ وَالْمُرَادُ مِنَ الْوَجْهِ ذَاتُ الْمُقَدَّسَةِ"

४. अल्लाह तआला इरशाद फरमाता है "मैंने मुहम्मद सल्ल० को अपने चेहरे के नूर से पैदा किया है और चेहरे से मुराद ज़ात मुकद्दस (यानी अल्लाह तआला) है।" (रियाज़ुस सालिकीन सफा-६०)

वज़ाहत- यह हदीस मौज़ूअ है मुलाहिज़ा हो शरीअत व तरीकत सफा-४६३

(۵) "يَا جَابِرُ ! أَوَّلُ مَا خَلَقَ اللّٰهُ نُوْرَ نَبِيِّكَ مِنْ نُوْرِهِ "

५. "ऐ जाबिर अल्लाह तआला ने सबसे पहले अपने नूर से तेरे नबी का नूर पैदा किया।"

वज़ाहत- यह हदीस बे अस्ल है। मुलाहिज़ा हो सीरतुन्नबी अज़ सैयद सुलैमान नदवी, जिल्द-३ सफा-७३७

(٦) "خَلَقَنِيَ اللّٰهُ مِنْ نُوْرِهِ، وَخَلَقَ أَبَا بَكْرٍ مِنْ نُوْرِيْ ،وَخَلَقَ عُمَرَ مِنْ نُوْرِ أَبِيْ بَكْرٍ ، وَ خَلَقَ أُمَّتِيْ مِنْ نُوْرِ عُمَرَوعُمَرُ سِرَاجُ أَهْلِ الْجَنَّةِ "

६. "अल्लाह तआला ने मुझे अपने नूर से पैदा फरमाया और अबू बकर को मेरे नूर से, और उमर को अबू बकर के नूर से और और मेरी उम्मत को उमर के नूर से पैदा फरमाया और हज़रत उमर तमाम जन्नतियों के चिराग हैं।"

वज़ाहत- यह हदीस मौज़ूअ है मुलाहिज़ा हो मिज़ानुल एतिदाल, अज़ ज़हबी, जिल्द प्रथम, सफा-१६६

(٧) أَتَانِيْ جِبْرِيْلُ فَقَالَ: إِنَّ اللّٰهَ يَقُوْلُ ، "لَوْلَاكَ مَا خَلَقْتُ الْجَنَّةَ وَلَوْلَاكَ مَا خَلَقْتُ النَّارَ"

७. मेरे पास जिब्रईल आए कहा अल्लाह तआला फरमाता है अगर तुम (मुहम्मद सल्ल०) न होते तो मैं जन्नत व दोज़ख पैदा न करता।

वज़ाहत-यह हदीस मौज़ूअ है। मुलाहिज़ा हो अलआसारूल मरफूआ फिल अखबारूल मौज़ूआ, सफा-४४

(٨) لَوْلَاکَ يَا مُحَمَّدُ مَا خَلَقْتُ الدُّنْيَا.

८. ऐ मुहम्मद सल्ल०! अगर तुम न होते तो मैं दुनिया पैदा न करता।

वज़ाहत- यह हदीस मौजूअ है। मुलाहिज़ा हो अलमौजूआत अज़ इब्नुल जोज़ी, जिल्द प्रथम, सफा-६८२

(٩) "لَوْ لَاکَ مَا خَلَقْتُ الْأَفْلَاکَ"

९. अगर तुम न होते तो मैं कायनात पैदा न करता।

वज़ाहत- यह हदीस मौजूअ है। मुलाहिज़ा हो सिलसिलतुल अहादीस, ज़ईफ वल मौजूअ अज़ अलबानी, जिल्द प्रथम हदीस-२८२

(١٠) "قَالَ اللّٰهُ تَعَالٰى: يَا مُحَمَّدُ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ! أَنْتَ أَنَا وَأَنَا أَنْتَ"

१०. ऐ मुहम्मद सल्ल०! तुम मैं और मैं तू हैं।

वज़ाहत- यह हदीस मौजूअ है मुलाहिज़ा है शरीअत व तरीकत, ४६३

(١١) "أَيُّ الْخَلْقِ أَعْجَبُ إِلَيْكُمْ إِيْمَانًا؟" قَالُوْا: اَلْمَلَائِكَةُ، قَالَ: "وَمَالَهُمْ لَا يُؤْمِنُوْنَ وَهُمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ عَزَّ وَجَلَّ؟ قَالُوْا فَالنَّبِيُّوْنَ قَالَ: "وَمَالَهُمْ لَا يُؤْمِنُوْنَ وَالْوَحْيُ يُنْزَلُ عَلَيْهِمْ؟" قَالُوْا: فَنَحْنُ قَالَ: "وَمَا لَكُمْ لَا تُؤْمِنُوْنَ وَأَنَا بَيْنَ أَظْهُرِكُمْ؟ قَالَ: فَقَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمِ: "أَلَا إِنَّ أَعْجَبَ الْخَلْقِ إِلَيَّ إِيْمَانًا لَقَوْمٌ يَكُوْنُوْنَ مِنْ بَعْدِكُمْ يَجِدُوْنَ صُحُفًا فِيْهَا كِتَابٌ يُؤْمِنُوْنَ بِمَا فِيْهَا."

११. "ईमान लाने के मामले में तुम्हारे नज़दीक कौनसी मखलूक सबसे अच्छी है?" उन्होंने अर्ज़ किया "फरिश्ते" आप सल्ल० ने फरमाया: "वे ईमान क्यों न लाए जबकि वे अपने रब अज़्ज़ व जल्ल के पास हैं।" सहाबा ने अर्ज़ किया तो फिर "अंबिया" आप सल्ल० ने इरशाद फरमाया:

"वह ईमान क्यों न लाए हालांकि उनपर तो 'वह्य' नाज़िल होती है। सहाबा ने अर्ज़ किया : "फिर हम।" आप सल्ल० ने इरशाद फरमाया : "आखिर तुम ईमान क्यों न लाओ जब कि खुत तुम्हारे दरमियान मौजूद हूं।" रावी ने कहा तब आप सल्ल० ने इरशाद फरमाया: "सुनो! ईमान लाने के मामले में सबसे अच्छ वे लोग हैं जो तुमसे बाद में आएंगे। वे (सिर्फ) सहीफों में तहरीरें पढ़कर ईमान लाएं गे।

वज़ाहत- यह हदीस ज़ईफ है, तफसील के लिए मुलाहिज़ा हो सिलसिलतुल अहादीस ज़ईफ वल मौजूअ, जिल्द दो हदीस ६४७

(١٢) عَنْ عُمَرَ بْنِ الْخَطَّابِ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ : سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُوْلُ: كَمَا لَا يَنْفَعُ مَعَ الشِّرْكِ شَيْءٌ كَذٰلِكَ لَا يَضُرُّ مَعَ الْاِيْمَانِ شَيْءٌ. "

१२. हज़रत उमर बिन खत्ताब रज़ि० कहते हैं मैंने रसूलुल्लाह सल्ल० को फरमाते हुए सुना है : "जिस तरह शिर्क की मौजूदगी में कोई नेक अमल लाभकारी नहीं हो सकता इसी तरह ईमान की मौजूदगी में कोई बुरा अलम नुकसान नहीं दे सकता।"

वज़ाहत- यह हदीस बे बुनियाद है, तफसील के लिए मुलाहिज़ा हो अलमौज़ूआत जिल्द प्रथम।

(١٣) "مَنْ قَالَ الْاِيْمَانُ يَزِيْدُ وَ يَنْقُصُ فَقَدْ خَرَجَ مِنْ أَمْرِ اللّٰهِ وَمَنْ قَالَ : أَنَا مُؤْمِنٌ اِنْ شَآءَ اللّٰهُ" فَلَيْسَ لَهُ فِي الْاِسْلَامِ نَصِيْبٌ "

१३. "जिसने कहा ईमान घटता और बढ़ता है वह अल्लाह तआला के हुक्म से निकल गया और जिसने कहा मैं मोमिन हूं उसका इस्लाम में कोई हिस्सा नहीं।

वज़ाहत- यह हदीस मौजूअ है, तफसील के लिए मुलाहिज़ा हो अलफवाइदुल मजमूआ, हदीस १२६४

(١٤) "اَلْاِیْمَانُ مُثْبِّتٌ فِیْ الْقَلْبِ کَالْجِبَالِ الرَّوَاسِیْ وَ زِیَادَتُهٗ وَ نَقْصُهٗ کُفْرٌ."

१४. "ईमान गड़े हुए पहाड़ की तरह दिल में जमा रहता है, उसकी ज़्यादती या कमी (पर ईमान रखना) कुफ्र है।

वज़ाहत-यह हदीस मौजूअ है, मुलाहिज़ा हो सिलसिलतुल अहादीस ज़ईफ वल मौजूअ, जिल्द प्रथम हदीस-४६४

(١٥) "اَلْاِیْمَانُ نِصْفَانِ نِصْفٌ فِیْ الصَّبْرِ نِصْفٌ فِیْ الشُّکْرِ."

१५. "ईमान के दो हिस्से हैं आधा सब्र और आधा शुक्र।

वज़ाहत- यह हदीस ज़ईफ है, तफसील के लिए मुलाहिज़ा हो सिलसिला अहादीस ज़ईफ वल मौजूअ हदीस-६२५

(١٦) "حُبُّ الْوَطَنِ مِنَ الْاِیْمَانِ."

१६. "वतन की मुहब्बत ईमान का हिस्सा है।"

वज़ाहत-यह हदीस मौजूअ है, मुलाहिज़ा हो, सिलसिलतुल अहादीस ज़ईफ वल मौजूअ, जिल्द प्रथम, हदीस-३६

(١٧) "عَلَیْکُمْ بِلِبَاسِ الصُّوْفِ تَجِدُوْا حَلَاوَةَ الْاِیْمَانِ فِیْ قُلُوْبِکُمْ."

१७. "सूफ (ऊन) का लिबास ज़रूर पहनो, इससे अपने दिलों में ईमान की सहीह लज़्ज़त महसूस करोगे।"

वज़ाहत-यह हदीस मौजूअ है, मुलाहिज़ा हो सिलसिलतुल अहादीस ज़ईफ वल मौजूअ, जिल्द प्रथम हदीस-६०

(١٨) "قَالَ اللّٰهُ تَعَالٰی: أَوْلِیَائِیْ تَحْتَ قَبَآئِیْ لَا یَعْرِفُهُمْ غَیْرِیْ."

१८. अल्लाह तआला इरशाद फरमाता है "मेरे औलिया मेरी कुबा में हैं। जिन्हें मेरे सिवा कोई नहीं जानता।"

वज़ाहत- यह हदीस मौजूअ है, मुलाहिज़ा हो शरीअत व तरीकत,

सफा-४६६

(١٩) "قَالَ اللّٰهُ تَعَالٰی: اَلَا اِنَّ اَوْلِیَاءَ اللّٰهِ تَلَامِیْذُ الرَّحْمٰنِ."

१६. "अल्लाह तआला इरशाद फरमाता है "सुनो! बेशक औलिया अल्लाह, रहमान के शागिर्द हैं।"

वज़ाहत यह हदीस मौजूअ है, शरीअत व तरीकत सफा-४६६

(٢٠) "اَلْاَبْدَالُ فِیْ اُمَّتِیْ ثَلَاثُوْنَ، بِهِمْ تَقُوْمُ الْاَرْضُ، وَبِهِمْ تُمْطَرُوْنَ، وَبِهِمْ تُنْصَرُوْنَ."

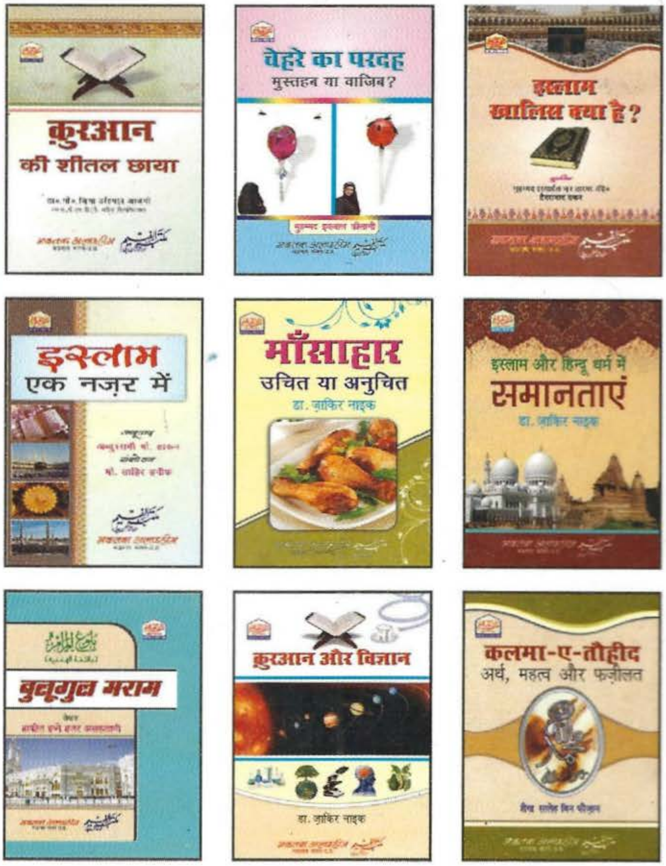
२०. "मेरी उम्मत में ३० अबदाल होंगे उन्हीं की वजह से ज़मीन कायम रहेगी। उन्हीं की वजह से तुम पर बारिश बरसेगी और उन्हीं की वजह से तुम मदद किये जाओगे।"

वज़ाहत- हदीस ज़ईफ है, मुलाहिज़ा हो ज़ईफ जामेअ सगीर लिलबानी, हदीस-२२६७

☆☆☆

मन्हज-ए- सलफ सालेहीन
के फरोग़ के लिये कोशाँ

हमारी अन्य अहम खूबसूरत और मालूमाती पुस्तकें



MAKTABA AL-FAHEEM

Raihan Market, 1st Floor, Dhobia Imli Road
Sadar Chowk, Maunath Bhanjan - (U.P.) 275101
Ph.: (O) 0547-2222013, Mob. 9236761926, 9889123129, 9336010224
Email :faheembooks@gmail.com
Facebook: Maktabaalfaheem

₹ 120/-